Design & Printed at:

Website: www.rgpgcollege.in

Facebook ID: Raghunandini Rgpg Meerut

E-mail: rgpgcollegemrt@gmail.com

Phone : 0121-2642901

रघुनाथ गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कॉलिज, मेरठ (उ0प्र0)

सौरभ

महाविद्यालय का दर्पण

अमृत महोत्सव

NAAC Reaccreditation A- Grade With CGPA - 3.13

2022

दानाय अर्ज्यते
(विद्यालय का आदर्श वाक्य)

विद्यालय गान

रहे अमर विद्यालय अपना।
नव विद्या की ज्योति जले नित,
छात्राओं की सरिता बहे नित,
पावन रहे सदा जल इसका,
पूरा हो मन का यह सपना,
रहे अमर विद्यालय अपना।

एक ध्येय दानाय अर्ज्यते,
हो प्रतीक पुष्पाञ्जलि जयते,
वीणावादिनी! वरद् हस्त दे,
दे नित-नित नव भाव कल्पना,
रहे अमर विद्यालय अपना।

कला, विज्ञान, वाणिज्य आदि का,
सौरभ बिखराये दर्शन का,
बने सुगृहणी तथा सुमाता,
सफल करें यों जीवन अपना,
रहे अमर विद्यालय अपना।

जीवन के सुन्दर समतल में,
कर्म, धर्म की गति में, लय में,
शौर्य, शील, शक्ति प्रतिमा बन,
छू लें दूर क्षितिज नव अपना,
रहे अमर विद्यालय अपना।

सम्पादिका मण्डल

प्रो० डॉ० निवेदिता मलिक
महाविद्यालय प्राचार्या

डॉ० कंचन पुरी
मुख्य-सम्पादिका
अध्यक्षा - हिन्दी विभाग

डॉ० पारूल सिंह
सह-सम्पादिका
अध्यक्षा - अंग्रेजी विभाग

डॉ० पूनम लखनपाल
सह-सम्पादिका
अध्यक्षा - संस्कृत विभाग

डॉ० अर्चना रानी
सह-सम्पादिका
अध्यक्षा - ड्रॉइंग एवं पेंटिंग विभाग

सरस्वती वन्दना

वर दे वीणावादिनी! वर दे।
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव,
भारत में भर दे।
काट अंध-उर के बंधन-स्तर,
बहा जननि ज्योतिर्मय निर्झर,
कलुष-भेद-तम हर, प्रकाश भर,
जगमग जग कर दे।
नव गति, नव लय, ताल छंद नव,
नवल कंठ, नव जलद मंद्र-रव,
नव नभ के नव विहग-वृंद को,
नव पर नव स्वर दे।
वर दे वीणावादिनी! वर दे।

–सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

CHAUDHARY CHARAN SINGH UNIVERSITY, MEERUT- 250 004 (U.P.)

Professor Sangeeta Shukla
D. Sc.
Vice Chancellor

Ref. No. SVC/21/ 484
Dated : 24.08.2022

MESSAGE

It is heartening to know that Raghunath Girl's Post Graduate College, Meerut is bringing out its annual magazine **"SAURABH"** 2021-22 edition. College magazine provides an opportunity to the students to express their views on issues of contemporary relevance.

The annual magazine of the college presents a detailed account of the different co-curricular & extracurricular activities of the college. It motivates and inspires students to get involved in activities crucial to the development of their personality.

It is a commendable effort aimed at harnessing creative skills of the students and it is hoped that they stand to benefit out of it. I also wish "SAURABH" goes a long way in accomplishing the goal of value education.

I convey my good wishes and felicitations to the Principal, members of faculty and students for bringing out this publication.

(Sangeeta Shukla)

Sangeeta

Principal,
Raghunath Girl's Post Graduate College,
Western Kutchery Road,
Meerut-250001

प्रोफेसर (डॉ.) राजीव कुमार गुप्ता
(एम.कॉम.,एल–एल.बी.,पी–एच.डी.,एम.बी.ए.,एम.जे.)
क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी
मेरठ।

दूरभाषः
0121–2400444, 09868106027
Offce: Regional Higher Education Officer,
E-Mail: rheomeerut@yahoo.com www.rheomrt.org

शुभकामना संदेश

महोदया,

यह हर्ष का विषय है कि **रघुनाथ गर्ल्स कॉलिज मेरठ** अपनी पत्रिका **"सौरव"** का अंक प्रकाशित करने जा रहा है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका से महाविद्यालय की शिक्षिकाओं, विचारकों और छात्राओं को अपनी ज्ञान–प्रतिभा की अभिव्यक्ति प्रकाशित करने का सुअवसर प्राप्त होगा तथा इसे नया आयाम मिलेगा। **"सौरव"** के सफल प्रकाशन हेतु मैं, प्राचार्या, शिक्षिकाओं और शिक्षणेत्तर कर्मचारियों एवं छात्राओं को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

(राजीव कुमार गुप्ता)

****

RAGHUNATH GIRLS P.G. COLLEGE, MEERUT

MESSAGE

I extend my heartiest congratulations and best wishes to R.G. (P.G.) College, Meerut, for this **2022** issue of the college magazine. It is an eminent women's college of Western U.P. Constantly striving towards enriching the lives of young women and empowering them to become stronger and independent individuals in order to create a more balanced and happy society. I wish all the students and teachers of the college a wonderful year ahead. May they go forward in every field, including science and technology.

My love and blessings.

V.K. Modi
President
R.G. (P.G.) College,
Meerut

RAGHUNATH GIRLS P.G. COLLEGE, MEERUT

MESSAGE

It gives me immense pleasure to know that Raghunath Girls' Post Graduate College, Meerut is bringing out the College magazine **"SAURABH"**. I firmly believe that this issue of 'Saurabh' will prove to be unique and fulfill its true aim, to inspire and motivate.

The college magazine is a wonderful and useful tool to disseminate knowledge and information. It represents a symbiosis of art, literature, science, learning and philosophy. It not only provides a platform for our students to give expression to their creative writing skills but also highlights the important all round development schemes of the college and outstanding achievements of the teachers and students.

I congratulate the Principal, the editorial team, members of the faculty and students of the college for their commendable effort and extend my good wishes and blessings for all future endeavors.

(Dr. Manmohan Nath)
Honorary Secretary
R.G. (P.G.) College,
Meerut

प्रो० डॉ० निवेदिता मलिक
प्राचार्या

रघुनाथ गर्ल्स (पी० जी०) कॉलेज,
मेरठ (उ०प्र०)

सन्देश/शुभाशीष

देश में आजादी का अमृत महोत्सव बहुत धूमधाम से मनाया जा रहा है और इस पावन बेला पर 'सौरभ' का नूतन अंक एक बार फिर से आपके हाथों में है। हमारा विद्यालय भी 75 वर्ष के अनुभव को अपने आप में समेटे हुए है और निरन्तर विकास के सोपान चढ़ रहा है। पत्रिका का यह अंक विभिन्न विचारों की सुगन्ध से ओतप्रोत है। विचारों की यह सुगन्ध आप सबको एक दिशा प्रदान करे और आप सभी छात्राएं अपने जीवन में मनोनुकूल उन्नति प्राप्त करे मेरी यही मेरी हार्दिक शुभकामना है।

विद्यालय की प्रत्येक छात्रा नारी की प्रतीक है और उसे अपना लक्ष्य प्राप्त करके नारी सशक्तिकरण की नींव को और सुदृढ़ करना है। ज्ञान सबसे बड़ा बल है और आपका विद्यालय और उसकी शिक्षिकाएं इस बल को सशक्त करने में अपना पूरा योगदान देती हैं। यही ज्ञान आपको जीवन में उन्नति के शीर्ष पर ले जाता है और आप अपने प्रयासों से समाज का हित करती है। आपके इस प्रयास से समाज का विकास होता है और समाज के विकास से राष्ट्र का विकास होता है। राष्ट्र का विकास ही हम सबका गौरव है जो हमें विश्व पटल पर एक अलग पहचान बनाने में सहायता करता है।

मैं उन सभी के प्रति आभारी हूँ जिन्होंने छात्राओं को ज्ञान की प्राप्ति हेतु सदैव उत्प्रेरित किया। 'सौरभ' के नूतन अंक को आजादी के अमृत महोत्सव व कॉलेज के 75 वर्ष पूरे होने की पावन बेला पर अतिशीघ्र प्रकाशित करने में जो भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहयोग दिया उसके लिए उन सभी को धन्यवाद देती हूं। मुझे प्रसन्नता है कि एक बार फिर आप सब इस पावन बेला पर ज्ञान-सुगन्ध को 'सौरभ' के रूप में छात्राओं तक पहुंचाने मे सफल हुए।

'सौरभ' को आपके हाथों में सौंपते हुए आप सबसे यह आशा रखती हूँ कि आप सब छात्राएं अपने-अपने क्षेत्र मे अपने अभूतपूर्व प्रयासों से समाज व देश के विकास में योगदान देकर अपने विद्यालय को गरिमा प्रदान करेंगी। आप सब लोग अपने जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करें, मेरी हार्दिक शुभकामना और शुभाशीष आप सबके साथ है।

प्रो. डॉ० निवेदिता मलिक
प्राचार्या

अनुक्रमणिका

हिन्दी विभाग

संस्कृत विभाग

ENGLISH SECTION

COLLEGE STAFF PHOTOS

कॉलिज की विभिन्न गतिविधियाँ

OUR PRIDE

COLLEGE FACULTY AS PRINCIPAL POST

सेवानिवृत्त साथी बहनें

हिन्दी विभाग

सम्पादकीय

देश को आजाद हुए 75 वर्ष होने की खुशी में आजादी का अमृत महोत्सव बहुत धूमधाम से मनाया जा रहा है। यह तभी सम्भव हो पाया है जब स्वतन्त्रता के यज्ञ में बलि देने वाले हमारे अमर शहीदों ने अपना अविस्मरणीय योगदान दिया है। यदि उस समय ऐसा नहीं होता तो हम सभी सबसे बड़े लोकतन्त्र के रूप में प्रचलित अपने भारत देश में विकास और सुख-समृद्धि की एक स्वतन्त्र श्वास की कल्पना भी नहीं कर पाते।

'सौरभ' का यह अंक आजादी के अमृत महोत्सव को समर्पित है। देश में प्रतिदिन हो रहे विकास में शिक्षा का योगदान सर्वविदित है। शिक्षा ज्ञान सहित योग्यता बढ़ाती है। ज्ञान व योग्यता जीवन में आगे बढ़ने और सफलता प्राप्त करने हेतु परम आवश्यक है।

विद्यालय में आने वाली प्रत्येक छात्रा जब शिक्षित होगी तो अपनी शिक्षा के बल पर प्राप्त योग्यता से देश व समाज को विकास के पथ पर आगे ले जाने में अपना अमूल्य योगदान दे सकेगी। शिक्षित छात्राओं का यह योगदान ही भारत के नाम को विश्वपटल पर स्वर्णिम अक्षरों से अंकित कर सकता है। यह परम सत्य है कि शिक्षा और कर्म दो ऐसे स्तम्भ हैं जो हमें जीवन में उन्नतिशील, समृद्ध और विकसित होने में भरपूर सहयोग देते हैं। शिक्षक से अच्छा ज्ञान वही अर्जित कर सकता है जो विनम्रता, धैर्य और कृतज्ञता को अपना साथी बना लेता है। यहां यह भी स्मरणीय है कि यदि आपके पास ये तीनों हैं किन्तु जिज्ञासा नहीं है तो आप कभी भी ज्ञान नहीं बढ़ा सकते हैं। किसी शिक्षक के पास जब आप मस्तिष्क को रिक्त करके पूर्ण जिज्ञासा सहित समर्पण भाव से प्रश्न पूछते हैं तो आपको उत्तर सहित भरपूर ज्ञान मिलता है और इसके विपरीत जब आप जिज्ञासा व समर्पण के बिना भरे मस्तिष्क सहित शिक्षक के पास अधिक ज्ञानी बनकर जाते हैं तो आप कुछ भी नया और उपयोगी ज्ञान नहीं पा पाते हैं। विद्यालय की सभी छात्राएं देश मे होने वाले भावी विकास की शक्ति हैं और अपनी यह शक्ति आप शिक्षा के द्वारा ही बढ़ा सकती हैं। अच्छी शिक्षा अच्छी सोच प्रदान करती है और अच्छी सोच अच्छे साहित्य की जननी है। अच्छा साहित्य सदैव संस्कृति और सभ्यता को विकसित करता है।

हमारी यह पत्रिका 'सौरभ' साहित्य, कला, विज्ञान और वाणिज्य का समिश्रण है। इसमें उन रचनाओं को संकलित किया गया है जो वर्तमान समय के भारत का चरित्र सबके समक्ष प्रस्तुत कर आजादी के अमृत-महोत्सव में अपना योगदान देते हुए मानव मूल्यों को विशेष रूप से स्थापित करेगी।

मेरी हार्दिक इच्छा है कि विद्यालय की प्रत्येक छात्रा शिक्षित नागरिक बनकर देश में इतना विकास करे कि देश आजादी के 'अमृत-महोत्सव' को मनाने के बाद आने वाले वर्षो में विश्वगुरू के रूप में विश्वपटल पर अपना नाम अंकित कर सके।

मैं सम्पूर्ण संपादक मंडल की ओर से उन सभी के प्रति आभारी हूँ जिन्होंने इस महती प्रयास को पूर्ण करने में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान किया। मैं प्राचार्या प्रो० निवेदिता कुमारी जी की विशेष रूप से आभारी हूँ जिनकी प्रेरणा एवं सहयोग से यह महती कार्य पूर्णता प्राप्त कर सका।

'सौरभ' का यह अंक आपके हाथों में सौंपते हुए पूर्व की भांति आप सबसे यह आशा रखती हूँ कि आप लोग अपने अनमोल सुझाव अवश्य देंगे जिससे भावी अंक आप सबके सुझावों के अनुरूप प्रकाशित होकर सभी छात्राओं को उचित मार्गदर्शन दे सके। सुझावों की प्रतीक्षा में...!

(डॉ. कंचन पुरी)

नारी विमर्शः एक अवलोकन

डॉ० कंचन पुरी
(हिन्दी विभागाध्यक्षा)

क्या सच में महिलाएँ अशक्त हैं? क्या महिलाओं को अशक्त बनाये जाने के पीछे निहित स्वार्थों के तहत कोई षडयंत्र तो नहीं। मानव सभ्यता जब से पृथ्वी पर पनपने लगी तभी से "बलशाली को ही अधिकार" के सिद्धान्त को अपनाते हुए पुरुषवर्ग ने अपने शारीरिक सामर्थ्य का लाभ उठाते हुऐ महिलाओं पर अपना आधिपत्य स्थापित करते हुए उसे दूसरी श्रेणी में ला खड़ा किया। धीरे-धीरे नारी ने उसे अपना भाग्य या नियति समझ स्वीकार कर लिया। भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में महिलाओं के प्रति भेदभाव और शोषण की नीतियों का कई शताब्दियों से बोल-बोला रहा है। इतना अवश्य है कि मापदंड की रीतियाँ भिन्न-भिन्न हैं। सीता से लेकर द्रौपदी तक पुरुष सत्तात्मक मानसिकता को झेलना पडा है। प्रत्येक युग में पुरुष के वर्चस्व का मूल्य नारी ने चुकाया है या उसे चुकाने पर विवश होना पड़ा है। तभी तो ढोल, गंवार, शुद्र, पशु, नारी ये सब ताडन के अधिकारी और नारी तेरी यही कहानी आँचल में दूध आंखों में पानी जैसी रचनायें रची गईं। वैदिक काल में हमारे देश में जिस नारी को पूज्यनीय माना जाता और उसे पुरुष सदृश सम्मान दिया जाता था, मातृ देवो भवः कहा जाता था। कालान्तर में उस नारी-सम्मान का, उसकी दिशा और दशा का किस तरह पतन हुआ.....!! ऐसा क्यों हुआ? मुगल काल में मुगल शासकों का आतंक इस तरह अपना सिर ऊंचा कर बैठा कि नर ने नारी को इस आंतक से बचाने के लिये पर्दा-प्रथा का चलन किया। पति की मृत्यु के बाद सती बनने की प्रथा आयी और देखते-देखते कुप्रथाओं की बाढ़-सी आ गई.....!! जो नारी चूल्हे से चौपाल तक जा सकने में शक्तिमान थी वह दहलीज लाँघने को भी लाचार हो गई.....!! यह सर्वविदित है कि मातृत्व के आँगन में ही हमारे व्यक्तित्व का विकास होता है। मां ही बच्चे की प्रथम शिक्षिका होती है। शर-शैया पर लेटे हुए भीष्म-पितामह ने अंतकाल में पांडवों को राजनीति का पाठ पढाते हुए यह शिक्षा दी थी कि किसी राजा की कुशलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसके राज्य में महिलाओं का सम्मान कितना होता है? इसीलिए आज महिला सशक्तिकरण सरकार की उपलब्धियाँ का सार्थक मापदंड बना हुआ है। वर्ष 2011 में इंदिरा गांधी शांति पुरस्कार प्रदान करते समय भारत के पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने कहा था कि राष्ट्र की आर्थिक गतिविधियों में महिलाओं की उचित भागीदारी के बिना सामाजिक प्रगति की अपेक्षा रखना तर्क संगत नही होगा। जहां-जहां महिलाओं की व्यापार एवं कॉरपोरेट संसार में महत्वपूर्ण भागीदारी रही है (एक संयुक्तराष्ट्र के सर्वेक्षण के अनुसार) वहां लगभग 53% अधिक लाभांश और 24% अधिक बिक्री पाई गई है। लेकिन चंद महिलाओं को ऊँचाई पर देखकर, हम उन अशिक्षित महिलाओं के बढ़े हुए प्रतिशत को नजर अंदाज नहीं कर सकते जो आज भी कुपोषण की शिकार हैं, घरेलू हिंसा और तानाकसी से तार-तार हो रही हैं, दहेज के लिये जलाई जा रही हैं, बेटी को जन्म देने के निर्णय के लिये भी वे पुरुष पर निर्भर हैं। वस्तुतः महिला सशक्तिकरण से तात्पर्य यही है कि महिला को आत्म-सम्मान दिया जाए, उसे आत्मनिर्भर बनाया जाए और उसके अस्तित्व की रक्षा की जाए। 08 मार्च को महिला दिवस मनाकर या कानून या अधिनियमों को बनाकर महिला सशक्तिकरण नहीं हो पाएगा। सरकार महिलाओं को अधिकार तो दे सकती है पर जब तक अपनों की सोच में परिवर्तन नहीं आएगा या वे स्वयं में परिवर्तन नहीं लाएँगी तब तक उनका चूल्हे से चौपाल तक आने का मार्ग सरल नहीं होगा। जब समाज में सामाजिक, पारिवारिक और वैचारिक परिवर्तन आएगा तभी महिलाओं की समस्याएँ कुछ कम हो पाएँगी क्योंकि आज सिर्फ पुरुष ही दोषी नहीं है वरन् महिलायें भी दोषी हैं। एक बहू आज भी अपने ही घर में अपनी सास-ननंद से ही प्रताड़ित होती है। आज बहू, बेटी, बहन अपने घरों में सुरक्षित नहीं हैं।

ये प्रताड़ना आज से नहीं सदियों से चली आ रही है। महाभारत काल में अपने ही देवर दुशासन के हाथों द्रौपदी का चीर-हरण भरी सभा में कुटुंब के महानुभावों और खुद के सशक्त पाँच पतियों के सन्मुख हुआ था। जब कभी भी हमारे देश में महिला सशक्तिकरण की चर्चाएँ होती हैं तब आर्थिक और राजनैतिक उत्थान की ही बातें होती हैं। इसी कारण आज हम एक पढी-लिखी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर महिला को हर तरह से। सशक्त और सफल मान लेते हैं। पर क्या महिलाओं का सशक्तिकरण आर्थिक रूप से सक्षम हो जाने से हो पायेगा? कतई नहीं...। ये सही है कि वे कामकाजी तो बनी हैं, पर अपने घर वापस सुरक्षित पहुँचने

की गारंटी क्या उन्हें मिल पाई है? महिलाओं का राजनैतिक उत्थान बताने हेतु हमारी सरकार ने ग्रामीण महिलाओं को सरपंच तो बना दिया, पर वे सरपंच महिलायें अपने ही पुरुषवर्ग के हाथों की कठ्पुतलियाँ ही बन रही हैं।

जब तक महिलाओं का सामाजिक, वैचारिक एवं पारिवारिक रूप से उत्थान नहीं होगा तब तक महिला सशक्तिकरण का ढ़ोल पीटना एक खेल मात्र ही बना रहेगा। सामाजिक उत्थान का आधार स्तंभ है **नारी शिक्षा।** शिक्षित व्यक्ति ही अपनी समानता और स्वतंत्रता के साथ-साथ अपने कानूनी अधिकारों का बेहतर उपयोग कर सकता है। अपने आत्मसम्मान की रक्षा करके अपमानित होने से बच सकता है। हमारे भारतवर्ष में महिला-शिक्षण का प्रतिशत बहुत कम है, क्योंकि हमारे देश के शासन में बैठे मनु वंशज ये नहीं चाहते थे कि महिला शिक्षित हो। वे जानते थे कि अगर नारी को शिक्षित होने देंगे तो वह अपना भला-बुरा समझ जाएगी। उन्हें इस बात का भय था कि घर को सही ढंग से चलाने वाली नारी कहीं हमें ही न चला बैठे। जब-जब नारी को अवसर मिला है, उसने तब-तब अपनी शक्ति का परिचय दिया है।श्रीमति पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी, पूर्व पुलिस कमिश्नर श्रीमति किरन बेदी, आई० सी० आई० सी० बैंक की निदेशक सुश्री चंदा कोचर आदि इस के उदाहरण हैं।

यह एक मिथ्या सोच है कि महिला सशक्तिकरण से पुरुषों के अधिकारों का हनन होगा। सशक्तिकरण अधिकारों का विभाजन नहीं बल्कि परिस्थितियों और मापदंडों के सुधार का पर्यायवाची है। यदि महिलाओं की स्थिति में सुधार होगा तो पुरुष की स्थिति में कई गुणा अधिक प्रगति की राह पर अग्रसर होती दिखेगी। नारी को दुर्गा का रूप माना गया है जो शेर पर सवार है और उसके हर हाथ में अस्त्र-शस्त्र है, वह महिषासुर मर्दनी है और शिव की शक्ति है। शिव शक्ति बिना अधूरे हैं। नारी नर की शक्ति ही है तभी तो उसे अर्धांगनी माना जाता रहा है। यदि ये सकारात्मक सोच को सामने रखेंगे तभी महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिल पाएगा।

स्वतंत्रता के पूर्व की बात को न लें और सिर्फ उसके बाद के वर्षों पर ध्यान दिया जाए तब ही हम समझ पायेंगे कि स्वतंत्रता के छः दशकों के बाद भी नारी का सशक्तिकरण क्यों नही हो पाया? कानून तो बहुत बनें....!! आजादी के बाद हमारे संविधान के निर्माण के समय हिंदू कोड बिल की भी बात उठी थी। इस बिल को सामाजिक विधि-विधान को सामने रख बनाया गया था।

दुर्भाग्यवश कुछ स्वार्थों के चलते पारित नहीं हो पाया था। उसके बाद 1974-78 में पंचवर्षीय योजना के तहत् महिलाओं की परिस्थिति में सुधार लाने के लिये कानून बनाये गये जो काफी सक्षम भी थे.... पर सुधार हो पाया? नहीं। फिर 1990 में राष्ट्रीय महिला आयोग का गठन किया गया। 2009-11 में सात सूत्रीय कार्यक्रमों के तहत् बहुत-सी बातों को आगे रखा गया, सुरक्षित मातृत्व, समान पारिश्रमिक इत्यादि कई महिला उत्थान को ध्यान में रख नियम बनाए गए थे। वर्ष 2010 में 'मिशन पूर्ण शक्ति' की स्थापना भी हो गई, पर परिणाम क्या हुआ?

वर्तमान में भी महिलाओं को घरेलू हिंसा का सामना करना पड़ रहा है। आज भी कार्यस्थल पर उन्नति के लिये पक्षपात को झेलना पड़ रहा है। महिलाएँ घर व बाहर यौन शोषण का शिकार बनते देखी जा रही हैं। उसे शिक्षा से वंचित रखा जा रहा है और सबसे दुःखद तो ये है कि आज भी निर्भया, कामिनी, लज्जा कुछ विकृत मानसिकता वाले भेड़ियों के कुकर्म का शिकार बनती देखी जा रही हैं और चौराहों पर उन के शील का हनन किया जा रहा है। क्या इसे हम नारी सशक्तिकरण मान लें? क्या कानून बनाकर भी हम नारी अस्मिता को नीलाम होने से रोक पाये? नहीं! ऐसा क्यों है? पुरुष समाज ने समझदारी से अपनी कथनी और करनी को अलग रखना सीख लिया है। ये भी उतना ही सच है कि जब-जब अति ने सिर उठाया है, उसका तब-तब नाश ही हुआ है। जब कभी धर्म पर अधर्म हावी होने लगता है तो क्रांति का जन्म होता है। शायद इसीलिये दिल्ली के गैंगरेप की घटना ने सोये हुए देशवासियों को जगा दिया। प्रशासन में बैठ जनता के हित के ठेकेदारों को चुनौती दे डाली। हमें कानूनों की बैसाखियों का सहारा तो लेना है पर साथ-साथ अपने आप को शिक्षित कर, खुद के अस्तित्व को भी ऊपर उठाना है। अपने आत्मसम्मान को बनाए रखना है। आत्म निर्भर हो आत्मरक्षा के लिये तैयार होना है। मानसिक तौर पर भले ही महिलाएँ सशक्त हैं, पर शारीरिक रूप से भी उसे सशक्त बनना होगा तभी सही अर्थों में वे अपने सशक्तिकरण को सही दिशा दे पाएँगी।

❁✪❁

झाँसी की रानीः भारतीय वीरांगना

डॉ० सुनीता
(एसो० प्रोफेसर-हिन्दी)

कार्तिक बदी चौदह सम्वत् 1891 अर्थात् 11 नवम्बर सन् 1836 को काशी में बाजीराव पेशवा द्वितीय के कृपापात्र मोरोपंत के घर में एक कन्या का जन्म हुआ, जिसका नाम रखा गया-मनुबाई। बाजीराव उसे प्यार से बुलाते थे–छबीली। कन्या मनुबाई रूप सौन्दर्य की स्वामिनी, कुशाग्र बुद्धि, होनहार लेकिन बालिका जैसा कोई शौक नहीं। बाल्यावस्था से ही राष्ट्र के प्रति प्रेमभाव, आत्मसम्मान एवं आत्मविश्वास का भाव तथा महान आदर्शों की ओर उन्मुख वह बालिका एक अद्‌भुत व्यक्तित्व की स्वामिनी बनती चली गई। जिस अवस्था में छोटी बालिकायें गुड़ियों का ब्याह रचाने का स्वांग रचती हैं, उस अवस्था में मनु में थी–मलखम्ब, कुश्ती, तलवार तथा बन्दूक चलाना, घुड़सवारी, पढ़ना-लिखना आदि सभी में निपुणता प्राप्त करने की अदम्य ललक। उसमें न तो दबान थी और न ही किसी प्रकार का संकोच। अर्जुन और भीम की कहानियों ने उसकी कल्पना में एक अस्पष्ट और अदम्य गुदगुदी दे रखी थीं, जो बाल्यावस्था से ही एक निश्चित उद्देश्य लेकर चली, जिसके मन में वीर पुरुषों की गौरव-गाथायें प्रारम्भ से ही भर रही थीं, जो जीजाबाई और सीता बनने के स्वप्न देख रही थी, वही मनुबाई विवाह के बाद बनी-रानी लक्ष्मीबाई और बाद में वही बनी–झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई क्योंकि उसका विवाह हुआ, झाँसी के राजा गंगाधर राव के साथ।

पेशवा बाजीराव प्रथम ने शिवराज भाऊ को झाँसी के राज्य की व्यवस्था सौंपी थी। शिवराज भाऊ के तीन पुत्र हुए– कृष्णराव, रघुनाथ राव, गंगाधर राव। भाऊ के बाद कृष्णराव ने शासन सँभाला, कृष्णराव के बाद उनके पुत्र रामचन्द्र राव ने और रामचन्द्र राव की हत्या हो जाने पर उनके चाचा रघुनाथ राव ने राज्य सँभाला। इनके बाद गंगाधर राव राजा हुए। इस समय राज्य में बड़ी अव्यवस्था थी। उस पर अत्यधिक कर्ज चढ़ गया था। राज्य को कम्पनी सरकार ने 'कोर्ट ऑफ वार्ड्स' के अधिकार में दे दिया। गंगाधर राव के विवाह के उपरान्त ही उन्हें शासनाधिकार मिले।

राजा गंगाधर राव ललित कलाओं के प्रेमी और बड़े रसिक स्वभाव के व्यक्ति थे। नाटक का उन्हें विशेष शौक था। वे अत्यन्त क्रोधी, पुरातनपंथी एवं स्त्री स्वाधीनता के विरोधी थे। विवाह के उपरान्त रानी लक्ष्मीबाई राजा की कमजोरियों से अवगत होकर अपने अन्दर परिवर्तन लाने की चेष्टा करती लेकिन पति के कला और विलासप्रिय स्वभाव के साथ तालमेल नहीं बैठा पाती। धीरे-धीरे बड़े संयम के साथ अपने दाम्पत्य जीवन की कटुता को समाप्त करती है। पति के कार्यों में हाथ बँटाना आरम्भ करती है और फिर से किले के अन्दर ही घुड़सवारी तथा अस्त्र-शस्त्र चलाने का अभ्यास प्रारम्भ कर देती है। पति के देहावसान से विचलित होकर अपनी नारी सुलभ प्रवृत्ति का परिचय देती है। जब उस पर नाबालिग राजकुमार का दायित्व आ पड़ा तो उसने अपने शक्ति रूप को दिखाया। उस समय वह तुरन्त झाँसी की बागडोर सँभालकर संचालन करने में गौरव का अनुभव करती है।

इतिहास पढ़ने पर पता चलता है कि रानी अंग्रेजों के विरुद्ध नहीं थी। वास्तव में रानी अंग्रेजी शासन की निष्ठुरता से क्षुब्ध थी। उसे अपनी पेंशन से पति का ऋण चुकाना पड़ा था। उसके दत्तक पुत्र को जब अंग्रेजों ने स्वीकार नहीं किया, जब गौ वध की छूट दे दी गई, जब लक्ष्मी के मंदिर को दान में दिये गये दो गाँवों पर लगान लगा दिया, तो रानी अंग्रेजों की कट्टर शत्रु हो गई।

अंग्रेजों को भारत से निकालकर बाहर करने के उद्देश्य से वह तात्या टोपे और नाना के सहयोग से देश की वास्तविक स्थिति से अवगत होती है। अंग्रेजों के विरुद्ध जनमत तैयार कर शक्ति संगठित करती है। उसे जनता की शक्ति पर पूर्ण विश्वास है। झाँसी के राज्य को ही वह अपने देश नहीं समझती बल्कि समूचा भारत देश उसका अपना देश है। झाँसी उसके अहं की सीमा नहीं, वरन् वह व्यापक आत्मविकास का साधन है। उसके व्यक्तित्व और जनवादी दृष्टिकोण से अन्तःपुर की दासियाँ एवं झाँसी की स्त्रियाँ भी प्रभावित होती हैं। रानी स्त्रियों के विकास और सर्वांगीण उन्नति की पक्षधर ही नहीं थी वरन् उन्होंने समाज की गलित मान्यताओं को चुनौती दी तथा प्रस्तुत समस्याओं का समाधान किया। दासियाँ उसकी दासियाँ नहीं वरन् हमउम्र सखियाँ थी। वह सामान्य में विशिष्ट का दर्शन कर और करा सकती थी, तभी तो मोतीबाई जैसी वेश्या हँसते-हँसते अपने प्राणों को न्यौछावर कर देती है। रानी लक्ष्मीबाई नारी की सर्वांगीण शक्ति की प्रतीक है।

रानी लक्ष्मीबाई भारतीय स्वातन्त्रय संग्राम की अग्रणी के रूप में जानी जाती है। वह उस समाज के रूप के अनुसार अबला नहीं थी। उसने झाँसी का राज्य अत्यन्त योग्यता से किया। उसका शासन आदर्श शासन था। उसने अंग्रेजों के विरुद्ध एक नारियों की सेना संगठित की थी, जिसमें स्त्रियाँ जासूसी करती थीं और तोपें सँभालती थीं। वह अपने युग से बहुत आगे निकल चुकी थीं फिर भी उसने अपने युग और समाज को साथ लेकर चलने का भरसक प्रयत्न किया।

रानी लक्ष्मीबाई अपनी झाँसी न देने की शपथ को कभी नहीं भूलती थी। उसके प्रयत्नों से झाँसी के नर-नारियों ने संयुक्त मोर्चे बना लिए थे। डाकुओं के आंतक को समाप्त करने के लिए वह स्वयं आगे बढ़ी और डाकू सागर सिंह को वीरता और चतुरता से पराजित कर उसे जन्म-भर के लिए अपना सेवक बना लिया। वह सच्ची वीरांगना थी अतः धोखे में या कायरता से किसी की हत्या सहन नहीं कर सकती थी। उसने अंग्रेजों की हत्या करने वाले सिपाहियों की नृशंसता को पंसद नहीं किया था। वह अपने सैनिकों से यही कहती थी कि जो लोग अंग्रेजों से डरते हैं, वे हथियार रखकर आराम के साथ अपने घर चले जायें । जो लोग स्वराज्य के लिए प्राण न्यौछावर करना चाहते हों, वे मेरे पास बने रहें।

क्रांति की समर्थिका होन पर भी वह जीवन भर संयम, अनुशासन और संतुलन का परिचय देती रही। किसी भी स्थिति में अनाचार को प्रश्रय नहीं देती। चिन्तन मनन की उसमें अद्‌भुत क्षमता थी। उसकी दूरदर्शिता का लोहा उसके सभी सरदारों और विरोधियों ने माना।

उसकी रुचि अध्यात्म की ओर भी थी। श्रीमद्‌भगवत् गीता पर उसकी अटूट आस्था थी। वह भारतीय धर्म एवं साधना पद्धति में सर्वश्रेष्ठ सिद्धान्त कर्मयोग की उपासिका थी। उसकी साधना बाह्य और आन्तरिक दोनों आयामों पर चलती रही इसलिए वह अंतिम क्षणों तक निर्भय, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं अडिग बनी रही। आत्मा तथा पुनर्जन्म के सिद्धान्त में उसका विश्वास था। नारी-जाति के उत्थान की आकांक्षिणी लक्ष्मीबाई स्वतंत्रता संग्राम में अपने अदम्य साहस का परिचय देती रही।

लक्ष्मीबाई तो स्वातंन्त्र्य संग्राम की ज्वाला जाग्रत करने वाली चिंगारी थी। एवोल्यूशन ऑफ इंडियन कल्चर में प्रो० लूनिया ने लिखा है कि 'सन् 1857 का विद्रोह कोई साधारण उथल-पुथल नहीं थीं, वह एक महान राष्ट्रीय जागरण था। इस विद्रोह का लक्ष्य था– अंग्रेजों का देश से निष्कासन और राष्ट्रीय स्वतंत्रता की प्राप्ति।' इसमें कोई संदेह नहीं कि रानी लक्ष्मीबाई इस विद्रोह में भाग लेने वाली अग्रणी वीरांगना थी। वास्तव में गाँधी जी ने जिस स्वराज्य मंदिर का निर्माण किया उसके भवन की नींव का पत्थर झाँसी की रानी थी।

रानी में अदम्य साहस था, अपूर्व धैर्य था, अनुकरणीय क्षमता थी। किले की मोर्चाबंदी, तोपों का प्रबन्ध, शत्रु पर आक्रमण आदि की घटनायें उस वीरांगना के श्रेष्ठतम रूप को प्रकट करती है। चारों ओर से शत्रुओं द्वारा घिर जाने पर भी वह दृढ़तापूर्वक मोर्चा लेती रही और भयंकर युद्ध, मारकाट तथा पराजय तक में रानी विचलित नहीं हुई, कभी घबराई नहीं, कभी चिन्तित नहीं हुई। इस घोर युद्ध में सैनिक गये, झाँसी गई, रानी गई, सब कुछ गया परन्तु वह अपनी साधना से तनिक भी नहीं डिगी। भारत के स्वतंत्रता-संग्राम में अपनी जीवन-लीला समाप्त कर उस वीरांगना ने इतिहास में अपना नाम सदा के लिए अमर कर दिया। भारत में ही नहीं वरन् विश्व-इतिहास में वीर नारियों के बलिदान के उल्लेख में उसका नाम अग्रणी है। उस वीरांगना का नाम नारी जाति के मस्तक को सदैव ऊँचा रखते हुए वीरता, महानता, पवित्रता एवं संयम की प्रेरणा प्रदान करता रहेगा।

"बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लडी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।"

❁✪❁

गाँधी का सत्याग्रह

डॉ० अपर्णा वत्स
एसोसिएट प्रोफेसर इतिहास विभाग

भारत में महात्मा गाँधी ने एक नए युग का प्रवर्तन किया। विश्व के इतिहास में वह एक ऐसे विचारक व मर्मज्ञ हैं; जिन्होंने व्यक्तिगत एवं सामाजिक दोनों क्षेत्रों में समान रूप से सत्य को कर्म की कसौटी माना। गाँधीजी ने उत्कट चिंतनयुक्त जीवन साधना करते-करते सतयुग की स्थापना के लिए जो रामबाण, अमोघ साधन या शस्त्र पाया, उसे नाम दिया 'सत्याग्रह'। जीवन की सर्वप्रवर्तियों में अहिंसक पकड, अहिंसक स्थापना ही है 'गाँधी का सत्याग्रह'।

सत्याग्रह एक संयुक्त शब्द है जो संस्कृत भाषा के 'सत्य आग्रह' शब्दों की संधि से बना है। इसका सामान्य अर्थ है सत्य पर दृढ़ता। हर स्थिति में सत्य को ही पकड़कर चलना सत्याग्रह है-समत्व की स्थिति, प्रेम की स्थिति, अहिंसा की स्थिति, आकर्षण की स्थिति– स्व की विधायिका शक्ति। यही शक्ति अंहिसा के विराट दर्शन और विषमता को पराजित कर समता की स्थापना में अपने को व्यक्त करती है। भय तथा प्रलोभन से प्रभावित हुए बिना, स्वयं कष्ट सहते हुए केवल अंहिसात्मक उपायों की सहायता से सदैव सत्य पर दृढ़ रहना और 'मनसा-वाचा-कर्मणा' उसी के अनुरूप आचरण करना सत्याग्रह है। गाँधी जी ने सत्याग्रह का यही व्यापक अर्थ स्वीकार किया है और इसी व्यापक अर्थ में पर्याप्त समय तक दक्षिणी अफ्रीका तथा भारत में सत्याग्रह का प्रयोग करते रहे। विश्व के प्रति उनकी सबसे बड़ी देन सत्याग्रह ही है। इससे व्यक्ति की चेतना तथा समाज का हित दोनों सुरक्षित रहते हैं।

गाँधी जी ने सत्याग्रह को सत्य की शक्ति, प्रेम की शक्ति एवं आत्म शक्ति के रूप में परिभाषित किया। राजनीतिक परिवर्तन के अस्त्र के रूप में सत्याग्रह को 'सदगुण की शक्ति' भी माना जा सकता है। गौतम बुद्ध के चार आर्य सत्यों की भाँति सत्याग्रह के भी चार मूल सिद्धान्त हैं–

1. यह निर्विवाद सत्य है कि विश्व में शोषण अन्याय, अत्याचार आदि अनेक बुराइयाँ हैं।
2. इन सभी बुराइयों का निराकरण आवश्यक है क्योंकि इन्हें समाप्त किए बिना विश्व में सुख और शांति की कल्पना भी नहीं की जा सकती।
3. ये बुराइयाँ युद्ध तथा अन्य हिंसात्मक उपायों द्वारा कभी समाप्त नहीं हो सकती। विश्व का दीर्घकालीन इतिहास इस बात का साक्षी है कि युद्ध से और अधिक संघर्ष का तथा घृणा और प्रतिशोध से और अधिक घृणा एवं प्रतिशोध का जन्म होता है।
4. केवल आत्मपीड़न आदि अहिंसात्मक उपायों द्वारा ही संसार से अन्याय, शोषण अत्याचार आदि बुराइयों का अन्त किया जा सकता है। अर्थात् बुराइयों का निराकरण करने के लिए सत्याग्रही की स्वेच्छया कष्ट सहने की क्षमता सत्याग्रह का सर्वाधिक प्रभावशाली अंहिसात्मक उपाय है।

गाँधी जी का मानना था कि सत्याग्रह कर्मयोग की तरह वैज्ञानिक दृष्टि एवं निश्चित अनुशासन पर आधारित है। आध्यात्मिक अन्तर्दृष्टि उसका संबल है। पतंजलि के योगसूत्र में प्रस्तुत 'यंत्रों' को आधार रूप में स्वीकार कर गाँधी जी ने तत्कालीन भारत की ऐतिहासिक, सामाजिक एवं राजनीतिक आवश्यकताओं के अनुरूप 'एकादश महाव्रत' की संकल्पना प्रस्तुत की। 'एकादश महाव्रत' में सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, अस्वाद, ब्रह्मचर्य, अभय, रोटी का श्रम, अस्पृश्यता निराकरण सर्वधर्म समभाव, स्वदेशी निहित हैं। ये व्रत मात्र नैतिक व्रतों का आग्रह नहीं अपितु सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक प्रश्नों पर एक नवीन राजनीतिक सामाजिक संकल्प तथा सकारात्मक, रचनात्मक संस्कृति का आह्वान हैं। उन्होंने वास्तविक धरातल पर सत्याग्रह के विभिन्न प्रयोग असहयोग, सविनय अवज्ञा, धरना, सामाजिक बहिष्कार, हड़ताल आदि रूप में किए। लेकिन इनका प्रयोग करते समय सत्य और अहिंसा को सर्वोपरि रखा।

वास्तव में हिंसा और अशांति से ग्रस्त विश्व के लिए सत्याग्रह एक महान आदर्श है जिसके अनुसार यथा संभव आचरण करना निश्चय ही मनुष्य के लिए श्रेयस्कर होगा। आदर्श की दृष्टि से मानवजाति के लिए गाँधी के सत्याग्रह की उपादेयता निर्विवाद है।

आधी आबादी का सच

डॉ० रजनी श्रीवास्तव

महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया गया है, इसमें महिला साक्षरता स्वास्थ्य व पोषण, स्वच्छता को बढ़ावा देना शिक्षा का सरलीकरण, घरेलू हिंसा की रोकथाम, महिलाओं पर होने वाले अपराध को रोकने, कन्या भ्रूण हत्या रोकने, लिंगानुपात को संतुलित करने, बाल -विवाह पर लगान लगाने का कार्य दिन प्रतिदिन हो रहें हैं। साथ-साथ, महिला उत्थान के लिए सरकार एवं गैर-सरकारी संगठन भी कार्य कर रहें हैं। लेकिन सच्चाई इससे परे दिखती है।

आबदिक श्रमिक संगठन की एक रिपोर्ट में यह बात समक्ष आई कि परिवार में बच्चों और बुजुर्गों का ध्यान रखने जैसे बिना आय वाले घरेलू कार्यों में पुरुषों की तुलना में अधिक सक्रिय रहने से महिलाओं के सामने अच्छे रोजगार के अवसर सीमित हो जाते हैं।

❋ ✪ ❋

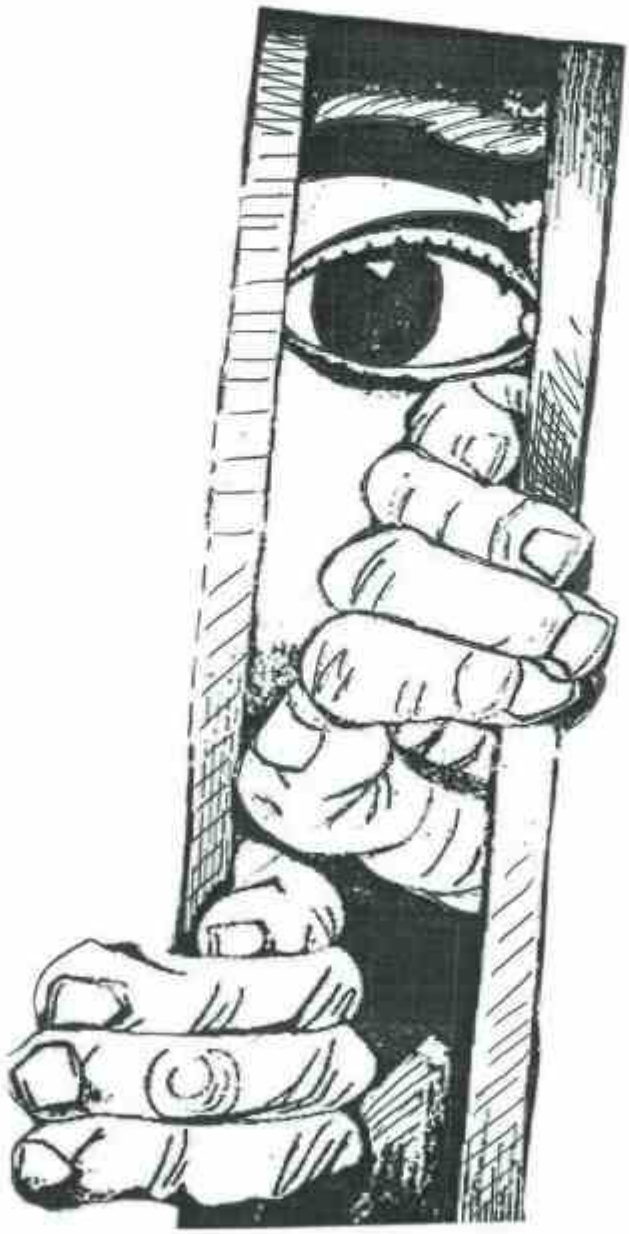

महिलाओं के उत्थान का सच

डॉ० रजनी श्रीवास्तव
एसोसिएट प्रोफेसर (समाजशास्त्र विभाग)
आर० जी० पी० जी० कॉलेज, मेरठ

तहलका के मुख्य सम्पादक तरूण तेजपाल की हरकत को पीड़िता ने 'दुष्कर्म' करार दिया और कहा कि "यह मेरी अस्मिता और अधिकार की रक्षा की लड़ाई है और मेरा शरीर सिर्फ मेरा है न कि नौकरी देने वाले का खिलौना है।"

इसी प्रकार कानून की इंटर्न छात्रा वकील के यौन उत्पीड़न मामले में उच्चतम न्यायालय के सेवा निवृत्त न्यायमूर्ति अशोक कुमार गांगुली का नाम सामने आया है। इस समय जस्टिस गांगुली पश्चिम बंगाल मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष हैं। आश्चर्य व विडम्बना है कि मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष द्वारा मानवाधिकार की धज्जियाँ उडा दी गयीं।

तीसरा मामला कुछ वर्षों पहले घटित हुआ था जिसमें एक माता-पिता द्वारा अपनी बेटी का कत्ल कर दिया गया था और यह हत्याकाण्ड मीडिया और अखबारों की सुर्खियाँ बना था। लम्बे कानूनी दाँव-पेंच के बाद इस हत्यारोपी (डॉ० तलवार) दम्पत्ति को उम्र कैद की सजा विशेष सी० बी० आई० अदालत द्वारा कुछ दिनों पहले ही सुनाई गयी है।

ऐसे और भी कई मामले समाज में घटित हुए जो कुछ दिन अखबारों और मीडिया की सुर्खियों में छाये रहने के बाद धीरे-धीरे खबरों की दुनिया से अदृश्य हो गये। प्रथम दृष्टया ऐसे मामलों में आरोप सिद्ध नहीं हो पाते क्योंकि शक्ति और सत्ता की हनक घटनाओं को दबाने के लिए प्रयासरत रहती हैं। हमारे समाज में ऐसी असंख्य घटनाएँ भी हुई जो संज्ञान में ही नही आ पाते। कुछ को इज्जत के नाम पर जमींदोज कर दिया जाता है और कुछ को प्रशासनिक तंत्र द्वारा। यही स्थिति सभी देशों की है।

भारत में अधिकतर महिलाओं को अपने जनन पर नियन्त्रण की आजादी नहीं है। इसका कारण अज्ञानता, धार्मिक प्रतिबन्ध अथवा पति और घर वालों की इच्छा होती है। इस अधिकार से महिला को वंचित किया जाना उसके स्वास्थ्य एवं आयु पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। यह विडम्बना है कि जैसे-जैसे महिलाओं व बालिकाओं की सुरक्षा के लिए नए कानून बन रहे हैं और प्रशासनिक उपाय किए जा रहे हैं, वैसे-वैसे महिलाओं एवं बालिकाओं के प्रति अपराधों के ग्राफ ऊपर चढ़ रहे हैं। किशोरियों का अपहरण तथा उनके दैहिक शोषण की घटनाएँ बढ़ रही हैं। बाल वेश्यावृत्ति में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है जिसका मुख्य कारण गरीबी है। चिन्ता की बात यह है कि विविध नियमों एवं कानूनों के बावजूद न्यायिक व प्रशासनिक ढांचा उत्पीड़ित महिला को न्याय नहीं दिला पा रहा है। चाहे वह बलात्कार की शिकार महिला हो या दहेज उत्पीड़न की शिकार, जब वह अपने विरुद्ध किये गये अन्याय, अत्याचार या अपराध का प्रतिकार करने या न्याय माँगने के लिए सक्रिय होती है, तो सबसे पहले परिवार के सदस्य ही उसे हतोत्साहित कर देते हैं। कुछ अपवादों को छोड़कर आमतौर पर पुलिस का रवैया भी पीड़ित महिला के प्रति सहानुभूतिपूर्ण नहीं होता। दूर-दराज के गाँव, कस्बों यहाँ तक कि महानगरों में भी अधिकतर महिलाएँ अपने प्रति होने वाले अपराधों के विरुद्ध आवाज भी नहीं उठा पातीं। सरकारी आँकड़ों के अनुसार महिलाओं के विरुद्ध होने वाले अपराधों में निरन्तर वृद्धि हो रही है। शिक्षा के समान अवसर प्रदान किये जाने के बाद भी सामाजिक व पारिवारिक स्थितियों के कारण लड़कियाँ स्कूल जाने से वंचित रह जाती हैं।

लड़कियों को शिक्षा में मुख्य रूप से उन्हें विवाह के लिए तैयार करने पर बल दिया जाता है, न कि समाज और देश की उत्पादक जिन्दगी में पूर्ण भागीदारी के लिए। इस कारण वे सामाजिक प्रक्रिया में प्रभावकारी और दायित्वपूर्ण ढंग से हिस्सा नहीं ले पातीं।

वैसे तो भारत में स्त्रियों की स्थिति में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ। महिलाओं के लिए अब कोई क्षेत्र ऐसा नहीं रहा जहाँ उनकी पहुँच न हो। भारत में महिला राष्ट्रपति, महिला प्रधानमंत्री, विभिन्न राज्यों की महिला राज्यपाल और मुख्यमंत्री लोकसभा-राज्यसभा की महिला अध्यक्ष और उपाध्यक्ष, महिला राजदूत और न्यायाधीश जैसे पदों पर इनकी नियुक्तियाँ हुई हैं तथा और भी अन्य महत्वपूर्ण पदों को महिलाओं द्वारा अब भी सुशोभित किया जा रहा है। भारत में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाली लड़कियों या महिलाओं की संख्या में वृद्धि हुई है। सन् 2001 की जन-गणना के अनुसार महिला साक्षरता दर 54 प्रतिशत थी। भारत में प्रतिवर्ष 1.25 लाख महिलाएँ डॉक्टर बनती हैं तथा कला संकाय की उपाधि प्राप्त करने वाली महिलाओं की संख्या 50 प्रतिशत है। 21 प्रतिशत सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में एवं 25 प्रतिशत इंजीनियर एवं विज्ञान स्नातक महिलाएँ है। संगठित क्षेत्र के कुल कर्मचारियों की 18 प्रतिशत महिला हैं तथा 6.38 लाख गाँवों स 77210 गाँवों की पंचायतों की प्रधान महिलाएँ हैं। पिछले 20 वर्षों में भारतीय महिलाओं ने अपनी स्थिति में अभूतपूर्व परिवर्तन किया है।

भारतीय महिलाओं की ये उपलब्धियाँ जितना सच है, उससे बड़ा सच उनका अंधकारमय पक्ष भी है। यह सारी उपलब्धियाँ शहरी महिलाओं तक सीमित है। मध्यम वर्ग की महिलाओं के चेहरों पर असमानता, शोषण, दमन, अत्याचार की झलक दिखाई देती हैं। महिलाएँ ग्रामीण हो या नगरीय, हर जगह शोषण से पीड़ित हैं। पुरुष प्रधान समाज होने के कारण महिला वर्ग माँ के गर्भ से मृत्यु तक शोषण, दमन, उत्पीड़न का शिकार है। पुरुष महिला विरोधी मानसिकता, सामाजिक व धार्मिक व्यवस्था, सांस्कृतिक तंत्र, अर्थ तंत्र, प्रशासन एवं राजनीतिक व्यवस्था पर वर्चस्व स्थापित किये हुए है तथा अधिकांश महिलाएँ पुरुषों पर निर्भर हैं।

जन-जातीय, दलित एवं पिछड़ी जाति की महिलाओं की स्थिति सम्पन्न वर्ग एवं जातियों की महिलाओं की तुलना में और भी ज्यादा खराब है। पुरुषों की तुलना में महिलाओं के खराब स्वास्थ्य की ओर कम ध्यान दिया जाता है। यहाँ तक कि गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य का भी ध्यान नहीं रखा जाता है जिस कारण मातृत्व मृत्यु दर में भी वृद्धि हो रही है।इसका कारण यह है कि चिकित्सा एवं सामाजिक कारणों का मातृत्व मृत्यु दर से घनिष्ठ सम्बन्ध है। मातृत्व मृत्यु दर अधिक होने से लिंगानुपात में असंतुलन भी उत्पन्न होता है।

राष्ट्रीय महिला आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार देश के 612 जिलों में किये गये अध्ययन के अनुसार आधे से अधिक जिलों में यौन शोषण के लिए नाबालिग लड़कियों, युवतियों एवं महिलाओं की तस्करी की जाती है। सी० बी० आई० की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में रेड लाईट क्षेत्रों में 1.3 लाख से अधिक महिलाएँ वेश्यावृत्ति की शिकार हैं।

महिलाओं के शोषण के लिए अनेक जिम्मेदार कारणों में दहेज प्रथा का भी बहुत बड़ा योगदान है। दहेज प्रथा के कारण महिलाओं की मृत्यु भी बहुत तेजी से बढ़ी है। गृह मंत्रालय की अपराध पंजीकरण शाखा की एक रिपोर्ट के अनुसार सन् 1987 से 1991 के दहेज के कारण हत्याओं में 170 प्रतिशत की वृद्धि देखी गयी है। घरेलू हिंसा के कारण 80 प्रतिशत महिलाएँ प्रभावित हैं। महिलाएँ घर के अन्दर भी सुरक्षित नहीं हैं।

विश्व के सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य में बहुत तीव्र गति से वृद्धि हो रही है परन्तु इस परिवर्तनशील परिवेश में महिलाओं की स्थिति में उतनी तीव्र गति से सुधार नहीं हुआ है। महिलाओं के उत्थान का सच यही है। यदि हम महिलाओं के उत्थान को वास्तविक रूप से देखना चाहते हैं तो हमें महिलाओं के खिलाफ होने वाली सभी प्रकार की हिंसा चाहे वह रीति-रिवाज, सामाजिक परम्पराओं एवं प्रचलित रूढ़ियों से जन्मी हों अथवा वह शारीरिक, मानसिक, घरेलू या सामाजिक हों, इनको रोकने हेतु प्रभावशाली कदम उठाये जाने चाहिएँ।

सामाजिक बदलाव में मीडिया की भूमिका

डॉ० (श्रीमती) मंजु लता
एसोसिएट प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग

संचार मानव-जीवन की आवश्यकता है। मानव की अभिव्यक्ति, उसकी प्रस्तुति का प्रभावशाली रूप है-संचार-माध्यम। इससे मानव की चेतना उद्दीप्त होती है, उसका मार्ग प्रशस्त होता है और मानवता के विकास-पथ पर उसके पग अग्रसर होते हैं। समाज, संस्कृति, साहित्य, दर्शन, धर्म विज्ञान, कला आदि सभी क्षेत्रों के विकास और प्रकटीकरण में संचार माध्यम की उल्लेखनीय भूमिका होती है, और तो और वर्तमान में संचार माध्यम राज-व्यवस्था और सम्पूर्ण समाज के नियामक बन गए है। जिस देश के संचार-साधन जितने अधिक विकसित हैं, उसकी संचार प्रणाली जितनी अधिक सक्षम है, वह आज उतना ही अधिक सशक्त और विश्व को अपनी मुट्ठी में समाने की चेष्टा कर रहा है।

विकास के संदर्भ में सूचना के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता पहले भी महत्वपूर्ण मानी गई थी लेकिन वैश्वीकरण के दौर में मीडिया स्वयं एक बड़ा एजेन्डा बनकर उभरा है। यह माना गया कि विश्व तभी एक बड़ा बाजार बन सकता है जब दुनिया का छोटे-से-छोटा गाँव एक-दूसरे से जुड़ा हो और उपभोक्ता वस्तुओं की जानकारी व्यापक तौर पर उपलब्ध हो। संभवतः यही वजह थी कि पिछले तीन दशकों में एक ऐसी प्रौद्योगिक क्रांति हुई जिसने दुनिया की शक्ल काफी हद तक बदल दी। इस क्रांति को हमने सूचना क्रांति कहा।

आज का युग सूचना क्रांति का युग है। आज सूचना का 'सुपर हाइवे' (उच्च राजमार्ग) का रूपक खड़ा किया जा रहा है, परंतु इस पर कौन, कब, किधर चलेगा? इस प्रश्न को छोड़ दिया जाता है। इस बात पर ध्यान नहीं दिया जाता है कि संचार के नए रूपों के विकास के साथ-साथ कामकाज, सामाजिक संबंध, जीवन-शैली, राष्ट्रीय तथा सांस्कृतिक पहचान पर भी प्रभाव पड़ता है, वर्गों में खाई निरन्तर बढ़ती जाती है। सच्चाई और यथार्थ दूर होते जाते हैं और कृत्रिमता उभरने लगती है।

आज इस परिवर्तन के दौर में जिस तरह जन-संचार माध्यम आम आदमी को प्रभावित कर रहे हैं, उनके चलते आज आदमी की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक प्राथमिकताओं का केनवास बदल गया है। आज संचार क्रांति के बढ़ते प्रभाव ने आम आदमी की उसकी रोजमर्रा की सामाजिक तथा पारिवारिक जिन्दगी से अकेलेपन के हाशिये पर ला दिया है। यह एक त्रासदिक पहलू है, जो आज के आदमी की संचार क्रान्ति द्वारा आहत संवेदनाओं की ओर इशारा करता है।

आज हर क्षण बदल रहे सामाजिक परिवेश में सामाजिक मान्यतायें तथा सामाजिक सरोकार हर पल बदल रहे हैं। नये मूल्यों की सृजना इस समाज को एक नये विश्व समाज में बदल रही है तथा एक नये सामाजिक परिवेश का नया प्रारूप हमारे समक्ष है। जिसमें हम अपनी टूटती हुई परम्पराओं का आईना देख रहे हैं। आधुनिक प्रचार-प्रसार के माध्यमों की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका दिखाई दे रही है। इन्हीं माध्यमों द्वारा आज तमाम सम्पूर्ण परिदृश्य बदल गया है। बदलते हुये परिदृश्य में सच तो यह है कि इन प्रसारण माध्यमों की क्रांति ने पूरे विश्व में मानवीय संवेदना के नये सरोकार स्थापित किये हैं तथा पूरे विश्व को एक बन्धुत्व में बाँधने की सार्थक कोशिश की है।

संचार क्रांति आज समाज बदलाव का अभिप्राय बन गई है। इस क्रांति ने आज समूचे विश्व को सिकोड़कर रख दिया है तथा आज के आदमी की जिन्दगी को विभिन्न तरह के परिप्रेक्ष्य में प्रभावित किया है। संचार क्रांति आज विश्व जनमत प्रभावीकरण का भी एक शक्तिशाली माध्यम बन चुकी है। इस बदले हुये समाज का चेहरा कैसा होगा, यह तो समय ही बतायेगा परन्तु जो आज आँखों के सामने है उसका सच यही है कि आज संचार क्रांति आदमी के तथा उसके सामाजिक रिश्तों के आर-पार एक नई सीमा रेखा तथा परिभाषा लिख रही है। प्रसारण माध्यमों की बढ़ती हुई सामाजिक घुसपैठ को जिस तरह से इन माध्यमों ने नया दिशा बोध प्रदान किया है, उससे समाज के नये टी०वी० व फिल्म संस्कृति वाले पश्चिमी मूल्यों की होड़-सी लगी दिखाई दे रही है। पिछले दो दशकों से जिस तरह से दृश्य व श्रृव्य आकाशी हमला हमारे यहाँ हो रहा है। उससे पता चलता है कि इन माध्यमों के असर ने किस तरह हमारी सामाजिक-सांस्कृतिक नींव को तथा परम्परा को हिला कर रख दिया है।

आज इक्कीसवीं शताब्दी में टेलीविजन हर आदमी की जरूरत बन गया है तथा आज पूरे विश्व में 80 करोड़ से ज्यादा टेलीविजन सेट उपलब्ध हैं। इसी तरह रेड़ियों, टी०वी० के साथ-साथ ही विश्व संचार क्रांति में सिनेमा की खोज ने भी अपना योगदान दिया। विश्वभर में विगत 100 वर्षों में कुल 3 लाख 80 हजार छोटी बड़ी फिल्में बनीं एवम् अनुमानतः 19 हजार फिल्में सिनेमा के पर्दे नही देख पायीं यानी आधी-अधूरी ही रहकर डिब्बों में बंद हैं। विश्व में लगभग 104 देश है जहाँ फिल्मी गतिविधियां विशेष रूप से लगातार चल रही हैं।

सूचना क्रांति के इन बढते हुए चरणों में इंटरनेट का आना एक चमत्कार की भाँति सिद्ध हुआ है। इंटरनेट का अपना एक मायावी संसार है। इस नेटवर्क में प्रेषित सूचनाएँ छोटे-छोटे टुकड़ो में बँटकर अलग-अलग रास्तों में निश्चित लक्ष्य तक पहुँच जाती है। इंटरनेट की यह व्यवस्था लगभग 1.5 मिलियन लोगों की मेजबान है। इस नेटवर्क की उत्पत्ति 1969 में की गई। भारत में इंटरनेट प्रयोगकर्ताओं की अनुमानित संख्या मार्च 2002 में 10 लाख मार्च 2003 में 18 लाख तथा दिसम्बर 2003 तक 23 लाख हो गई है एवम् वर्ष 2005 तक भारत में इन्टरनेट प्रयोगकर्ताओं की संख्या 83 से भी अधिक पहुँच चुकी थी और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इंटरनेट प्रयोगकर्ताओ की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इस तरह यह बढती हुई आधुनिक संचार क्रांति पूरी दुनिया में तीव्रता से अपना स्थान बना रही है। बदलते सामाजिक परिवेश में इस शताब्दी के दूसरे भाग में झांककर देखें तो पता चलता है कि 1950 के बाद इन संचार-प्रसार के प्रसारण साधनों ने क्रांतिकारी उन्नति के शिखर छुये हैं तथा इक्कीसवी शताब्दी में तो इसने नये विविध प्रयोगों द्वारा नयी महत्वपूर्ण सामाजिक चेतना को जन्म दिया है। आज इन प्रसारण के माध्यमों द्वारा नयी अपेक्षाएँ पैदा हो रही है जिनके बारे में विशेषज्ञ गुप्ता का मानना है कि नौकरी और व्यवसाय के बारे में भी टेलीविजन अपेक्षाएँ बढ़ाने वाला साबित हुआ है। बच्चों का ज्ञान आमतौर से ऐसी नौकरियों और धन्धों के बारे में बढ़ा है जिन्हें सफेदपोश समझा जाता है। फिल्म ऐक्टर, मॉडलिंग, जासूसी और पत्रकारिता का ग्लेमर उन पर छाया रहता है।

सामाजिक विकास में नई दिशा बोध का उदय तो इन माध्यमों के प्रसारण के द्वारा हुआ ही है तथा नई तकनीक द्वारा नये दरवाजे भी खुले हैं, इससे ज्ञान, शिक्षा व चिन्तन के नये आयाम स्थापित किये गये हैं। परन्तु उसके साथ-साथ हमारे समाज को उपभोक्तावादी संस्कृति में लपेटना इन संचार माध्यमों का विशेषकर रेडियों, टी०वी० का सबसे बड़ा कुसंग प्रभाव है, जिसमें उलझकर हमारी युवा पीढ़ी अपने मूल्यों को छोडकर पश्चिमी सांस्कृतिक हाव-भाव में बह गई है। जिस तरह से आज के समाज में बदलाव एवं बिखराव दिखाई दे रहा है तथा वह ध्वस्त होने के कगार पर खड़ा है, उसमें यदि सबसे ज्यादा किसी का योगदान निर्धारित किया जा सकता है तो वह है सूचना के दृश्य-श्रृव्य माध्यमों का आक्रमण और प्रभाव। संचार क्रांति का आज का यह अनूठा संसार इक्कीसवीं शताब्दी में एक तरफ जहाँ सामाजिक सौन्दर्यबोध की नयी परिकल्पना से गुजर रहा है वहीं पर यह संचार क्रांति अपने प्रसारण तथा प्रसार माध्यमों द्वारा सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्रदुषण भी पैदा कर रही है। आज पूरी विश्व स्थिति का मूल्यांकन करें तो पाते हैं कि जिन मानवीय मूल्यों तथा अन्य बातों का प्रचार-प्रसार इस संचार क्रांति के माध्यमों द्वारा हुआ है उससे जन-मानस को महसूस करने का एक नया दिशा बोध भी मिला है। इस तरह जो पहचान संचार क्रांति द्वारा इस सामाजिक धरोहर को मिली है, वह अपने आपमें अछूती है। इसके साथ-साथ यह भी उतना ही महत्वपूर्ण पहलू है कि आज समूचे विश्व में इस संसार क्रांति द्वारा हुये बदलाव के कारण पूरे विश्व में हलचल पैदा हुई है।

प्रसारण माध्यमों अर्थात् टेलीविजन पर अश्लीलता की विकृति किस तरह का प्रभाव डाल रही है, इसके बारे में चर्चा करते हुये निर्माता शत्रुध्न प्रसाद की राय है कि यह सही है कि भारतीय सेंसर बड़े पर्दे पर क्रूरता, हिंसा, फूहड़ता और अश्लीलता के खिलाफ कभी कोई सार्थक कार्यवाही नहीं कर पाया है। कुछ समय पहले सांसदों ने हल्ला जरूर मचाया था। लेकिन तमाम तरह की बहसों-वायदों के बाद स्थिति वही पुरानी है। मसाला फिल्मों ने हर तरह से सेंसर को हमेशा अंगूठा दिखाया है चाहे बल से चाहे छल से। पिछले कुछ वर्षों में केबल टी०वी० भी अश्लील प्रंसगों का धड़ल्ले से प्रसारण कर रहे हैं। छोटे पर्दे का भारतीय घरों में प्रवेश कोई पुरानी घटना नहीं है। पिछले तीन-चार वर्षों में ही यहाँ के लोग स्टार टी०वी०, स्टार प्लस, ए०टी०एन०, जी०टी०एन०, जी०टी०वी०, जैन टीवी, प्राइम स्पोर्ट्स इत्यादि से परिचित हुए हैं, उनमें अश्लील तथा भौंडे कार्यक्रम भी दिखाए जा रहे हैं।

इस संचार तथा प्रसारण माध्यमों द्वारा भारतीय परिदृश्य में अब गाँवों तथा कस्बों को भी इसके आक्रमण से नहीं बचाया जा सकता है। आज गाँव से लेकर कस्बों तक बच्चों से लेकर बूढ़ों तक इसके प्रभाव में अपने रोजमर्रा के जीवन को बदलते हुये परिवेश में देखने पर मजबूर हो रहे हैं। यह सामाजिक परिदृश्य आज एक तरह के विशेष बदलाव के मनोवैज्ञानिक झरोखे को प्रस्तुत करता है। इसके और मुद्दों को विचारें तो पता चलता है कि आज इस प्रसारण माध्यम ने पूरे समाज में बदलती हुई प्रतिस्पर्द्धा में पूर्ण रूप से रिश्तों को तिलांजली दे दी है तथा आज महिलाओं की छवि को जिस तरह से भुनाया जा रहा है वह अत्यन्त बेहूदा और उबाऊ हो चुका है। आज इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने महिलाओं का एक खास प्रतिरूप गढ़ा है, एक ऐसा प्रतिरूप जिसे हमारे देश ने पहले कभी नहीं देखा था। सच पूछा जाए तो इसने एक सुखद भ्रम की स्थिति पैदा की है। ऐसा लगने लगा है कि वर्षों से जिस मुक्ति की महिलाओं को तलाश थी वह मानों अब मिलने ही वाली है पर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर गढ़े गये प्रतिरूप की असलियत क्या है? क्या यह छवि महिलाओं की वास्तविक सामाजिक छवि को प्रतिबिम्बित करती है या फिर यह वह नकली छवि है जो अपनी पूरी चकाचौंध के साथ समाज पर आरोपित की जा रही है। यही कारण था कि धीरे-धीरे छोटे परदे से मध्यवर्ग की वे महिलाएँ गायब हो गयीं जो अपने रोजमर्रा की समस्याओं से जूझने के साथ-साथ अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व की तलाश के लिए संघर्षरत थी।

आम आदमी को इस बढ़ती हुई संचार क्रांति के प्रसारण माध्यमों ने इतना अकेला कर दिया है कि वह बन्द कमरों का आत्म-सम्मोहन कर रहा है। आज इस तेजतर्रार घटनाओं भरी दुनिया में प्रसारण माध्यमों विशेषकर टेलीविजन तथा फिल्मों ने आम आदमी का सारा सामाजिक दायरा तोड़कर रख दिया है। आज वह बन्द कमरे में अकेला बैठकर घण्टों तक टी०वी० के पर्दे के साथ बातें करता है। संचार क्रांति के इस छोटे पर्दे के सम्मोहन में आदमी इतना व्यस्त हो गया है कि आज उसके सामाजिक सरोकार इसी संचार क्रांति की भेंट चढ़ चुके हैं। यह बदलाव तथा आत्म सम्मोहन आज समाज के राजनैतिक आर्थिक तथा सामाजिक स्तर पर भी हुआ है।

दूरदर्शन आज पूरे विश्व में सामाजिक बदलाव और बदलते परिदृश्य का एक पर्याय बन गया है। आज दूरदर्शन सामाजिक रिश्तों की एक नई आधार भूमि भी तैयार कर रहा है। इसी सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया में आज दूरदर्शन उपभोक्तावादी संस्कृति, सामाजिक चेतना, सामाजिक नैतिक मूल्यों में बदलाव की नई भूमिका के अलावा आने वाली सदी में एक नये समाज की सरंचना का आधार भी तैयार कर रहा है। एक तरफ तो दूरदर्शन ने नये सरोकारों को जन्म दिया है, नैतिक मूल्यों को बदलाव की नई प्रक्रिया में ढ़ाला है, उसके साथ-साथ एक नई किस्म की सांस्कृतिक असुरक्षा भी दी है। टी०वी० ने सबसे पहले तो हमारी सामूहिकता नष्ट कर दी। इसने व्यक्ति का वह समय छीन लिया जो वह समाज को देता था। इससे एकाकीपन बढा, लोग एक-दूसरे से कटने लगे। फिर इसने विचार पर प्रहार किया, सोचने की शक्ति कुंद की। दृश्य-श्रृव्य माध्यम के साथ सबसे बड़ी बात यह है कि यह किसी भी विषय को खंड-खंड बांटकर या उसके रेशे-रेशे उधेड़कर दिखाता है, जाहिर है कि इसमें विषय-वस्तु को ग्रहण करने के लिए अपनी कल्पना शक्ति पर बल नहीं देना पड़ता। इस तरह हम देखते हैं कि सामाजिक बदलाव के मूल्यों की एक नई परिभाषा दूरदर्शन ने अपने प्रचार-प्रसार के माध्यमों द्वारा की है। समाज बदलाव के परिप्रेक्ष्य में आज दूरदर्शन नई सदी की ओर नये समाज की परिकल्पना एवं संरचना करने लिए अग्रसर है।

संचार क्रांति के इन विभिन्न आयामों को देखते हुए अन्त में हम यह कह सकते हैं कि आने वाले दिनों में जिस तरह से संचार क्रांति का विस्तार पूरे विश्व को एक ग्लोबल विलेज में तब्दील कर रहा है वह एक तरफा दुनिया को छोटा करने का सपना तो है ही, इसके साथ ही वह आज के आदमी को अपने सांस्कृतिक तथा बदलते हुए सामाजिक सरोकारों की नई भूमिका की ओर प्रेषित करता है। संचार क्रांति के माध्यमों का यह सम्प्रेषण कई स्तरों पर हो रहा है। यह भाषा, संस्कृति, मनोविज्ञान तथा सामाजिक-आर्थिक बदलाव के अलावा आदमी के रहन-सहन तथा रूचियों को भी बदल रहा है तथा आधुनिक दौर में इस बदलाव की सामाजिक प्रक्रिया में इन संचार व प्रसार माध्यमों का वर्चस्व आने वाले समय में और बढेगा तथा यह नये परिवेश में लोगों की सोच को प्रेरित तथा प्रभावित करने के सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों पक्षों में सक्षम होगा।

❁✪❁

"सृष्टि की अनमोल कृतिः" नारी

डॉ० निशा गोयल
असिस्टेन्ट प्रोफेसर हिन्दी-विभाग
रघुनाथ गर्ल्स पी०जी० कॉलेज, मेरठ

वर्तमान समय में नारी ने समाज में जो स्थान बनाया है वह सम्पूर्ण विश्व के सामने, एक आदर्श उदाहरण के रुप में हैं। नारी को उसका सम्मानजनक स्थान दिलाने के लिये अनेक सुधारवादी व्यक्तित्व सक्रिय हुये हैं। जिन्होंने नारी पर किये जा रहे अत्याचारों का विरोध कर उसे शिक्षा, योग्यता व उन्नत पद की प्राप्ति कराई, तभी आज नारी को अधिकार सम्पन्न बनाने के कार्यों में पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त हुई है। हर वर्ष 3 मार्च को महिला दिवस मनाया जाता है।

आज के संदर्भ में नारी उत्थान एवं नारी सशक्तिकरण एक महत्वपूर्ण वास्तविकता है, विचारकों के अध्ययन फलस्वरूप एक प्रमुख बात सामने आती है कि यह आन्दोलन महिलाओं के हर क्षेत्र में समानता के आधार पर उत्थान के लिये जाना जाता है, पर इन बदलावों के पीछे महिलाओं के संघर्ष की दास्ता छुपी हुई है। जिसे महिलाओं ने स्वयं अपने बलबुते पर लड़ी है, आज इसी का परिणाम है-कि महिलाएँ हर क्षेत्र में चाहे वह जंग का मैदान हो, शिक्षा, शोध, अंतरिक्ष विज्ञान, आईटी कम्प्यूटर, राजनीति प्रशासन प्रबंधक आदि है। हर जगह पर उसने अपने आप को साबित किया है और अपनी अलग पहचान बनाई है जिसे हमें बताने की आवश्यकता नहीं है-

"बताया नहीं है उसने
केवल रूप और रंग से
दिखलाया है हमको उसने
अपनी शक्ति अपनी क्षमता के दंग से।"

समाज द्वारा नारी को समानता का अधिकार स्वीकृत करके सरकार ने शिक्षा और योग्यता के क्षेत्र में कदम बढ़ा दिया है। आज गाँव से लेकर शहर तक स्त्री शिक्षा को पूर्ण महत्व दिया जा रहा है। आज समता शिक्षा स्वावलंबन और स्वाधार के सहारे स्त्री ने पुरुष की बराबरी करना सीख लिया है। धीरे-धीरे पुरुष की मानसिकता में भी परिवर्तन आ रहा है, आज की स्त्री को उसके शारीरिक रूप से नहीं, बल्कि विवेकशील मस्तिष्क के माध्यम से पहचाना जा रहा है, समाज के हर क्षेत्र में अपनी बुलन्दी साबित कर एक अलग पहचान बना रही है। दुनिया के हर क्षेत्र में उसकी उपलब्धियों का डंका बज रहा है। और पुरुष दबे मन से ही उसकी उपलब्धियों व योग्यताओं को स्वीकार करने लगा है।

शिक्षा व दक्षता के महत्व पर अगर दृष्टिपात करें तो आज की महिलायें सुदृढ़, आत्मरक्षक व जागरूक होती जा रही हैं, लंदन के एक शोध के जरिये यह ज्ञात हुआ है, कि आज पुरुषों की तुलना में महिलायें ज्यादा जिज्ञासु, सशक्त एवं दृढ़ हैं। आज की महिलायें जागरूकता के साथ-साथ वह दृढ संकल्पी एवं आत्मविश्वास से परिपूर्ण है।

"जीवन की अग्नि में तपकर
व्यक्तित्व निखारा है अपना
पैर भले ही रहे जमीं पर
ख्वाब है छूने को फिर भी आसमां"

बरसों से पड़ी बेड़ियां एक दिन में नही कटती हैं, बदलाव की प्रक्रिया धीमी गति से ही आगे बढ़ती है। असली समतामूलक समाज तो तब बनेगा जब ग्रामीण महिलाओं को भी पुरुष समाज समता का दर्जा पूर्ण रूप से देगा। आज देश में हम जिधर भी दृष्टि डालते हैं तो हम पायेंगे कि महिला सशक्त, दृढ, संकल्प से परिपूर्ण व अपने हक के खातिर पूर्णरूप से तत्पर है।

आज महिलायें विभिन्न पदों पर कार्यरत हैं राष्ट्रपति पद, बैंकिग, वित्तीय सेवा एवं इसके साथ-ही-साथ खेल जगत में भी अपनी अलग पहचान बनाकर एक सशक्त रूप अपने आप को प्रदान किया है। अतः आज की नारी चिलमन से निकलकर चाँद का सफर करना चाहती है और अपने करों से धरती को अभिसिंचित करना चाहती है।

❋ ✪ ❋

रामचरितमानस के ज्ञानी और वैरागी 'राम'

पूजा सरोज
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी-विभाग)
रघुनाथ गर्ल्स पी०जी० कॉलेज, मेरठ

राम जैसा चरित्र इतिहास में दुर्लभ है, जो ब्रह्म के समान समदर्शी, योगी के समान वैरागी चित्त वाला है। राम के लौकिक व्यवहार अलौकिक हैं, इस कारण इनकी कथा गूढ़ है। इसके लिए श्रोता और वक्ता को ज्ञान-निधि होना पड़ेगा, क्योंकि यहाँ ज्ञान-सरिता भी क्षुद्र हो जाती है-

"श्रोता वक्ता ज्ञान निधि, कथा राम के गूढ़।
किमि समुझौं मैं जीव जड़, कलिमल ग्रसित बिमूढ़।।"

तुलसी ने ऐसे निर्मल और सरल चित्त राम के चरित्र को अपने मानस में डाल लिया और दूसरे को लिखकर दे दिया कि मन करे तो सभी अपने-अपने मानस में राम का चरित्र रख लें और तद्नुसार व्यवहृत हों। इसलिए उन्होंने 'रामचरितमानस' ग्रंथ रचा।
सर्वजन उसी एक निर्मल निराकार ब्रह्म की संतान हैं। उसके द्वारा निर्मित संसार में जल, थल, नभ, वन, बीथि, तड़ाग और जल-धर में सभी जीव विचरण करते हैं, तथा नाना प्रकार के चरित्र जीते हुए पुनः 'ज' (जन्म) के बाद 'गत्' (चले) जाते हैं। इस भाँति आपके भीतर स्थित परमात्मा भी आपके माध्यम से 'एकाहम् बहुस्यात्' बनकर सर्वत्र विद्यमान रहता है, जिसे तुलसी ने राम के नाम से अपने मानस में सगुण-निर्गुण दोनों रूपों में प्रस्तुत किया, लेकिन उसकी सत्ता को अभेद रूप से एक माना-

एक अनीह अरूप अनामा। अज सच्चिदानन्द पर धामा।
व्यापक विश्वरूप भगवाना। तेहि धरि देह चरित कृत नाना।

इसी को वेदान्त (सर्व इदं खलु ब्रह्म) कहते हैं।
भगवान श्री कृष्ण गीता में कहते हैं कि-धेनुओं में मैं काम-धेनु हूँ, हाथियों में ऐरावत, मुनियों में कपिल, वृक्षों में पीपल आदि तो वह स्वीकार करते हैं कि मैं सबमें निवास करता हूँ, किन्तु तुम मेरी प्रभुता के बड़े रूप का दर्शन करना चाहते हो तो जहाँ-जहाँ जीव, जन्तु मानव, पशु और पक्षी आदि विशेष सम्पन्न दिखाई दें, तूँ वहीं मुझे समझकर प्रणाम कर लेना। जब हम महामानव और मानव की बात करते हैं तो उसमें राम का नाम चरम पुरुषार्थ के लिए सदैव याद किया जाता रहेगा जो पत्नी हरण के बाद वनवासी का धर्म निभाते हुए अयोध्या से सैनिक नहीं माँगते हैं। उनकी सेना तैयार होती है-वानरों और भालुओं से, जिनके लिए वर्दी, भोजन, आवास और यातायात के संसाधनों की कोई आवश्यकता नहीं होती। ऐसी सेना ही रावण की सेना का विनास कर सकती थी, कि जब राक्षस उन्हें पकड़े तो ये उनके सिर पर सवार हो जायें, उनके ऊपर वृक्ष की डाली गिरा दें, पत्थर फेंक दें, दाँत से काट लें, अर्थात् उनकी दुर्गति कर दें। यह राम के दुनियावी समझ को मानवेतर बना देता है।
एक सामान्य मानव बिना पुल के एक नदी नहीं पार करता, जबकि सागर पार लंका जाकर रावण का वध करना दुष्कर कार्य था, परन्तु राम ने बिना संसाधन के अपने कौशल से विशाल सागर को बाँधकर पिपीलिका के लिए भी आसान बना दिया और लंका-फतह कर डाली। कूटनीति की बात करें तो विभीषण को अपने पक्ष में मिलाना और उससे भेद प्राप्त कर रावण-वध करना मानव-मस्तिष्क की सोच से परे परम् पुरुषार्थी लक्षणों का प्राकट्य ही है।
राम के जीवन के जो प्रारम्भिक क्षण एवं किशोरावस्था से जुड़े प्रकरण हैं वह तो और भी पुरुषार्थ का प्रकटन करते हैं। पिता के आदेश पर एक सामान्य मानव अपनी भूमि का एक छोटा सा टुकड़ा भी नहीं देना चाहेगा, परन्तु महामानव पुरुषोत्तम राम ने अयोध्या का पूरा राज्य ही त्याग दिया और उनके मन में इसका कोई मोह भी नहीं रहा। जो वैराग्य विवशता से उपजा हो वह वैराग्य नहीं होता, परन्तु जो स्वभाव में बसा हो उसकी सराहना तो सुर, नर, मुनि सभी करते हैं। वह माता-पिता की आज्ञा को शुभ मानकर सहज ही स्वीकार, अपनी मातृ-पितृ भक्ति को महामानवीय बना देते हैं, क्योंकि माता-पिता के वचन अनुचित भी लगें तो भी वह उचित फल लेकर ही आते हैं-

"मातु पिता गुरू प्रभु कै बानी,
बिनहिं बिचारि करी सुभ जानी।"

राम जब केवट से मिलते हैं तो उसे सखा का दर्जा देते हैं। जो दुर्दिन का साथी हो, वही सच्चा मित्र होता है। आज एक मंत्री या एक अधिकारी थोड़ी-सी प्रभुता पाकर मदांध हो जाता है, लेकिन अयोध्या का वैरागी राजा वनवासी होने के बाद वन-वासियों का बन्धु बन जाता है। वन को भी पुरुषार्थी विहार बना देता है, बस मन में मनोरमता अबाध हो। राम का पंचवटी निवास प्रमाणित करता

है कि वह जहाँ भी अपनी पर्णकुटी बनाते हैं, वहाँ-वहाँ सुख-समृद्धि की बयार बहने लगती है। प्रेम की मिठास प्रकृति की उजास, चराचर की संज्ञानहीन अलौकिकता का अनुभव कराती है-

**"खग मृग वृंद अनंदित रहहीं। मधुर-मधुर गुंजत छवि जहहीं।
सो बन बरनि न सक अहिराजा। जहाँ प्रकट रघुवीर बिराजा।।"**

वह मायापति है, जिसे संसार की सम्पत्तियाँ कहाँ आकर्षित कर पायेंगी। जब लक्ष्मण श्री राम से कुछ गूढ़ प्रश्न करते हैं कि-ज्ञान वैराग्य, माया, भक्ति, ईश्वर और जीव का भेद क्या है? तो छलहीन लक्ष्मण को श्रीराम ने इनका मर्म इस प्रकार समझाया-

माया- "गो गोचर जहँ लगि मन जाई। सो सब माया जानेहु भाई।"

विद्या- "विद्या अपर अविद्या दोऊ।"

विद्या को राम ने दो प्रकार की बताया। एक 'परा' और दूसरी 'अपरा'। एक माया में फँसाती है (परा) दूसरी माया से उबारती है (अपरा)।

वैरागी कौन है?- "ज्ञानमान जहँ एकउ नाहीं। देख ब्रह्म समान जग माही।

कहिय तात सो परम बिरागी। तृन सम सिद्धि तीन गुन त्यागी।"

अर्थात् वैरागी वह है जिसे ज्ञान का अभिमान नहीं छूता। वह जग को ही ब्रह्म समझता है, जिसके लिए सिद्धियाँ तिनके के समान हैं और तीनों गुणों (सत्, रज, तम्) को त्याग गुणातीत हो गया हो।

जीव कौन है? जो माया, ईश्वर और स्वयं को सम्यक रूप से नहीं जानता उसे जीव कहते हैं-

"माया ईस न आपु कहँ, जान कहिय सो जीव।"

ईश्वर कौन है?- जो बिना भेद-भाव के सबको मोक्ष प्रदान करता है और माया जिसकी प्रेरणा से चलती है, वह ईश्वर है।

"बंध मोच्छप्रद सर्व पर, माया प्रेरक जीव।"

ज्ञान कैसे प्राप्त होता है?- जो धर्माचरण से वैराग्य पाकर योग करते हैं, वे ऐसे योग द्वारा ज्ञान को उपजा पाते हैं जिसे वेद मोक्षप्रद कहते हैं- **"धर्म ते बिरत जोग ते ग्याना। ग्यान मोक्षप्रद वेद बखाना।"**

भक्ति कैसे प्राप्त होती है?- श्री राम लक्ष्मण से कहते हैं कि हे तात! यदि कोई संत मिल जाये और वह अपने अनुकूल हो जाये तो वह भक्ति की प्राप्ति करा देगा-

"भगति तात अनुपम सुखमूला। मिलन जो संत होहिं अनुकूला।"

भक्ति का साधन क्या है?- श्री राम उत्तर देते हैं कि विप्र के चरणों की सेवा अपने स्वभाव, कर्म और अधिकार के अनुसार करनी चाहिए। इससे विषयों से वैराग्य प्राप्त होगा, तब भगवान के प्रति प्रेम उपजेगा और नवधा भक्ति दृढ़ होगी, जिससे मेरी कथा में रुचि पैदा होगी। कथा में रुचि उत्पन्न होने पर आप माता-पिता के सेवक बने जायेंगे। मेरी कथा कहने से पुलकावली रोमांचित हो जायेगी, नयन अश्रु प्रवाहित करने लगेंगे, और इस प्रकार मनुष्य, मन, वचन और कर्म से, कर्म करता हुआ भी अकर्म रहकर मुझे प्राप्त कर लेगा।

इस प्रकार राम के जीवन पर दृष्टि डालें तो उनके जीवन में उपरोक्त सब कुछ मिलता है जो उन्हें समदर्शी, योगी, वैरागी, पुरुषार्थी, मोक्षप्रद और ईश्वर के अवतार की श्रृंखला में बहुत ऊपर खड़ा करता है। राम के वैरागी होने का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है कि अयोध्या का राज्य तो पिता के आदेश से त्यागते हैं, परन्तु लंका नगरी जीतकर भी वहाँ का राजा नहीं बनते, अपितु उसे भी विभीषण को दे देते हैं। जिस सीता के लिए उन्होंने पूरी लंका ही तहस-नहस कर डाली, उसी सीता को त्यागने में उन्हें कोई संकोच नहीं होता। उसी ज्ञानी और वैरागी राम की वंदना गोस्वामी तुलसीदास चातक की भाँति करते हैं। वे कामी भी बनते हैं तो अपने काम्य राम के लिए, और लोभी बनते हैं तो दाम के रूप में राम की चाह के। मानव-जीवन में ऐसे रामचरित के अनुसार माता-पिता, गुरू, बन्धु, सेवक, स्वामी, मित्र आदि सभी से उत्तम व्यवहार रखते हुए जीवन जीने का संदेश दिया। वास्तव में आज का मानव यदि ऐसा जीवन जी सके, 'श्रीरामचरितमानस' के नायक 'राम' की तरह अपने व्यवहार में उतार सकें तो उसके लिए राम सर्वत्र, सब दिन, सभी देश में सुलभ हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं-

**"सबहिं सुलभ सब दिन सब देसा।
सेवत सादर समन कलेसा।"**

प्रसन्नता

डॉ० सुनीता सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर मनोविज्ञान विभाग
रघुनाथ गर्ल्स पोस्टग्रेजुएट कॉलेज

जीवन में प्रसन्नता की अहम भूमिका है। हम सभी अपने जीवन में प्रसन्न रहना चाहते हैं। खुशियाँ पाना चाहते हैं साथ ही अपनों के लिए भी सदैव प्रसन्नता की कामना करते हैं। हमारा मस्तिष्क प्रसन्नता की अवस्था तथा दुखी अवस्था में शारीरिक रूप से अलग-अलग प्रतिक्रिया करता है हम नकारात्मक संवेग, जैसे-गुस्सा, नफरत, ईर्ष्या, चिंता, तनाव आदि में अलग-अलग रूप से शारीरिक अभिव्यक्ति करते हैं जबकि सकारात्मक संदेश जैसे-खुशी, प्रेम, रोमांच, वात्सल्य आदि में हम बिल्कुल अलग तरीके से शारीरिक अभिव्यक्ति करते हैं। केवल अभिव्यक्ति ही नहीं बल्कि इसका प्रभाव भी हमारें शरीर और मन के ऊपर अलग-अलग तरह से पड़ता है। संवेगों की इस प्रवृत्ति के कारण हमारी मनोवृत्ति व्यवहारात्मक शैली, संज्ञानात्मक शैली का विकास होता है और इसी के आधार पर हमारे व्यक्तित्व का निर्माण भी होता है। हम प्रसन्नता के लिए लगातार सकारात्मक घटनाओं के घटने का इंतजार करते हैं और सोचते हैं कि सकारात्मक घटनाएँ हमें प्रसन्नता देंगी। प्रसन्नता का आधार हम बाहरी वस्तु और घटनाओं को बना लेते हैं। लेकिन प्रसन्नता लगातार लंबे समय तक नहीं बनी रहती। विज्ञान हमें ऐसी बहुत-सी छोटी-छोटी क्रियाएँ बताता है जिसे प्रतिदिन करने से हम रोजाना कुछ हद तक प्रसन्नता का अनुभव कर सकते हैं। क्योंकि प्रसन्नता के अनुभव का शारीरिक आधार होता है। शोध दिखाते हैं कि मस्तिष्क में प्रसन्नता को बढ़ाने वाले रसायन का स्राव होता है जिससे हमारा मूड बेहतर होता है हम इन रसायनों को "प्रसन्नता रसायन" (Pleasure Hormone) बोल सकते हैं। हमारे मस्तिष्क में मुख्य रूप से प्रसन्नता से सबंधित चार रसायनों का स्राव होता है।

पहले हॉर्मोन का नाम है **सिरोटोनिन।** यह एक ब्रेन केमिकल है। इसे ही डॉक्टर्स 'फील गुड हॉर्मोन' कहते हैं। सिरोटोटिन इंसान के मूड, भूख, नींद, सीखने की टेंडेंसी और याद्दाश्त संबंधी कार्यों को नियंत्रित करता है। यह हमारी संतुष्टि और आशावादीता से संबंधित है। वास्तव में यह मस्तिष्क के विभिन्न क्षेत्रों में एक मॉड्यूलेटर के रूप में कार्य करता है जिससे शारीरिक संवेगात्मक संज्ञानात्मक और पाचन संबंधी क्रियाओं की अनेक क्रियाओं को शुरू किया जाता है। हमारी अच्छी नींद लाने के लिए भी यह आवश्यक है। इसके निम्न स्तर होने पर प्रतिरोध क्षमता तंत्र कमजोर पड़ने लगता है, साथ ही अनेक मानसिक रोग उत्पन्न होने लगते हैं जैसे विषाद, चिंता और ओ०सी०डी०। खाने-पीने के जिन खाद्य पदार्थों में अमिनो अम्लट्रिप्टोफेन होता है, वे रसायन दिमाग में फील गुड हॉर्मोन सिरोटोनिन के स्तर को बढा सकते हैं। केले में यह अच्छी मात्रा में पाया जाता हैं। सिरोटोनिन बढ़ाने के लिए नियमित रूप से एक्सरसाइज करना भी बहुत जरूरी है। अपनी सामर्थ को ध्यान में रखते हुए व्यायाम करें। दौड़ना, ब्रिस्कवॉक, तैरना, साइकिलिंग करना सिरोटोनिन बढ़ाने में काफी सहायक रहता है।

डोपामाइन को कई मायनों में 'फील गुड' न्यूरोट्रांसमीटर या पुरस्कार हॉर्मोन भी कहा जाता है। दिमाग में डोपामाइन का लेवल सही मात्रा में होने पर मूड आमतौर से बेहतर रहता है ये हॉर्मोन सीखने, योजना बनाने और प्रोडक्टिविटी को बढ़ाने के लिए सबसे अच्छा होता है। ये न्यूरॉन्स के बीच एक केमिकल मैसेंजर का काम करता है हम इसे कुछ प्राकृतिक तरीकों से डोपामाइन के स्तर को बढा सकते हैं। अनेक ऐसी सुखद क्रियाएँ हैं जिन्हें करने से डोपामाइन का स्राव होता है जैसे खाना खाते समय और व्यायाम करते समय आदि। इन क्रियाओं को करने के बाद यह हमें एक पुरस्कार के रूप में प्रसन्नता का अनुभव कराता है। अपने लक्ष्य को छोटे-छोटे चरण में बाँट लें। जब-जब हम अपने लक्ष्य को पूरा करेंगे, मस्तिष्क डोपामिन का स्राव करेगा। इससे कार्य करने का उत्साह बना रहता है। अपनी जीत की खुशी मनाएँ। किसी कार्य में सफलता मिलने पर खुद को बधाई दें। छोटी-छोटी उपलब्धियाँ आपको अच्छा एहसास कराँएगी।

तीसरे प्रकार के प्रसन्नता हॉर्मोन **एंडोर्फिन** होते हैं, वास्तव में एंडोर्फिन प्राकृतिक दुख निवारक और हमारे मूड को अच्छा बनाने वाले बूस्टर होते हैं। हंसते समय, संगीत सुनते वक्त और चॉकलेट खाते समय यह मस्तिष्क में निकलते हैं। यह मस्तिष्क के ओपियेटरिसेप्टर्स पर कार्य करते हैं और शरीर के ओपियेटरिसेप्टर्स को सक्रिय करते हैं और दर्द की अनुभूति को कम करते हैं। इनके स्राव से शरीर में उर्जा और यूफोरिया (अत्यंत प्रसन्नता) जैसी भवनाएँ उत्पन्न होती हैं। नए व्यायाम करना नई मांसपेशियों के साथ एंडोर्फिन हॉर्मोन को सक्रिय करता है।

आक्सीटोसीन हॉर्मोन वो प्रसन्नता हार्मोन है जिसे "लव हॉर्मोन" भी कहते हैं। प्रजनन, सामाजिक संबंध, शिशु के जन्म और उसके बाद महिलाओं को होने वाले मासिक धर्म में ऑक्सीटोसीन महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यह हॉर्मोन हाइपोथैलेमस में उत्पन्न होता है। पिट्यूटरी ग्रंथियों द्वारा जो हॉर्मोन स्त्रावित होता है उसे ही ऑक्सीटोसीन कहते हैं।

इन सभी हॉर्मोंस को हम अपने जीवन-शैली में अनेक सकारात्मक बदलाव लाकर हम अपने शरीर में प्रसन्नता हॉर्मोन के स्राव को बढ़ाकर प्रसन्नता का अनुभव कर सकते है। व्यायाम करना, संतुलित भोजन करना, अपने कार्यों को अपनी पूरी क्षमता के साथ करना, खुद को अच्छी बातें कहना, सामाजिक रूप से खुद को क्रियाशील करना, अपनो के साथ समय बिताना और सबसे महत्वपूर्ण अपना सकारात्मक दृष्टिकोण रखना। इन सभी का अभ्यास समय-समय पर करते रहना चाहिए। इसी से हम अपने मन और शरीर की ऊर्जाओ को संतुलित कर सकते हैं। जीवन बहुत जटिल है और समय-समय पर हमें अनेक चुनौतियों का सामना करना पडता है जिससे जीवन में अनेक दुखद अनुभव और नकारात्मकता उत्पन्न होती है। उन चरणों में हमें मनोवैज्ञानिक रूप से मजबूत होने के साथ-साथ इन सभी अद्‌भुत शारीरिक प्रसन्नता के आधारों का उपयोग करना चाहिए।

❁ ✪ ❁

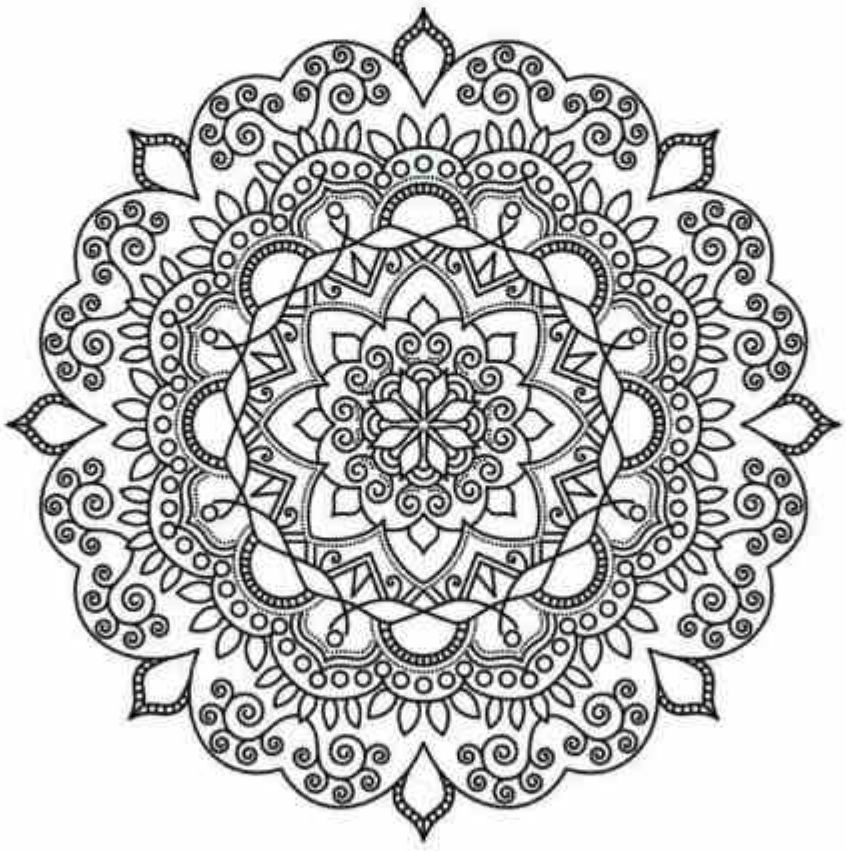

भारतीय संस्कृति का अनोखा स्वरूप

डॉ० रीमा मित्तल
असिस्टेंट प्रोफेसर

स्वभाव की गंभीरता, मन की समता, संस्कृति के अंतिम पाठो में से एक है और यह समस्त विश्व को वश में करने वाली शक्ति में पूर्ण विश्वास से उत्पन्न होती है। अगर भारत के संदर्भ में बात की जाए तो भारत एक विविध संस्कृति वाला देश है, एक तथ्य कि यहाँ यह बात इसके लोगों, संस्कृति और मौसम में भी प्रमुखता से दिखाई देती है। हिमालय की अनश्वर बर्फ से लेकर दक्षिण के दूर-दराज में खेतों तक, पश्चिम के रेगिस्तान से पूर्व के नम डेल्टा तक, सूखी गर्मी से लेकर पहाड़ियों की तराई के मध्य पठार की ठंडक तक, भारतीय जीवन-शैलियाँ इसके भूगोल की भव्यता स्पष्ट रूप से दर्शाती है। एक भारतीय के परिधान, योजना और आदतें इसके उद्भ के स्थान के अनुसार अलग-अलग होते हैं।

भारतीय संस्कृति अपनी विशाल भौगोलिक स्थिति के समान भिन्न-भिन्न हैं। यहाँ के लोग भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोलते हैं, अलग-अलग तरह के कपडे पहनते हैं, भिन्न-भिन्न धर्मों का पालन करते हैं, अलग-अलग भोजन करते हैं किंतु उनका स्वभाव एक जैसा होता है। चाहे कोई खुशी का अवसर हो या कोई दुख का क्षण, लोग पूरे दिल से इसमें भाग लेते हैं, एक साथ खुशी या गम का अनुभव करते हैं। एक त्यौहार या एक आयोजन किसी घर या परिवार के लिये समिति नहीं है। पूरा समुदाय या आस-पड़ोस एक अवसर पर खुशियाँ मनाने में शामिल होता है, इसी प्रकार एक भारतीय विवाह मेल-जोल का आयोजन है, जिसमें न केवल वर और वधु बल्कि दो परिवारों का भी संगम होता है। चाहे उनकी संस्कृति या फिर धर्म का मामला क्यों न हो। इसी प्रकार दुख में भी पड़ोसी और मित्र उस दर्द को कम करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारतीय संस्कृति के बारे में पं० मदनमोहन मालवीय जी का कहना है कि "भारतीय सभ्यता और संस्कृति की विशालता और उसकी महत्ता तो संपूर्ण मानव के साथ तादात्म्य संबंध स्थापित करने अर्थात् 'वसुधैव कुटुंबकम्' की पवित्र भावना में नीहित है।" भारत का इतिहास और संस्कृति गतिशील है और यह मानव सभ्यता की शुरूआत तक जाती है। यह सिंधु घाटी की रहस्यमयी संस्कृति से शुरू होती है और भारत के दक्षिणी इलाकों में किसान समुदाय तक जाती है। भारत के इतिहास में भारत के आस-पास स्थित अनेक संस्कृतियों से लोगों का निरंतर समेकन होता रहा है। उपलब्ध साक्ष्यों के अनुसार लोहे, तांबे और अन्य धातुओं के उपयोग काफी शुरूआती समय में भी भारतीय उप-महाद्वीप में प्रचलित थे, जो दुनिया के इस हिस्से द्वारा की गई प्रगति का संकेत हैं। चौथी सहस्त्राब्दि बा० सी० के अंत तक भारत एक अत्यंत विकसित सभ्यता के क्षेत्र के रूप में उभर चुका था।

संस्कृति के शाब्दिक अर्थ की बात की जाए तो संस्कृति किसी भी देश, जाति और समुदाय की आत्मा होती है।

संस्कृति से ही देश, जाति या समुदाय के उन समस्त संस्कारों का बोध होता है जिनके सहारे वह अपने आदर्शों जीवन-मूल्यों आदि का निर्धारण करता है। अतः संस्कृति का साधारण अर्थ होता है-संस्कार, सुधार, परिवार, शुद्धि, सजावट आदि। वर्तमान समय में सभ्यता और संस्कृति को एक-दूसरे का पर्याय माना जाने लगा है लेकिन वास्तव में संस्कृति और सभ्यता अलग-अलग होती हैं। सभ्यता में मनुष्य के राजनीतिक, प्रशासनिक, आर्थिक, प्रौद्योगिकीय व दृश्य कला रूपों का प्रदर्शन होता है जो जीवन को सुखमय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जबकि संस्कृति में कला, विज्ञान, संगीत, नृत्य और मानव-जीवन की उच्चतम उपलब्धियाँ सम्मिलित हैं।

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। यह माना जाता है कि भारतीय संस्कृति यूनान, रोम, मिस्र, सुमेर और चीन की संस्कृतियों के समान ही प्राचीन है। भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है जिसमें बहुरंगी विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। इसके साथ ही यह अपने-आप को बदलते समय के साथ-साथ ढालती भी आई है।

"यूनान-ओ-मिस्र-ओ-रोमां, सब गिर गए जहाँ से अब तक मगर है बाकी नाम-ओ-निशाँ हमारा,
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, सदियों रहा है दुश्मन दौर-ए-जहाँ हमारा।"

जब से मानव का जीवन अस्तित्व में है तब से वह निरंतर उन मूल्यों की तरफ अग्रसर है, जिनकों प्राप्त कर लेने पर, उसका जीवन व्यवस्थित होने के साथ-साथ 'आत्मिक सौंदर्य' से भी परिचित हो सके। उसकी यह प्रवृत्ति वास्तव में संस्कृति की ओर ही इशारा करती है। भारतीय संस्कृति समस्त मानव जाति का कल्याण चाहती है। भारतीय संस्कृति में प्राचीन गौरवशाली मान्यताओं एवं परंपराओं के साथ ही नवीनता का समावेश भी दिखाई देता है। भारतीय संस्कृति विभिन्न सांस्कृतिक धाराओं का महासंगम है,

जिसमें सनातन संस्कृति से लेकर आदिवासी,

''संस्कृति मन और आत्मा का विस्तार है''

तिब्बत, मंगोल, द्रविड़, हड़प्पाई और यूरोपीय धाराएँ समाहित हैं। ये धाराएँ भारतीय संस्कृति को इंद्रधनुषीय संस्कृति या गंगा-जमुनी तहजीब में परिवर्तित करती हैं।

अगर भारतीय संस्कृति के समन्वित रूप पर विचार करें तो इसमें विभिन्न विशेषताएँ देखने को मिलती हैं। भारतीय संस्कृति में 'अध्यात्म एवं भौतिकता' में समन्वय नजर आता है। भारतीय संस्कृति में प्राचीनकाल में मनुष्य के चार पुरुषार्थों–धर्म, अर्थ, काम, मोटर्स एवं चार आश्रमों-ब्रह्मचर्य, ग्रहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास का उल्लेख है, जो आध्यात्मिकता एवं भौतिक पक्ष में समन्वय लाने का प्रयास है। उल्लेखनीय है कि भारतीय संस्कृति ने अनेक जातियों के श्रेष्ठ विचारों को अपने में समेट लिया है। भारतीय संस्कृति में यहाँ के मूल निवासियों के समन्वय की प्रक्रिया के साथ ही बाहर से आने वाले शक, हूण, यूनानी एवं कुषाण भी यहाँ की संस्कृति में घुल-मिल गए है। अरबों, तुर्कों और मगलों के माध्यम से यहाँ इस्लामी संस्कृति का आगमन इस बिंदु पर विचार करना जरूरी है कि हडप्पाकालीन सभ्यता की परंपराएँ एवं प्रथाएँ आज भी भारतीय संस्कृति में देखने को मिल जाती है'', यथा–मातृदेवी की उपासना, पशुपतिनाथ की उपासना, यांग–आसन की परंपरा इत्यादि। इसके अलावा भारतीय संस्कृति में 'प्रकृति मानव सहसंबंध' पर बल दिया गया है। हमारी संस्कृति मानव, प्रकृति और पर्यावरण के अटूट एवं साहचर्य संबंधों को लेकर चलती है। भारतीय उपनिषदों में 'ईशावास्य इदं सर्वं' अर्थात् जगत् के कण–कण में ईश्वर की व्याप्तता को स्वीकार किया गया है। यहाँ के विभिन्न विचारकों एवं महापुरुषों ने भारतीय संस्कृति को समन्वित रूप प्रदान करने वाले विचार प्रस्तुत कियें है। फिर चाहें बुद्ध, तुलसीदास हो या गाँधी जी इन सभी को भारतीय संस्कृति के नायक के रूप में प्रस्तुत किया गया हैं तथा ये सभी चरित्र भारतीय संस्कृति को समन्वित स्वरूप देते हैं। भारत की विभिन्न कलाओं, जैसे-मूर्तिकला, नृत्यकला, चित्रकला, लोकसंस्कृति इत्यादि में भारतीय संस्कृति के समन्वित स्वरूप को देखा जा सकता है। विभिन् न धर्म, पंथो एवं वर्गों के लोगों का नेतृत्व इन कलाओं में दृष्टिगोचर होता है, जैसे–मध्यकाल में इंडो-इस्लामिक स्थापत्य कला और आधुनिक काल में विक्टोरियन शैली ।

भारतीय संस्कृति का समन्वित रूप केवल भौगोलिक-राजनीतिक सीमाओं में ही नहीं है बल्कि उसके बाहर भी है। भारत के अंदर बौद्ध, जैन, हिंदू, सिख, मुस्लिम, ईसाई आदि धर्मों के लोग एवं उनके पूज्य–स्थल हैं, जो 'शांतिपूर्ण' सहअस्तित्व को दर्शाते हैं। विदित हो कि संस्कृति का स्वरूप 'साहित्य' में सबसे अधिक समर्थयपूर्ण तरीके से अभिव्यंजित होता है। संस्कृति साहित्य कर प्राण है। साहित्य की विभिन्न विधाओं में संस्कृति के प्रभाव को देखा जा सकता है। यहाँ की संस्कृति के आधारभूत मूल्य दया, करूणा, प्रेम, शांति, सहिष्णुता, लचीलापन, क्षमाशीलता इत्यादि को भारतीय साहित्य में समुचित तरीके से अभिव्यक्ति दी गयी है। भारतीय संस्कृति का यह समन्वित रूप संस्कृति भाषा के माध्यम से रामायण, महाभारत, गीता, कालीदास-भवभूति-भास के काव्यों और नाटकों, के माध्यम से बार–बार व्यक्त हुआ है। तमिल का संगम साहित्य, तेलुगु का अवधान साहित्य, हिंदी का भक्ति साहित्य, मराठी का पोवाड़ा, बंगला का मंगल नीति आदि भारतीय उद्यान के अनमोल फूल हैं। इनकी संयुक्त माला निश्चय ही 'समेकित भारतीय संस्कृति' का प्रतिनिधित्व करती है। तुलसीदास मध्यकाल में भारतीय संस्कृति के समन्वय के सबसे बड़े कवि के रूप में नजर आते हैं।

''स्वपच सबर खस जमन जड़, पाँवर कोल किरात
रामु कहत पावन परम, होत भुवन विख्यात।।''

भारतीयों ने गणित व खगोल विज्ञान पर प्रामाणिक व आधारभूत खोज की। शून्य का आविष्कार, पाई का शुद्धतम मान, सौरमंडल पर सटीक विवरण आदि का आधार भारत में ही तैयार हुआ। तात्कालिक कुछ नकारात्मक घटनाओं व प्रभावों ने जो धुंध हमारी सांस्कृतिक जीवन-शैली पर आरोपित की है, उसे सावधानी पूर्वक हटाना होगा। आज आवश्यकता है कि हम अतीत की सांस्कृतिक धरोहर को सहेजें और सवारें तथा उसकी मजबूत आधारशिला पर खड़े होकर नए मूल्यों व नई संस्कृति को निर्मित एवं विकसित करें।

''जब तक संस्कृति है तब तक आस है, बिना संस्कृति
मानवता का विनाश है।''

❁ ✪ ❁

वर्तमान समय में सोशल मीडिया

श्रीमती नेहा टंडन
(असिस्टेंट प्रोफेसर)

कहा जाता है कि सूचना दोधारी तलवार की तरह होती है। एक ओर इसका उपयोग भ्रम और कहरता फैलाने में किया जा सकता है, तो दूसरी ओर रचनात्मक कार्यों में भी किया जा सकता है। सूचना क्रांति के इस आधुनिक दौर में सोशल मीडिया की भूमिका को लेकर हमेशा सवाल उठते रहे हैं। आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक प्रगति में सूचना क्रांति ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है किंतु सूचना क्रांति की ही उपज, सोशल मीडिया को लेकर उठने वाले सवाल भी महत्वपूर्ण हैं। ये सवाल हैं–क्या सोशल मीडिया हमारे समाज में ध्रुवीकरण की स्थिति उत्पन्न कर रहा है तथा समाज की प्रगति में सोशल मीडिया की क्या भूमिका होनी चाहिये? हम एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जहाँ हम सूचना के न केवल उपभोक्ता है, बल्कि उत्पादक भी हैं। यही अंतर्द्वंद्व हमें इसके नियंत्रण से दूर कर देता हैं। प्रतिदिन कई बिलियन लोग फेसबुक पर लॉग–इन करते है। हर सेकेंड ट्विटर पर ट्वीट किये जाते है और इंस्टाग्राम पर कई तस्वीरें पोस्ट की जाती हैं।

अगर सोशल मीडिया द्वारा ध्रुवीकरण की बात की जाए तो हम पाते हैं कि अतीत में इस संबंध में कई प्रयोग किये गए थे। 1950 के दशक में सामाजिक मनोवैज्ञानिक सोलोमन असच द्वारा मनोवैज्ञानिक प्रयोगों की एक पूरी श्रृंखला की शुरूआत गई थी। ये प्रयोग यह निर्धारित करने के लिये किये गए थे कि बहुमत की राय के आगे किसी व्यक्ति की राय किस प्रकार प्रभावित होती है। इसका यह निष्कर्ष सामने आया कि कोई व्यक्ति सिर्फ बहुमत की राय के साथ शामिल होने के कारण गलत जवाब देने के लिये तैयार था। कुछ लोगों ने अपना उपहास न उड़ने देने के कारण गलत जवाब दिये। यद्यपि 1950 के दशक से संचार का यह स्वरूप विकसित होकर नए रूप में प्रकट हुआ है, लेकिन इसके बावजूद मानव का स्वभाव इसके साथ सामंजस्य बैठाने में सफल नहीं हो पाया। कुछ हद तक यह धारणा ऑनलाइन फेक न्यूज के प्रभाव को भी इंगित करती है, जिसने समाज में ध्रुवीकरण के विस्तार में योगदान दिया है। सोशल मीडिया की साइट्स उत्प्रेरक की भूमिका भी निभाती हैं। उदाहरणस्वरूप ट्विटर नियमित रूप से उन लोगों के अनुसरण हेतु प्रेरित करता है जो हमारे समान दृष्टिकोण रखते हैं।

इस प्रकार हम पाते है कि सोशल मीडिया के प्रभाव के कारण लोगों के सोचनें का दायरा संकुचित होता जा रहा है जो न केवल मतदान के समय व्यवहार में परिवर्तन लाता है बल्कि हर रोज व्यक्तिगत वार्त्ताओं में भी इसका भारी प्रभाव पड रहा है।

अगर सोशल मीडिया के मूल अर्थ की बात की जाए तो कंप्यूटर, टैबलेट या मोबाइल के माध्यम से किसी भी मानव संचार या इंटरनेट पर जानकारी साझा करना सोशल मीडिया कहलाता है। इस प्रक्रिया में कई वेबसाइट एवं एप का योगदान होता हैं। सोशल मीडिया वर्तमान समय में संचार के सबसे बडे साधन के रूप में उभर कर आया है और दिनोदिन इसकी लोकप्रियता में वृद्धि हो रही है।

सोशल मीडिया द्वारा विचारों, सामग्री, सूचना और समाचार को तीव्र गति से लोगों के बीच साझा किया जा सकता है। सोशल मीडिया को एक तरफ जहाँ लोग वरदान मानते हैं तो दूसरी तरफ लोग इसे इक अभिशाप के रूप में भी देखते हैं।

सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभावों की बात की जाए तो यह समाज के सामाजिक विकास में मदद करता है। इसके द्वारा प्रदत्त सोशल मीडिया मार्केटिंग जैसे उपकरण द्वारा लाखों सभांवित ग्राहकों तक पहुँच स्थापित की जा सकती है और समाचार का प्रेषण किया जा सकता है। सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता उत्पन्न करने के संदर्भ में सोशल मीडिया को एक बेहतरीन उपकरण माना जाता है। इसके द्वारा समान विचारधारा वाले लोगों के साथ संपर्क भी स्थापित किया जा सकता है। विश्व के सुंदरतम कोने तक अपनी बातों को कम समय में तीव्र गति से अधिकतम लोगों तक पहुँचाने के लिये यह एक सर्वश्रेष्ठ साधन बन चुका है।

सोशल मीडिया को शिक्षा प्रदान करने के संदर्भ में एक बेहतरीन साधन माना जा रहा है। इसके द्वारा ऑनलाइन जानकारी का तेजी से हस्तांतरण होता है। इसके द्वारा ऑनलाइन रोजगार के बेहतरीन अवसर प्राप्त होते हैं। साथ ही व्यवसाय, चिकित्सा, नीति निर्माण को प्रभावित करने में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वर्तमान समय में शिक्षक एवं छात्रों द्वारा फेसबुक, ट्विटर, लिंक्डाइन आदि जैसे प्लेटफॉर्म का प्रयोग किया जा रहा है। इसके द्वारा शिक्षक एवं छात्रों के मध्य दूरी सिमट कर कम हो गई है। प्रोफेसर स्काइप, ट्विटर और अन्य जगहों पर इसके मदद से लाइव चैट करते हैं। सोशल मीडिया के कारण शिक्षा आसान हो गई है।

"निरंतरता और निरंतर जुडाव ही सोशल मीडिया का महत्वपूर्ण बिन्दू है।"

क्लारा शिह

हालांकि कई भौतिकविदों का मानना है कि सोशल मीडिया लोगों में अवसाद और चिंता के प्रसार का एक सबसे बड़ा कारण है। सोशल मीडिया के अत्यधिक प्रयोग से सोने की आदतों में बदलाव, साइबर अपराध, बच्चों के प्रति लगातार बढ़ते दबाव और एक प्रभावशाली प्रोफाइल युवाओं को बड़े पैमाने पर प्रभावित कर रही हैं। इसमें अत्यधिक व्यस्तता के कारण अन्य कार्यों के लिये बहुत कम समय बचता है एवं अन्य गंभीर मुद्दों की उत्पत्ति होती है जैसे ध्यान कम लगना, चिंता एवं अन्य मुद्दें। इसके अत्यधिक प्रयोग एवं गोपनीयता से निजता में कमी आती है। यह उपयोगकर्त्ता को साइबर अपराधों, जैसे हैकिंग, पहचान संबंधी चोर फिशिंग अपराधों आदि के प्रति संवेदनशील बनाता है।

सोशल मीडिया का दुरुपयोग भी कई रूपों में किया जा रहा है। इसके जरिये न केवल सामाजिक और धार्मिक उन्माद फैलाया जा रहा है बल्कि राजनीतिक स्वार्थ के लिये भी गलत जानकारियाँ पहुँचाई जा रही हैं। इससे समाज में हिंसा को तो बढावा मिलता ही है, साथ ही यह हमारी सोच को भी नियत्रिंत करता है। विश्व आर्थिक मंच की एक रिपोर्ट के अनुसार सोशल मीडिया के जरिये झूठी सूचना का प्रसार उभरते जोखिमों में से एक है। यकीनन यह देश की प्रगति की राह में रुकावट है और ऐसे में जरूरी हो जाता है कि हमारी सरकार असमें दखल कर इस पर लगाम लगाने का प्रयास करे। केंद्र सरकार ने सूचना तकनीक कानून की धारा 79 में संशोधन के मसौदे द्वारा फेसबुक और गूगल जैसी कम्पनियों की जवाबदे हिता तय करने का प्रयास किया था। इसके तहत आईटी कंपनियाँ फेक न्यूज की शिकायतों पर न केवल अदालत और सरकारी संस्थाओं बल्कि आम जनता के प्रति भी जवाबदेह होंगी। देश जैसे-जैसे आधुनिकीकरण के रास्ते पर बढ़ रहा है चुनौतियाँ भी बढ़ती जा रही हैं। ऐसे में भारत को जर्मनी जैसे उस कठोर कानून की जरूरत है जो सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक सामग्री का इस्तेमाल करने वालों पर शिकंजा कसने के लिये बनाया गया था। इसके अलावा 'सोशल मीडिया इंटेलीजेंस' के जरिये सोशल मीडिया गतिविधियों का विश्लेषण करते रहना भी आवश्यक है। इससे आपत्तिजनक सामग्रियों को बिना देर किये हटाया जा सकेगा।

सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार को नया आयाम दिया है। आज प्रत्येक व्यक्ति बिना किसी डर के सोशल मीडिया के माध्यम से अपने विचार रख सकता है और उसे हजारों लोगों तक पहुँचा सकता है, परंतु सोशल मीडिया के दुरुपयोग ने इसे एक खतरनाक उपकरण के रूप में भी स्थापित कर दिया है जिसके कारण इसके विनियमन की आवश्यकता लगातार महसूस की जा रही है। अतः आवश्यक है कि निजता के अधिकार का उल्लंघन किये बिना सोशल मीडिया के दुरुपयोग को रोकने के लिये सभी पक्षों के साथ विचार-विमर्श कर नए विकल्पों की खोज की जाए, ताकि भविष्य में इसके संभावित दुष्प्रभावों से बचा जा सके।

❄ ✪ ❄

"सोशल मीडिया सामाजिक बाधाओं को कम कर रहा है। यह लोगो को मानवीय मूल्यों की मजबूती के आधार पर जोड़ता है पहचान के आधार पर नहीं।"

– नरेन्द्र मोदी

हिन्दी साहित्य में समन्वय का प्रयास

राखी काम्बोज
अंशकालिक प्रवक्ता (हिन्दी विभाग)

इतिहास साक्षी है, भारत में जब-जब विदेशी संस्कृतियों का आक्रमण हुआ, उसका नुकसान आम जन ने उठाया। राजा पहले भी युद्ध में मग्न रहते थे और विदेशी आक्रमण के बाद भी। सामंजस्य संस्कृति, सम्प्रदाय, सामाजिक स्तर पर आम लोगों को करना होता था, जिसे उनका मन पूर्व रूढ़ियों के कारण मानता नहीं था। उसी की परिणति सामाजिक-सांस्कृतिक स्तर पर संक्रमण होता था। संस्कृतियों की आपसी टकराहट। समाज के बीच से समस्या को समझते हुए समाज-सुधारक उपदेशक, साहित्यकार, कवि रूप में हमारे समक्ष आते हैं। जिनका साहित्य कालजयी साहित्य है। हर युग में प्रांसगिक ठहरता है।

700 ई०- 1200 ई० का काल इतिहास की दृष्टि से राजपूत काल था, जिसमें राष्ट्रीयता का अभाव, सामन्ती व्यवस्था का चरम, आडम्बरों और कर्मकाण्डों की अति और आम जनता शान्ति और सुख से वंचित हो गई थी। उसी समय मुस्लिम आक्रमण और मुस्लिम सत्ता स्थापित होना। दूसरी संस्कृति का भारतीय संस्कृति के साथ टकराहट थी, जिसमें आम जन को बहुत-सी समस्याओं का सामना करना पड़ा। उसी टकराहट के बाद स्थिति को समझने का प्रयास कबीर जैसे अन्य सन्त कवियों व सूफी और सगुण धारा के कवियों ने किया। कबीर, तुलसी, सूर, जायसी जैसे अन्य कवि हुए जो आम जन के बीच परिस्थिति को समझकर समन्वय की विराट चेष्टा करते हैं।

कबीर के छन्दों में अनुभूति की सच्चाई एवं अभिव्यक्ति का खरापन है। समाज में व्याप्त रूढ़ियों अन्धविश्वासों, पाखण्ड का उन्होंने खण्डन किया तथा हिन्दुओं और मुसलमानों को फटकारते हुए कहा-

"अरे इन दोउन राह न पाई।
हिन्दू अपनी करैं बड़ाई गागर छुअन न देंई।
वेश्या के पांयन तर सोवै यह देखौ हिन्दुआई।।
मुसलमान के पीर औलिया मुर्गी-मुर्गी खाई।
खाला केरी बेटी ब्याहैं घर ही में करैं सगाई।।"

कबीर शास्त्रों के अनुसार व्यवहार के आधार पर परिस्थितियों को समझने में विश्वास रखते थे। मैं कबीर की इस बात से सहमत हूँ। लिखने वालों ने तब की परिस्थिति में लिखा। हर बात इस युग में सही हो जरूरी नहीं बल्कि व्यावहारिकता ही बलवती है।

"तू कहता कागद की लेखी, मै कहता आँखिन की देखी।
मै कहता सुरझावन हारी तू राखा उरझोय रे।।"

कबीर ही नहीं अन्य सन्त कवियों ने भी समाज-सुधारक रूप में अपने उपदेश दिये (ये काव्यशास्त्रीय आधार पर साहित्य नहीं गढ़ते बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक आधार पर) तुलसी आम जन और राजा की स्थिति को समझते है। इसलिए वह लेखन करने से पूर्व भ्रमण करते है जिसमें वह काशी-अयोध्या-जगन्नाथपुरी-रामेश्वरम-द्वारका-बदरिकाश्रम → कैलास-मानसरोवर → चित्रकूट और अयोध्या तक यात्रा करते है। भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक व भौगोलिक परिस्थितियों को समझकर अयोध्या में रामचरितमानस की रचना प्रारम्भ करते हैं। तुलसीं रामचरितमानस में राजा कैसा होना चाहिए उसके लिए आदर्श प्रस्तुत करते हैं। 'कवितावली' में बताते है समाज की दशा और अपनी भी। समाज को मन्दिर/मस्जिद के भेद से उबारने का प्रयास करते हैं और कहते हैं कि मैं फकीर प्रवृत्ति का हूँ, माँग के खाता हूँ और सोने का स्थान मस्जिद में मिले तो वहीं सो जाता हूँ-

"माँगी के खइबौ मसीत को सोइबो, लेबे को एक न दैबे को दोऊ"

जाति-पाती के लिए भी कहते हैं कि-

"धूत कहो अवधूत कहौ, राजपूत कहौ जूलाहा कहौ कोऊ।
काहू की बेटी सो बेटा न ब्याहब, काहू की जाति बिगार न सोऊ।"

इतना ही वह समाज की दशा को इस पद में प्रस्तुत करते हैं कि–

"खेती न किसान को, भिखारी को न भीख भली, बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी।
जीविका विहीन लोग सीद्यमान सोच बस, कहैं एक एकन सों, कहाँ जाई का करी?"

भक्तिकालीन कवियों ने तात्कालिक परिस्थितियों का और जनता की चित्तवृत्तियों का प्रतिबिम्ब साहित्य में प्रस्तुत किया।

आधुनिक काल भी तीसरी संस्कृति के आगमन और भारतीय पूँजी अर्थव्यवस्था, प्राशासनिक व्यवस्था सब पर अधिकार की परिणति हैं। अंग्रेज आम जनता को करों के बोझ से परेशान करते व अन्य प्रताड़नायें देते थे तब जनता में आक्रोश फूटा, फिर से समाज–सुधारक, कवि / लेखकों ने अपने स्तर पर जनता का नेतृत्व करके उनकी समस्याओं को उठाया। जनता को लकीर के फकीर बनने के बजाय प्राचीन के साथ नवीन के समन्वय का पाठ पढ़ाया। समाज सुधारकों–राजाराम मोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण परमहंस, एनी बेसेन्ट ने अपने–अपने स्तर पर साहित्य के माध्यम से, पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से, विश्व मंचो से सम्भाषण करके लोगों को जागरूक किया।

हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु, बालकृष्ण शर्मा, नवीन, बालकृष्ण भट्ट, बदरीनारायण चौधरी आदि ने गद्य साहित्य आम जन की भाषा में प्रस्तुत किया। महावीर प्रसाद द्विवेदी सरस्वती पत्रिका के माध्यम से हिन्दी भाषा को शुद्ध, परिष्कृत करते हुए अपनी भूमिका सामाजिक समस्याओं से सम्बन्धित साहित्य के माध्यम सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर जनता को जोडने में निभाई।

हिन्दी साहित्यकार समकालीन समस्याओं का निदान प्रस्तुत करने के साथ राष्ट्र के सभी आयामों पर भी अपनी दृष्टि रखते हुए सामाजिक व राष्ट्रीय एकता को बनाने का प्रयास सदैव करते रहें है और आगे भी करते रहेंगे। हिन्दी साहित्यकार डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते हैं कि "लोकनायक वहीं हो सकता है जो समन्वय की विराट चेष्टा लेकर आया हो।" यह हिन्दी लेखकों ने अपने साहित्य के माध्यम से किया है।

❁ ✪ ❁

स्त्री विमर्श–समकालीन साहित्य के सन्दर्भ में

श्रीमती सुरभि
अंशकालिक प्रवक्ता

''मत कहो नारी बेचारी
वो कब किससे है हारी
इतिहास ग्रन्थ है साक्षी इसके
अबला नहीं सबला है नारी''

मानव जाति की सभ्यता एवं सामाजिक विकास का मूल स्त्रोत नारी है। वह परिवार व समाज का केन्द्र बिन्दु हैं। अपने मानवीय व ममतामयी गुणों के कारण नारी नर की अपेक्षा अधिक सम्मानीय और श्रद्धेय रही है। भारतीय संस्कृति के प्रारम्भ से ही उसे देवत्व प्रदान किया गया है। **'मात्रदेवो भवः'** नारी की महिमा का प्रथम उद्घोष है। वह सृजन और संस्कार की गंगा है। प्रकृति का सुन्दरतम उपहार होने के कारण नारी को विधाता की अद्वितीय रचना कहा गया है। वह ज्ञान वैभव व शक्ति की अधिष्ठात्री देवियों – सरस्वती, लक्ष्मी एवं दुर्गा के रूप में कल्पित है।

आज का समाज जब स्त्री विमर्श पर अपने विचार प्रकट करता है तो वह यह कैसे भूल जाता है कि स्त्री कभी अबला थी ही नहीं उसे तो अबला बनाया गया था। क्योंकि नारी में व्यक्तित्व प्राप्त करने की इच्छा प्रभुत्वपूर्ण समाज में अपनी श्रेष्ठ स्थिति बनाने के लिए उत्पन्न हुई। अगर हम इतिहास दोहराएँ तो वीरांगना झाँसी की रानी, राजनीति में श्रीमती इन्दिरा गाँधी, सरोजनी नायडू, व पूर्व राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल, समाज कल्याणी किरन बेदी आदर्शमयी सीता, सावित्री, अनुसंधान व विज्ञान के क्षेत्र में कल्पना चावला तथा साहित्य के क्षेत्र में उभरते नवीन लेखिकाओं में महादेवी वर्मा, उषा प्रियंवदा, शिवानी, प्रभा शास्त्री, पुष्पा मैथिली, शशि बाला आदि का नाम एवं उनकी कृतियों को अपने स्मृति पटल से विस्मृत नहीं कर सकते। नारी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह अबला नहीं बल्कि पुरुष का सबसे बड़ा सम्बल है वह समर्पण की भावना से ओत–प्रोत है। आज वह परिवार तक ही सीमित नहीं है बल्कि उससे बाहर निकलकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपने योगदान के अविस्मरणीय बनाती जा रही है उदाहरणस्वरूप आज नारी सरकारी कार्यालयों में पुरुषों के समान उच्च पद पर आसीन है। नई चुनौतियाँ और कुछ नया कर दिखाने की लगन में भी स्त्रियाँ अग्रिम पंक्ति में खडी हैं। आज यह कहना अनुचित न होगा कि यदि वे अपनी हठ पर आ जायें तो परिस्थिति से जूझती हुई अपने कर्त्तव्य पथ से विमुख नहीं होंगी। इसीलिये तो कहा गया है कि :–

''नारी जीवन गहरा सागर,
दोनों एक समान।
इसमें भी तूफान हमेशा,
उसमें भी तूफान''

समकालीन उपन्यास साहित्य पर दृष्टि डालें तो ऐसे अनेक उपन्यासकार रहे हैं जिन्होंने नारी की व्यथा को उपन्यासों के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है। परन्तु इन्हीं उपन्यासकारों में शिवानी एक ज्वलन्त उदाहरण रही है। जिन्होने अपने उपन्यासों में नारी के पुष्प से लेकर दहकतें अंगार तक की कष्टकर घटनाएं व जीवन गाथाएं इस प्रकार गूंथी है जिसे पढने मात्र से ही पाठक के हृदय के एक–एक तार झंकृत हो उठते हैं। उन्होने अपने उपन्यासों में नारी की विवशता, किशोर वय की उन्मादिनी नारी के जीवन की मार्मिक कथा को व हृदय की विचारोत्तेजक व्यथा को पूर्ण रूप से प्रस्तुत किया है। उनके उपन्यासों से स्पष्ट है कि नारी को अपने तेजस्विनी व संघर्ष रूप को समय–समय पर समाज के समक्ष प्रस्तुत करना पड़ा है। उसे कई बार अग्नि परीक्षा देनी पड़ी है किन्तु वह समाज में अपनी अमिट पहचान बनाने के लिए विशेष रूप से आग्रहित हुई है–

रति विलाप

अपने प्रसिद्ध उपन्यास रति विलाप में उन्होंने अनसूया नामक स्त्री पात्र के विवाह व वैधव्य की व्यथा को बड़े ही भावुक रूप से चर्चित किया है। पिता की मृत्यु के पश्चात् जगत् को अबला लगने वाली वही स्त्री सबल रूप में पिता के व्यापार को संभालती है समय व परिस्थिति को बार–बार चुनौती के रूप में स्वीकार करती हुई वह नारी समाज में अपनी प्रतिष्ठा बरकरार करने में सफल होती है वह अन्तिम लक्ष्य तक पहुँचने में तनिक भी विचलित नहीं होती व सफल स्त्रीत्व की पहचान बनाती है।

किशनुली

शिवानी ने अपने उपन्यास किशनुली में अपरूप सुन्दरी नायिका किशनुली के जीवन की व्यथा को समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया है। उसकी पात्रा किशनुली जो पागल लड़की है वह समाज के कुकृत्य व गलत दृष्टि का शिकार बनती है किन्तु उसके हित की रक्षा व ममत्व की भावना को उजागर करने वाली काखी को शिवानी ने एक निर्भीक स्त्री पात्र के रूप में दर्शाया है, जो समाज से संघर्ष कर एक सशक्त नारी को प्रतिबिम्बित करती है।

अभिनय

शिवानी ने अपने उपन्यास अभिनय में यह साक्षात् रूप से प्रस्तुत किया है कि पुरुष सदैव नारी को भोग्या रुप में प्रयोग करता रहा है किन्तु वह यह नहीं जानता कि नारी के भीतर ऐसी नारी उपस्थित होती है जो उसके सहनशील स्वभाव को सहनशक्ति को केवल उसी समय तक दबाकर रखती है जब तक उसमें समर्पण की शक्ति हो जिस पल वह अपनी सहनशक्ति का त्याग कर विरोध करती है तो पुरुष को नतमस्तक होने पर विवश कर देती है।

इस प्रकार शिवानी के उपन्यास नारी मन के अछूते पहलुओं को उजागर करने वाले अत्यन्त मर्मस्पर्शी व लोकप्रिय रहे हैं। स्त्री विमर्श का उभरता हुआ यह नवीन वृत्त हिन्दी साहित्य में नारी की चिर पोषित व अबला छवि को तोड़कर एक नये जुझारु व्यक्तित्व व रचनाशील रूप में प्रस्तुत हुआ है।

समग्रतः इस बढ़ते हुए दौर में नारी बनी-बनाई कसौटियों व परतन्त्र बन्धनों को तोड़कर तनाव से मुक्त होकर समाज में अपनी अमिट पहचान बनाते हुए पूर्ण स्वतन्त्र आत्मनिर्भर आर्थिक रूप से सशक्त तथा श्रेष्ठ जीवन-यापन करने में सक्षम है। नारी का चरित्र विचारधाराओं से निर्मित बौद्धिक कगारों के बीच में बहते हुए संवेदनशील प्रवाह की तरह है, जिसमें स्त्री का रूप एक अभूतपूर्व व चमत्कार पूर्ण झलक है।

"नारी तेरे रूप की गाथा बड़ी पुरानी
सुन्दर झरिणी सी झरे, कही वेगवती तू रानी।
आकाश का भेद पा तूने तारे भी गिन लिये,
समता के अधिकार के कर्म तूने कर लिये।
नारी तेरे रूप की गाथा बड़ी पुरानी,
चंचल मृगिनी सी भगे, वर्त्तमान की रानी।।"

❁ ✪ ❁

भूमण्डलीकृत मीडिया और स्त्री

कु० सुजाता चावला
अंशकालिक प्रवक्ता
हिंदी विभाग

भू-मण्डलीयकरण समाज-विज्ञान राजनीति, संचार माध्यम् पत्रकारिता आदि सभी को नए रूप में प्रस्तुत करने वाली प्रक्रिया है। यहाँ वैश्विक पूँजी बाजार सूचना प्रौधोगिकी और औधोगिकीकरण का दबाव हर क्षेत्र पर दिखाई दे रहा है इसीलिए पत्रकारिता को भी बाजार में बने रहने के लिए भू-मण्डलीकरण का सहारा लेना पढ़ रहा है, जिसके फलस्वरूप आज मीडिया पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के प्रभाव पड रहे हैं।

पिछले कई दशकों से मीडिया में स्त्री छवि की निर्मित तथा प्रस्तुति को लेकर बडी बहसे हुई हैं जो आज भी निरन्तर चल रही है। मीडिया एक ऐसा रंगमंच बन गया है जो यथार्थ को फंतासी और मिथ को यथार्थ् में बदल देता है। समाज में प्रचलित छवि या मीडिया इमेज में ढ़ल जाती है। और मीडिया इमेज समाज में प्रवेश कर जाता है। जिसे मीडिया इमेज कहते है। यहाँ इस बात पर भी प्रकाश डालना जरूरी है कि आज चैनल्स की बढ़ती हुई तेजी से मनुष्य मानसिक रूप से परतंत्र होता जा रहा है प्रत्येक व्यक्ति उस क्षण की तलाश में भटक रहा है कि कब उसे दूसरों पर शासन करने का अवसर प्राप्त को। आज भौतिकता के फलस्वरूप पुराने उद्योग धन्धे नष्ट हो रहे हैं। नए-नए कारखानें कॉरपोरेट हाऊस में परिवर्तित हो रहे हैं। व्यापार करने का पुराना तरीका बदल रहा है।

भू-मण्डलीयकरण के तमाम सकारात्मक पहलुओं के बाद भी इससे कही-न-कही मनुष्य के व्यक्तित्व को खतरा पैदा हो गया है। पच्चीस तीस वर्षों में भी भू-मण्डलीकरण सभ्यता ने दुनिया में जहाँ-जहाँ रहन-सहन और भोगने के स्तर को ऊँचा उठाया है वही नैतिकता, मानवता प्रेम ईमानदारी व सद्भावना भी कम हुई है। आधुनिकता के बीच भौतिकता ने अपनी साख मजबूत की है लेकिन भौतिकता की इस दौड़ में सारे रिश्ते टूटते नजर आ रहे हैं। हर स्तर पर संघर्ष चल रहा है।

आमतौर पर हम समाज में घटने वाली घटनाओं को तो देखते हैं पर उनके पीछे के कारणों को जानने का कभी प्रयास नहीं करते आज नारी को बदली सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था के चलते बहुत-सी सहूलियतें मिली हैं इतनी कि उन्हें मुक्त मान लिया गया है अब यहाँ प्रश्न उठते कि क्या वाकई आज की स्त्री आजाद हो गई हैं और अपनी देह का हथियार की तरह इस्तेमाल कर रही हैं? क्या उसकी सभी समस्यायें खत्म हो गयी है? भू-मण्डलीकरण की दुनिया में देहवाद एक भयावह खेल है। इसे खेल में स्त्री सहमति का निर्णय स्वयं ले रही है या इसे पूँजी का दबाव माना जाए? प्रश्न जटिल है स्त्री को लेकर मीडियाबाज भी सवालों के घेरे में आ गये हैं। युवाओं के नाम पर सस्ती अश्लीलता के धइल्ले से अखबारों द्वारा परोसा जा रहा है।

भू-मण्डलीकरण ने देहवाद का रूप इस कदर बदल दिया है कि इसके तहत उपजे देह उद्योग का यथार्थ् कही जटिल है। इसके चलते समाचार-पत्र पत्रिका सेक्स सर्वेक्षण के नाम पर अश्लील प्रश्नों से सजी प्रश्नावली, साक्षात्कार आदि मीडिया बाजार में बने रहने को प्रकाशित और प्रसारित करते रहे हैं इसके साथ ही इसमें घर-घर में कब्जा जमाए छोटा पर्दा भी अछूता नहीं है अंतर केवल इतना ही है कि मीडिया का एक स्वरूप जहाँ कागज पर अश्लीलता को बढ़ावा दे रहा है वही इसका दूसरा स्वरूप इसे और अधिक जीवंतता के साथ दिखा रहा है। हिन्दी मीडिया में बढ़ते देहवाद से मीडिया के बाहर ही नही मीडिया के अंदर के लोग भी आहत है।

टेलीविजन पर अश्लील कार्यक्रमों का दौर ठहरने का नाम ही नहीं ले रहा है। रियलिटी शो के नाम पर कार्यक्रम के अन्दर देहवाद का मायाजाल फैलता जा रहा है। राखी का स्वयंवर, कोई मुझे जंगल से बचाओं, एमटीवी रोड़ीस, इमोशनल अत्याचार आदि सैकडों कार्यक्रम फैशन टीवी को भी पीछे छोडने की होड़ में लगे है। भू-मंडलीकरण प्रभाव के चलते समाज में चलने वाली नैतिकता, अनैतिकता अश्लील और शील वाली बहसें बदल गई हैं।

आज स्त्री कहीं-न-कहीं उपभोक्तावादी संस्कृति में ढ़लती जा रही हैं। इसलिए वह अपनी देह का उपयोग व्यापार के नाम पर करने लगी है। व्यक्तिकरण के बढ़ते हुए दौर में संस्थाओं के बदले स्त्री आज अपनी व्यक्तिगत जरूरतों को ज्यादा महत्व दे रही है शायद इस कारण वह स्वयं को मुक्त भी समझ रही हैं।

स्त्री ने देह व्यापार का भू–मण्डलीकरण अस्त्र है। इसका चमत्कारी पक्ष है कि इसमें केवल विक्रेता पक्ष मीडिया का ही विश्लेषण एवं अध्ययन किया जाता है। हद से हद बिचौलियों और दलालों पर नजर डाली जाती है।

आज के परिवेश में यदि भू–मण्डलीकरण मीडिया को गौर से देखे तो प्रभा खेतान के तर्कों से आवश्यक सहमत होगें जिसमें देह और समाज के बीच मीडिया एक विक्रेता या बिचौलिये की भूमिका में खड़ा दिखाई देता है स्त्री देह वर्तमान समय में मीडिया का सबसे लोकप्रिय विमर्श है।

अतः भू–मण्डलीकरण जिस भौतिकवादी अर्थकेन्द्रित जाल का ताना बाना बुन रही है उससे बाहर निकलना बहुत आवश्यक है इसके लिए सभी को सम्मिलित प्रयास करना होगा। भौतिकता की दौड में हमें गम्भीरता से विचार करना होगा।

❁ ❁ ❁

भारतीय संस्कृति पर बौद्ध धर्म का प्रभाव

डॉ० पूजा राजोरिया
इतिहास विभाग
आर०जी०पी०जी० कॉलेज मेरठ

बौद्ध धर्म का अभुदाय और उसका विश्वव्यापी प्रचार भारतीय संस्कृति के लिए जीवनदायी सिद्ध हुआ। इस धर्म ने भारतीय जीवन में अंहिसा, दया, परोपकार, विश्व-बंधुत्व, मानव कल्याण आदि सांस्कृतिक आदर्शों के साथ ही जाति प्रथा का विरोध करके मानवतावादी धारणाओं का प्रचार किया और इसी के साथ विदेशों में भारतीय संस्कृति का प्रचार व प्रसार हुआ। भारत के सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, साहित्यिक, राजनीतिक आदि विभिन्न अंगों पर बौद्ध धर्म का गहरा प्रभाव पड़ा।

बौद्ध धर्म के प्रभाव से भारत में सरल, सुबोध और साधारण विशुद्ध आचारवादी लोकप्रिय धर्म का प्रसार हुआ।

इससे पूर्व मे धर्म जटिल और कर्मकांड से परिपूर्ण था। वह धर्म का उद्देश्य सभी लोगों का दुख का निवारण करना था। जिससे यह अत्यधिक लोकप्रिय होता गया। बौध धर्म द्वारा भारत में एक नवीन दार्शनिक साहित्य का सृजन हुआ। नागार्जुन ने पूँजीवाद और माध्यमिक दर्शन का प्रतिपादन किया। शून्यवाद से अभिप्राय है कि परमात्मा को बुद्धि एवं विचार की सत्ता से नहीं जाना जा सकता अपितु शून्य दृष्टि से उसके विषय में ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। शून्यवाद के अतिरिक्त विज्ञानवाद, सर्वासितवाद, अनित्यवाद, योगाचार आदि दार्शनिक विचारधाराएँ प्रारंभ हुई। नागार्जुन, अश्वघोष, अंसग, वसुमित्र, धर्मकीर्ति, दिगनाग आदि प्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिक थे जिन्होंने बौद्ध दार्शनिक साहित्य का सृजन किया।

लोक साहित्य का सृजन व विकास में बौद्ध धर्म का अनूठा प्रभाव है। महात्मा बुद्ध ने अपना धर्मापदेश जन साधारण भाषा में दिया। शिक्षा प्रसार के लिए पाली भाषा को अपनाया और धार्मिक ग्रंथों की रचना भी हुई जिससे जनता उसको सरलता से पढ़ सके। बौद्धों ने पाली और संस्कृत में महाकाव्य, ऐतिहासिक ग्रंथों की रचना की जिनमें बुद्धचरित, सारिपुत्र प्रकरण, मंजुश्री मूलकल्प, दिव्यावादन, ललित विस्तार, मिलिन्दपन्हों आदि। जातक कथायें विश्व में प्रसिद्ध हैं। पाली भाषा में त्रिपिटक ग्रंथ की रचना करके बौद्ध साहित्यकारों ने भारतीय साहित्य को धनी बना दिया। बौद्ध धर्म की एक मौलिक देन संघ व्यवस्था है। धर्मावलंबियों को अनुशासनशील सामूहिक जीवन बिताने का आदेश दिया। बौद्ध धर्म से पूर्व ब्राह्मणों का जीवन एंकाकी होता था। भारत में लौकिक आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षा प्रसार का प्रथम प्रयास बौद्ध संघ ने किया। इसी धर्म ने जातिवाद का विरोध कर सामाजिक व सांस्कृतिक एकता को दृढ़ करने का प्रयत्न किया। राजनीति एकता और राष्ट्रीय विकास का मार्ग प्रशस्त हो गया और विशाल साम्राज्य का उदय हुआ।

बौद्ध धर्म का अदितीय प्रभाव के क्षेत्र पर भी पड़ा। वास्तुकला, भवन निर्माण कला, चित्रकला, मूर्तिकला का विकास हुआ। गुफा कला का प्रारंभ बौद्ध धर्म के प्रचार से ही हुआ। सांची, भरहुत, अमरावती के स्तुपो उनके विशाल प्रवेश द्वारों, अंजता, एलोरा, बाघ की गुफाओं में बुद्ध से संबधिंत दृश्य गुफा में अंकित है। स्थापत्य, मूर्तिकला, चित्रकला की नवीन शैलियों का विकास हुआ। मथुरा कला व गांधार कला शैली इसके उदाहरण है।

अशोक के शिलास्तंभों एवं कार्ले की बौद्ध गुफाएं भारतीय कला के सर्वोतम उदाहरण है।

बौद्ध भिक्षु, संत और विद्वानों ने विदेशों में जाकर भारतीय संस्कृति का प्रसार किया। सम्राट अशोक ने बौद्ध भिक्षुओं को पड़ोसी देशों में शिक्षा का प्रसार करने भेजा और उसके बाद में कनिष्क ने भी इस कार्य में अपना योगदान दिया। इन प्रचारकों द्वारा भारतीय संस्कृति मध्य एशिया, चीन-जापान, कोरिया, खोतान, तिब्बत, नेपाल, श्रीलंका, जावा, सुमात्रा, मलाया आदि देशों में प्रसारित हुई। बाद में दन देशों के साथ भारत के मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित हुए व्यापारिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान हुआ। इसके फलस्वरूप भारतीय संस्कृति का रूप वृहद हो गया। अतः विदेशों में बौद्ध धर्म भारतीय संस्कृति की अग्रगामी था।

"बौद्ध धर्म का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव तथा उसके योगदान से भारतीय संस्कृति बहुत आभारी हैं।

भारतीय धर्म, दर्शन, कला, साहित्य जीवन प्रणाली आदि से आज भी इस धर्म का प्रभाव दृष्टिगोचर है। हमारी वैदेशिक नीति, शांतिप्रियता तथा सद्भावना का आधार बौद्ध धर्म है।"

भारत में बाल श्रम एक गंभीर समस्या

इकरा मलिक
एम०ए० द्वितीय वर्ष समाजशास्त्र

संसार के अन्य जीवित प्राणियों के समान बाल समाज भी मूलतः अपने आस–पास के मौजूद वातावरण से अछूता नहीं रह सकता। किसी भी सामाजिक व्यवस्था का समाज निश्चित ही अनेक समस्याओं से घिरा रहता है और उन सामाजिक समस्याओं का प्रभाव बालकों के शारीरिक मानसिक और शैक्षणिक विकास को निश्चित रूप से प्रभावित करता है। हमारे देश के प्राचीन विचारकों ने भी बालकों के महत्व को स्वीकार किया है इस संदर्भ में मनु ने सर्वप्रथम प्राचीन भारत में दण्ड प्रक्रिया का उल्लेख किया है मनुस्मृति में बालकों को गुरूकुल की शिक्षा अनिवार्य बताते हुए ऐसा न करने पर उनके माता–पिता को राजदण्ड का भागी माना।

भारत में बाल श्रमिकों की स्थिति

भारत के लगभग सभी राज्यों में बालक या बाल श्रमिक पाये जाते हैं। 1991 में आन्ध्र प्रदेश में 1661.940 बाल श्रमिक पाये गये आसाम में 327.598 बाल श्रमिक, बिहार में 942.245 गुजरात में 523.585 बाल श्रमिक, हरियाणा में 109.691, हिमाचल प्रदेश में 56.438 कर्नाटक में 976.247 केरल में 34.800, मणिपुर में 16.493, पंजाब में 142.868, राजस्थान में 774.199, सिक्किम में 5.598, तमिलनाडु में 678.889, त्रिपुरा में 16.478, उत्तर प्रदेश में 1410.086, पश्चिमी बंगाल 711.691, अंडमान निकोबार में 1.265, बाल श्रमिक अरूणाचल प्रदेश में 12.395, चण्डीगढ़ में 1.870 बाल श्रमिक दादरा नगर हवेली में 4.416 दिल्ली में 27.351 दमन और द्वीप में 941, गोवा में 2.680 बाल श्रमिक पाये गये।

सम्पूर्ण भारत में 11.285 349 बाल श्रमिक 1991 के जनगणना के अनुसार है। इस प्रकार सम्पूर्ण भारत का कोई भी ऐसा प्रान्त नहीं है जहाँ कि बाल श्रमिक नहीं है कही कम है तो कही ज्यादा।

बाल श्रम के कारण

देश में विभिन्न उद्योगों में बच्चों को काम पर रखने के कारणों को जानना जरूरी है। बाल श्रम की समस्या कोई अलग समस्या नहीं है वरन् बाल कल्याण की व्यापक समस्या का ही एक अंग है। बाल मजदूरों की संख्या न केवल खतरनाक संगठित उद्योगो में ही नहीं है बल्कि साधारण असंगठित उद्योगों में तो इन्हें और भी अधिक संख्या में कार्य करते हुए देखा जा सकता है। भारत जैसे विकासशील देशों में बाल श्रम को बढ़ावा देने वाले अनेक सामाजिक आर्थिक कारक है।

गरीबी

इस समस्या का प्रमुख कारण गरीबी है। ईश्वर ने सभी बच्चों को चाहे वो अमीर हो या गरीब स्नेह और प्यार से बनाया है। परन्तु यह समानता यही तक सीमित रह जाती है। जन्म के बाद वो दिन कभी नहीं आता, जब एक गरीब बच्चा खुद की तुलना आर्थिक रूप से सम्पन्न घरों के बीच रह रहें है बच्चों से कर सकें। शायद उनके जीवन में वो दिन ही नहीं आता जब वो खुद की तुलना एक बच्चे से करें या खुद को बच्चा समझ सके।

जनसंख्या वृद्धि

भारत जनसंख्या के दृष्टिकोण से विश्व में दूसरें स्थान पर है। 11 जून सन् 2000 में में भारत की जनसंख्या 1 अरब के पार पहुँच चुकी है। सन् 1941 में जनगणना के अनुसार अविभाजित भारत की जनसंख्या 38.89 करोड़ थी। इस प्रकार सन् 1941 से 1951 तक लगभग 4 करोड़ 25 लाख की वृद्धि हुई। सन् 1970 तक देश की जनसंख्या 50 करोड़ से अधिक हो गई।

बेरोजगारी

भारत में बेरोजगारी की समस्या दिन–प्रतिदिन विकराल रूप ग्रहण करती जा रही है। निरन्तर बढ़ती जनसंख्या से भी बेकारी की समस्या में वृद्धि हो रही है। अनुमानतः हमारे यहाँ लगभग 44 लाख लोग प्रतिवर्ष बेरोजगारी की पंक्ति में खड़े हो जाते हैं।

बड़ी–बड़ी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के आगमन से धन एवं सत्ता का केन्द्रीयकरण होने लगा है।

नई–नई तकनीकों के कारण भी देश के ग्रामीण वर्ग में बेरोजगारी बढ गयी है।

माता–पिता की अशिक्षा व अज्ञानता

वर्तमान में भारत में बहुत अधिक आर्थिक विकास हुआ है। तथा भारत प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति कर रहा है। इस विकास के पीछे शिक्षा तकनीकी ज्ञान की मुख्य भूमिका है, परन्तु इसके बावजूद राष्ट्र में अशिक्षा व्याप्त है। जिनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति कमजोर होती है वे अपनी सोच बना लेते हैं कि जितने हाथ उतनी ही कमाई रहेगी।

अतः यह उन माता–पिता की अज्ञानता ही तो है क्योंकि पैदा हुआ बच्चा तुरन्त ही आमदनी का स्त्रोत नहीं बन पाता और न ही बन सकता और श्रमिकों की इसी अज्ञानता का परिणाम उनके बच्चे झेलते हैं न तो उनके माता–पिता ही शिक्षित रहते है और न ही अपने बच्चों को शिक्षा दे पाते हैं।

❋ ✪ ❋

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे

कु० रिया
एम० ए० चतुर्थ सेमेस्टर हिन्दी

संसार में करोड़ों जीव-जंतु और उनकी जातियाँ प्रजातियाँ हैं। ये जीव-जंतु अपने जीवन-यापन के लिए किसी-ने-किसी तरह अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति कर ही लेते है। चाहे वे काफिले में चलती हुई चींटियाँ हो या अपनी मस्ती में चूर हाथी। मनुष्य भी इन्हीं प्राणियों में से एक है, परंतु प्रकृति ने उसे अन्य प्राणियों से थोड़ा भिन्न बनाया है। उसके पास मस्तिष्क है। वह अपना भला-बुरा, लाभ, हानि, हित-अहित आदि सोच सकता है। वह अन्य प्राणियों की भाँति पेट भर कर पड़ा रहने वाला जीव नहीं है।

मनुष्य और भवुकता

चिंतन-शक्ति के ही कारण मनुष्य अन्य प्राणियों से भिन्न है। कोई भी कार्य करने से पहले वह भली-भाँति सोच सकता है कि उसका दूसरों पर कैसा प्रभाव पडेगा। सत्य पुरुष हमेशा ऐसे कार्य करते हैं जिनसे अधिक-अधिक लोगों का लाभ हो। उसी मनुष्य का जीवन सार्थक होता है जो दूसरों के हित के लिए अपने प्राणों की बलि तक दे देता है। सृष्टि के प्रारंभ से ही भारत में ऐसे-ऐसे भावप्रवण मनुष्यों की श्रृंखला रही है जिन्होंने एक-दूसरे के दुख, पीड़ा और कष्ट को समझकर उसे दूर करने का प्रयास किया है। **महर्षि दधीचि, सम्राट अशोक, अकबर महान, राजा राम आदि** का समाज के लिए किया गया त्याग अविस्मरणीय है। आधुनिक संदर्भों में स्वामी दयानंद, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गाँधी, राजा राम मोहन राय सरीखे महापुरुष है जिन्होंने बहुजन के हित के लिए अपने प्राण तक न्योछावर कर दिए। भारत का तो दर्शन ही **'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय'** रहा है। निम्न पंक्ति से हमारी अंतरात्मा की सोच स्वतः स्पष्ट हो जाती है-

सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा
कश्चित दुख भाग भवेत।।

दूसरे के दुख को दूर करने की प्रवृत्ति भारतीयों में प्राचीनकाल से रही है।

आधुनिक संदर्भ और मनुष्यताः-

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। इसी नियम के अनुसार मानवीय मूल्यों में भी भारी परिवर्तन हुआ है। आध्यात्मिक सुखों का स्थान भौतिक सुखों ने लिया है। भौतिक सुखों ने लालच को जन्म दिया और लालची व्यक्ति अपने हित की अधिक सोचता है, दूसरे के हित की कम। आय का युग स्वार्थ का युग है। मनुष्य ही मनुष्य के लिए घातक बन गया है। मनुष्य अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए दूसरों की इच्छाओं का गला घोट रहा है। यही स्थिति विश्व के देशों की है। ये देश एक-दूसरे को दबाने या नीचा दिखाने के उद्देश्य से 'परमाणु बम' और 'हाइड्रोजन बम' का परीक्षण कर रहे हैं। जिससे कभी भी मनुष्यता का हित नहीं हो सकता। विश्व के इस दृष्टिकोण का आम मनुष्य की सोच पर भी असर पड़ा है। हम अपने चारों और दृष्टि डालते हैं तो ऐसा लगता है कि स्वार्थ का बीज जन्मतः हमारे रक्त में है। मानवता समाप्त-सी हो गई है। पाश्विक प्रवृत्तियाँ पनप रही है।

निष्कर्षः-

मानव रूप में जन्म लेकर उसे केवल अपने लिए ही बिता देना, भौतिक सुखों को प्राप्त करने के लिए दूसरों के हितों और सुखों को दबा देना पाश्विक कार्य है। मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं-

यह पशुत्व है मनुज कि आप आप ही चरे।
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था

कु० शिवानी बिष्ट
एम०ए० द्वितीय सेमेस्टर (हिंदी)

शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा किसी देश के भविष्य का निर्माण होता है। अतः किसी देश का भविष्य क्या होगा? यह उसकी शैक्षिक व्यवस्था पर निर्भर करता है।

तो आइए आज हम भारत की वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था पर विचार करें। क्या हमारा शैक्षिक स्तर उस लायक है कि हम अमेरिका, चीन, जापान और ब्रिटेन से प्रतिस्पर्द्धा में उन्हें कड़ी टक्कर दे सके?

प्राचीनकाल से ही भारतवर्ष में शिक्षा पर विशेष महत्व दिया गया है। आर्यभट्ट, भारवि, चरक, सुश्रुत व चाणक्य आदि कुछ ऐसे नाम हैं जिनकी उपलब्धियों पर हम भारतवासी स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते हैं। परन्तु पिछले कुछ दशकों से हमारा शैक्षिक स्तर गिरता जा रहा है। हमारी शैक्षिक गुणवत्ता में कमी आ रही है।

इस बात का एहसास हमारे शिक्षाविदों को भी है। तभी तो वर्तमान शिक्षा–व्यवस्था को सुधारने के लिए निरन्तर नये–नये प्रयास और उपाय किए जा रहे हैं।

अतः मैं आपका ध्यान कुछ प्रयासों पर डालना चाहती हूँ।

हाल ही के कुछ वर्षों से उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् ने अपने परीक्षा–परिणाम को सुधारने के लिए ग्रेडिंग प्रणाली को लागू किया है। इसके तहत् पाठ्यक्रम को घटा कर छोटा कर दिया गया।

लेकिन क्या इस प्रयास से शिक्षा में सुधार आया है?

मेरा मानना है कि इससे हमारी शैक्षिक गुणवत्ता का स्तर और घट गया है। पाठ्यक्रम कम करने की वजह से बच्चों को विषय सम्बन्धित अवधारणाएँ ही स्पष्ट नहीं हो पाती हैं। इससे उनके ज्ञान में कमी आयी है।

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् ने अपना परीक्षा परिणाम सी०बी०एस०ई० व अन्य बोर्डों के बराबर करने के लिए कुछ अंक विद्यालय के हाथ में दे दिए गए। जिससे उत्तर प्रदेश बोर्ड का परिणाम ने बेशक आसमान को छू लिया हो लेकिन फिर भी विद्यार्थियों को प्रवेश के समय उच्च वरीयता सूची के कारण भटकनें को विवश कर दिया। ससम्मान प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होने वालों को भी प्रवेश अपने मनचाहे कॉलिज और विषय में नहीं मिल पा रहा है।

इससे साफ होता है कि हमारे विद्यार्थी किस गलाकाट प्रतिस्पर्द्धा के शिकार हो रहे हैं।

समाचार–पत्रों में पढ़ने को मिला कि दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रथम मेरिट लिस्ट (वरीयता सूची) कटऑफ सौ प्रतिशत रही। आज तक कभी दुनिया के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों जैसे कैम्ब्रिज और ऑक्सफोर्ड की मेरिट लिस्ट ने भी इतनी ऊँचाई नहीं छुयी हैं।

इससे जो निष्कर्ष निकलता है, वो है– या तो हमारे देश के सभी छात्र होनहार और विद्वान हो गए हैं या फिर हमारी शिक्षा व्यवस्था पूरी तरह से फेल हो गयी है।

यदि हमारे सभी छात्र होनहार व विद्वान हो गये हैं तो हम विश व स्तर के अच्छे वैज्ञानिक अभियन्ता व डॉक्टर देने में क्यों असमर्थ है?

पिछले कई वर्षों से हम प्रतिष्ठित पुरुस्कारों जैसे नोबेल आदि के लिए नामांकित भी नहीं हो पाये हैं।

जबकि कैम्ब्रिज व ऑक्सफोर्ड ने विश्व को अनेक प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री, लेखक, अभियन्ता, वैज्ञानिक और डॉक्टर दिये हैं।

निःसन्देह सौ प्रतिशत मेरिट का जाना हमारी शिक्षा व्यवस्था का पूरी तरह से फेल होना ही है। आज हमारें विद्यार्थियों को झोली भरकर अंक तो प्राप्त हो रहे हैं परन्तु ज्ञान मुट्ठी भर ही प्राप्त हो पा रहा है।

हम प्राचीनकाल से ही अपनी शिक्षा पर बहुत गर्व करते हैं। हमारे यहाँ प्राचीनकाल में कई उच्च विश्वस्तरीय विद्यालय जैसे तक्षशिला, नालन्दा तथा उज्जैन आदि रहे हैं।

परन्तु आज विश्व के शीर्ष सौ विद्यालयों व शिक्षा संस्थानों की सूची में अपने देश के किसी विश्वविद्यालय और शिक्षा संस्थान का नाम न पाकर हमें मायूसी होती है।

यह वास्तव में सोचने को मजबूर करने वाली बात है। आज हमें ज्ञान प्राप्त करने के लिए विदेशों का रूख करना पड़ रहा है।

चलिए एक ओर प्रयास पर नजर डालते हैं– इस वर्ष उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री जी ने अपने चुनावी वादे को पूरा करने

के लिए और शिक्षा को तकनीक से जोड़ने के लिए लैपटॉप वितरण करवाया। क्या इससे वास्तव में हमारें विद्यार्थियों की शिक्षा तकनीक से जुड़ गयी?

ऐसा तो कुछ नहीं हुआ परन्तु हाँ लैपटॉप प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं के चेहरे जरूर खुशी से चमक उठे।

शहर के कुछ छात्रों में इसे बात की खुशी है कि अब वो जमकर फेसबुक चलाएँगें और नेट से विड़ियों और गाने डाउनलोड करेंगे। साथ ही कुछ निम्न वर्गीय परिवार के छात्रों को चिंता है कि वो इसे चलाने का खर्च कैसे वहन करेंगे। गाँव के अधिकाँश छात्रों को लैपटॉप चलाना नहीं आता और बहुत-सी जगह इसे चलाने के लिए बिजली तक उपलब्ध नहीं हैं।

अतः बहुत-से छात्र लैपटॉप का पाँच-सात हजार में बेचकर पीछा छुड़ा रहे हैं।

सही कहा भी गया है कि किसान को घर में हाथी बाँधने से कोई लाभ नहीं होता।

शायद बेहतर यह होता कि मुख्यमंत्री जी प्रत्येक विद्यालय को सौ-सौ लैपटॉप वितरित करके वहाँ कंप्यूटर शिक्षकों की व्यवस्था कराते। विद्यार्थियों के लिए मुफ्त कक्षाएँ चलायी जाती तथा सभी के लिए लैपटॉप सीखना अनिवार्य करवा देते।

क्योंकि छात्रों को कोई उपकरण देने से पहले उसका सही प्रयोग करने का ज्ञान देना बहुत जरूरी है। राज्य की जनता के खून-पसीने की कमाई से दिये गए 'कर' का उपयोग ऐसे व्यर्थ लुभावने चुनावी वादों को पूरा करने के लिए नहीं किया जाना चाहिए।

उपरोक्त वर्णित प्रयासों से हमारी शिक्षा व्यवस्था में कोई ठोस सुधार नहीं आया है। शिक्षा में सुधार तो दूर उसकी गुणवत्ता इन प्रयासों के कारण घटती जा रही है तभी तो आज दो तरह के शिक्षा संस्थान देखने को मिलते हैं। एक वो है जहाँ हमारा रजिस्ट्रेशन व रिकार्ड होते हैं तथा डिग्री प्राप्त होती है अर्थात् विद्यालय दूसरा जहाँ हम अतिरिक्त रुपये देकर पढ़ने जाते है अर्थात्-ट्यूशन या कोचिंग सेन्टर।

आज के विद्यार्थियों में टयूशन एक फैशन की तरह लोकप्रिय हो गया है।

12वी तथा 10वी कक्षा के बच्चें का ट्यूशन पढ़ना एक बार को हम समझ भी ले लेकिन अफसोस तब होता है जब मैं नर्सरी एल०के०जी० के बच्चों को भी ट्यूशन पढ़ने जाते देखती हूँ।

क्या हमारे विद्यालय इस लायक भी नहीं रहे कि वो बच्चों को हिन्दी व अंग्रेजी वर्णमालाओं का ज्ञान करा सके?

आज हर कक्षा और वर्ग का विद्यार्थी ट्यूशन पढ़ने पर मजबूर हो रहा है।

बढ़ते ट्यूशन हमारें विद्यालयों की शैक्षिक गुणवत्ता पर सवाल खड़े कर रहे हैं। अब शिक्षा व्यवस्थता में सुधार करने के लिए ठोस और उचित दिशा में प्रयास किए ही जाने चाहिए।

लार्ड कर्जन अपनी नीतियों से हमें क्लर्क बनाना चाहते थे अफसर नहीं। कर्जन विदेशी थे और उन्हें हम भारतीयों के साथ कोई सहानुभूति नहीं थी। अतः उनका ऐसा करना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी।

परन्तु आज शिक्षा नीतियाँ बनाने वाले भारतीय ही है और साथ ही उनके कन्धों पर भारत की भावी आशाओं की जिम्मेदारी भी हैं। अतः उन्हें इसे विषय में गहनता से सोचते हुए सुधार करना चाहिए। उम्मीद करते हैं कि इन सुधार प्रयासों का नतीजा सर्व शिक्षा अभियान जैसा न हो सुधार त्वरित और दूरगामी होने चाहिए वरना ऐसा न हो हम क्लर्क बनने के लायक भी ना रहें?

स्वयं ही विचार कीजिए!

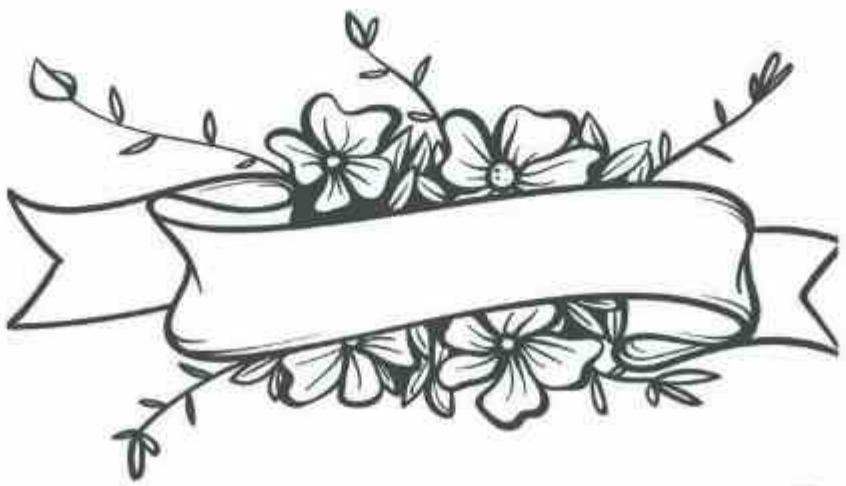

लोकसंगीत पर संचार माध्यम का प्रभाव

डॉ० स्वाति शर्मा
असिसटेंट प्रोफेसर
संगीत (गायन)
रघुनाथ गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कॉलिज, मेरठ

ज्ञान अनन्त है उसके क्षितिज अपार है आयाय अगणित और विद्यायें अंसख्य विचार ज्ञान का आधार है। विचार से सूचना, सूचना से ज्ञान, ज्ञान से विवेक सम्मत, प्रज्ञा अर्थात् मेधा और मेधा से दर्शन का उद्भव होता है। आज ज्ञान के विविध आयाम प्रस्फटित हो रहे हैं। नूतन धारणायें उद्घाटित हो रही है। ऐसे संक्रान्ति काल में सर्जना अपना मार्ग स्वयं ही ढूंढ़ लेती है। और संगीत ने भी अपनी राह पकड़ ली है क्योंकि आज की संचार क्रांति ने न केवल बौद्धिक संस्पर्श को गति दी है बल्कि ज्ञान के विविध पाथेय निर्मित किये हैं। फलस्वरूप चिंतन और अधिक व्यापक और प्रगतिशील बना है और सीखने के तरीकों में बदलाव आ रहा है।

हमारा भारतीय संगीत 'सर्वजन हिताय' व सर्वजन सुखाय के उद्देश्य को लेकर मनुष्य को सामाजिक प्राणी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 'लोक' शब्द जन-मानस का प्रतीक है अतः ग्रामीण और शहरी दोनों का समन्वय दिखायी देता है। "लोक मनुष्य समाज था वह वर्ग होता है जो अभिजात्य संस्कार शास्त्रीयता पांडित्य की चेतना पांडित्य के अंहकार से शून्य है जो एक परम्परा के प्रवाह में जीवित रहता है।" सन् 1955 में इंटरनेशनल फोक म्यूजिक कौंसिंल ने लोक संगीत को परिभाषित करते हुए कहा है। कि लोक संगीत उस संगीत पंरपरा की उद्भावना है जो मौखिक परम्परा के माध्यम से विकसित हुई प्रतीत होती है। इस संज्ञा का प्रयोग उस संगीत के लिए किया जा सकता है। जिसका विकास कलात्मक शास्त्रीय संगीत के प्रभाव से परे समुदाय में स्वाभाविक रूप से होता है। साथ ही इसका संबंध उस संगीत से भी है जो किसी व्यक्ति विशेष द्वारा रचित होकर समाज में मौखिक पंरपरा का अंग बन जाता है। लोक संगीत एक स्वच्छ धारा है जो भारत की माटी की जड़ो में बसा हुआ है इसका महत्व कभी कम नही हो सकता। विद्वानों के मतानुसार 'प्रकृति ही वह प्रथम गुरू है जिसने लोक संगीत की उत्पत्ति में प्रेरणादायक एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। एक-दूसरे से आपस में अपनी खुशी गुनगुनाना, झूमना, ताली बजाना, शोक व्यक्त करना इत्यादि बातें प्राकृतिक रूप से संचार माध्यम का कार्य करती है।'

परंपरागत संचार माध्यम उसकी अपनी गतिशीलता और निंरतर व्यवहार से है। पंरपरागत संचार माध्यम में मुख्य रूप से प्राचीन व ग्रामीण कलाएँ संगीत नाटक कुठपूतली, हरिकथा कहानी-किस्से लोकगीत उत्सव-त्यौहार ग्रामीण सभा मेले सामाजिक संस्थायें आदि शामिल हैं।

सूचनाओं, विचारों और भावनाओं को लिखित मौखिक या दृश्य एवं श्रव्य माध्यमों के जरियें सफलतापूर्वक एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाना ही संचार के माध्यम है। इन माध्यमों से आश्रय उन उपकरण या साधनों से है जो हमारे संदेश को एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाते हैं। जैसे- समाचार-पत्र, टी०वी०, फिल्म, इन्टरनेट इत्यादि। वर्तमान में त्वरित संचार-साधनों की बहुलता से विश्व और लोक एक-दूसरे के बहुत ही निकट आ गये हैं। इन्टरनेट का विश्व को एक सूत्र में बांधने में महत्वपूर्ण योगदान है। इस तरह सम्पूर्ण वसुधा एक कुटुम्ब के सदृश हो गई है। हमारा देश लोकगीतों का देश हैं विभिन्नता में एकता के दर्शन केवल भारत में ही हो सकते है। विभिन्न संस्कृतियों के दर्पण व भिन्न रंगों की छटा बिखेरते लोकगीत ही भारत की पहचान माने जाते हैं। वास्तव में भारतीय सांस्कृतिक जन-जीवन का तो जन्म से लेकर मरण तक कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जो गीतों से दूर हो। जहाँ सावन भर कजरी तथा फागुन के महीनें में फागन गाये जाते हो।

यह पंरपरागत संचार माध्यम ग्रामीण परिवेश की ही देन रही है जो आंनद प्रदान करने के साथ-साथ भारतीय सांस्कृतिक पंरपरा एवं विरासत को मुख्य रूप से दर्शाता है। इसी महत्ता के कारण धीरे-धीरे लोकसंगीत के विकास की बात करें तो सरकार ने लोकल को वोकल बनाने के लिये 1954 में सूचना और प्रसारण मंत्रालय के अधीन गीत एवं नाटक का प्रभाग बनाया जो आज भी सक्रिय है। इस प्रकार लोकसंगीत का प्रारम्भ में प्रचार एवं संचार का माध्यम छोटे-छोटे समूहों में आमने-सामने बैठा होता था वो धीरे-धीरे रेड़ियों जैसे उपकरण के माध्यम से अधिकाधिक लोगों के बीच पहुँचता नजर आया।

संचार के इन आधुनिक माध्यमों से लोक संगीत को एक तरफ जहाँ बाजारीकरण का अस्तित्व प्राप्त हुआ वही इन तकनीक द्वारा इसे विश्वव्यापी मंच प्राप्त हुआ जिसमें कलाकार को अपनी लोककला को प्रदर्शन करने का मार्ग मिला और कला जन-मानस तक आसानी से

पहुँची वही लोक-कलाकारों को काफी हद तक आर्थिक मदद भी मिली आर्थिक मदद के कारण लोकसंगीत आज एक बदले हुए रूप में दिखाई पड़ता है। आधुनिक तकनीक दृश्य और श्रव्य दोनों ही माध्यम से सशक्त है जिसकी वजह लोकसंगीत को उस क्षेत्र के परिवेश में भी देख सकते हैं एवं सुन सकते हैं। पारपंरिक एवं आधुनिक संचार माध्यमों ने जन-मानस में देश की कलात्मक सांस्कृतिक विरासत के प्रति एक समझ भी पैदा की है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हजारी प्रसाद द्विवेदी के हिन्दी साहित्य कोष भाग-1 पृ० स० 689, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, मुम्बई।
2. मध्यप्रदेश का लोकसंगीतः शरीफ मोहम्मद संस्करण 1999 पृ० स० 3
3. ओमप्रकाश सिंह : संचार माध्यमों का प्रभाव संस्करण-1993 पृ० स० 77
4. चंदशेखर मिश्र- निबंध संगीतः फागुन केलोक छन्द से उदधृत पृ० स० 81
5. शोध गंगा, उत्तराखण्ड में परम्रागत एवं आधुनिक संचार माध्य म पृ० स० 104
6. संगीत विशारदः बंसत : संस्करण 2002 जनवरी

❄ ✪ ❄

नारी तेरे रुप अनेक

श्रीमती मनीषा
एम०ए० तृतीय सेमेस्टर (हिन्दी)

नारी राम एवं कृष्ण जैसे अवतारी पुरुषों की दिव्य जननी है तो सरदार भगत सिंह एवं चन्द्रशेखर आजाद जैसे वीर पुत्रों की सहनशीला माता भी है। जिस प्रकार सीता जी के बिना श्री राम की, राधा के बिना श्री कृष्ण की, दुर्गा के बिना देवताओं की शक्ति अधूरी थी उसी प्रकार आज का नर भी नारी के बिना अधूरा है, शक्तिहीन है। आज भी स्त्री ही वह धुरी है जिस पर पुरुष का समग्र जीवन टिका हुआ है। स्त्री के आभाव में, पुरुष के परिवार एवं समाज की कल्पना करना उतना ही असम्भव है जिस प्रकार प्राणों के बिना शरीर की कल्पना करना।

इतिहास साक्षी है कि समय-समय पर स्त्रियों ने भी पुरुषों की भाँति अपने प्राणों की आहुतियाँ दी है और समाज के विकास में भी सफल भागीदारी की है। वीरांगना लक्ष्मीबाई, कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान के इस देश में नारियाँ इतनी प्रतिभाशाली हो रही हैं कि उनकी प्रसिद्धि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक जा पहुँची है। आज कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स, सानिया मिर्जा, साइना नेहवाल, पी०टी० ऊषा, लता मंगेशकर, ऐश्वर्या राय आदि कितने ही ऐसे हस्ताक्षर हैं जो देश की सीमाओं को लाँघकर अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर शान से चमक रहे हैं। नारी के इस परिवर्तित होते रूप का एक विशेष कारण उसकी शिक्षा है। आज की शिक्षित नारियाँ पारिवारिक क्षेत्र, सामाजिक क्षेत्र, शिक्षा, संगीत, लेखन, खेल जगत, व्यवसाय जगत, फिल्मजगत, चिकित्सा, वाणिज्य, कला, विज्ञान, तकनीकी, कानून, धर्म, राजनीति, शासन, प्रशासन, सेना, सरकारी एवं गैर-सरकारी नौकरियों आदि सभी कार्यक्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रही हैं। आज की नारी अब समझ चुकी है कि यदि वह परिवार निर्माण कर सकती है तो देश-निर्माण में भी अपना सक्रिय योगदान दे सकती है। उसे यह भी ज्ञात है कि आज के पुरुष प्रधान समाज में उसके समक्ष नित नवीन चुनौतियाँ, प्रतिस्पर्धाएँ आएँगी किन्तु वह अड़िग है। नारी अपनी पूर्व पृष्ठभूमि से प्रेरणा पाकर स्वयं को इतना सक्षम बनाना चाहती है कि पुरुष से किसी भी क्षेत्र में पीछे ही न रहें वरन् उसके सम्मुख नवीन चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करें।

आधुनिक युग में यद्यपि नारी के रूपों एवं कार्यों में परिवर्तन हो रहा है तथापि उसने अपने पारिवारिक दायित्वों एवं संस्कारों को गँवाया नहीं है। आज भी एक ओर पुरुष जहाँ गृहस्थी कार्यों से अछूता है वहीं दूसरी ओर स्त्री घर एवं बाहर दोनों स्थानों पर संघर्षरत है।

नारी सशक्तिकरण के नारों के मध्य यह प्रश्न भी सिर उठाकर खडा रहता है कि आखिर क्यों अद्‌भुत प्रतिभा की धनी नारी को शिक्षित एवं आर्थिक रूप से सुसम्पन्न एवं स्वावलम्बी होने के पश्चात् भी पग-पग पर संघर्ष करना पड़ता है। वह आज भी अपना अस्तित्व खोजने में लगी रहती है। नारी का यह संघर्ष रुकने का नाम नहीं लेता। आज वह न घर में सुरक्षित है, न ही बाहर। आधुनिक युग में नारी के साथ यही विसंगति है कि वह शोषित की जा रही है। यह यक्ष प्रश्न आज भी हमारे सामने मुँह फैलाए खडा है कि आखिर कब मिलेगी नारी को स्वतंत्रता? और कब होगी वह सुरक्षित?

वर्तमान समय की पुकार है कि नारी की स्थिति पर चिन्तन-मनन होना चाहिए। नारी कहीं से भी अशक्त नहीं है, व सशक्त है, सुदृढ़ है। आज की नारी अबला नहीं है, वह सबला है। नारी को अबला समझने वालों से मैं यह कहना चाहूँगी कि जो स्त्री अपने दूध से एक शिशु को जीवनदान दे सकती है, उसे अपनी उँगली पकड कर चलना सिखाती है वह अबला कैसे हो सकती है? नारी सुदृढ़ है तो परिवार एवं समाज भी सुदृढ है। नारी विहीन परिवार की कल्पना करके तो देखें कैसा दिखेगा वह परिवार। उसमें रहने वालों के मध्य न तो पारस्परिक भावनाएँ होंगी न ही कोई एक-दूसरे का सुख-दुःख का साथी। न ही त्यौहारों में रौनक होगी और न रसोई से सुगन्ध आएगी। जहाँ चूड़ियों की खनक नहीं है वहाँ शिशु की किलकारियाँ कैसे गूँजेगी?

आज की नारी सबला है और वह वे सभी कार्य कर रही है जिन पर पुरुषों का एकछत्र अधिकार हुआ करता था। तनिक पुरुषों से वे कार्य करवाकर तो देखिए जो बस स्त्रियों की झोली में आएँ हैं। बच्चें को जन्म देना तो दूर की बात है, दैनिक जीवन और गृहस्थी के कार्यों में ही उनके पसीने छूट जाएँगे। इसके विपरीत नारी ने घर एवं बाहर दोनों कार्यक्षेत्रों में अपनी बुलंदियों का परचम लहराया है। समग्रतः आधुनिक नारी जितनी ईमानदारी से विवाह, मातृत्व तथा पारिवारिक कर्त्तव्यों का निर्वाह कर रही है उतनी ही ईमानदारी से बाह्य क्षेत्रों में भी कार्य करना चाहती है। वह शिक्षित एवं आत्मनिर्भर होने के कारण पारिवारिक निर्णयों में भी अपना अधिकार चाहती है। समाज मे भले ही नारी को पुरुष की प्रतिद्वन्दी समझा जाता हो किन्तु नारी उसकी सहयोगिनी एवं मित्र बनना चाहती है। वह आरक्षण नहीं अधिकार चाहती है, निष्पक्षता चाहती है। उसमें शिक्षा के कारण वैचारिक स्पष्टता भी आ रही है। अतः उसकी ये आशाएँ निरर्थक भी नहीं कही जा सकती। अब समाज में नारी के बढ़ते कदमों को स्वीकारने में कदापि आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

इसी आशा के साथ जननी, सहधर्मिणी, शक्ति स्वरूपा, युग-निर्मात्री को शत्-शत् शुभकामनाएँ। प्रगति पथ पर वह इसी प्रकार उन्नत होती रहे।

❀ ✪ ❀

सावन आते
हिन्दी हाइकू

डॉ. कंचन पुरी
हिन्दी विभागाध्यक्षा

1.
सावन आते
कलमुहें बादल
खूब रुलाते,

2.
मेघों ने बुने
अनेक ताने-बाने
धरा है भीगे,

3.
नभ में शेष
जल रहित मेघ
अतृप्त धरा,

4.
वर्षा रुठते
नभ का धरा संग
रिश्ता है टूटे,

5.
नदी का वेग
मेघ खूब बढ़ाते
बाढ़ है लाते,

6.
मेघ झरते
चहुं ओर हो जाता
मोहक हरा,

7.
मेघों ने खोले
जब अपने द्वार
आ गयी बाढ़,

8.
भागता मेघ
बरसने का धोखा
खूब है देता,

9.
नभ उमड़े
होती खूब फसल
किसान खुश,

10.
धरा का रूप
बादल बरसते
खिलता जाता,

11.
खूब नहाती
भूखी प्यासी धरा
तृप्त हो जाती,

12.
मेघ झरते
धरा होती पेट से
जग है खिले।।

अब उजालों से तुम्हारा ये नया अनुबंध है

डॉ० सुनीता
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

अब उजालों से तुम्हारा ये नया अनुबंध है।
दीपकों के जगमगाने पर लगा प्रतिबंध है।।
बादलों के पर हैं कुछ कुतरे हुए से,
और परिंदे भी जरा सहमे हुए से।
ये हवा बासंती भी थोडी डरी सी,
ओस की बूंदे हैं पीड़ा की नमी सी।
खुशबुओं के ताल में तब से बड़ी दुर्गन्ध है,
सूर्य का जब से अंधेरों से हुआ अनुबन्ध है।।
दीपकों के जगमगाने .....

बौना हुआ था सत्य जब गौरवमयी इतिहास में,
घिर गये थे भीष्म तब ही व्यंग्य और परिहास में।
किस तरफ किसको ये झूठी आस लेकर जायेगी,
किस तरफ किसकों ये झूठी प्यास लेकर जायेगी।
ये नयी 'सत्ता' है इसके कुछ अनोखे छन्द है।
सत्य और शुचिता यहाँ अब झूठ के घर बन्द है।।
दीपकों के जगमगाने पर .....

रावणी कोई हँसी 'राठौर' के होठों पे है,
आग सी गर्मी किसी मासूम की चोटों पे है।
पर्वतों सा दर्द अब खुलने लगा है,
औ फिजा में जहर सा घुलने लगा है।
न्याय का अपराध से कौन-सा अनुबंध है।
मेमनों के शहर में भेड़िया स्वच्छंद है।।
दीपकों के जगमगाने पर .....

❄ ✪ ❄

खंडहर

डॉ० सुनीता
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

खंडहरों की वैभव सम्पन्नता
है तुम्हारी सोच से भी परे
आदर्श जीवन मूल्यों पर टिका
संस्कारों की चौड़ी दीवारों का भवन
एक ईंट की दीवारें समझ न पायेंगी
उन खंडहरों में बहुत कुछ है छिपा
एक खंडहर जो अभी कुछ है नया
खंडहरों को खोजना भाने लगा
गौरवशाली जिंदगी को बांच कर
इक नयी कहानी कहना भाने लगा
है बहुत कुछ हर किसी की जिंदगानी में
हर कहानी से सबक ले
मैं कहूं वो,
आज प्रासंगिक है जो,
उस कहानी का अंत
लिखना भाने लगा।

नये सपने

श्रीमती प्रीति
असिसटेंट प्रोफेसर (अंग्रेजी विभाग)

आँखों में फिर से हैं नये सपनें,
जो लगते हैं अपने-अपने।
ये जीवन को राह दिखलाते हैं।
हमकों जीना सिखलाते हैं।
कुछ कर गुजरने का जज्बा,
इनसे ही हमको मिलता है,
आज फिर इन आँखों में
कोई ख्वाब हंसी सा पलता है।
ना व्यर्थ करो इक पल को भी
नित ये हमको सिखलाते हैं।
जीवन की जंग में ये अपनी
अलग पहचान बनाते हैं।
मैंने भी देखा है एक सपना
जिसमें है एक नई दुनिया,
जो भरी है सारी खुशियों से
प्यारी-प्यारी न्यारी दुनिया।
जो आजाद है हर बन्धन से
और भरी है नये परिवर्तन से।
इस परिवर्तन को आगे बढ़ाना है
हर बुराई से अब मुक्ति पाना है।
अब मुझको इस सपने को जीना है
जीवन के हर एक पल को महकाना है।
इस सपने को जीवन का लक्ष्य बनाना है।

❄ ✪ ❄

जब तक लगना सार्थक न लगे

स्वाति मिश्रा
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी विभाग)
रघुनाथ गर्ल्स पी०जी० कॉलेज मेरठ

लगे रहो तब तक
जब तुम्हें लगे
कि तुम्हारा लगना
लगा नहीं है अब तक;
कि तुम्हारा लगना
लगने को लगे
कि लगा हुआ है
कोई मुझमें
कि घुला हुआ है
कोई मुझमें लगकर!

जब समय साथ न दें
तुम्हारा लगना तब बहुत जरूरी है;
जब पछाड़ खाकर गिरों
लगे रहो तब भी
जब तक तुम पछाड न दो
लगे रहो;
लगे रहो तब तक
जबतक तुम्हारा लगना
सबसे जीत न जाए!

ससुराल में बहू

पूजा सरोज
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)
रघुनाथ गर्ल्स पी०जी० कॉलेज, मेरठ

जो लाड प्यार से पली बढ़ी,
घर छोड़ पिता का ब्याह चली।
एक नया सुखद संसार मिलेगा,
पिता से बढ़कर प्यार मिलेगा।

क्या सोची थी क्या पाती है,
हर रोज सताई जाती है।
पत्नी बनकर वह विवश हुयी,
हर पल तड़पायी जाती है।

क्या जुर्म किया कोई उसने?
जो नारी जन्म को पायी है।
क्या जुर्म किया कोई उसने?
जो पत्नी बनकर आयी है।

कभी पति के थप्पड़ सहती,
कभी सास से गाली खाती है।
रखते हैं घर में कैद कभी,
कभी सड़क पर कर दी जाती है।

अधिकार दिया उसको किसने?
जो इन पर शासन करते हैं।
ससुराल की खातिर जीती जो,
वो उसी पर थप्पड़ जडते हैं।

घर की इज्जत है सोच-सोच,
हर दर्द सहन कर जाती है।
रोती कोने में बैठ कहीं,
फिर रसोई में लग जाती है।

ना भूलों महिषावध करने वाली,
शक्ति श्रेष्ठ एक नारी थी।
ना भूलों दुष्टों को काट-काट,
काली ने रंगी कटारी थी।

क्यों भूल मानवीय गरिमा को,
निर्बल पर शक्ति दिखाते हो?
क्यों खुद को मर्द वो कहते जो,
औरत पर हाथ उठाते हैं?

बहुओं पर जुल्म जो करते हैं,
हे ईश्वर उन्हें अभिशाप लगे।
मुखाग्नि को भी ना मिले पुत्र,
हर जन्म उन्हें यह पाप लगे।

कविताऐं

डॉ० वीणा शंकर शर्मा
सेवानिवृत्त एसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)

अंधेरा और घना होने दो
निस्तब्धता और निविड़ होने दो
घाव जरा और हरे होने दो
भाव कुछ और उफन जाने दो
इच्छायें और प्रबल होने दो
शब्द और अर्थ अब नर्तन करके
इक नई ताल को जन्म देंगे
गति और यति का खेल
अब शुरू होगा
न तुम, तुम रहोंगे
ना मुझमें मैं होगा
फासले स्वतः ही मिट जायेंगे।

❁ ✪ ❁

शिकायत

डॉ० वीणा शंकर शर्मा
सेवानिवृत्त एसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)

शिकायतें मैंने मुट्ठी में छिपा रखी हैं।
इन्हें छिपी ही रहने दो
औरों ने मुट्ठी खोल दी
तो पता नहीं कितना
एकत्रित खजाना मिलेगा
दबी बात दबी रहने दो
बंद मुट्ठी लाख की
गर खुल गई तो खाक की।

❁ ✪ ❁

आदमकद

डॉ० वीणा शंकर शर्मा
सेवानिवृत्त एसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)

आदम कद दर्पण में
पूरा मैं दिखता हूँ
छोटे से दर्पण में
थोडा-सा दिखता हूं
चाहते हो जानना
पूरा का पूरा मुझे
तो आओं मेरे
बराबर हो जाओ।

❋ ✪ ❋

पखेरू

डॉ० वीणा शंकर शर्मा
सेवानिवृत्त एसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)

मैं उड़ना चाहती हूँ
पंख सीले हैं मगर
मैं हसँना चाहती हूँ
अधर गीले है मगर
मैं लिखना चाहती हूँ
नयन भीगे हैं मगर
बस प्रतीक्षा और थोड़ी है बची
अधर गायेंगे मगन
नयन नर्तन कर उठेंगे
पंख फैला पखेरू उड जायेंगे

❋ ✪ ❋

किसी को अपना बनाया ही नहीं

कु० सुरभि
अंशकालिक प्रवक्ता (हिन्दी)

किसी को कभी अपना बनाया ही नहीं।
कोई सपना इन आँखों में सजाया ही नहीं,
रुबरु थे जमाने के सब जुल्मों–सितम से,
इसीलिए एक अश्क भी आँखों से गिराया नहीं।।

यू तो चाहते थे समेट ले खुशियाँ सारे जहाँ की।
लेकिन उन्हें हमारे पास आना भी गंवारा नहीं
हर पल जीते थे सुनहरे कल की चाह में
पर अब तो आज में भी साँस लेने की इच्छा नहीं
क्यों खेलती है जिन्दगी नए दांव पेंच हमारे ही साथ
जब गिरकर उठने का साहस ही नहीं

ऐ विधाता! यदि ये तेरा विधान है
हर रात के बाद सुबह का आगाज है
तो और कितनी राते शेष हैं जीवन में
सवेरा न होने में, क्या तेरा ही कोई राज है

क्यों लेते हो परीक्षा इतनी बड़ी
क्यों रुलाते हो घड़ी दर घड़ी
टूटकर बिखर जाती इस जहाँ में
तेरे सहारे ही तो मुस्कुराकर रही हूँ खड़ी

छुपाकर जख्मों को किसी कोने में
इस जमाने के साथ मुस्कुराना चाहते थे
इस व्याकुलता को मिटाना चाहते थे
अपनी व्यथा को कही छिपाना चाहते थे

छोटी–सी खुशी में हंसना सीख लिया था हमने
दूसरों के हक में जीने का विचार किया था हमने
जल्द ही एहसास करा दिया इस जमाने ने
जिस जिंदगी को संवारना चाहते थे हम
वो जिन्दगी भी हमारी है ही नहीं।।

अब उठते है कदम पर बढ़ते नहीं
इनमें हौसलों की उड़ान ही नहीं
यूँ तो रोता है मन अब हर लम्हा
लेकिन शायद इन आँखों में अब पानी भी नहीं
पानी भी नहीं ....

गुरु की महिमा

श्रीमती सुरभि
अंशकालिक प्रवक्ता (हिंदी विभाग)

गुरु की महिमा से मैंने, भगवान को मिलते देखा है।
पत्थर को पिघलते देखा है,
सागर भी मचलते देखा है।
गुरु की महिमा से मैंने, इन्सान को बदलते देखा है।
जो झूठी बात बनाता है,
छल करना जिसको भाता है,
गुरु के आगे उन लोगों को, सच बात उगलते देखा है।
जो बच्चें नटखट होते हैं,
जो व्यर्थ समय को खोते हैं,

गुरु की महिमा से उन सबको सतपथ पर चलते देखा है।
गुरु जिन राहों से जोड़ गए,
पद चिन्ह जहाँ पर छोड़ गए,
उस मार्ग पे मैंने शिष्य को, हर शाम टहलते देखा है।
हम जिनसे शिक्षा पाते हैं,
हम उनकों शीश झुकाते हैं,
जो भूल गया इन बातों को, हाथों को मलते देखा है।
गुरु की महिमा से मैंने, भगवान को मिलते देखा है

शक्ति स्वरूपा

डॉ० रजनी श्रीवास्तव
एसोसिएट प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग

तुम मुक्त हस्त से बाँटती
उन्मुक्त खुशियाँ अपार,
तुम सौम्य रुपा, गर्विता
तुम प्रकृति का उपहार
तुम प्रेम, दया की मूर्ति
तुम रुद्र का अवतार,
तुम दृष्टि से हो पारखी
तेरे आँचल में संसार,
तुम विश्वमोहिनी, तुम शतरूपा
तुम स्वधा, तुम शारदा,
क्षमा तुम, माया तुम
तुमसे हारे महाकाल,
तुम शक्ति स्वरूपा नारी हो
करो खुद पर विश्वास,
तुम सीमित नहीं, असीमित हो
तुम्हारा नम तक विस्तार
स्त्री होना कोई बोझ नहीं
मन को जीतों, कुछ और नहीं
कर्म करों तुम ऐसा कुछ
बन जाओं बस एक मिसाल

नारी! तू बन सकती अग्रणी

राखी काम्बोज
अंशकालिक प्रवक्ता (हिन्दी विभाग)

नारी! तू बन सकती है अग्रणी
तुझ में है तर्क हेतु अपार बुद्धि
क्यों तूने माना?
तू वेद नहीं पढ़ सकती या
तर्क नहीं कर सकती
तेरी तर्कशक्ति को क्षीणकर
कौन करेगा मनमानी
तनिक नहीं सोचा
बस स्वीकृति में सिर झुका लिया।।

उस मानव को अपना भाग्य समझा।
जिसने तुझ पर अत्याचार किया
कहूँ उसे पुरुष या नारी
कभी पति का शोषण सहती
कभी सास, कभी ननद बन करती या कराती
कभी उल्टी प्रतिक्रिया भी अपनाती

नारी अपना भाग्य खुद से बना
परम्परा को आदत न बना
हे नारी! तू बन सकती है अग्रणी
बस जुटा सद्मार्ग पर चलने हेतु शक्ति।
भय मन से निकाल, तू कर सकती
हर वह काम जिसे देख
कहा जाता यह नहीं तेरे बस की।

तुझे कोमलांगी बताकर
मन में एक डर बैठाया
उसे सच मान बैठी।

मत कर अपने मन पर हावी
दूसरे की अप्रेरित करती शक्ति
बस: तथ्य और तर्क
दोनों का विश्लेषण करने की
रख विवेकी शक्ति।

मिलेगा रास्ता
बनेगी अग्रणी, पछताएँगे: वो
जो करते हैं तेरी बेकद्री।
नारी! तू बन सकती है अग्रणी
तुझ में है तर्क हेतु अपार बुद्धि।।

❋ ✪ ❋

आवाज एक विधवा की

वंशिका
एम०ए० अंग्रेजी

आज कुछ लिखने बैठी हूँ,
अपने आँसुओ को शब्दों में पिरोने बैठी हूँ।
यूँ तो आया था वह मेरी जिंदगी में हमसफर बनकर
पर आज उसकी यादों को रोने बैठी हूँ।
घरवालों ने वह शादी के लिए पसंद किया,
मैंने भी उसको अपना नसीब समझ लिया।
सात फेरे लेकर साथ रहने की कसमें खाई थी,
अब वो बीच रहा में ही साथ छोड़ कर चल दिया।
वचन दिया था अंधेरे में भी साथ दूंगा।
अरे जहाँ अपना साया भी साथ छोड़ देता हैं,
उसने साया बनने का वादा किया था,
बुरे वक्त में तो अक्सर अपने भी साथ छोड देते है।
उसने तो अच्छे वक्त में ही धोखा दे दिया,
कायरों की तरह मुँह मोड़ लिया,
उन कसमो को तोड़ दिया उन वचनों को छोड़ दिया
मुझे उम्र भर के लिए कैसा तन्हा कर दिया।
पति कम दोस्त बनकर साथ दिया
जरूरत पड़ने पर अपना हाथ दिया,
आज जब मुझे जरूरत पड़ी,
तो अंधेरों में धकेल दिया,
पराया समझ कर यूँ मुंह मोड़ लिया।
उम्र भर साथ रहने का वादा किया था,
अपने परिवार का ख्याल रखूगा माँ को वचन दिया था,
अब उस माँ को कैसे समझाऊँ तेरा बेटा नहीं आएगा,
इस घर को छोड़ गया तेरा आँगन सूना हो गया।
उस सास को कैसें समझाऊं जिसने तुम्हें जमाई नही बेटा माना था,
उस बहन से क्या कहूँ जो हर राखी पर तुम्हारा इंतजार करती थी
और अक्सर कहा करती थी मेरा भैया आएगा तोफा लाएगा
बस यह कहकर इंतजार की घड़ियाँ गिनती थी।

कौन–सी वादियों में चले गए हो,
कौन सी राह पर मुड़ गए हो,
मुझे दुल्हन के रूप में सजाकर तुम खुद कहाँ खो गए हो।
अकेला चल ना आसान नहीं होगा, दुखों से मेरा नाता कम नहीं होगा।
सुख के दिन चले गए हैं साथ घूमना फिरना,
हँसना हँसाना, एक हसीन सपने बन गए हैं।
एक विधवा बन अंदर से टूटी हूँ अब कभी जुड़ नहीं पाऊँगी।
माँ और बहन को अकेले संभाल नहीं पाऊँगी।
मेरे लिए कोशिश तो करते उस मौत से लड़ कर तो देखते
क्या पता वह मुझ पर तरस खाती और
मुझ लाचार बेबस का सहारा समझ तुमको छोड जाती।
उस ईश्वर ने भी धोखा दिया
नसीब ने भी बदला लिया
एक पल राजकुमारी बनाकर दूसरे ही पल
जिंदगी की कहानी में एक विधवा का रोल दिया।
जिंदगी से सब रंग छिन गए हैं,
खनकती चूड़ियों के चूरे हो गए हैं।
सारी खुशियों की जगह दुख के बादल टूट गए है,
तुम बिन मेरा कोई अस्तित्व नहीं,
तुम बिन मेरा कोई सुख नहीं।
इस समाज में तुम बिन मेरी कोई जगह नहीं।
साँस लेना भी मौत लगता है
एक पल तुम बिन एक साल लगता है।
उस बहन की डोली भी उठवानी है,
मुझे अकेले कैसे इतनी जिम्मेदारियाँ निभानी है।
कोई फरिश्ता बनकर आ जाओ,
मुझ बेसहारा को एक रास्ता दिखा जाओ।
यह दुनिया जालिम है तुम भी जानते हो,
अकेले जीने देगी नहीं और तुमसे अलग मेरी दुनिया बसेगी नहीं।
खुद तो चले गए, शायद इसलिए इतनी यादें छोड़ गए।
कोशिश करूँगी कि इस घर की बहू नहीं बेटा बन जाऊं,
तुम्हारी जिम्मेदारियाँ उठाऊ, मां को संभाल कर,

घर मैं चलाऊ, बस तुम देना साथ मेरा।
तुम बिन चलना वैसे तो मौत है,
पर जो माँ जीते जी मर गई, उसको अब नई दुनिया दिखानी है,
शायद बहू छोड़ बेटा बन मुझे वो जिवानी है।
तुम्हारी जगह कभी ले नहीं पाऊँगी,
उम्र भर यूँ ही अकेले गुजारनी है, तुम्हारी फोटो पर हार चढ़ाना है।
पल-पल मरती हूँ यह सोचकर जिन हाथों से मंडप पर माला डाली थी,
आज वह इस कदर मजबूर हो गए हैं, आँखों से आंसू रुकते नहीं,
दिल तड़पता है, पंलग खाली है।
तुम बिन अच्छा लगता नहीं कैसे कहाँ से शुरु करूं कुछ रास्ता दिखाओं,
हमसफर बनकर मंजिल तक पहुँचाओ साथ नहीं हो,
लेकिन परछाई बन जाओ।
ओ मेरे हमसफर मेरा साथ निभाओं.....
ओ मेरे हमसफर मेरा साथ निभाओं.....।।

❁ ✪ ❁

दीपशिखा सा

श्रीमती ग्रीशा
शोधछात्रा हिन्दी

मेरे मन में
गीत है,
रुबाइयाँ हैं
उम्मीद है।
गाती हूँ, गुनगुनाती हूँ
एकांत में मुस्कुराती हूँ।
फिर...
ना जाने क्या?
कुछ तो आता है
घेर लेता है, मुझको
डराता है
अनदेखा सा
फैला हुआ है
ना उजाला है
ना अंधेरा है
ना हवा है
कुछ बैठा हुआ है अंतर्मन तक
ना जाने क्या है?
जो केवल स्त्री को
जड़-कर जाता है।

❋ ✪ ❋

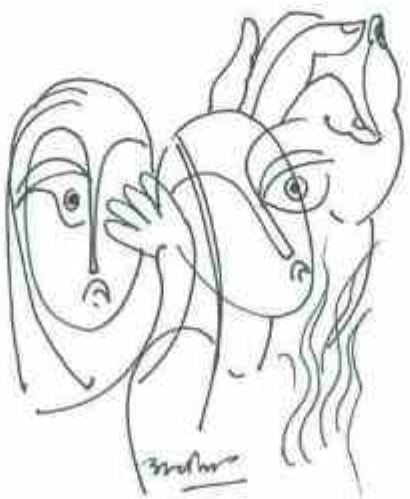

स्त्री और स्टूल

श्रीमती ग्रीशा
शोध छात्रा हिन्दी

मेरे घर का एक स्टूल
क्या क्या करता है, चुपचाप...
कभी खड़ा कर दिया, खाने की थाली के नीचे
कभी पढ़ता है किताबें
किताबों को ही लादे।
जब आस-पास कोई कुर्सी नहीं होती
तब बिठा लेता है अपनी पीठ पर मुझे भी
थक जाता है जब कभी कभार
तो सुंदर-सा मेजपोश बिछाकर...
रख देती हूं एक ओर
सुंदर-सा फूलदान सजाकर।
बहुत खूब जंचता है फिर
मेरी तरह,
बिलकुल मेरी ही तरह।

❋ ✪ ❋

एक हृदय

श्रीमती ग्रीशा
शोधछात्रा हिन्दी

उसका हृदय फट नहीं जाता
टुकड़ा टुकड़ा बँटा रहता है
एक टुकड़ा माँ–पापा के सिरहाने
मायके में रखा छूट जाता है
जो कभी साथ नहीं आता।
जो टुकड़ा साथ रहता है, वो बच्चों में समा जाता है
एक टुकड़ा अपने प्रिय के हाथों मे थमा देती है
फिर भी...
हर जगह धड़कता रहता है
मस्त, भरपूर और तंदुरुस्त।

❊ ✪ ❊

झूमना या कांपना

श्रीमती ग्रीशा
शोधछात्रा हिन्दी

छूकर गुजरती है
जब भी हवा,
कोमल सी पत्तियों को
हर बार पत्तियाँ...
झूमती ही नहीं हैं
कांपती भी जरूर होंगी।

❊ ✪ ❊

मुझे सिर्फ एक लड़की कहलाना है

ऐनी सैफी
गेस्ट फैकल्टी (अंग्रेजी)
आर०जी०पी०जी० कॉलेज, मेरठ

ना मोती सा चमकना है, ना सोने सा खुद को तपाना है,
मुझे सिर्फ एक लड़की कहलाना है,
ना दुर्गा, ना काली, ना सीता, ना द्रोपदी
और ना ही कोई और देवी खुद को दिखाना है,
मुझे सिर्फ एक लड़की कहलाना है,
ना मेनका सी अप्सरा और ना ही कोई त्याग की देवी खुद को बनाना है,
ना सावित्री और ना ही सुपर्णखा जैसा भाग्य पाना है,
ना कुशल ग्रहणी या बिजनेस वुमन को बुलवाना है,
मुझे सिर्फ एक लड़की कहलाना है
किसी की बेटी,किसी की पत्नि, किसी की बहन
और फिर किसी की माँ नही है मेरी पहचान...
मैं हूँ एक लड़की और मुझे सिर्फ वही कहलाना है।
बागी नहीं और ना ही कोई कैदी खुद को बनवाना है,
मुझे तो खुले आकाश में अपने पंखों को फैलाना है,
ना इसको, ना उसको, या किसी समाज को खुश कराना है,
इस बार सिर्फ अपनी खुशी के लिए मुझे लड़की कहलाना है।
ना नुमाइश का सामान, ना छिपाने की वजह बनाओ मुझे,
फैलाने दो पंख, इतना ना दबाओं मुझे,
ना किसी की अमानत ना माँ और बाप पर बोझ कहलाना है,
मुझे तो अपने सपनों का भार खुद ही उठाना है।
एक बार दुनिया को सिर्फ अपनी नजरों से देखकर,
रात के ख्वाबों को दिन के उजालों में सजाना है,
खुशी हो या गम, हर लम्हें को मन मर्जी से गले लगाना है,
मुझे सिर्फ एक लड़की कहलाना है।
क्यूँ भईया को किसी के जैसा नही बनना है,
क्यूँ समाज ने बनाए मेरे लिए इतने सांचे है,
क्यूँ मुझे उन सब में ढ़लना है,
इन सांचों सा नहीं, मुझे सिर्फ अपने जैसा सांचा बनाना है,
मुझे सिर्फ एक लड़की कहलाना है।
खुशी में मुस्कुराना, और गम के मौसम में ना अब आँसुओं को पी जाना है,
खुल कर जिंदगी को गले से अब लगाना है,
मुझे सिर्फ एक लड़की कहलाना है,
मुझे सिर्फ एक लड़की कहलाना है।

❁ ✪ ❁

ऐसा क्यों हैं?

तय्यबा
एम०ए० द्वितीय (अंग्रेजी विभाग)

तेरी इस दुनिया में, ये मंजर क्या हैं?
कहीं अपनापन, तो कहीं पीठ में खंजर क्यों है?
तेरी इस दुनिया में, ये इतने नजारे क्यों हैं?
कहीं बजती शेनाइयाँ, तो कहीं उठते जनाजे क्यों हैं?
समाना सबको इस धरती में ही है।
फिर कहीं, मिट्टी, कहीं आग, और कहीं ताबूत क्यों हैं?
रंग, जाति, भगवा केसरिया भिन्न-भिन्न हैं।
परन्तु धारण किये हुए इन सबको, मानव ही क्यों हैं?
तुझसे ही मिलना है, अंत में सबको।
फिर मिट्टी के बजाय, ऊंची आलीशान इमारतें क्यों हैं?
जन्नत तो मां के कदमों में भी है।
फिर उसे पाने के लिए, ये दान और चढ़ावे क्यों हैं?
सुना है तू हर जर्रे में है रहता,
फिर जमी पर कहीं मस्जिद, कहीं मंदिर क्यों है?
तू ही लिखता हर किसी का मुकद्दर का फिर कोई बदनसीब, कोई
मुकद्दर का सिंकदर क्यों हैं।
बिछाकर अखबार सौ जाते है फुटपाथ पर।
फिर गद्दों पर सोने के लिए, नींद की गोलियों की जरूरत क्यों है?
चाहें जी ले साल भी जिंदगी,
फिर भी पूछते हैं, ऐ मौत तुझे इतनी जल्दी क्यों है?
मौहब्बत तो लैला मजनू, शीरीन फरहाद ने भी की,
फिर याद ए मुहब्बत ताज महल ही क्यों हैं?
हाँ हूँ मैं भी, इस रंग-मंच की एक कठपुतली।
फिर पहचान मेरी इतनी, सीमित सी क्यों हैं?
हाँ देश अपना हिंदुस्तान, एक ही है।
फिर धर्म के नाम पर, ये इतने दंगे क्यों हैं?

❋ ✪ ❋

मेरा नीला पीला थैला

साबा सैफी
एम०ए० द्वितीय वर्ष

आज मिजाज है बड़ा अलबेला
क्योंकि, पड़ोस में लगा है मेला।
लाना है मुझे सामान भरकर थैला
परंतु कैसे? पास में नहीं है थैला
मेरे पास था जो कल नीला थैला।
आज वह पड़ा मैला कुचैला।
अब घर में था जो मेरा भाई बॉर अकेला
पूछा मैंने चलोगे साथ मेला।
मेला जाते ही दिखाई दिया पीला थैला
खरीदने गए देखकर दूर खडा ठेला।
अब गए पास तो देखे रंग-बिरंगे थैला
मन को भाए सारे रंग अब क्या करो रे - बेला।
दुविधा में पड़ गया मन तो मेरा
फिर देखा बटवे में है बहुत सारा पैसा मेरा।
कहा मैंने अरे सुनो! राम प्यारे भैया
दे दो मुझको यह दोनों रंग के नीले पीले थैला।
दे दिया भैया ने मुझको, मेरी पंसद का थैला
लगा झूमने लगा मेरा मन होकर बड़ा-रे अलबेला।
आखिरी कुछ पंक्तियाँ इस तरह-
हर जगह ले जाऊँगी
हर सामान ले आऊँगी
फटा तो पोचा बनाऊँगी
तब भी काम में लाऊँगी।
एक बात सब रखना याद
कभी ना छोड़ना इसका साथ
प्लास्टिक को नो कह देना
जीवन सुरक्षित अपना कर लेना।
मैंने तो ले लिया अपना नीला पीला थैला
अब तुम भी लेना केवल, कपड़े वाला ही थैला।।

आजादी का अमृत महोत्सव

"वो लोग"

हिमांशी चौधरी
एम०ए० चतुर्थ सेमेस्टर
ड्राइंग एंड पेंटिंग विभाग

अगर ना होते वो लोग
अगर ना होते वो लोग,
डर छोड़ा उन लोगों ने
घर छोड़ा उन लोगों ने,
इस देश की आजादी को
इस माटी की आजादी को।।
गोली खाकर उन लोगों ने
फाँसी खाकर उन लोगों ने,
अगर ना होते वो लोग,
अगर ना होते वो लोग
भूखे रहे होंगे वो लोग
पैदल चले होंगे वो लोग।
इस देश की आजादी को,
इस माटी की आजादी को।
अगर ना होते वो लोग
अगर ना होते वो लोग।।

❁ ✪ ❁

नारी शक्ति (नारी की प्रार्थना)

मानसी लोधी
एम०ए० चतुर्थ सेमेस्टर
ड्रांइग एडं पेंटिंग विभाग

मत भेज प्रभु मुझे इस दुनिया में,
डर अधिक अब लगता है
कहाँ रहूँ सुरक्षित में
सोच दिल यह रोता है

दुनिया ने भी नहीं अपनाया है
बेटी की सुरक्षा, लाचारी देख
माँ–बाप ने भ्रूण हत्या कराया है

नहीं अपनाया जिस माँ ने
अब परायों से क्या उम्मीद जगायेगा
हर रास्तो पर अब
एक हैवान जिंदा पायेगा...

रहम तो किया होता ए खुदा
रहम तो किया होता ए खुदा मुझ पर
मेरी गलती इन सब में क्या थी....
खुलकर जीना है इस दुनिया में
मेरी बस यही दुआ थी....

❁ ✪ ❁

कविता 'देशभक्ति'

"फिर जागने का समय है"

हिना
एम०ए० चतुर्थ सेमेस्टर
ड्रांइग डिपार्टमेन्ट

फिर जागने,
फिर होश में आने का समय है।
जो अपनी धरोहर है,
ना गँवाने का समय है।

ए माँ ! तेरे प्रहरी है,
कसम तेरी उठा के,
दुश्मन की उठी तुम पे,
नजर, उसको झुका के।

घर में घुसे,
दुश्मन को, भगाने का समय है।
जो अपनी धरोहर है,
न गँवाने का समय है।

तोपों के मुहानों से,
जहाँ आग निकलती,
उन सरहदी खेतो में,
लगी आग धधकती।

उस आग में,
अब जुल्म तपाने का समय है,
जो अपनी धरोहर है,
ना गँवाने का समय है।

माँ। है तू तेरे लाल है,
अर्चन मे तेरी हम,
रक्षा के लिए निकले है,
ले थाल में सिर हम।

माँ आरती, प्राणो से,
सजाने का समय है,
जो अपनी धरोहर है,
ना गँवाने का समय है,
फिर जगाने,
फिर होश मे आने का समय है।

❋ ✪ ❋

मेरा भारत महान

अतिया नूर
एम०ए० फाइनल ईयर
चित्रकला–विभाग

जिसे देखे जग सारा
पुरे जग से यहीं निराला
जिसे देखे जग सारा
पुरे जग का यही सितारा
जिसे मिला संस्कृति का वरदान
पुरे जग मे छाया जिसका उजाला
जिसे देखो तो बड़े आत्मसम्मान
पुरे जग में यही भारत देश हमारा
जिसे देखो तो मिले आँखों को नए अरमान
पूरे जग में यही प्यारा
हमेशा ऊँचा रहे इसकी शान और आन
पूरे जग से मिले जिसे सम्मान
हाँ यही है वो राष्ट्रीय ध्वज हमारा.....

❋ ✪ ❋

केसरिया

शैली मौर्य
एम०ए० द्वितीय वर्ष
ड्राइंग एंड पेंटिंग विभाग

केसरिया हो रही है धरती, केसरिया हो उठा गगन
भारत तुमको शतशः सलाम, भारत तुझको कोटि नमन।
जापानी गर्वित है उनके घर का सूरज
ऐसा सूरज तो अपनी धरती के कण-राज है
भारत तो आकाश से धरती तक है पूर्ण चमन
भारत तुमको शतशः सलाम, भारत तुझको कोटि नमन।

पाक हुआ नापाक कारगिल में भी मुँह की खाई
चोटी पर था शत्रु अपने पास थी गहरी खाई
विजयी हुई हम उस युद्ध में भी करके तुझको दफन
भारत तुमको शतशः सलाम, भारत तुझको कोटि नमन।

है नापाक वह पाक मित्र महाधूर्त नवाज शरीफ
भाड़े के टट्टूओं ये गर्वित रिपु-देश का चीफ
अब दुस्साहस किया तो हम कर देंगे पूर्ण दमन
भारत तुमको शतशः सलाम, भारत तुझकों कोटि नमन।

पाक देश नापाक द्वेष रखता है भारतीयों से
इधर हमारे राग की गाथा गुंजित है सदियों से
तू ही क्या अपने शत्रु तो अमरीक जर्मन
भारत तुमको शतशः सलाम, भारत तुझको कोटि नमन।।

❋ ✪ ❋

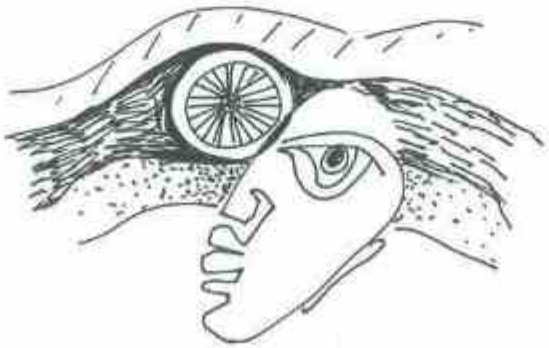

बुलावा

शैली मौर्य
एम०ए० द्वितीय वर्ष
ड्राइंग एंड पेंटिंग विभाग

आया है, बुलावा तो जाना ही पड़ेगा।
आया है, बुलावा तो जाना ही पड़ेगा।।
भारत–माता के आगे अपना शीश झुकाना ही पड़ेगा।
छोड़कर अपने सपनों को, अपनो को, भारत माता को
अपना समर्पण करना ही पड़ेगा।
हुये कुर्बान लाखों परिवार अपने ही घरों से
उन सब कुर्बानों को अब चुकाना ही पड़ेगा।
आया है बुलावा तो जाना ही पड़ेगा।।
शहीद हो गया देश का बेटा
उस बेटे का कर्ज आज चुकाना ही पड़ेगा।
रोती रह गई उस वीर पुत्र की गर्भवती वधु
उस वधु के आँसुओं का बदला आज लेना ही पड़ेगा।
आया है बुलावा तो जाना ही पड़ेगा।।
तीन रंगों का मेरा तिरंगा, देश की शान है।
मत पूछो इस तिंरगे पर मेरी जान कुर्बान है।
कफन में लिपटा शरीर भी, कुर्बानी की पुकार है।
कुछ मत कहों बरस अब उस माँ का दुलार है।
माँ ने पुकारा है, तो जाना ही पड़ेगा।
देश का कर्ज चुकाना ही पड़ेगा।
आया है बुलावा तो जाना ही पड़ेगा।।

यारों की यारी

हिमांशी
एम०ए० चर्तुथ सेमेस्टर
ड्राइंग एंड पेंटिंग विभाग

यारों की यारी वो मस्ती ढ़ेर सारी,
याद है मुझको वो बातें हमारी,
वो साथ में हँसना, वो फैरवैल का रोना,
वो पहली लड़ाई वो साथ में की गई पढाई,
यारों की यारी वो मस्ती ढ़ेर सारी,
याद है मुझको वो बातें हमारी।

वो तेरा मुझे मनाना, हर छोटी बात पर चिढ़ाना,
वो मुझको सताना, सता कर फिर मुझे मनाना,
वो मैंडम के साथ के मस्ती, वो यादों की बस्ती,
वो यारों की यारी वो मस्ती ढ़ेर सारी,
याद है मुझको वो बातें हमारी।

वो तेरा मुझे समझाना, वो मेरा साथ निभाना,
हर छोटी-छोटी गलतियों पर मुझे सब से बचाना,
वो लन्च का खाना वो बातें ढेर सारी,
याद है मुझको, वो बाते हमारी।

वो फैरवैल के दिन रोते-रोते घर जाना,
फिर एक-दूसरे से दूर ना हो पाना,
यही तो है दोस्ती, यही है यारी,
यारों की यारी वो मस्ती ढ़ेर सारी,
याद है मुझको वो बातें हमारी।

❋ ✪ ❋

माँ

रचना हरित
कला विभाग

कितनी प्यारी मेरी माँ
दुनिया से निराली मेरी माँ
दुःख हो मुझे, रोती मेरी माँ
चोट लगे मुझे, तो मरहम बन जाती मेरी माँ
मेरी खुशी के लिए कुछ भी कर जाती मेरी माँ
धूप लगे मुझे तो आँचल बन जाती मेरी माँ
खुद खाने से पहले मुझे खिलाती मेरी माँ
झूठा गुस्सा कर के मुझे सताती मेरी माँ
मैं रूठ जाँऊ तो मुझे गले लगा लेती मेरी माँ
हँसके मना लेती मेरी माँ
अब तेरे बिना कहाँ जाऊँ मेरी माँ
हर अक्स में तू ही नजर आती मेरी माँ
हर पल तेरी याद सताती है मेरी माँ
मुझे भी अपने पास बुला ले मेरी माँ
फिर से एक बार गले लगा ले मेरी माँ
मुझे अपने आँचल में छुपा ले मेरी माँ
एक बार लौट के वापस आ जा मेरी माँ
क्योंकि तू है सब से निराली मेरी माँ
सब से प्यारी मेरी माँ!!

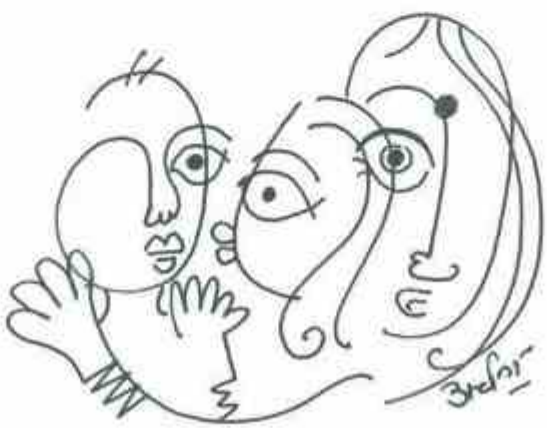

मैं तो बस एक नारी हूँ

दीपांजलि नागर
बी०ए०तृतीय वर्ष

नन्हीं सी मुस्कान ले कर,
आई इस जग में
अन्जान दुनिया की रीत से
नैनों में स्वपनों का सैलाब लिए
जग में लाने वालों की आभारी हूँ
मैं तो बस एक नारी हूँ.....

आ कर जाना यहाँ
मैं तो अपनों के लिए भी पराई हूँ।
लाख चाहने के बाद भी।।
उनके हृदयों में न समाई हूँ।।
सहम कर जी पल दर पल
और नहीं कुछ, बस एक जिम्मेदारी हूँ
मैं तो बस एक नारी हूँ....

पंख होने से पहले ही
कतर दिए गए।
सारे सपनें कुर्बानी की
ज्वाला में झोंक दिए गए।।
देवी, शक्ति, जननी की
उपमा देकर वाह रे वाह!
मुझे मनुष्य भी न समझा
अपनों के लिए ही अभिशाप हूँ, अहितकारी हूँ
मैं तो बस एक नारी हूँ....

उठ खड़ी हुई मैं अब
अपनी मंजिल की और अग्रसर
रास्ते खुल गए हैं सब
बढ़ चले है पग
अब मुझमें नई चेतना जागी है
जाना कि मैं भी स्वतंत्रता की अधिकारी हूँ
मैं तो बस एक नारी हूँ....

प्रकृति का सार हूँ मैं,
गंगा-यमुना की स्वच्छंद धार हूँ मैं
धरा सी सहनशील
अंबर सी अचल
सृष्टि में सृजनता की मैं ही काराधारी हूँ,
इसलिए गर्व से कहती हूँ कि....
मैं एक नारी हूँ।

❀ ✪ ❀

बिटिया

ज्योति दीक्षित
बी०ए० तृतीय वर्ष

जन्म ले कोयल से खिले होठ
तारों-सी-टिम-टिम नयन ये खोले
कमल खिले से हाथ

दुनिया में आई बिटिया मेरी ले सोने-सी बात
खुशियों में बिखरे मोती मेघा बनकर बादल
सोच सखी उसको दिया मैंने अपना आँचल

खिल उठा था आँगना मेरा
बोल उठा था कँगना मेरा
भूख से मारी उसने किलकारी
सहसा सीना हुआ ये भारी

स्वप्न मै संजोए थी
बीज खुशी के बोएँ थी

सहसा सन्न सी घटा है छाई
तूफान की अंशका लाई
(सास) मात मेरी जब पूछन आई
बेटी पैदा कर क्यूँ लाई

रोया मन पूछन ना पाएँ
इसी रूप में तुम क्यों आएँ

सहसा कुलमुट्ठी की लगी पुकार
मची थी दिल में हाहाकार

स्त्री तो तू भी है माँ
इसी रूप में जन्मी थी हाँ
अँवाल क्यों तू निकाल रही है।
लाल-लाल पुकार रही है।

बींद तेरी है बेटी लाई
पुत्र की थी मैं आश लगाई

व्याख्यान सुन्न बेटा था सन्न
नन्हीं को देख आँखें हुई नम
हाथ जोड़ विनती करता हूँ तेरी
देवी-सी बिटिया हैं। मेरी

स्त्री रूप में तू है आई
जीवन संगीनी भी स्त्री पाई
बहन-बेटी मैंनें है पाई
फिर तू करें क्यों रुसवाई

स्त्री बिन जीवन ना कोई पाई
बहना बिन सुनी है कलाई
बेटी बिन किसकी है विदाई

झाँसी की रानी, मदर टेरेसा, इन्दिरा गाँधी जैसी योद्धा ने लाज बचाई
काहे तू ना समझ पाई स्त्री बिन ना जीवन कोई ना पाई

कहानी सुन नीर आँखों का रोक ना पाई
बातें तेरी समझ है आई
बींद बेटी घर तू ले चल
मैंने है पूजा रखवाई।

❋ ✪ ❋

बिटिया

प्रीति
एम०ए० द्वितीय वर्ष

नन्हा-सा बचपन, फूलों की बगियाँ सा भरा,
हर पल खिलखिलाया, कभी मुरझाया।।
हर पौधे पर खिला एक नया फूल,
उसे टहने से तोड़ मसल देते लोग।।

नन्हा–सा बचपन, एक जलती मोमबत्ती सा।
पहले जले खुद, और रोशन करे जहां।।
फिर खुद जलकर खत्म हो जाता।।
हर किसी को अपने प्रकाश से भर जाता।।

नन्हा–सा बचपन, एक ओस की बूंद सा।
रात को चुपके से आता और खो जाता।।
जब सुबह देखा तो नजर नहीं आता।
पर प्यार भरा एक अहसास करा जाता।।

नन्हा–सा बचपन, खुशियों के पल जैसा।
मने में एक अहसास जगाता है।
दिल में प्यार को भर जाता है।
फिर अचानक से कहीं खो जाता है।।

नन्हा–सा बचपन, माँ का प्यार जैसा।
प्यार करती, दुलार करती दुआ देती।।
प्यार से खिलाती, पिलाती और सुलाती।
माँ नहीं तो सब कुछ पा नहीं पाते।।

❋ ✪ ❋

'लड़की'

कु० सुजाता चावला
अंशकालिक प्रवक्ता (हिंदी विभाग)

परिंदों से तू होड़ कर,
इन्सानों में वो दम नहीं।
मन में तू विश्वास कर,
कि तू किसी से कम नहीं।।

मार्ग तेरा संघर्ष भरा,
पर तू उससे अनजान नहीं।
सफलता तू न पा सके,
ऐसा तो कोई कर्म नहीं।।

उड़ जा नील गगन में,
सपनों को पूरा कर अभी।
सफलताओं को पाकर जीवन में,
कर्म पूरा हो तभी।।

❋ ✪ ❋

भारतीय रेलवे और हम

प्रियंका बिस्ट
एम०ए० द्वितीय सेमेस्टर

भारतीय रेलवे की जनरल बोगी,
पता नहीं आपने भोगी या नहीं भोगी,
करनी थी हमें कहाँ की यात्रा,
पर देखकर वहाँ जनता की मात्रा
हमारे तो पसीने छूटने लगे
हम तो झोला लिए घर की ओर फूटने लगे
इतने में एक कुली चिल्लाया बोला–
"भैया जाओगे"।
हमनें कहा–'पहुँचओगे'।
कहने लगा रुपये पचास लेंगे।
हमनें कहा हम कोई पार्सल नहीं हम हम हैं
कहना लगा आप क्या किसी पार्सल से कम है।
जैसे–तैसे करके कुली चालीस रुपये में मान गया,
हमें उड़ाने की कोशिश की तो वह खुद ही बैठ गया,
कहने लगा "आपको तो भगवान ही उठा सकते हैं"।
जैसे– तैसे करके इब्बें में पहुँचे,
इब्बे का दृश्य बड़ा ही घमासान था,
डब्बा अपने-आप में पूरा हिंदुस्तान था
कोई पड़ा था, कोई लेटा था तो कोई बैठा था।
इतने में एक झोला गंजे के सिर पर लगा,
गंजा चिल्लाया–"ये झोला किसका है"
आवाज आई–"इसमें मेरा पाँच का बच्चा है"।
हमने गंजे भाई से कहा–'सीट बनाँएगें'।
गंजा बोला–'मेरे सर पर बैठ जाओं अगर फिसल गए तो मुझे कुछ मत कहना'।
इतने में धक्का लगा, किसी ने कहा चली–रे–चली
किसी ने कहा–"जय बजरंगबली"
तो किसी ने कहा "या अली"
हमनें कहा काहे के अली और काहे के बली,
"गाड़ी तो बगल वाली चली।"

❋ ✪ ❋

वक्त

ओक्षी राज
बी०एस०सी० द्वितीय सेमेस्टर

खुशकिस्मत वो चीज है
जिसका वक्त, वक्त पे आता है
वक्त से पहले आए अगर वक्त
तो वक्त तबहा कर जाता है
हाँ ये सच है के वक्त रब के दायरे में है
जिस चाहे राजा, जिसे चाहे रंक बनाता है
वो अपने हाल से तुम्हें रूलाएगा जरूर
मगर वक्त पाबन्द है आएगा जरूर
कर लो ऐतबार अब वक्त की पूरी तैयारी है कर रहे जो इंतजार, उनका वक्त आने की बारी है
जो जी लिया वक्त, तुम्हारा था, याद रखना और बहुत जी सको वक्त से फरियाद करना इतना ही है वक्त का फसाँना के ये रूक नहीं पाता है।
कम लगते हैं सौ साल और इक लम्हा भी कट नहीं पाता है।
मगर जो मानते हैं वक्त को, वक्त उनको जानता है
इन हौंसलों के आगे वक्त झुक जाता है
कोशिश करों के वक्त का तुम्हें ख्याल रहें
काबिल बनों के वक्त तुम्हारी मिसाल दें।

आओ सखि! तिरंगा फहराऐं

डॉ० अपर्णा वत्स
ऐसोसिएट प्रोफेसर
इतिहास विभाग

आओं सखि! आजादी का अमृत महोत्सव मनाएँ
देश प्रेम में न्यौछावर हुए जो
उन वीरों को नमन करें हम, शीश झुकाएँ
लेकर तिरंगा हाथों में अपने
देश की माटी पर बलि-बलि जाएँ
आओं सखि.....
तिंरगे के तीन रंग पहचान हमारी
मध्य अशोक चक्र संस्कृति की छवि प्यारी
हर घर तिंरगा, बनकर शान हमारी लहराएँ
राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा हर क्षण देता जाएँ
आओं सखि.....
है राष्ट्रीय पर्व सब त्यौहारों से न्यारा
करता जीवन में पग-पग उजियारा
सब संग साथ में खुशियाँ बाँटे, गुनगुनाएँ
बच्चें-बूढ़े, पंछी-पौधे सब मिलकर झूमे-गाएँ
आओं सखि.....

❄ ✪ ❄

नारी (लघुकथा)

डॉ० निशा गोयल
असिस्टेन्ट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)
रघुनाथ गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, मेरठ

अचानक यह बात सुनकर सब सहम गये कि आरती रेल की पटरी पर कट कर मर गयी, उसका मासूम सुन्दर-सा चेहरा आँखों के सामने आ गयी। एक इंसान कब तक सहन कर सकता है। सहन शक्ति समाप्त होते ही उसने खुद को समाप्त कर लिया।

आरती एक गरीब घर की बहुत ही सुन्दर लडकी थी, देखो तो आँखें उसके चेहरे से ही नहीं हटती थी, लेकिन किसे पता था कि उसके भाग्य में क्या है?

सुन्दर होने की वजह से एक अच्छे परिवार में उसकी शादी हो गयी, लेकिन भाग्य देखों उसका ससुराल में सब कुछ अच्छा होते हुए भी पति मिला पीने-पिलाने वाला आरती दिनभर काम करती, सास ससुर, नंद-देवर सबकी सेवा करके खूब खुश रहती, लेकिन शाम होते-होते पति के घर आते ही उसकी दुनिया बदल जाती क्योंकि पति को उसके सुख-दुःख व अपनी जिम्मेदारियों का एहसास नहीं था। उसे तो बस शराब व पत्नि का शरीर चाहिए था। आरती अपने मन की बात किससे कहें?

और एक दिन शाम उसके पति ने सभी हदों को पार करते हुए उससे कहा-जाओं अच्छे से तैयार हो जाओं आज हम घूमने चलेंगे। आरती का मन यह सुनकर साँतवें आसमान में उड़ने लगा, उसे लगा कि सच ही कहते हैं लोग कि भगवान कभी तो सुनता ही है। आरती बहुत खुश थी। उसके पाँव जमीं पर नहीं पड़ रहे थे। उसने जल्दी से एक सुन्दर साड़ी पहनी, जेवर पहने, सज-संवर कर पति के सामने खड़ी हो गई।

सुन्दर तो थी ही, उसका पति भी थोड़ी देर बिना पलक झपकायें उसे देखता ही रहा, फिर संभलकर बोला-चलो और वो पति के साथ चल पडी, उसे पता नही था कि आज उसका पति उसे किसी कुएँ में धकेलने जा रहा है। वो तो अपने ही सपनों की दुनियाँ में खोई हुयी थी।

आरती के पति ने उसे घुमाया-फिराया और अच्छी-अच्छी उसके मनपंसद की चीजे खिलाई फिर वो उसे एक दोस्त से मिलवाने की कहकर किसी घर में लेकर गया, वहाँ पर उसके दो दोस्त पहले से ही मौजूद थे। उसने अपनी पत्नि आरती को उनसे मिलवाया फिर बोला तुम यहीं रूको मैं अभी आता हूँ आरती बेचारी यह कहती हुई उसके पीछे-पीछे आई कि मैं भी आपके साथ चल रही हूँ, लेकिन पति बोला-अरे नहीं तुम यहीं रूकों मैं कुछ सामान लेकर अभी आता हूँ। कुछ घबराई व अपने में सिमटी सी वह वहीं बैठ गयी काफी समय बीत गया पर उसका पति वापस नहीं आया।

सुबह हुई जब उसका पति आया तो आरती वहाँ नही थी। दोस्तों से उसने पूछा तो वो बोले कि वो तो 'घर जा रही हूँ' कहकर चली गयी थी।

"काल के उस चक्र को
तोड़कर फिर आज
निकल पड़ी नवयुग में नारी
बनकर मिसाल फिर आज"

❁ ✪ ❁

मैं आपका कॉलिज (लघुकथा)

श्रीमती सुरभि
अंशकालिक प्रवक्ता (हिंदी)

अरे सुनों! जरा सुनों! क्या आप सभी मेरी आवाज को सुन रही हो। इधर-उधर मत झांको, मैं बोल रहा हूँ, हाँ मैं तुम्हारा कॉलिज। हो गयी न आश्चर्यचकित। क्या मैं बोल नहीं सकता? मेरा भी अपना अस्तित्व है, शक्ल है सूरत है, अपना रूप-रंग है, मेरे अस्तित्व के कारण ही संसार में कोई शब्द निर्मित होता है। ये दीवारें ये कमरें, ये फर्श, ये घास के लॉन-सब कुछ मेरे ही अस्तित्व को तो बताते हैं। आप सभी के समान मुझे भी दर्द होता है और खुशी भी।

जब छात्राएँ किसी भी प्रकार का पुरस्कार प्राप्त करती है, तब मैं भी बहुत खुश होता हूँ क्योंकि तुम सभी पुरस्कार जीत कर मेरा ही तो नाम रोशन करती हो। परन्तु मेरी पीड़ा तथा मेरे दर्द कोई नहीं समझता।

आज मैं तुमको अपनी पीड़ा सुनाता हूँ, मेरी यह पीडा समस्त विद्यार्थी वर्ग को समझनी होगी। सुनो-

जिस प्रकार तुम सब सुन्दर-सुन्दर परिधान धारण करके आते हो उसी प्रकार मैं भी सुन्दर रहना चाहता हूँ। जब मैं बना और प्रारम्भ हुआ तो बहुत सुन्दर था, मेरी साफ-सफाई को देखकर सभी कहते थे-बहुत सुन्दर कॉलिज है। गन्दगी का नामोनिशान न था, उजलापन विकीर्ण था, हरियाली मुदित थी चारों तरफ स्वच्छ एवं शान्त वातावरण विद्यमान था परन्तु तुम अब मेरा ध्यान नहीं रखती हो, तुम्हारे द्वारा मुझे बदरंग और भद्दा बनाने के अनेक प्रयास किए जाते है। देखो! वह नन्हा पौधा, कितना उदास है? अभी-अभी दो छात्रों ने बात करते हुए उसकी पत्तियाँ ही नोंच डाली। यह सौन्दर्य आपके लिये ही तो था।

इसी प्रकार तुम कागज फाडकर इधर-उधर फेंक देते हो जिससे सम्पूर्ण परिवेश में गन्दगी फैल जाती है। क्या यह सब तुम्हें अच्छा लगता है?

एक बात और कक्षा से निकल कर आप लाइट और पंखे खुले छोड देती हो, मैनें तुम्हारी शिक्षिकाओं को लाइट व पंखे बंद करते हुए देखा है। यह हमारा व्यक्तिगत ही नहीं वरन् समूचे राष्ट्र का नुकसान है।

देखों किसी छात्रा ने फर्नीचर को भी अस्त-व्यस्त कर दिया है, उस पर कुरेद-कुरेद कर नाम लिख दिए गए हैं। आखिर यह सब क्यों?

छिः छिः! सभ्य घरों से आने वाली छात्राओं का ऐसा असभ्य आचरण। शिक्षा ग्रहण करते हुए शिक्षा के मन्दिर के प्रति ऐसी तुच्छ भावना एवं बीमार मानसिकता।

यह सब बातें सुनकर छात्राओं ने अपने हाथ ऊपर उठाकर प्रण किया, "हम तुम्हारी पीड़ा का समझ चुके है और उसे दूर करना चाहते हैं। तुम्हें मंदिर के समान स्वच्छ व पवित्र रखने की हम प्रतिज्ञा करते है, यह हम सब का परम कर्त्तव्य है।"

❁ ✪ ❁

अंधी ताई (लघुकथा)

श्रीमती ग्रीशा
शोधछात्रा (हिन्दी विभाग)

हमारें गाँव में एक बूढ़ी महिला थी जो जन्म से ही देख नहीं सकती थी। अकेली एक छोटे से घर में रहती थी। गाँव मुहल्ले के सभी लोग उन्हें 'अंधी ताई' कहते थे। सभी लोगों से परिचित थी। परिवार में पति की मृत्यु के बाद उनके एक बेटा और एक बेटी अपने-अपने परिवारों के साथ दिल्ली शहर में ही बस गये थे। बेटा (अनिल) जो कभी नहीं आता था। अंधी ताई किसी से कुछ माँगती तो नहीं थी फिर भी कोई-न-कोई उनके खाने का प्रबन्ध कर ही देता था। परन्तु अंधी ताई मुहल्ले में ही एक सब्जी की दुकान चलाती थी। दिन-भर सब्जी लेने बेचने में दिन गुजारती। वही दुकान पर कोई-न-कोई बैठा ताई से बात करता ही रहता। सबको आहट से पहचान जाती। खूब बातें करती। एक दिन उनके बेटे के उम्र के एक व्यक्ति ने कहा कि ताई-पूरा दिन यहाँ सब्जी भाजी में लगी रहती हो अनिल के पास क्यूँ नही चली जाती वो दिल्ली में आराम से तो रहता है तुम यहाँ अकेली गाँव में क्यूँ पडी हो? इस सवाल के उत्तर में अंधी ताई ने कहा-"जाऊँगी मै भी पर अनिल जो कुछ लोगों के पैसे लेकर गया है वो तो वापस नहीं करेगा, नालायक जो निकला। सोचती हूँ मेरे बाद उसे कोई गाली न दें, कोई ना कोसे, मैंने जन्म दिया है अब जैसा भी है उसका लिया कर्ज मुझे ही चुकाना है। बस इसलिए उस सब्जी से सैज-सैज (धीरे-धीरे) चुका रही हूँ। जब सबका चुक जायेगा तो मैं भी जाऊंगी। ऐसे ना भाग सकती बेटा।"

अंधी ताई अपने काम में लग गई। परन्तु जिसने ना बेटे को देखा ना समाज को वह समाज के नियम, कायदे, अपने सम्मान के लिए इतना गम्भीर सोच रखे हुये थी। दिन भर उस कर्ज को चुकाने का प्रयास कर रही थी जो उसने नहीं लिया लोगों ने बताया कि अनिल लेकर गया है। और एक दिन सबका उधार चुका गई अंधी ताई।

❋ ✪ ❋

अंबेडकर जी के दृष्टिकोण से बौद्ध धर्म

डॉ० पूनम
(इतिहास विभाग)
आर०जी०पी०जी कॉलिज मेरठ

भारतीय दृष्टिकोण से धर्म की सतत् धारा सदियों से निर्बाध गति से विकास करती हुई अनेक सामाजिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियों की जननी है। आज भी उसमें वह शक्ति निहित है कि राष्ट्र को प्रगति के पथ पर आगे बढ़ने की योग्यता प्रदान करे। उपायों, साधनों एवं मार्गों के संदर्भ में मतभेद होते हुए भी लक्ष्य एवं उद्देश्य के संबंध में समस्त दार्शनिकों में एकमतता है। मिथ्याज्ञान को बंधन का कारण तथा तत्वज्ञान को उसके निवृत्ति का साधन समस्त आचार्यों एवं ज्ञान-सम्यकज्ञान के फल का कथन है इन युगों में वैदिक, बौद्ध, जैन आदि सभी धर्मों में ज्ञान का फल अविद्या नाश तथा वस्तु-विषयक अधिगम से सम्बद्ध है, जिसका अर्थ अज्ञान का नाश एवं वस्तु का वास्तविक ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष की प्राप्ति है।

563 ईसवी पूर्व में बौद्ध धर्म का उदय हिंदू धर्म के प्रतिपक्षी धर्म के रूप में हुआ। नेपाल की तराई में स्थित लुम्बिनी गांव में इस धर्म का जन्म-स्थान माना जाता है। छठी शताब्दी ईसवी पूर्व का काल समस्त विश्व के लिए एक धार्मिक क्रान्ति का काल थी। भारतवर्ष के धार्मिक क्रांति के मूल में भी अनेकानेक कारण दृष्टिगोचर होते है। यह नही अकस्मिक थी और ना ही इसका कोई एक कारण था। इन्हीं अनगिनत कारणों के प्रस्फुटन से बौद्ध धर्म के मूल रूप का सूत्रपात हुआ जिसके केंद्र में मनुष्य के द्वारा वैराग्य धारण कर अंततः परम कल्याण की चेतना पर सर्वाधिक बल दिया गया। कर्मकांड, जटिलता एवं विकृतता से रहित तथा सरल स्वभाव से परिपूर्ण इस धर्म के प्रस्थान से मानव समाज पर इसका प्रभाव पड़ना अवश्यंभावी था। इस धर्म ने समाज में जो धार्मिक मानक एवं मान्यताएँ स्थापित की उससे न सिर्फ जनमानस का कल्याण हुआ अपितु धर्म का सच्चा एवं सरल स्वरूप समस्त विश्व में दृष्टि-गोचर हुआ।

बाबा साहेब की दृष्टि स धर्मः–

बाबा साहेब ऐसे धर्म को अपनाना चाहते थे जिसके मूल में मनुष्यता एवं नैतिकता का समावेश हो। जिसके केन्द्र में स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के विचार हो। बाबा सहेब किसी भी परिस्थिति में किसी ऐसे धर्म को नहीं अपनाना चाहते थे जो वर्ण भेद तथा छुआछूत की बीमारी में जकड़ा हुआ हो। वह ना ही किसी ऐसे धर्म का चुनाव करना चाहते थे जो अंधविश्वास एवं पाखंड़वाद की बीमारी से ग्रसित हो। बाबा साहब ने स्वयं कहा है, "ऐसे धर्म का कोई मतलब नहीं" है जिसमें मनुष्यता का कोई मूल्य नहीं, जो धर्म शिक्षा प्राप्त नहीं करने देता, नौकरी करने में बाधा पहुँचाता है, बात-बात पर अपमानित करता है, और यहाँ तक कि पानी नहीं मिलने देता" बाबा साहेब ऐसा कोई भी धर्म स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे जिसमें ईश्वर या ईश्वर के बेटे, पैगंबर या स्वयं ईश्वर के अवतार के लिए कोई जगह हो। उनके अनुसार, "गौतम बुध एक मानव हैं, और बौद्ध धर्म एक मानव धर्म।" बाबा साहेब के अनुसार सच्चा धर्म वह है जो विज्ञान अथवा बौद्धिक तत्व पर आधारित हो, ना कि धर्म का केन्द्र ईश्वर, आत्मा की मुक्ति और मोक्ष हो। साथ ही उनका कहना था कि धर्म का कार्य है विश्व का पुनर्निर्माण करना, ना कि उसकी उत्पत्ति और अंत की व्याख्या करना।

बाबा साहेब की दृष्टि में बौद्ध धर्मः–

बाबा साहेब बौद्ध धर्म को पसंद करते थे क्योंकि उसमें 3 सिद्धांतों का समन्वित रूप मिलता है जो किसी अन्य धर्म में नहीं मिलता। ये तीन सिद्धांत निम्नवत हैंः

बौद्ध धर्म विश्वास नहीं तर्क और अनुभव पर आधारित हैः–

डॉक्टर अंबेडकर के अनुसार धर्म का आधार आस्था ना होकर तर्क एवं प्रज्ञा होना चाहिए। बौद्ध धर्म के कर्म सिद्धांत को उन्होंने तर्क की कसौटी पर उचित पाया। चाहे वह बौद्ध धर्म की महासम्मत की अवधारणा हो या फिर प्रतीत्यसुत्पाद का सिद्धांत, सभी में तर्क एवं अनुभव की एक अमिट छाप परिलक्षित होती है जहाँ तक एक तरफ ब्राह्मण धर्म यज्ञ कर्मकांड़ों के विश्वास पर आधारित था तो वहीं बौद्ध धर्म एक तार्किक-सामाजिक प्रक्रिया का परिणाम था, जिसने समता पर आधारित पृष्ठ निर्मित किया।

बौद्ध धर्म का क्षणभंगुरवाद इस बात का पुरजोर समर्थन करता है कि संसार में कुछ भी शाश्वत नहीं है और परिवर्तन ही प्रकृति का सार्वभौमिक नियम है। तर्क व अनुभव पर आधारित इन तथ्यों ने बौद्ध धर्म के स्वरूप व प्रकृति को वैज्ञानिकता प्रदान की। इसका अष्टांगिक मार्ग जीवन जीने का मध्यम मार्ग दिखलाता है, जो वर्तमान विश्व में भी अधिक प्रसांगिक है। इस प्रकार बौद्ध धर्म प्रज्ञा (अंधविश्वास और अतिप्रकृतिवाद के स्थान पर बुद्धि का प्रयोग), करुणा (प्रेम) और समता (समानता) की शिक्षा देता है। उनका कहना था कि मनुष्य इन्हीं बातों के शुभ तथा आनंदित जीवन को जीना चाहता है। बाबा साहब के कथनानुसार " देवता और आत्मा समाज को नहीं बचा सकते हैं।"

सुधार संशोधन और विकास की संभावना हैः–

जिस प्रकार ठहरे हुए जल से दुर्गंध आने लगती है और उसकी उपयोगिता भी शून्य हो जाती है, ठीक उसी प्रकार अगर धर्म भी गतिहीन हो जाए तो वह समाज की प्रगति को रोककर उसके समक्ष बाधाएँ उत्पन्न करती है। बौद्ध धर्म का क्रमिक विकास जो हीनयान महायान वज्रयान के प्रक्रम से होते हुए शून्यवाद (माध्यमिका-नागार्जुन) तक आ पहुँचा वह धर्म में अंतनिहित सुधार, संशोधन और विकास की परिपक्व अवस्था को ही प्रदर्शित करता है। अंबेडकर के अनुसार वर्णाश्रम धर्म में कोई सुधार की गुंजाइश नहीं है। इसीलिए इसे समाप्त कर दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा था हिंदू धर्म एक ऐसे बहुमंजिला इमारत की भांति है जिसमें कोई सीढ़ी नहीं है। और जो जिस मंजिल में पैदा होता है, वह अंत तक उसी मंजिल का बना रहता है। किसी अन्य मंजिल पर जाने का कोई अन्य रास्ता नहीं होता।

अंबेडकर जी इस विचार के माध्यम से हिंदू समाज की जड़ता एवं गतिहीनता को परिभाषित करते हैं। उनके विचार में बौद्ध धर्म विकासवाद एवं संभववाद की कसौटी पर समुचित वातावरण प्रदान करता है। जिससे बौद्ध धर्म सापेक्षिक रूप से अधिक सुधारवादी धर्म के रूप में परिलक्षित होता है।

लोकतंत्रात्मक संविधानः–

अपने प्रसिद्ध लेख 'बुद्ध' अथवा 'कार्ल मार्क्स' में अंबेडकर कहते है कि 'भिक्षु संघ का संविधान लोकतंत्रात्मक संविधान था।' बुद्ध केवल इन भझुको में से एक भिक्षु थे। अधिक-से-अधिक वह मंत्रिमंडल के सदस्यों के बीच एक प्रधानमंत्री के समान थे। वह तानाशाह कभी नहीं थे। उनकी मृत्यु से पहले उनसे दो बार कहा गया कि वह संघ पर अपना नियंत्रण रखने के लिए किसी व्यक्ति को संघ का प्रमुख नियुक्त कर दें, लेकिन हर बार उन्होंने यह कहकर इंकार कर दिया कि धम्म संघ का सर्वोच्च सेनापति है। उन्होंने तानाशाह बनने और नियुक्त करने से इंकार कर दिया। बाबा साहब जन-तांत्रिक समाज-व्यवस्था के पक्षधर थे। क्योंकि उनका मानना था ऐसी स्थिति में धर्म मानव जीवन का मार्गदर्शक बन सकता है। सारी चीजें उन्हें एकमात्र बौद्ध धर्म में मिली जिसका उन पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा।

यह प्रश्न भारतीय जन-मानस में आज भी प्रासंगिक है कि अंबेडकर जी ने हिंदू धर्म छोड़ने के पश्चात् बौद्ध धर्म ही क्यों अपनाया? इसके बारे में हमें अनेक भ्रमों से भी अवगत होना पड़ता है। इस संदर्भ में एक अन्य प्रश्न और भी सर्वमान्य है कि उन्होंने बौद्ध धर्म के बजाय ईसाई, इस्लाम या सिख धर्म क्यों नहीं अपनाया?

इन प्रश्नों का उत्तर बाबा साहब के लेख " बुद्ध और उनके धर्म का भविष्य" में मिलता है। इस लेख में उनके द्वारा बौद्ध धर्म की श्रेष्ठता तथा किस प्रकार यह धर्म मानव समाज के लिए कल्याणकारी एवं उपयोगी है, पर विस्तार पूर्वक विचार किया गया है। मूलतः यह लेख अंग्रेजी भाषा में " बुद्धा एंड दि फ्यूचर ऑफ हिज रिलिजन" (Buddha and the Future of his Religion) नाम से कलकत्ता से मासिक पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया गया था। जिसका प्रकाशन महाबोधि सोसाइटी के द्वारा 1950 में किया गया था। यह लेख डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर राटिंग्स एंड स्पीचेज के खंड 17 के भाग-2 में संकलित है। इस लेख में बाबा साहेब के द्वारा विश्व में सर्वाधिक प्रचलित एवं मान्य चार धर्मों हिंदू धर्म, ईसाई धर्म, बौद्ध धर्म और इस्लाम धर्म का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। बाबा साहेब इन चारों धर्मों का विभिन्न पहलुओं से विश्लेषणात्मक अध्ययन करते हैं।

सर्वप्रथम बाबा साहेब इन चारों धर्मों के संस्थापकों, अवतारों, और पैगंबरों की तुलना करते हैं। उनका मानना है कि ईसा मसीह, जिन्होंने ईसाई धर्म की स्थापना की, खुद को 'ईश्वर का बेटा' बताते हैं और अनुयायियों पर इस कथन को थोपते हैं कि जो लोग ईसाई धर्म में ईश्वर की आराधना करना चाहते हैं उन्हें ईसा मसीह को ईश्वर का बेटा स्वीकार करना ही होगा। इसी प्रकार इस्लाम धर्म के संस्थापक मुहम्मद साहब स्वंय को "खुदा का पैगम्बर" संदेशवाहक बताते हैं। तथा यह घोषणा करते हैं कि मुक्ति चाहनें

वालों को न सिर्फ उन्हें खुदा पैगम्बर स्वीकार करना होगा, अपितु यह भी मानना होग कि वह ही अन्तिम का पैगम्बर हैं। तत्पश्चात् बाबा साहब हिंदू धर्म के बारे में बताते हैं कि 'हिंदू धर्म के अवतारी पुरुषों ने तो ईसा मसीह और मुहम्मद साहब से भी आगे बढ़कर स्वयं को "ईश्वर का अवतार" यानी स्वयं को ही परमपिता परमेश्वर घोषित किया कर दिया है।

जब बाबा साहेब इन तीनों की तुलना गौतम बुद्ध से करते हैं तो लिखते हैं कि बुद्ध ने एक मनुष्य के बेटे के तौर पर ही इस संसार में जन्म लिया, एक साधारण मनुष्य बने रहने पर संतुष्ट रहे और वह एक साधारण मानव के रूप में अपने धर्म का प्रचार एवं प्रसार करते रहे। बुद्ध ने कभी किसी अलौकिक शक्ति या अवतारी पुरुष होने का दावा नहीं किया। न ही बुद्ध ने किसी ईश्वरीय शक्ति को सिद्ध करने के लिए कोई चमत्कार दिखाए। उन्होंने मार्ग-दाता और मुक्ति दाता में स्पष्ट रूप से भेद किया। इस प्रकार बुद्ध का मानवीय रूप बाबा साहेब को अत्यधिक प्रभावित करता है।

ईसा मसीह, मुहम्मद साहब और कृष्ण ने स्वयं को मोक्ष-दाता भी बताया है, जबकि बुद्ध स्वयं को सिर्फ मार्ग-दाता ही बताते हैं तथा अपने अंतिम सांस तक मुक्ति के द्वार को जाने वाले मार्ग के मार्गदर्शक बने रहे। बाबा साहब ऐसा कोई भी धर्म अपनाने के लिए तैयार नहीं थे, जिसमें ईश्वर या ईश्वर के बेटे, पैगम्बर या खुद ईश्वर के अवतार के लिए कोई जगह हो। उनके अनुसार गौतम बुद्ध एक मानव थे तथा बौद्ध धर्म एक मानव धर्म, जिसमें ईश्वर के लिए कोई स्थान नहीं है।

उपर्युक्त चारों धर्मों की तुलना बाबा साहेब ने ईश्वरीय वाणी के संदर्भ में किया है। उन्होंने लिखा है कि इन चार धर्म प्रवर्तकों के बीच एक और अंतर भी है। ईसा मसीह और मुहम्मद साहब दोनों ने ही दावा किया है कि उनकी शिक्षा ईश्वर या अल्लाह के द्वारा उन्हें प्रदान की गई वाणी का द्योतक है और यह ईश्वरीय संदेश होने के कारण इसमें कभी कोई त्रुटि नहीं हो सकती हिंदू धर्म के लिए वे कहते हैं कि यह संदेह से परे है, कृष्ण तो स्वयं को ही विराट रूप परमेश्वर का द्योतक बताते हैं। उन्होंने शिक्षा चूंकि परमेश्वर के मुंह से निकली हुई ईश्वर वाणी हैं अतः इसमें किसी प्रकार की कोई त्रुटि होने का प्रश्न ही नहीं उठता।

जब बाबा साहेब इन तीनों की तुलना गौतम बुद्ध से करते हैं तो पाते हैं कि बुद्ध ने अपनी शिक्षा में इस तरह के किसी अंतिम पौराणिक सत्य होने का कभी कोई दावा ही नहीं किया। महापरिनिर्वाण-सूत्र के अनुसार गौतम बुद्ध ने आनन्द उपदेश दिया है कि उनका धर्म तर्क और अनुभव पर आधारित हैं। उन्होंने अपने अनुयायियों से यह भी कहा है कि उनकी शिक्षा को केवल इसीलिए सत्य और आवश्यक नहीं मान लेना चाहिए कि स्वयं मेरे (बुद्ध की) द्वारा दी गई है। यदि किसी विशेष काल और विशेष परिस्थिति में इस शिक्षा में से कोई भी बात सत्य की कसौटी पर खरी न उतरती हो तो उनके अनुयायी इसमें सुधार करने के लिए स्वतंत्र हैं और सार्वभौमिक सत्य तथा मानवहित के अनुसार कुछ चीजों को त्याग भी कर सकते हैं। इस प्रकार अन्य तीनों धर्मों की तुलना में बौद्ध धर्म सुधार, संशोधन और विकास की संभावना भी दृष्टिगोचर होती है।

❁ ✪ ❁

शिक्षा और समाज

डॉ० बबिता माजी
असिस्टेंट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग

शिक्षा समाज और राष्ट्र को प्रभावित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक है। शिक्षा का स्तर जैसा होगा व्यक्ति परिवार समाज और राष्ट्र वैसा ही होगा। शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तरीके से प्रभावित करती है। शिक्षा जिस प्रकार हमारे जीवन को, देश के भविष्य को प्रभावित करती है तो सरकार को चाहिए की शिक्षा को गुणात्मक बनाने के लिए पुख्ता कानून बनाएँ। उचित अनुपात में धन का आवंटन करें। साथ ही समाज के हर व्यक्ति को शिक्षा से जुड़े विषयों और कानूनों के प्रति जागरूक होने की आवश्यकता है। व्यक्ति और समाज के बीच समन्वय की जरूरत है इसकी पूर्ति शिक्षा द्वारा की जा सकती है। व्यक्ति और समाज को अलग मानकर या किसी एक को महत्व देकर शिक्षा का आयोजन भविष्य को अंधकारमय बनाता है व्यक्तित्व विकास के लिए अपने अधिकर के साथ उत्तरदायित्व के प्रति सजग रहने की अपेक्षा है। समाज के प्रति जिम्मेदारियों का अहसास जागृति पैदा करने की क्षमता शिक्षा में होनी चाहिए आज व्यक्ति का समाज के साथ सहयोग और संवाद निर्माण करना ही शिक्षा का कार्य समझा जाता है। शिक्षा में जो नए विचार मुखर कर सामने आए हैं उनमें व्यक्तिवादी और समाजवादी उद्देश्यों की संगति मिटाने का प्रयास किया जा रहा है। व्यक्ति जब पैदा होता है उसका दिमाग पूरी तरह खाली होता है आस-पास का परिवेश परिवार और समाज में निहित सभी शाखाओं का समय-समय पर उसके साथ संबंध जुड़ता जाता है। इन्हीं संबंधों के साथ जुड़ने से उसे शिक्षा मिलती है जिससे संस्कारित होकर उसके व्यक्तित्व का विकास होने लगता है।

शिक्षा कऔर समाज का सिर्फ नजदीकी संबंध नहीं है, बल्कि समाज पर आधारित शिक्षा का निर्माण होता है। समाज एक ऐसी संस्था है जो समय और काल के अनुकूल परिवर्तित होती है उसकी सामाजिक व्यवस्था के अनुकूल वहाँ की शिक्षा व्यवस्था का निर्माण होता है। स्थान काल समय परिवेश संस्कृति आदि का परिणाम शिक्षा पर होता है। इनके परिवर्तन से शिक्षा में परिवर्तन होता है। तुलनात्मक अध्ययन करते हुए समाज परिवर्तन के साथ पाठ-सामग्री और किताबों का पुनर्निर्माण आवश्यक है। राष्ट्र विकास और भविष्य निर्माण की दृष्टि से परिवर्तनों का लेखा-जोखा लेकर शिक्षा में परिवर्तन करना सरकार का प्रथम कर्तव्य है।

हर देश की अपनी एक पहचान होती है। देश का प्रत्येक नागरिक देश की पहचान को अपनी पहचान मानता है इस पहचान को बनाने में शिक्षा की अहम भूमिका होती है। स्वतंत्रता के 75 साल के बाद भी हम शिक्षा व्यवस्था में सुधार नहीं कर पाए इसका मुख्य कारण शिक्षा का व्यवसायीकरण और रानीतिकरण है। आज शिक्षा राष्ट्र निर्माण का साधन न होकर सत्ता और धन अर्जन का साधन हो गया है।

हम दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने पर गर्व करते हैं। सभी यह समझते हैं की किसी भी देश का भविष्य उसकी भावी पीढ़ी पर निर्भर करता है अतः उसे अच्छी शिक्षा देकर पहले तो इस लायक बनाया जाए कि वे देश का भार अपने कंधों पर उठा सके। कोई भी व्यवस्था नियमों पर चलती है। शिक्षा व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए नियमों की आवश्यकता होती है। जिन संस्थानों की देख-रेख केंद्र सरकार द्वारा होती है उनके नियम कानून संसद बनाती है और जा संस्थाए राज्य सरकारों के अधीन होती है उनके लिए राज्य की विधायिका कानून बनाती है। शिक्षा से जुड़ी संस्थाएँ जैसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, भारतीय शल्य चिकित्सा आयोग, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्, राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद, भारतीय नर्सिंग परिषद आदि केंद्र सरकार के अधीन मानी जा सकती है परंतु चुकी शिक्षा संस्थाओं को पारंपरिक तौर पर स्वायत्तता प्राप्त करें इसलिए इनको सरकार के अधीन नहीं माना जाता है। इन संस्थाओं के लिए विधायिका कानून बनाती है परंतु उनका हस्तक्षेप कम होता है। परंतु पिछले वर्षों में कार्य-पालिका का हस्तक्षेप बढ़ा है। आज विदेशी विश्वविद्यालयों के लिए रास्ता साफ किया जा रहा है। जिनका मुख्य उद्देश्य धन कमाना है। आज उच्च नौकरशाही की हस्तक्षेप पर लगाम लगानी होगी तभी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान किया जा सकता है। भारत सबसे बड़ा युवा आबादी वाल राष्ट्र, विश्व गुरु बनने के लिए हमें वर्तमान शिक्षा को बदलना होगा। बच्चे और युवा आबादी वाल राष्ट्र, विश्व गुरु बनने के लिए हमें वर्तमान शिक्षा को बदलना होगा। बच्चे और युवा की सोच और उनके द्वारा बनाए गए नीति इस बात पर निर्भर करती है कि उनकी शिक्षा दीक्षा कैसी हुई है। आज नई संदर्भ में शिक्षा और समाज के पारस्परिक संबंधों को देखने की आवश्यकता है। विश्व समाज के उज्जवल भविष्य की कल्पना के लिए सर्वस्वीकृत, उचित और सबको लाभकार शिक्षा नीति की आवश्यकता भविष्य कालीन समाज की मांग रही है।

महिलाएँ और रोजगार

डॉ श्वेता त्यागी
असिस्टेंट प्रोफेसर
गृह विज्ञान विभाग
रघुनाथ गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कॉलिज मेरठ

गृह उद्योगों को बढ़ावा दिया जाए वर्तमान में महिलाओं के लिए रोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध हैं। महिलाएँ स्वरोजगार अपनाकर आत्मनिर्भर हो सकती हैं जरूरत है बस अपने अंदर की छुपी प्रतिभा को पहचानने की महिलाओं के पास कुकिंग, ब्यूटिशियन, कम्प्यूटर जॉब वर्क, निजी कोचिंग क्लासेस, हॉबी कॉर्सीज, टेलरिंग, योग, संगीत प्रशिक्षण देने इत्यादि विकल्प है। जिस विषय में रूचि है या आप दक्ष है उस क्षेत्र में आगे बढ़ते हुए अपना करियर बना सकती है। आज के आधुनिक समय में महिला सशक्तिकरण एक विशेष चर्चा का विषय है हमारे आदि ग्रन्थों में नारी के महत्व को मानते हुए यहाँ तक बताया गया है कि जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं विडम्बना देखिए नारी में इतनी शक्ति होने के बावजूद भी उनके सशक्तिकरण की अत्यंत आवश्यकता महसूस हो रही है महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण का अर्थ उनके आर्थिक फैसलों, आय संपत्ति और दूसरे वस्तुओं की उपलब्धता से है।

महिलाओं में रोजगार के प्रति जागरूकता बढ़ाई जाए। उनको कौशल प्रशिक्षण दिया जाए। वे स्वयं आत्मनिर्भर बन सके गांवों और शहरों में निःशुल्क प्रशिक्षण देकर महिलाओं को रोजगार मिल सकते हैं। इसके लिए आवश्यकता है कि महिलाओं में रूचि उत्पन्न की जाए तथा उन्हें सशक्त बनाया जाए सभी स्तरों पर बेहतर शिक्षा और साथ ही पुरुषों की सोच में बदलाव भी अति आवश्यक है सरकारी योजनाओं की पर्याप्त जानकारी देकर और शिक्षा का प्रयास करके महिलाओं के लिए रोजगार के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाए जा सकते हैं। साथ ही पुरुषों की सोच में परिवर्तन भी जरूरी है क्योंकि महिलाएँ हर क्षेत्र में सक्षम हैं। यह प्रयास भी सराहनीय होगा कि कुटीर उद्योगों का बढ़ावा दिया जाए जिससे महिलाओं को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे महिलाएँ घर परिवार का ध्यान रखते हुए ऐसे रोजगार की मदद से आत्मनिर्भर बन सकती हैं।

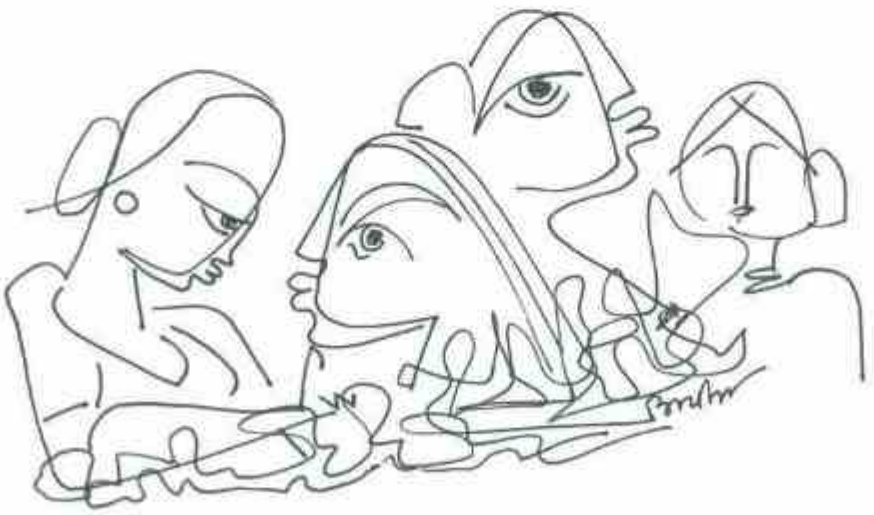

स्वतंत्रता आंदोलन में (अरूणा आसफ अली) का योगदान

डॉ० पूजा राजोरिया
अंशकालिक प्रवक्ता

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने वाली महिलाओं में श्रीमती' अरुणा आसफ अली' का नाम विशेष उल्लेखनीय है। 1942 ई की क्रांति में जिन महिलाओं ने अपने शौर्य, साहस और बलिदान का परिचय दिया। उनमें अरुणा जी का नाम अग्रणी है।

अरुणा आसफ अली जी का जन्म 16 जुलाई 1909 को 'कालका' हरियाणा में बंगाली परिवार में हुआ। इनका मूल नाम अरुणा गांगुली था। यह ब्राह्मण परिवार से संबंधित थी। 1928 ईसवी में आसफ अली से विवाह करने के पश्चात 'अरुणा आसफ अली' के नाम से जानी गई और कांग्रेस ने इन दोनों के विवाह का स्वागत किया। अंग्रेजों के अत्याचार और भारत की दुर्दशा देखकर विवाह के उपरांत स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। 1930 में 'सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान अरुणा जी को पहली बार गिरफ्तार किया गया। नमक सत्याग्रह के दौरान अरुणा जी राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम की आदरणीय नेत्री के रूप में सामने आई। उन्होंने अनेक जुलूस, भाषणों और सभाओं को संबोधित किया और स्वतंत्रता संग्राम को तीव्र गति प्रदान की। 1932 के आंदोलन में अरुणा जी को गिरफ्तार करके उन्हें दिल्ली में रखा गया और जुर्माना लगाया। 1934 ईसवी को बंबई में अखिल भारतीय समाजवादी आंदोलन में भी अरुणा जी ने भाग लिया। 9 अगस्त 1942 के 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' आंदोलन प्रारंभ होने पर सरकार ने सभी सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया। 1942 ईसवी के 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' आंदोलन का संचालन इन्होंने रातो रात संभाला। वह कांग्रेस अधिवेशन स्थल ग्वालियर टैंक मैदान मुंबई गई। और वहाँ अरुणा जी ने ध्वजारोहण कर आंदोलन की अध्यक्षता की। भीड़ को हटाने के लिए सरकार ने लोगों पर गोली और लाठीचार्च किया। व्यापक खून और उत्पीड़न को देखकर अरुणा जी को एक खतरनाक क्रांतिकारी बना दिया। जनता को संदेश देकर वह भूमिगत हो गई। सरकार के गुप्तचर विभाग की लाख कोशिशों के बावजूद उन्हें न खोज सकी। सरकार ने उनकी संपत्ति को जबत करने और 5000 के इनाम की घोषणा की। उन्होंने निरंतर गिरफ्तारी से बचते हुए भूमिगत रहकर अपनी गतिविधियों को जारी रखा। अरुणा जी भूमिगत तरीके से दिल्ली पहुच और वहाँ के विद्यार्थियों को भी आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

9 अगस्त 1942 से 26 जनवरी 1946 तक उन्होंने भूमिगत जीवन व्यतीत किया। इस बीच वह कोलकाता मुंबई आदि प्रांतों में जाकर अलग-अलग नाम व वेश बदल कर स्वतंत्रता की चिंगारी को प्रज्वलित करती रही। अरुणा जी ने अचयुत पटवर्धन और राम मनोहर लोहिया जी के साथ देश भक्ति से संबंधित गतिविधियाँ की और लोहिया जी के साथ उन्होंने इंकलाब पत्र निकाला। 1946 में वारंट रदद् होने पर उन्होंने देश की राजनीति व सामाजिक कार्यों में रूचि ली। 1946 ईसवी तक अरुण जी ने राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं की प्रगति के लिए अनेक कार्य किये। अरुणा जी ने 'लेडी इरविन कॉलेज की स्थापना की और' नेशनल फेडरेशन ऑफ इंडिया वूमेन' नामक संस्था की स्थापना की। इसके द्वारा समाज से पीड़ित महिलाओं को अपना संरक्षण दिया। उन्होंने बालिका ट्रस्ट' नामक संस्था से संबंधित रही और युवकों की पढ़ाई और स्त्री शिक्षा पर जोर दिया। 1958 में दिल्ली की मेयर बनी और दिल्ली की साफ-सफाई व विकास के लिए अनेक कार्य किए। अरूणा जी को 1964 में 'लेनिन पुरस्कार' और 1982 अतंरराष्ट्रीय सद्भावना के लिए 'जवाहर नेहरू पुरस्कार दिया गया। अरूणा जी का 26 जुलाई 1994 ईसवी में' देशभक्त महिला का निधन हो गया और मरणोपरांत 1994 में अरूणा जी को 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। अरूणा जी ने सामाजिक व राजनितिक दोनों ही क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके त्याग और बलिदान को कभी भुलाया। नहीं जा सकता।

युसूफ महरौली ने अपने समाचार पत्र (Daily) में अरुणा जी की विशेषता में लिखा है कि जिस प्रकार 1857 के आंदोलन की हीरोइन झांसी की रानी थी उसी प्रकार 1942 के आंदोलन की हीरोइन अरुणा आसफ अली है।

दर्शन की जीवन में उपादेयता

अंजली यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर
दर्शनशास्त्र विभाग

दर्शन का जीवन के साथ अनिवार्य संबंध है। मानव मन स्वभाव से ही जिज्ञासु प्रवृत्ति का रहा है फलस्वरूप उसके मन में अनेक प्रश्न उठते रहे हैं यथा जीवन क्या है, जगत का स्वरूप क्या है, जीवन और जगत की उत्पत्ति कैसे हुई, जगत के मूल में कौन-सा तत्त्व है, जगत का सृष्टा कौन है, जगत के सृजन का उद्देश्य क्या है, आत्मा/जीव क्या है, सत्य क्या है, मृत्यु क्या है, मोक्ष क्या है, शुभ क्या है आदि। इस प्रकार के अनेक प्रश्नों को उठाना और उन पर चिंतन मनन करना ही दर्शनशास्त्र है। इस प्रकार के गूढ़ प्रश्नों पर गहन चिन्तन से जीवन व जगत आदि के विषय में विश्लेषण की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है, जो हमें इन प्रश्नों का उत्तर खोजने में सहायता करती है। मेरा यह मानना है कि जब भी हम दर्शनशास्त्र के विषय में विचार करते हैं तो हम देखते हैं कि दर्शन एक वैश्विक दृष्टिकोण है जिस प्रकार हम सभी का एक वैश्विक दृष्टिकोण होता है जैसे हमारा स्थान क्या है, अन्य प्राणियों के संदर्भ में हमारा स्थान क्या है, हम किस प्रकार का जीवन जीना चाहते हैं, ईश्वर से किस प्रकार का संबंध है, यदि ईश्वर है, और यदि वह नही है तो कुछ निश्चित मूल्यों से हमारा संबंध किस प्रकार का है। इस प्रकार इन सभी वैश्विक दृष्टिकोणों को दर्शनशास्त्र के रूप में समझा जा सकता है और जब हम दार्शनिक जीवन जीने की बात करते हैं तब वास्तव में इससे हमारा तात्पर्य समालोचनात्मक जीवन जीने से होता है। इस संदर्भ में मुझे सुकरात का वह कथन याद आता है–'बिना परीक्षणीय जीवन व्यर्थ है' मानव जीवन तभी कहा जा सकता है जब वह अपने द्वारा किए गए प्रत्येक कार्य की परीक्षा करे। हमें आवश्यकता है इसी प्रकार का समालोचनात्मक व आत्मचिंतनशील जीवन जीने की जिससे मानवेतर प्राणियों से हमारी भिन्नता स्पष्ट हो।

❁ ✪ ❁

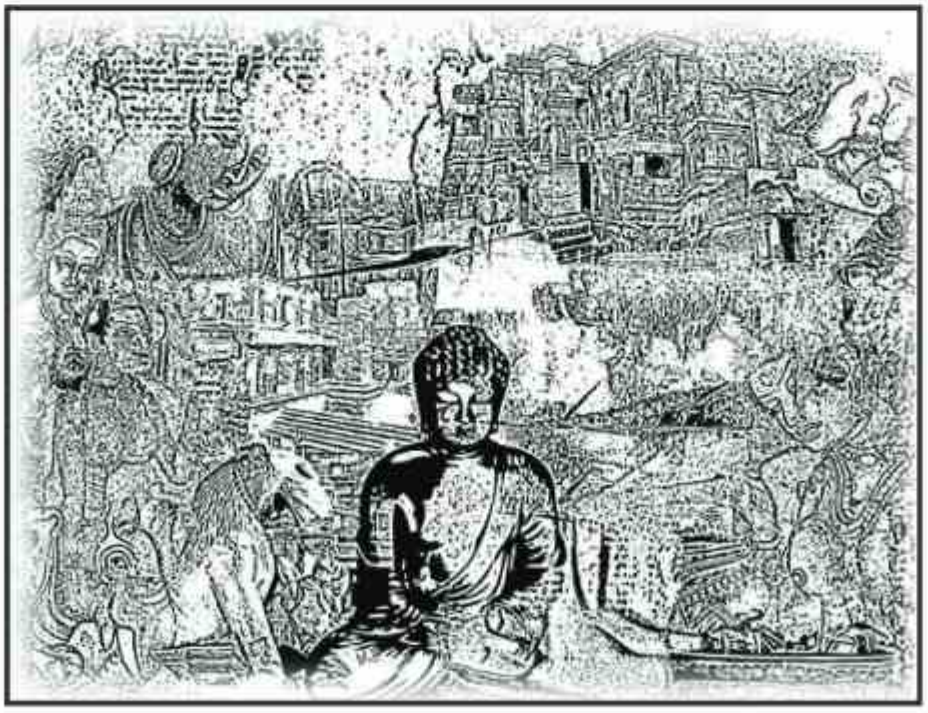

सन् 1857 की क्रान्ति

डॉ० निशा गोयल
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
हिन्दी-विभाग
रघुनाथ गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुऐट कॉलेज, मेरठ

कैनिंग ने सैनिकों को भड़काने के लिये यह आज्ञा दी कि प्रत्येक सैनिक को जहाँ कहाँ जायेगा वहाँ ही जाना पड़ेगा। दूसरा कि जो रायफल सैनिकों को दी गयी उनके कारतूसों को दाँत से काटना पड़ता था। जिसके कारण सैनिकों में विद्रोह उत्पन्न हो गया क्योंकि कारतूसों में जो चर्बी लगी थी वह गाय और सुअर की समझी गयी। हिन्दु और मुसलमानों ने इसे आपत्तीजनक समझा।

सन् 1857 में बेरकपुर में क्रान्ति का प्रथम विस्फोट हुआ। मंगल पाण्डे ने चर्बी के नये कारतूस लेने से इन्कार कर दिया तथा अंग्रेज अधिकारी को गोली से मार दिया। इससे विद्रोह की आग उत्तर-भारत में फैलने लगी। मेरठ में सैनिकों ने खजाना लूट लिया गोरे अफसरों को मार डाला तथा दिल्ली पर भी कब्जा कर लिया। इसके तुरंत बाद ही 83 वर्ष के बूढे बहादुर शाह को बादशाह घोषित कर दिया गया। विद्रोहियों ने अंग्रेजों की रेजीडेंसी घेर ली हेनरी लारेन्स ने जीवित रहते हुए रेजीडेंसी पर कब्जा नहीं होने दिया। कानपुर में विद्रोहियों को बड़ी सफलता मिली। तीन सप्ताह के युद्ध के बाद अंग्रेज जनरल व्हीलर ने आत्म समर्पण कर दिया।
झाँसी की लक्ष्मी बाई के साहस से तथा तात्या टोपे की सैनिक कुशलता से बुंदेलखण्ड में विद्रोह का उग्र रूप प्रगट हुआ। मार्च सन् 1858 में सररोल ने तात्या टोपे की सेना को हराकर झाँसी पर अधिकार जमा लिया, झाँसी व ग्वालियर के मार्ग पर महारानी लक्ष्मी बाई साहस पूर्वक लड़ती हुई वीरगति को प्राप्त हुई। 20 जून 1858 को ग्वालियर में विद्रोहियों का गढ़ टूट जाने से क्रान्ति का अंतिम दौर समाप्त हो गया। 8 जुलाई 1858 को कैनिंग ने युद्ध समाप्ति की औपचारिक घोषणा कर दी।
विद्रोहियों को दबाने में अंग्रेज ने बड़ी नृशंसता का परिचय दिया। यद्धीप विद्रोह सफल तो नहीं हुआ लेकिन उससे कंपनी के उस शत्वर्षी काले शासन का अंत अवश्य हो गया जिसकी नींव 1757 के प्लासी युद्ध में षड़यत्रकारी और भ्रष्ट गर्वनर क्लाइव ने डाली थी और उसके स्थान पर भारत का शासन सूत्र ब्रिटिश पार्लियामेन्ट ने अपने हाथों में ले लिया था। 1 नवम्बर 1858 को महारानी विक्टोरिया ने एक घोषणा-पत्र के द्वारा भारतीयों को उनके धर्म व संस्कृति की रक्षा का आश्वासन एवं देशी नरेशों को पुरानी संधियों और उनके अधिकारों की रक्षा का वचन दिया गया। लार्ड लिटन के समय में भारत में पुनः क्रान्तिकारी विस्फोट होने ही वाला था कि हुग ने "भारतीय राष्ट्रीय महासभा" की स्थापना की। कांग्रेस की स्थापना से पहले 1882 ई में कलकत्ते में ब्रिटिश ऐसोसिऐशन की स्थापना की गयी। 1876 सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने "इंडियन ऐसोसिऐशन को जन्म दिया।
लार्ड लिटन के प्रतिभागी शासन के पश्चात् लार्ड रिपन ने ज्यों ही कार्यभार सम्भाला प्रेस ऐक्ट समाप्त कर दिया गया और भारतीय मैजिस्ट्रेटों को युरोपियनों और अमेरिकनों के मामलें सुनने को अधिकार कर दिया गया। कांग्रेस की स्थापना भारत में विद्रोह की पुनरावृत्ति को रोकने के लिये की गया थी। सन् 1897 में राजद्रोह की धारायें-124 ए और 153-ए भारतीय दंडविधान में जोड़ी गयी। लार्ड कर्जन की " वंग-भंग-नीति" से बंगाल की जनता में असंतोष फैल गया। कर्जन हिन्दु-मुसलमानों को विभाजित करना चाहते थे और वह सांप्रदायिक दंगे कराने में सफल भी हो गया, लेकिन उसे खुला समर्थन नहीं मिला। विदेशी वस्तुओं खासतौर पर वस्त्रों के बहिष्कार से आंदोलन ने देशव्यापी रूप धारण कर लिया। लार्ड कर्जन ने सन् 1900 में लिखा था कि कांग्रेस का पतन हो रहा है और इंग्लैड लौटने से पूर्व मैं उसका अंतिम संस्कार देखना चाहूँगा। पर इतिहास ने इसके विपरीत ही कहानी लिखी। कांग्रेस शक्तिशाली बनती गयी और कर्जन के उत्तराधिकारियों ने उसके द्वारा ब्रिटिश शासन का ही अंतिम संस्कार देखा।

❋ ✪ ❋

Environment-Global Warming

भूषण
अर्थशास्त्र विभाग

पर्यावरण की सबसे बड़ी समस्या के रूप में ग्लोबल वार्मिंग आज पूरी दुनिया के लिए चिंता का विषय बनी हुई है। **ग्लोबल वार्मिंग** के प्रभाव से देश और दुनिया के सभी लोग प्रभावित है। साथ ही इसके कारण अस्तित्व पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

पृथ्वी पर अनावश्यक तापमान बढ़ रहा है और पर्यावरण संतुतन बिगड़ रहा है। इसका मुख्य कारण स्वयं पुरूष है। मनुष्य की अत्यधिक महत्वकांक्षी सोच और अनावश्यक गतिविधियों ने पर्यावरण असंतुलन को और आज बढ़ा दिया है और सभी देश **ग्लोबल वार्मिंग** की चपेट में है।

ग्लोबल वार्मिंग का अर्थ–औद्योगिकरण में वृद्धि और जंगलों की कटाई के कारण पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ रहा है ओजोन परत का क्षरण और **ग्रीन हाउस गैस** का प्रभाव बढ़ रहा है ऐसा इसलिए है क्योंकि पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है जिसका मानव-जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है इसे हम **ग्लोबल वार्मिंग** कहते हैं।

असीमित संख्या में वाहनो और परिवहन के संचालन से प्रदूषण का स्तर बढ़ रहा है क्षय ऊर्जा का उपयोग के कारण **ग्रीन हाउस प्रभाव** तेज हो रहा है। विकसित और विकासशील देश औद्योगिकरण को बढ़ावा दे रहे हैं और पर्यावरण की रक्षा के लिए पर्याप्त कदम नही उठा रहे हैं साथ ही **ग्लोबल वार्मिंग** की समस्या बढ़ती जा रही है।

- नए पौधें लगाए बिना अत्यधिक पेड़ों को काटना।
- जनसंख्या में वृद्धि, मनुष्य द्वारा छोड़ी गई **कार्बन-डाइ-आक्साइड** वातावरण में विस्फोट कर रही है जिससे **ग्लोबल वार्मिंग** हो रही है
- पेड़ सांस के रूप में कार्बन-डाइ-ऑक्साइड लेते हैं लेकिन पेड़ ही कम हो रहे हैं जिससे कि वातावरण में CO_2 बनी रहती है। धुआ छोड़ रही फैक्ट्री। इस धुंए में कार्बन मोनोक्साइड होता है।
- ग्रीन हाउस गैसों में वृद्धि **कार्बन-डाई ऑक्साइड** (CO_2) **मीथेन** (CH_4) **नाइट्रस ऑक्साइड** (N_2O) **हाइड्रोक्लोरोफ्लोरो कार्बन** (HFC), **पेरफ्लूरोकार्बन** (PFC) **सल्फर-हेक्साफ्लोराइड** (SF_6) **नाइट्रोजन ट्राइफ्लोराइड** (NF_3)। यह 6 मुख्य ग्रीन हाउस गैसे है जो ग्लोबल वार्मिंग का कारण बनी रही है।
- रेफ्रिजिरेटर जैसे बिजली के उपकरणों का उपयोग हानिकारक गैसों को बाहर निकालकर ग्रीन हाउस प्रभाव पैदा करता है ये गैसे पृथ्वी से बाहर नहीं निकलती है और ओजोन परत को नष्ट कर देती है।

ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव

ग्लोबल वार्मिंग के बढ़ते प्रभाव के कारण तापमान में अनियमित रूप से वृद्धि हो रही है। पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। तापमान में इस अन्तर के कारण मौसम और ऋतुओं का चक्र बिगड़ रहा है इतनी गर्मी, इतनी सर्दियों व बारिश आदि।

तापमान में इस वृद्धि के लिए सबसे बड़ा खतरा ग्लेशियर का पिघलना ओजोन परत का क्षरण और ग्रीन हाउस प्रभाव में वृद्धि है।

- वातावरण में **ऑक्सीजन** की कमी के कारण **ओजोन परत** कमजोर होती जा रही है।
- ओजोन परत सूर्य की गर्मी और पराबैंगनी किरणों से पृथ्वी की रक्षा करती है लेकिन पेड़ो के कम होने से **ऑक्सीजन कम** हो रही है और ओजोन परत कमजोर हो रही है।
- पिछले 25 वर्षों में पृथ्वी के तापमान में काफी वृद्धि हुई है।
- अगर **कार्बन-डाइ-ऑक्साइड** और नाइट्रस ऑक्साइड लगातर हमारे पर्यावरण में फैल रहे हैं तो मानव-जीवन खतरे में पड़ सकता है।
- आई०पी०सी की रिर्पोट के मुताबिक इस सदी के अंत तक समुद्र का स्तर 7-23 इंच तक बढ़ जाएगा।
- उत्तरी ध्रुव पर आर्कटिक पर जमी विशाल बर्फ तेजी से पिघल रही है।
- ऐसा माना जाता है कि आर्कटिक पर इतनी बर्फ जमी हुई है कि अगर यह पिघलेगी तो कई महासागरो से ज्यादा पानी बहेगा और यह होने से आपदा जल्द ही आयेगी।
- ग्लोबल वार्मिंग बढ़ने से जंगल में आग और तूफान का खतरा बढ़ जाएगा।

- दुनिया में लगभग 10 करोड़ लोग समुद्र तल के पास रहते हैं अगर समुद्र का स्तर बढ़ता है तो कितने ही जीवन तबाह हो जाएगें।
- पहाड़ो की गर्मी और ओलो के साथ बर्फ पिघलेगी और सुनामी से इसके पानी को खतरा होगा।
- **ग्लोबल वार्मिंग** के कारण शीतलक क्षेत्र भी गर्म हो रहे हैं।
- पिछले 50 वर्षों में पृथ्वी के तापमान में अधिक वृद्धि हुई है।

ग्लोबल वार्मिंग दुनिया पर सबसे बुरा प्रभाव बन रहा है। पेड़ उगाओं क्योंकि पेड़ ही जीवन है किसी ने ठीक ही कहा है कि पेड़ **ऑक्सीजन** छोड़ते हैं यहाँ तक कि किसी को भी पेड़ लगाने में दिलचस्पी नही हैं लेकिन अगर पेड़ **WIFI** को सिग्नल देना है तो सभी लोग पेड़ लगाते हैं

हम अपने ही हाथों से अपने जीवन का गला दबा रहे हैं कम से कम हमें 1 पेड़ अपनें घरो में उगाना चाहिए और कम-से-कम प्रदूषण फैलाना चाहिए। तभी यह पृथ्वी **ग्लोबल वार्मिंग** से बच सकती है। प्रदूषण के बहिष्कार से हम अपने जीवन में **ग्लोबल वार्मिंग** को काफी हद तक कम कर सकते हैं।

❋ ✪ ❋

आजादी का अमृत महोत्त्सव

प्रियँका
अर्थशास्त्र विभाग

आजादी का अमृत महोत्सव का अर्थ–

आजादी का अमृत महोत्त्सव एक स्वतंत्रता का उत्सव है जो हर 25 साल में मनाया जाता है, ताकि हमारी आज की पीढ़ी के बच्चे यह जान सकें कि भारत को आजादी दिलाने के लिए स्वतंत्रता सेनानियों को कितने संघर्षों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता।

आजादी अमृत महोत्त्सव का अर्थ है **स्वतंत्रता की ऊर्जा का अमृत : स्वतंत्रता संग्राम के योद्धओं की प्रेरणा का अमृत; नए विचारों और प्रतिज्ञाओं का अमृत; और आत्म निर्भरता का अमृत!**

आजादी का अमृत महोत्त्सव का प्रारम्भ

आजादी का अमृत महोत्त्सव **12 मार्च 2021** प्रधानमंत्री **श्री नरेन्द्र मोदी** द्वारा **साबरमती आश्रम** से शुरू किया गया था। यह महोत्त्सव **15 अगस्त 2023** तक जारी रहेगा। इस पहल का उद्देश्य भारत के गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदानों और उपलब्धियों के बारे में आम लोगों को जागरूक करना है। **इस महोत्त्सव** के अर्न्तगत पीएम **मोदी जी** ने देश में **हर-घर तिरंगा अभियान** भी चलाया और **11 अगस्त से 15 अगस्त** तक हर घर में तिरंगा फहराने की अपील की है।

''आओ आजादी का अमृत महोत्त्सव मनाएँ दुखी जन दिखे तो उन्हें दिल से लगाए अहिंसा और शांति को घर-घर फैलाएँ जन-जन को देश का प्रहरी बनाएं''

आजादी का अमृत महोत्त्सव का उद्देश्य आजादी का अमृत महोत्सव का उददेश्य **5000+** वर्षों के प्राचीन इतिहास की विरासत के सामूहिक उपलब्धियों के सार्वजनिक खाते में विकसित होना है। इस विषय के तहत् कार्यक्रमों में **1971** की जीत के लिए समर्पित स्वर्णिम विजय वर्ष, महापरिनिर्माण दिवस के दौरान श्रेष्ठ योजना का शुभारंभ आदि जैसी पहल शामिल है।

इस अमृत महोत्त्सव के 5 मुख्य स्तंभ है

1. स्वतंत्रता संग्राम
2. 75 वर्षों में उपलब्धियाँ
3. योजनाएँ
4. संकल्प
5. कार्य

इस पहल **(आजादी का अमृत महोत्त्सव)** को शुरू करने के पीछे का विचार युवा पीढ़ी को स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान के प्रति जागरूक करना तथा उन्हें श्रद्धांजलि देना है यह महोत्त्सव भारत के उन सभी स्वतंत्रता सेनानियों को समर्पित है जिन्होंने भारतको अंग्रेजो से मुक्त कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है इस अभियान के पीछे एक और मकसद भारत को **आत्मनिर्भर** बनाना है।

''हम सभी ने मिलकर ठाना है
आजादी का अमृत महोत्त्सव को
धूमधाम से मनाना है''

भारत को आजादी दिलाने के लिए देश के कोने से पुरुष, महिलाओं और युवाओं ने असंख्य तपस्याओं का बलिदान दिया था भक्ति **आन्दोलन** ने एक तरह से राष्ट्रव्यापी स्वतत्रंता आंदोलन की रीढ़ तैयार की थी–'**नमक**' उस समय भारत की आत्मनिर्भरता का प्रतीक था जब **गाँधीजी** ने दांड़ी की यात्रा की और **नमक कानून** को तोड़ा।

आज भी हम कहते हैं कि हमने **देश का नमक खाया है.....** इसलिए नहीं कि नमक बहुत कीमती चीज है। बल्कि ऐसा इसलिए है क्योंकि नमक हमारे लिए श्रम और समानता का प्रतीक है।

जब हम ब्रिटिश शासन के उस युग हैं बारे में सोचते हैं जब देश का हर व्यक्ति स्वतंत्रता की प्रतीक्षा कर रहा था, तो यह विचार स्वतंत्रता के **इस 75 वर्ष** के उत्सव को और भी महत्त्वपूर्ण बना देता है।

"एक महोत्सव देश के त्याग और बलिदान का
एक महोत्सव देशभक्ति की भावना के अनुराग का
आजादी का अमृत महोत्सव है देश के वीरों के बलिदान का

उत्तर-प्रदेश में आजादी का अमृत महोत्सव–उत्तर-प्रदेश के मुख्यमंत्री जी **श्री आदित्य नाथ योगी जी** ने इस बार U.P में **4.76 करोड़** तिरंगा फहराने का लक्ष्य रखा गया है साथ ही सभी विभागों की ओर से विभिन्न सांस्कृति कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाएगा।

इसके अतिरिक्त मुख्यमंत्री जी ने सभी जन-प्रतिनिधियों और अधिकारियों को अपने-अपने जिलों के स्वतंत्रता संग्राम शहीदों के परिजनों, पद्म पुरस्कारों से सम्मानित विभूतियों एवं अन्य राष्ट्रीय व राज्य पुरस्कारों से सम्मानित महानुभावों को सम्मान राष्ट्रीय ध्वज भेंट करने के लिए कहा है।

"आओं हर घर-घर तिरंगा फहराए
आजादी के ७५ वे साल को मनाए
मिलकर सभी आजादी का अमृत महोत्सव मनाए।"

उपसंहार–यह हम सभी का सौभाग्य है कि हम स्वतंत्र भारत के इस ऐतिहासिक काल को देख रहे हैं जिसमें भारत प्रगति की नई उचाईयों को छू रहा है।

आज के स्वतंत्र भारत का नाम दुनिया में अग्रिम पंक्ति में लिखा हुआ हैं। इस पुण्य अवसर पर, हम देश के **नेतृत्त्व** करने वाले सभी महान व्यक्तियो के चरणों में नमन करते है, जिन्होंने देश के स्वतंत्रता संग्राम में अपना बलिदान दिया।

आजादी का अमृत महोत्सव भारत के स्वतंत्रता सेनानियों की उपलब्धियों विजयों और बलिदानों को मनाने और जानने के लिए भारत सरकार द्वारा शुरू की गई एक पहल है।

"आजादी के इस अमृत महोत्सव पर आओ मिलकर करें हम सब संकल्प अब। नव-भारत के निर्माण को करना होगा"
"देश-मंथन"
अमृत को खोजकर करना होगा।
अविष्कार अब।"

❁ ✪ ❁

Ozone layer depletion

Yushra
M.A. IInd Year

World Ozone day—16, September

Ozone blocks,

Harmful Rays,

Save ozone in

All possible ways

ओजोन परत के विरल होने अथवा उसमें छिद्र होने की चर्चा आज विश्व भर में चिन्ता का विषय है।

ओजोन परत परिभाषा–"ओजोन परत पृथ्वी के समताप मंडल में एक क्षेत्र है जिसमें ओजोन की उच्च सान्द्रता होती है और यह पृथ्वी को सूर्य के हानिकारक पराबैंगनी विकिरणों से बचाती है।"

ओजोन परत मुख्य रूप से पृथ्वी के वायुमंडल के निचले हिस्से में पायी जाती है। इसमें सूर्य से आने वाली हानिकारक पराबैंगनी विकिरणों के लगभग 97.99% को अवशोषित करने की क्षमता होती है जो पृथ्वी पर जीवन को नुकसान पहुँचा सकती हैं। यदि ओजोन परत अनुपस्थित होती है, तो लाखों लोगों को त्वचा रोग हो जाते और उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर हो जाती।

हालांकि, वैज्ञानिकों ने अंटार्कटिका के ऊपर ओजोन परत में एक छिद्र की खोज की है। ओजोन छिद्र के मुख्य कारण क्लोरोफ्लोरोकार्बन, कार्बन टेट्राक्लोराइड मिथाइल ब्रोमाइड और हाइड्रोक्लोरोफ्लोरो कार्बन है।

ओजोन परत रिक्तीकरण–"ओजोन परत का क्षरण ऊपरी वायुमण्डल में पृथ्वी की ओजोन परत का धीरे-धीरे पतला होना है, जो उद्योगों या अन्य मानवीय गतिविधियों से गैसीय ब्रोमीन या क्लोरीन युक्त रासायनिक यौगिकों की रिहाई के कारण होता है।" विगत वर्षों से औद्योगिक गतिविधियों के कारण वायुमण्डल ओजोन क्षयकारी पदार्थों–जैसे C.F.C नाइट्रिक ऑक्साइड, मैथिल, ब्रोमाइड इत्यादि की मात्रा बढ़ रही है। जिससे ओजोन परत के क्षरण में तेजी आयी है।

ओजोन परत की मोटाई मापने की ईकाई 230 डाबसन होती है। ओजोन छिद्र सर्वप्रथम फारमन ने सन् 1985 में अण्टार्कटिका के ऊपर देखा था। अब धीरे-धीरे उत्तरी ध्रुव Canada America etc.. पर भी ओजोन छिद्र बनने लगे हैं। CFC प्रशीतन के उपकरणों में प्रयोग में लाया जाता है। जब CFC वायुमण्डल में मुक्त होता है तो सीधे वायुमण्डल की ऊपरी परत पर पहुँच जाता है। सूर्य की पराबैंगनी किरणें CFC को तोड़ देती है। इस प्रकार प्रथक हुई क्लोरीन (CO_3) से क्रिया पर O_2 स्वयं को सूर्य की पराबैंगनी किरणों से रता नहीं कर सकती। दूसरे इस प्रकिया से O_3 के हजारों अणु टूटते हैं और ओजोन मण्डल नष्ट होता है।

ओजोन परत के क्षरण के कारण–

1. क्लोरो–ओजोन परत के क्षरण का मुख्य कारण CFC हैं। ये साल्वैंटस,स्प्रे ऐरोसोल, रेफ्रिजरेटर, एयर-कंडीशनर आदि द्वारा जारी किये जाते हैं।

2. अनियमित रॉकेट प्रक्षेपण–शोधों का कहना है की रॉकेटों के अनियन्त्रित प्रक्षेपण के परिणामस्वरूप CFC की तुलना में ओजोन परत का बहुत अधिक क्षरण होता है। यदि इसे नियंन्त्रित नहीं किया गया, तो इसके परिणामस्वरूप वर्ष 2050 तक ओजोन परत को भारी नुकसान हो सकता है।

3. नाइट्रोजन यौगिक– नाइट्रोजन युक्त यौगिक जैसे–No_2, No, N_2o ओजोन परत के क्षरण के लिए अत्यधिक जिम्मेदार है।

4. प्राकृतिक कारणों–प्राकृतिक प्रकियाओं जैसे–सूर्य धब्बे और समताप मंडल की हवाओं से समाप्त पाया गया है। लेकिन यह ओजोन परत के 1-2% से अधिक क्षरण का कारण नहीं बनता है। ज्वालामुखी विस्फोट भी ओजोन परत के क्षरण के लिए जिम्मेदार है।

कुछ मनुष्य ओजोन-क्षयकारी पदार्थों की सूचीः–

ओजोन क्षयकारी पदार्थ	सूत्रों का कहना है
CFC	Refrigerator एयर-कंडीशनर, सॉल्वैंटस, ड्राई-क्लीनिंग एजैट, आदि।
हेलोन्स	अग्निशमक
कार्बन टेट्राक्लोराइड	अग्निशामक, विलायक
मिथाइल क्लोरोफार्म	चिपकने वाले, एरोसोल
हाइड्रोक्लोरोकार्बन	अग्निशमक, एयर-कंडीशनर, सॉल्वैंटस

अगर तुम ओजोन पर की रक्षा करोगे
तो ओजोन परत तुम्हारी रक्षा करेगा।

ओजोन परत के क्षरण के प्रभाव–

1. मानव स्वास्थय पर प्रभाव–ओजोन परत के हास के कारण मनुष्य सीधे सूर्य की हानिकारक पराबैंगनी विकिरण के सम्पर्क में आएगा। इसके परिणाम-स्वरूप मनुष्य में त्वचा रोग, कैंसर सनबर्न, मोतियाबिंद शीघ्र बुढ़ापा और कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली।

2. जानवरों पर प्रभाव–पराबैंगनी विकिरणों के सीधे सम्पर्क में आने से जानवरों में त्वचा और आँखों का कैंसर होता है।

3. पर्यावरण पर प्रभाव–मज़बूत पराबैंगनी किरणों से पौधों में न्यूनतम वृद्धि, फूल और प्रकाश–संश्लेषण हो सकता है। जंगलों को भी पराबैंगनी किरणों के हानिकारक प्रभावों को सहन करना पड़ता है।

4. समुद्री जीवन पर प्रभाव–हानिकारक पराबैंगनी किरणों के संपर्क में आने से प्लवक बहुत प्रभावित होते हैं। ये जलीय खाद्य श्रृंखला में अधिक होते हैं। यदि प्लवक नष्ट हो जाते हैं, तो खाद्य श्रृंखला में मौजूद जीव भी प्रभावित होते हैं।

Every ozone hole,
Is a threat to our soul

ओजोन परत के क्षरण का समाधान–

ओ०डी०एस के प्रयोग से बचें–ओजोन क्षयकारी पदार्थों का प्रयोग कम करें। उदाहरण के लिए रेफ्रिजरेटर और ऐयर कंडीशनर में सी०एफ०सी के उपयोग से बचें।

2. वाहनों का उपयोग कम-से-कम करें–वाहन बड़ी मात्रा में Green house gases का उत्सर्जन करते हैं तो Global warming के साथ-साथ ओजोन रिक्तीकरण का कारण बनते है।

3. पर्यावरण के अनुकूल सफाई उत्पादों का प्रयोग करें–अधिकांश सफाई उत्पादों में क्लोरीन और ब्रोमीन छोड़ने वाले रसायन होते हैं जो वातावरण में एक रास्ता खोजते हैं और ओजोन परत को प्रभावित करते हैं।

नाइट्रस ऑक्साइड का प्रयोग प्रतिबंधित होना चाहिए–सरकार को कार्यवाई करनी चाहिए और हानिकारक नाइट्रस ऑक्साइड के उपयोग पर रोक लगानी चाहिए। लोगों को नाइट्रस ऑक्साइड और गैर उत्सर्जित करने वाले उत्पादों के हानिकारक प्रभावों से अवगत कराया जाना चाहिए ताकि व्यक्तिगत स्तर पर भी इसका उपयोग कम-से-कम किया जा सके।

ओजोन परत बचाने हेतु अन्तर्राष्ट्रीय प्रयास

1. वियना सम्मेलन–ओजोन परत के विनाश के विश्वव्यापी खतरे की समस्या का हल निकालने के लिए पहला विश्व सम्मेलन March 1985 में वियना (Australia) में हुआ। जिसे दि वियाना कन्वेशन ऑन दि प्रोटेकशन ऑफ दि ओजोन लेयर, कहा गया। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य इस समस्या की ओर सारे विश्व का ध्यान आकर्षित करना था।

2. मांट्रियल प्रोटोकॉल (1987)–1987 में canada के मांट्रियल शहर में हुई 41 राष्ट्रों की बैठक में विचार किया गया और मांट्रियल प्रोटोकॉल नामक समझौतें पर हस्ताक्षर हुए। इस समझौते में इस निश्चित समय सीमा के अन्दर ओजोन नाशक रसायनों का इस्तेमाल रोकने की बात कही गयी। मांट्रियल समझौते में अगले 15 वर्षों के भीतर CFC के प्रयोग का पूर्ण प्रतिबन्या लगाने का लक्ष्य रखा गया।

3. ओजोन बचाओं सम्मेलन–(1989) march 1989 को लन्दन में ओजोन बचाओं सम्मेलन हुआ। जिसमें 118 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसे London protocal के नाम से भी जाना जाता है। इस सम्मेलन में CFC तथा हैलोजन के उत्पादन तथा उपयोग पर पूरी तरह समाप्त करने की समय सीमा सन् 2000 तक निर्धारित की गयी।

❄ ✪ ❄

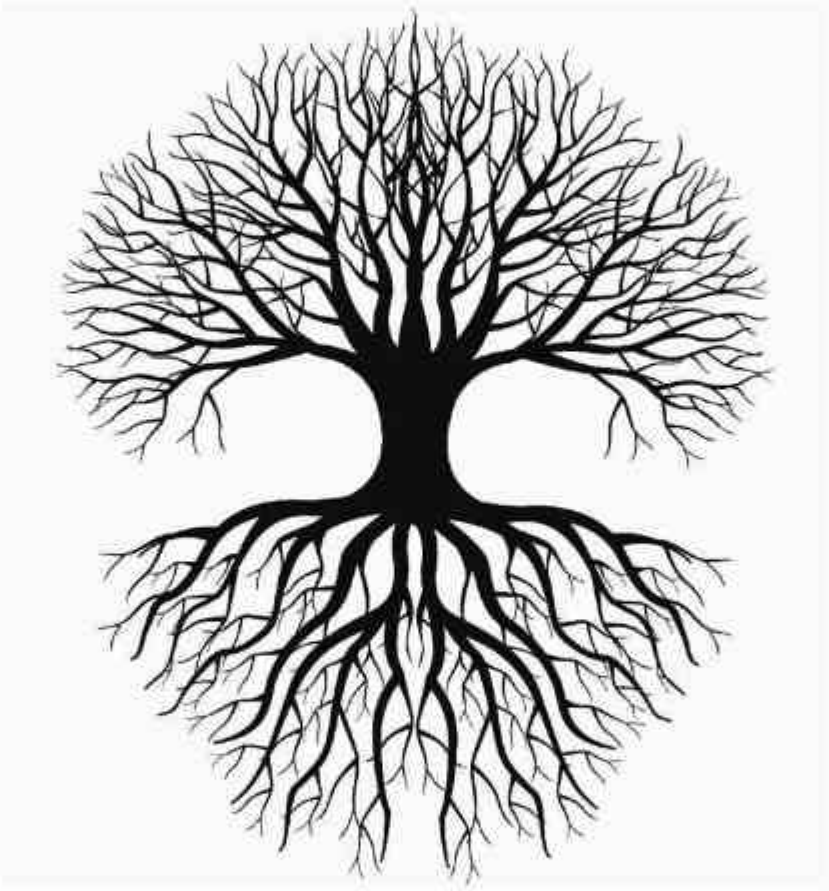

आजादी अभी पूर्ण नहीं

आयुषी
बी०ए० द्वितीय वर्ष

आजादी अभी पूर्ण नहीं
कोई पेट भर पाता है भोजन,
तो कोई भूखा ही सो जाता है।
आजादी अभी पूर्ण नहीं

नौ दिन तक पूजे जिनकों सब,
फिर उनको कोसा जाता है।
आजादी अभी पूर्ण नहीं
भूख देख हृदय व्यथित होता है,
विद्यार्जन नहीं बच्चा भोजन को विद्यालय जाता है।
आजादी अभी पूर्ण नहीं

4 × 4 की स्क्रीन पर हलचल बहुत है,
जान बचानी नहीं, पर सेल्फी खूब खिंचाता है।
आजादी अभी पूर्ण नहीं
झूठी शान दिखाने में,
युवा अपनी शान दिखाने में,
आजादी अभी पूर्ण नहीं

देश की खातिर मर जाये चाहे सैनिक,
पर तस्वीरें खींचवाने को अभिनेता याद आता है।
आजादी अभी पूर्ण नहीं!

❁ ✪ ❁

हर जगह, तू किसी फरिश्ते को ना देख

साक्षी यादव

ना तलाश अपने अस्तित्त्व को तू, जिस्म में.....
ना देख खूबसूरती को तू हुस्न में.....
ना खुद को तू समाज की नजरों से देख.....
ना खुद को तू अपने में ही समेट.....
तू चल,

संघर्ष कर, हर जगह किसी फरिश्ते को ना देख।
ना झाक तू दुनिया की परम्पराओ में.....
ना ढल तू संसार के संस्कारों में.....
ना कभी खुद को कमजोर नजरों से देख.....
कमजोरी भी देख तो अपने नजरिये से देख.....
तू चल,

संघर्ष कर, हर जगह किसी फरिश्ते को ना देख
ना तील अपने सामर्थ्य को तू शब्दों में.....
ना बाँध खुद को तु जंजीरों में.....
ना असफलताओं के परिणामों को तु देख....
जो प्रश्न उठाएँ तेरी योग्यताओं पर,
जरा उनकी दुर्बलताओं को भी देख
तू चल

संघर्ष कर, हर जगह किसी फरिश्ते को ना देख.....

❁ ✪ ❁

देश की पीड़ा

अंशिका
भूगोल विभाग

जो अंग्रेजी बोले वो है बड़ा विद्वान,
जो हिन्दी बोले वो हैं आम इंसान,

गोरा होना है सुन्दरता की पहचान,
काले होने पर नहीं है आपको सम्मान,

ये है समाज के कुछ लोगों का विचार,
और इसी भावना का वे करते प्रसार,

संस्कृत भाषा का था जहाँ संस्कार,
आज नहीं है उसका उतना प्रसार,

ये है अंग्रेजो द्वारा मानसिक शोषण का परिणाम,
जो आज भी विदेशियों को करते प्रणाम,

क्या यही है वो भारत देश हमारा,
जहाँ शिवाजी ने अफजल खाँ को मारा,

कुछ लोगों की सोच ने देश की संस्कृति को बिगाड़ दिया
उसी सोच पर घमण्ड करके सोचते हैं झण्डा गाड़ दिया।

मेरा स्वर्णिम भारत

श्वेता
बी०ए० तृतीय वर्ष

स्वर्ण रूपी भारत भूमि की धरती पर, वीरों ने शहादत रूपी
खून चढ़ाया है,
यह मेरा प्यारा भारत देश है, यहाँ कण-कण में तिरंगा
लहराया है।
उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम, चारों तरफ विभिनता का
मेला है।

घूमना चाहते हो अगर कहीं, तो मेरा देश घूम लो,
मेरे भारत देश में ही, पूरा विश्व फैला है।

भगत सिंह, वीर सुभाष, चन्द्रशेखर आजाद,
और ना जाने कितने ही अनमोल हीरो की, भारत धरती है,
यहाँ न केवल पुरुषों ने, अपितु महिलाओं ने भी, इतिहास
की महागाथा रची है,

जब भारत पर अंग्रेजों का-बुरा साया छाया था,
भारत के हर नागरिक को उन फिरंगियों ने अपना गुलाम
बनाया था
तब न जाने कितनी रानी लक्ष्मी बाइयों ने, भारत की
रक्षा में, अपना खून बहाया था,
और महान क्रान्तिकारी बीना दास जैसी महिलाओं ने, भरी
सभा में गर्वनर को अपनी गोली से उड़ाया था।

सरहद की सीमा पर न जाने कितने ज़वान, देश सेवा के लिए तत्पर रहते हैं,
अपनी जान को दाव लगाकर, हमारे लिए सारी निंदे खो देते हैं।
देश प्रेम, रक्षा की और न जाने यहां कितनी अमर कहानी मैं,
हाथ मत लगाना वरना जल जाओंगे, यहाँ हर एक महिला खौलती आग और पानी हैं,

ऐसे वीर महान पुरुषों का देश हैं मेरा,
यहाँ सूरज की किरणें भी आकर गर्व महसूस करती है,
चौड़ जाता हैं सीना मेरा, देश का नाम लेकर,
यहाँ हर एक सीने में भारत माता बसती हैं,

हमेशा लहराता रहेगा यह तिरंगा, कभी न इसको झुकने देगें,
खुद मिट जायेंगे देश की खातिर, पर कभी न देश का नाम मिटने देंगे।
जय हिन्द, जय भारत

❀ ✪ ❀

तुझको नमन मेरे वतन

मनीषा यादव

तुझको नमन मेरे वतन
फूल हम तू है चमन
तेरी रक्षा को करें गमन
तुझसे ही है यह तन-मन

आंख जो कोई उठाएँ
आग दरिया में लगाँए
दुश्मन को दौड़कर भगाएँ
तिरंगे को हमेशा
चारों दिशाओं में फैलाँए

तेरी खातिर मर भी जाएँ
तुझको नमन मेरे वतन
फूल हम तू है चमन.....!

❀ ✪ ❀

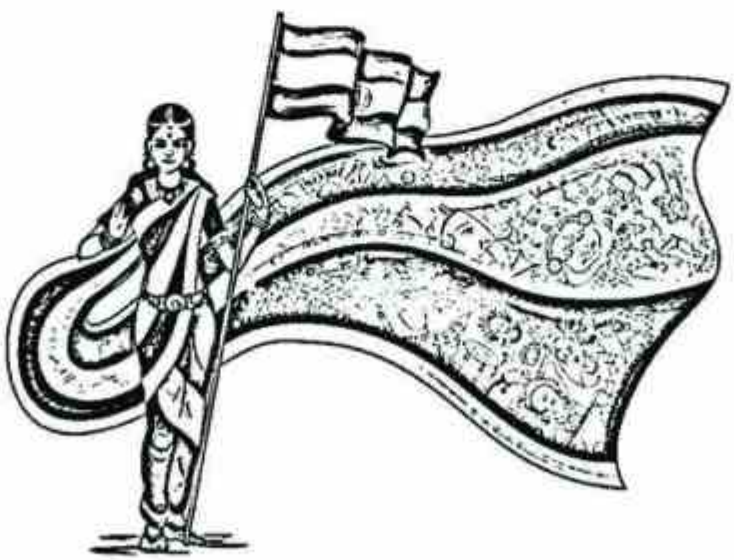

मेरे पिता

डॉ० दीक्षा यजुर्वेदी
एसोसिएट प्रोफेसर
रसायन-विभाग

मेरा आत्म सम्मान हैं मेरे पिता
मेरी पहचान हैं मेरे पिता

मेरा आत्म विश्वास हैं
जीने की एक आस हैं

सरलता की मिसाल हैं
सहजता उनकी विशाल है....

संवेदनशीलता उनकी पहचान
विनम्रता उनकी आन और शान

संस्कृति की मशाल लिए
असीमित ज्ञान का प्रकाश लिए

आप से ही मेरी पहचान है
आप ही मेरा अभिमान हैं....

मार्गदर्शक भी आप ही
पथ प्रदर्शक भी आप ही....

आपकी पुत्री होने का गर्व है
आप ही मेरा सर्वस्व है....

आप ही मेरी पूँजी आप ही मेरी शक्ति
आप ही मेरे भगवान आप से ही मेरी शक्ति!

❁ ✪ ❁

पक्तियाँ

तरन्नुम
बी०एस०सी० (फूडसांइस)

हिन्दु, मुस्लिम, सिख और ईसाई
देखे तो चार ऊंगलियाँ है मगर।
एक-साथ मिलेगी तो मुठ्ठी बनेगी,
मिटा न सकेगा इसे कोई यहाँ,
फिर ये ऐसी ताकत बनेगी।।
कि फूट डालो शासन करो कि नीति अंग्रेजो की
आजादी मिली देश को पर यह नीति रह गयी।
विभिन्नता में एकता यही पहचान हमारी है,
रहे सदा प्रेम दिलों में यही दुआ हमारी है।।
जय हिन्द! जय भारत!

कविता

मुड़ जाती है हाथों की लकीरें
गर हिम्मत है तूफानों से लड़ने की
होते-होते पीछे हो जाते हैं
बात जो करते हमेशा किस्मत की

किस्मत में ही लिखा हो ऐसा, अगर
हासिल होगा कुछ करते रहने से
पूरे होंगे सारे सपने एक दिन,
मगर वो दिन नहीं आता बैठे रहने से।

❋ ✪ ❋

सशक्त नारी

नेहा ठाकुर
(बी० ए० द्वितीय वर्ष,) अनुक्रमांक-202

एक नारी, सशक्त जो है प्राचार्या हमारी।

दिनकर जैसे कर दे रोशन दीर्घकाल के अधेंरे को,

दे रोशनी ज्ञान की दीप ऐसा जलाती।

इस ज्योति की छाया सबको यह समझाती,

बनें दृढ़ व जिज्ञासु लेकर अपने काम को,

रहें तत्पर व सजग रहें कर चिन्तन समय की चाल को।

करना कुछ कि तुम भी पहुँचों बड़े किसी मुकाम पर,

यही सन्देश देकर हमारा मार्गदर्शन कराती।

सदैव ज्ञान के दीप जला करती यही तैयारी,

कुछ ऐसी है। प्राचार्या हमारी।

एक नारी सशक्त नारी जो है। प्राचार्या हमारी।

❄ ✪ ❄

बढ़े चलो, बढ़े चलो

सदीहा
एम०ए० द्वितीय वर्ष

1. न हाथ एक शस्त्र हो,
न हाथ एक अस्त्र हो,
न अन्न वीर वस्त्र हो,
हटो नहीं डरो नहीं,
बढ़े चलो, बढ़े चलो!

2. रहे समक्ष हिम-शिखर
तुम्हारा प्रण उठे निखर,
भले ही जाए जन बिखर,
रूको नहीं, झुको नहीं,
चलो बढ़े चलो!

3. घटा घिरी अटूट हो,
अधर में कालकूट हो,
वही सुधा का घूँट हो
जिए चलो, मरे चलो।
बढ़े चलो-बढ़े चलो!

4. गगन उगलता आग हो,
छिड़ा मरण का राग हो,
लहू का अपने राग हो,
अड़ो वही, गड़ो वही
बढ़े चलो, बढ़े चलो।

5. चलो नई मिसाल हो,
जलो नई मिसाल हो,
बढ़ो नया कमाल हो,
झुको नहीं, रूको नहीं,
बढ़े चलो, बढ़े चलो!

6. न हाथ एक शस्त्र हो,
न हाथ एक अस्त्र हो,
न अन्न वीर वस्त्र हो,
हटो नहीं डरो नहीं
बढ़े चलो बढ़े चलो!

❋ ✪ ❋

हिमालय

सदीहा
एम०ए० द्वितीय वर्ष

1. युग-युग से है अपने पथ पर
देखो कैसा खड़ा हिमालय,
डिगता कभी न अपने प्रण से
रहता प्रण पर अड़ा हिमालय!

2. जो भी बाधाएँ आई
उन सब से ही लड़ा हिमालय
इसीलिए तो दुनिया भर में
हुआ सभी से बड़ा हिमालय!

3. अगर न कराता काम कभी कुछ
रहता हरदम पड़ा हिमालय,
तो भारत के शीश चमकता
नहीं मुकुट-सा जड़ा हिमालय!

4. खड़ा हिमालय बता रहा है
डरों न आँधी पानी में,
खड़े रहो अपने पथ पर
सब कठिनाई तूफानी में!

5. डिगो न अपने प्रण से तो
सब कुछ पा सकते हो प्यारे,
तुम भी ऊँचे हो सकते हो
छू सकते हो नभ के तारे!!

6. अचल रहा जो अपने पथ पर
लाख मुसीबत आने में,
मिली सफलता जग में उसको
जीने में मर जाने में!

7. युग-युग से है अपने पथ पर
देखो कैसा खड़ा हिमालय,
डिगता कभी न अपने प्रण से
रहता प्रण पर अड़ा हिमालय!

❁ ✪ ❁

पुरजोर पिता

सदीहा
एम०ए० द्वितीय वर्ष

जीवन से लबरेज हिमालय जैसे थे पुरजोर पिता!
मैं उनसे जन्मी नदियाँ हूँ मेरे दोनों छोर पिता!!
प्रश्नों के हल, खुशियों के पल सारे घर का संवल पिता!
एक रिश्ते में बाँधने वाली ये एक अनुपम डोर पिता!!
जीवन के हर तौर-तरीके, जीवन की हर सच्चाई!
सिखलाया करते थे हम पर रखकर जोर पिता!!
जब हम बच्चों की नादानी माँ से संभल न पाती थी!
तब हम पर गरजे-बरसे थे बादल से घन-घोर पिता!!
सब कुछ है जीवन में लेकिन एक तुम्हारे जाने से!
रात सरिखी ही लगती है मुझको अब हर भोर पिता!!
रोज कई किरदार जिया करते थे पूरी शिद्दत से!
कभी झील की खामोशी थे कभी सिंधु का शोर पिता!!
दिल अंबर-सा, मन सागर-सा, कद काठी थी बरगद-सी!
चाँद से शीतल, तप्त सूर्य थे, ईश्वर से चितचोर पिता!!
जीवन से लबरेज हिमालय जैसे थे पुरजोर पिता!
मैं उनसे जन्मी नदियाँ हूँ मेरे दोनो छोर पिता!!

❁ ✪ ❁

धरोहर

सदीहा
एम०ए० द्वितीय वर्ष

1. आ गए आ गए मंजिल पर अब आने वाले।
   क्यों भुलाते हैं इन्हें राह भुलाने वाले।।
2. क्यों यह कहके निकल जाती है दिल से बाहर।
   तू भी आराम न पाएगा सताने वाले।।
3. कह रही है तुझे अब सारी खुदाई क्या-क्या।
   क्या मिला तुझको मेरे दिल को दुखाने वाले।।
4. हम वो कैदी है कि जंजीर की आवाजों।
   से कैदखाने की है दीदार हिलाने वाले।।
5. आ गए आ गए मंजिल पर अब आने वाले।
   क्यो भुलाते हैं इन्हें राह भुलाने वाले।।
6. खाक कर देगी तुझे अहले चमन की आहे।
   ऐ नशेमन में मेरे आग लगाने वाले ।।
7. जा किसी ओर से कर उज्र सितम अहदे वफा।
8. उफ भी निकले जो जबां से तो खतावर है हम।
   कहते जाते हैं यह सर अपना कटाने वाले।।
9. है यही आह शरर-वार तो सुन लेंगे कभी।
   जल जाए आप ही औरों को जलाने वाले।।
10. दिल से यह हजरते '**बिस्मिल**' के निकलती।
    खुश रहे शाद रहे जेल में जाने वाले।
11. आ गए आ गए मंजिल पर अब आने वाले।
    क्यो भूलाते हैं इन्हें राज भूलाने वाले।।

जीवन

डॉ० कल्पना चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर
(जन्तु विज्ञान)

जीवन का तो मोल बहुत है
किसने सोचा किसने जाना।

बचपन खेल-खेल में खोया
मस्त रहा पर कुछ न बोया।

यौवन पर इठलाता डोला
कुछ न समझा कुछ न बोला।।

देख बुढ़ापा ठोकर खाया
राम-नाम मैं जप न पाया।

जमा करी जीवन भर माया।
पर काबू में अब नहीं काया।।

सोच रहा हूँ पेड़ ही बो लूँ
सोच समझ कर सच ही बोलूँ।।

राम-नाम का जप कर लूँ मैं
आत्मसात खुद से कर लूँ मैं।।

जीवन के अन्तिम लम्हों को
प्रेम त्याग के फ्रेम में मढ़ लूँ।

प्यार करूँ मैं सबसे इतना।
कोई अपना हो या पराया।

मैं को छोड़ छोड़ मैं भागू
अहंकार को दूर भगा दूँ।

मोहमाया के इस पिजंरे से
किसी तरह मैं पंख बचाँ लूँ।

अन्त समय फिर शीश नवाकर
हो स्वतन्त्र मैं नभ को छू लूँ।।

अस्थि पंजर के ढाँचे को
सोंधी मिट्टी से मैं भिगो लूँ।।

आओ पेड़ लगायें

डॉ० कल्पना चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर
(जन्तु विज्ञान)

चलो हम सब पेड़ लगायें
वातावरण को शुद्ध बनायें,
प्रतिशत ऑक्सीजन का बढ़ायें
हरियाली का चमन बनायें।

कसम लें पेड़ न काटेंगे हम
ज्ञान पेड़ का बाटेंगे हम,
जब जानेंगे पेड़ का लाभ
नहीं करेगा कोई कटाव।

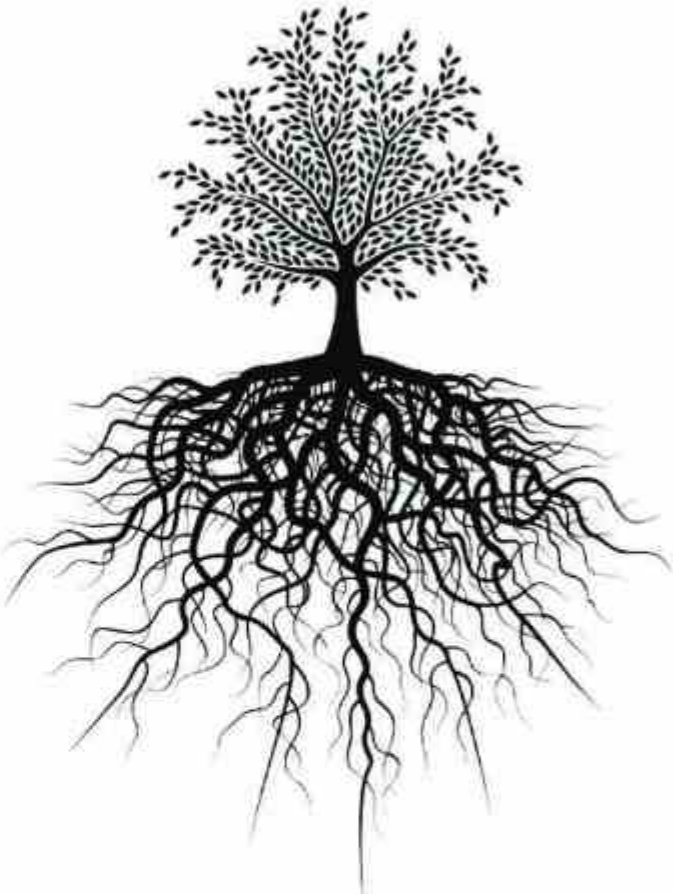

पेड़ देगा हमको छाया
फल, सब्जी, ऑक्सीजन लाया,
चिड़ियों ने आश्रय है पाया
मसाले, दवाई, जड़ी-बूटी लाया।

मिट्टी के कण बाँधे रखता
उर्वरकता को साधे रखता।
मिट्टी वह नहीं पाती है
बाढ़ से हमें बचाती है।

जंगल में जानवर हैं रहते
पेड़ न काटो, वह हैं कहते,
जब जंगल नहीं रहते हैं
बाघ आया-बाघ आया कहते हैं।

जंगली जानवर से हैं बचाते
वर्षा ऋतु को शीघ्र हैं लाते,
ग्लोबल वार्मिंग को हैं घटाते
जीवन सुन्दर स्वस्थ बनाते।

इंसान

डॉ० कल्पना चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर
(जन्तु विज्ञान)

हिन्दू ने है हाथ बढ़ाया
मुसलमान ने थामा है,
दोनों आपस में हैं भाई
हमने ये पहचाना है।

हाजी पकड़कर हाथ संत का
गया तट पर घूम रहे,
देख-देख कर ऐसा संगम
हिन्दू-मुस्लिम झूम रहे।

किन्तु वोटों की गिनती ने
इनको फिर लड़वाया है,
कुछ उन्मादी लड़कों ने फिर
हिंसा को भड़काया है।

असली बातें छिपी हुई हैं
झूठा कफन उढ़ाया है,
अमन-चैन से रहने वालों को
अलगाव का पाठ पढ़ाया है।

कौमी एकता को फिर हमने
झूठ का जाना पहनाया है,
भारत तेरा या फिर मेरा
कहकर समय गवाया है।

रूधिर एक है रंग एक है
रब या ईश्वर ने बनाया है,
एक ग्रह पृथ्वी पर लाकर
इंसान सबको बनाया है।

माँ तुम क्या गयीं....

कैप्टन डॉ० अंजुला राजवंशी
एसोसिएट प्रोफेसर व एनसीसी ऑफिसर,
आर जी पीजी कॉलिज, मेरठ

माँ तुम क्या गयीं,सारे त्यौहार चले गए।
अहोई गयी देवउठान गयी, होली दीवाली चले गए।
सूना है घर का कोना, रसोई की खटपट का होना।
तुम क्या गयीं घर से सारे रिश्तेदार चले गए।
पितामह गए पिता गए, अम्मा व चाची भी गयीं।
भाई से जो होता मायका, वो दोनों तो पहले चले गए।।
भाग्यवान थे जो हमें, माँ व चाची का प्यार मिला।
चाचा जी हैं साथ हमारे, लेकिन पिता गुमनाम चले गए।
लड़कियाँ पढ़ेंगी घर की, था पितामह का सपना।
होते ही नौकरी सम्पन्न, वो पितामह भी चले गए।।
चाचा जी हैं सम्बल सबका, जोड़े सबको रखते हैं।
वरना आँगन सूना, जीवन सूना, सारे अपने चले गए।।
थी जो बच्चों से रौनक, वो समेट ना पाए विरासत को।
खुदमुख्तार होकर वे सब, अपने रस्ते चले गए।।
विचार अलग होते हैं सबके, लेकिन प्रेम त्याग समर्पण है।
आधुनिकता की दौड़ में सबके, संस्कार सारे चले गए।।
माँ तुम क्या गयीं.....
अहोई गयी.....

❄ ✪ ❄

कोरोना ने सब कुछ बदला

कैप्टन डॉ० अंजुला राजवंशी
एसोसिऐट प्रोफेसर व एनसीसी ऑफिसर,
आर०जी०पी०जी कॉलिज, मेरठ

जीवन का हर रूप बदला,
कोरोना ने सब कुछ बदला।
कैम्प भी हो गए ऑनलाइन,
कैडेट्स का अब जोश है बदला।।
एक भारत श्रेष्ठ भारत हो अपना,
एनसीसी ने प्रारूप है बदला।
ऑनलाइन में सीखा बहुत कुछ नया,
शासन ने कैम्प गतिविधियों को बदला।।
कैडेट्स की प्रतिभागिता को बढ़ाया,
नित नयी तकनीक से रूबरू करवाया।
कैडेट्स देते धन्यवाद अधिकारियों को,
जिन्होंने नए भारत को जानने का रूप है बदला।।
कुछ ही चुने गए कैम्प के लिए,
बाक़ी के अरमान है बाक़ी।
होगा धरातल पर कैम्प फिर से,
बेशक कोरोना ने सब कुछ बदला।।

❁ ✪ ❁

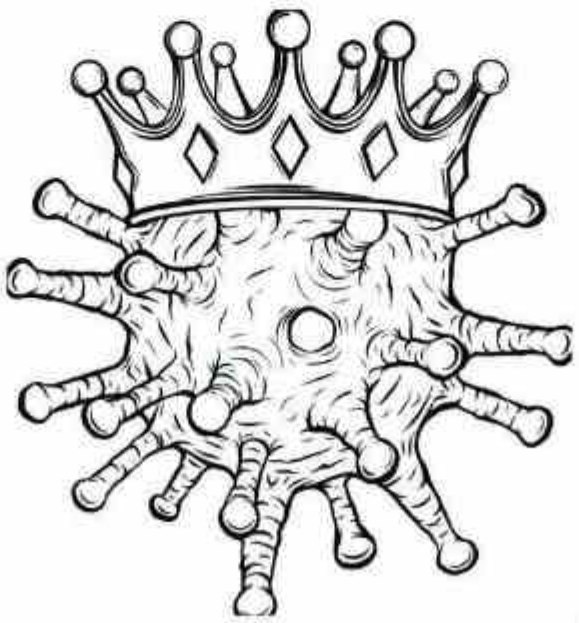

मैं वादा करती हूँ....

डॉ० अंजुला राजवंशी
एसोसिएट प्रोफेसर व एनसीसी ऑफिसर ,
आर जी पीजी कॉलिज, मेरठ

मैं वादा करती हूँ, नहीं भूलूँगी देश को।
जीऊँगी तो इसके लिए, मरूँगी तो इसके लिए।।
मुझे नहीं परवाह, दुश्मनों की।
मुझे नहीं चिंता अपने-परायों की।।
मेरी रग-रग में है, सिर्फ मेरी भारत माँ।
मुझे देना है अपना सर्वोत्तम, बनूँ इसका स्वर्ण मुकुट।।
मुझे मत रोको, मुझे ना समझो कमजोर।
मैं हूँ आत्मनिर्भर भारत माँ की संतान।।
मैं नहीं हारूँगी, जीतूँगी हर बाजी।
मैं हूँ भारत माँ की बेटी, मैं हूँ इसकी शान।।
मैं सवारूँगी परिवार, मैं सजाउँगी कार्यालय।
मैं सजाऊँगी देश, मैं हूँ शक्ति की पहचान।।
समझो ना मुझे कमजोर और निराश्रित।
मैं रुहूँगी मुस्कुराती, बनूँगी देश की जीवन-ज्योति।।

❁ ✪ ❁

सेवानिवृत्ति

डॉ० अंजुला राजवंशी
एसोसिएट प्रोफेसर व एनसीसी ऑफिसर,
आर जी पीजी कॉलिज, मेरठ

सरल सहज अनुशासित,
निर्भीक आपका व्यक्तित्व।
काम करने का तरीका,
सिखाता आपका व्यक्तित्व।।
व्यवस्थित कार्यस्थल,
शानदार पारिवारिक सोच।
जीवन में संतुलन सिखाता,
आपका व्यक्तित्व।।
सेवानिवृत्ति के इस अवसर पर,
भविष्य में झलके आपका व्यक्तित्व।
भूलना सम्भव नहीं, ट्रेनिंग,
कार्यपद्धति से भरपूर आपका व्यक्तित्व।।
स्वस्थ सानंद,
शांत वर्तमान में रहें।
निरंतर निखरे आपका व्यक्तित्व।।

सुभाष ने माँगी बर्मा में कुर्बानी

दिव्यांशी सोम
छात्रा

वो खून कहो किस मतलब का
जिसमें उबाल का नाम नहीं
वो खून कहो किस मतलब का
आ सके देश के काम नहीं
वो खून कहों किस मतलब का
जिसमें जीवन न रवानी है
जो परवश होकर बहता है
वो खून नहीं है पानी है
उस दिन लोगों ने सही खून की कीमत पहचानी थी
जिस दिन सुभाष ने वर्मा में माँगी उनसे कुर्बानी थी।
बोलो स्वतंत्रता की खातिर बलिदान तुम्हें करना होगा
तुम बहुत जी चुके हो जग में लेकिन आगे तुम्हें मरना होगा
आजादी के चरणों में जो जयमाल चढ़ाई जाएंगी
ओ सुनो वो तुम्हारे शीशों को फूलों से गूथी जाएगी
आजादी का संग्राम कहाँ पैसों पर खेला जाता है
ये शीश कटाने का सोदा नंगे सर झेला जाता है
यू कहते कहते वक्ता की आँखो में खून उत्तर आया
मुख रक्त वर्ण हो दमक उठा
दमकी उनकी रक्तिम काया
अजानुबाह ऊँची करके
वे बोलो रक्त मुझे देना
इसके बदले में भारत की आजादी
तुम मुझसे ले लेना
हो गई सभा में उथल पुथल
सीने में दिल न समाते थे
स्वर इंकलाब के नारो के कोसो तक छाये जाते थे
हम देंगे देंगे, खून शब्द बस यही सुनाई देते थे।
रण में जाने को युवक बस खड़े दिखाई देते है
बोले सुभाष इस तरह नहीं बातों से मतलब सदता हैं

लो ये साधारण पत्र नहीं, आजादी का फरमान है
इस पर तुमको अपने तन का कुछ उज्जवल रक्त गिराना है
वो आगे आए जिसके तन में, खून भारतीय बहता हो
वो आगे आए जो अपने को हिन्दुस्तानी कहता हो
वो आगे आए जो इस पर खूनी हस्ताक्षर देता हो
मैं कफन बढ़ाता हुँ आए जो हंसकर इसको लेता हो
सारी जनता हो
सारी जनता छुँकारी
हम आते हैं, हम आते हैं
माता के चरणों में ये लो हम अपना रक्त गिराते हैं।
साहस से हमरे युवक उस दिन बढ़ते हो आते थे
चाकु, छुरी, कटारियों से वो अपना रक्त गिराते थे,
फिर उसी रक्त की स्याही में वो अपनी कलम डुबाते थे।
आजादी के फरमाने पर हस्ताक्षर करते जाते थे।
उस दिन तारों ने देखा था
उस दिन तारों ने देखा था
हिंदुस्तान विश्वास नया
जब लिखा महारणधीरों ने खून से अपना इतिहास नया।

❁ ✪ ❁

स्वतंत्रता सेनानी
प्रिय महात्मा गांधी

शेरीन
बी०ए० द्वितीय वर्ष

जब चल रही थी भारत में,
जुल्म की आँधी।
अपने त्याग और बलिदान से,
भारत को दिलाई आजादी
वह महान व्यक्ति थे,
महात्मा गाँधी।।
जब जालिम ने,
बंदूक सीने पर उनके साधी।
अहिंसा का ज्ञान दे गए,
महात्मा गाँधी।।
नहीं भूलेंगे कभी,
उनके विचारों को हम।
सदैव रखेंगे मन में, उनका आदर और सम्मान।
हम भारतीयों को है, उन पर मान।
वह व्यक्ति थे,
महात्मा गाँधी। जो कहते थे सदैव,
रहे मेरा भारत महान
जय हिंद जय भारत

❁ ✪ ❁

फौजी

रिया बंसल
एल/सीपीएल

यूँ तो सरहद पर खड़े हैं कुछ ऐसे शख्स जिन्हें नहीं है अपनी जान की फिक्र.....
करके खुदको वतन के हवाले लगाते हैं यह तो सिर्फ भारत माँ के नारे.....।।
हिन्दू-मुस्लिम-सिख-इसाई सबने अपनी जान गवाई, करा अपनी धरती को दुश्मनों से रिहा.....
गर्म लपटें चाहे हो सर्द हवाएँ रास्ते में इनके टिक ना पाएँ वो भी खुदको बेवस पाएँ.....।।
बदन पर वर्दी और दिल में एक मुकाम, करते हर पल भारत माँ को प्रणाम.....
इनकी हर सांस से तिरंगा लहराता है दुश्मन भी इनके सामने टिक नहीं पाता है.....।।
यूँ तो देशवासियों ने इनको कइयो बार झुकाया है पर हर दम इनमें अपनी जान देकर देश का सम्मान बचाया है।
चाँद-सितारे भी गाते हैं इनके गुनगान क्योंकि कोई नहीं है इन्सा बलवान।।
यूँ तो नहीं है यह कोई आम इंसान यह है "फौजी" हमारी देश की शान।।

❁ ✪ ❁

विषय-कन्या भ्रूण हत्या
मन की आवाज

लायबा ईलाही
एन०सी०सी० तृतीय वर्ष

''इन पंक्तियों में एक माँ और बेटी की मन की आवाज और हमारे समाज के लोगो की सोच व्यक्त की गई है''–

इतना सा बीज थी मैं कली बनने भी नहीं दिया।
कली बनी तो फूल खिलने भी नहीं दिया।।
इस समाज ने मुझे जीने भी नहीं दिया।
इस समाज ने मुझे जीने भी नहीं दिया।।

कुछ लोगो ने कहा लड़की है, नदी में बहा दो।
कुछ ने कहा लड़की है, मिट्टी में दबा दो।।
कुछ ने कहा लड़की है, जिन्दा जला दो।
इस समाज ने मुझे जीने भी नहीं दिया।।

पर मेरी माँ ने कहा, पर मेरी माँ ने कहा।
जीने दो मेरी कली को खिलने दो।।
खिलेगी यह कली फूल बनकर रोशन करेगी जहाँ को।
इस समाज ने मुझे जीने भी नहीं दिया।।

मेरी माँ की नहीं सूनी लोगों ने तो।
दे दिया मौत के मुँह मुझे।।
रो-रोकर आँखे लाल कर ली माँ ने तो।
कलेजे के ठण्डक पँहुच गयी लोगो के तो।
इस समाज से मुझे जीन भी नहीं दिया।
इस समाज ने मुझे जीने नहीं दिया।।

कविता

आजादी के साल हुए कई
पर क्या हमने पाया है,
सोचा था क्या होगा लेकिन,
सामने पर क्या आया है,
रामराज्य-सा देश हो अपना
बापू का था सपना,
चाचा बोले आगे बढ़ कर
कर लो सब को अपनी
दिया शास्त्री ने नारा

❁ ✪ ❁

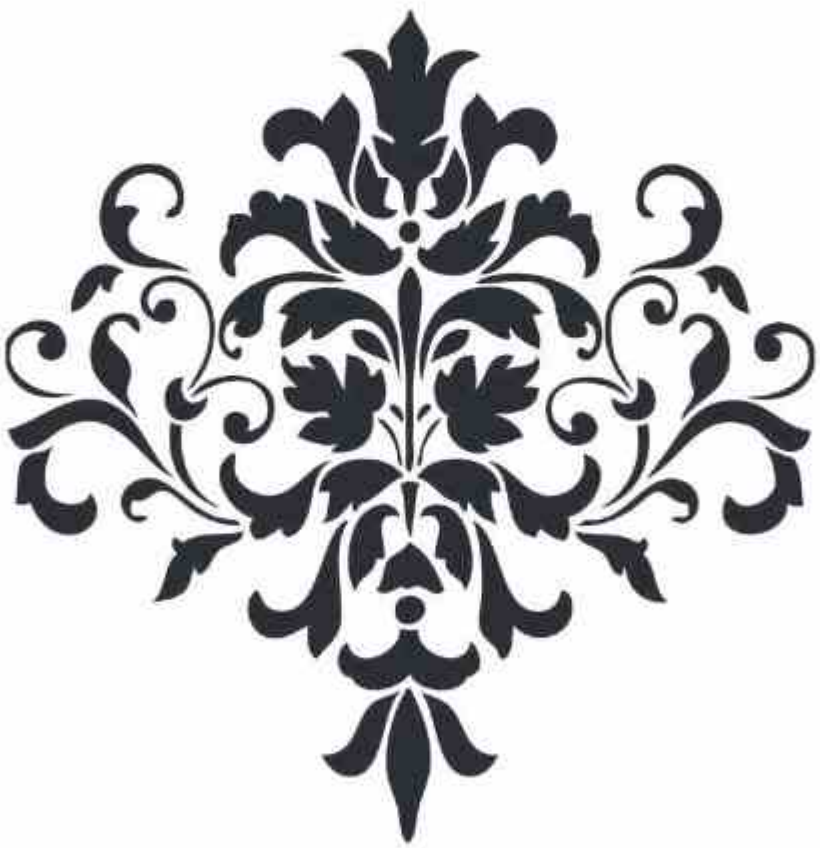

भ्रष्टाचार

रवीना शर्मा
एन०सी०सी

भ्रष्टाचार बन गया है देश का अब फैशन।
प्यार से चल रहा ऑफिस हो या स्टेशन।।
ऑफिस हो या स्टेशन, रेट सब जगह है फिक्स।
ईमानदारी से लेते रिश्वत फिर काहे का रिस्क।।
फिर काहे का रिस्क corruption के खेल में।
रिश् वत ही बचा लेती जाने से जेल में।।

विचार

शिवानी रानी
छात्रा

ना भूले अपने शहीदों को,
ना भूले अपनी गरिमा को।
जिन्दा रखे अपने दिल में,
उनकी दी गई मिसालों को।।

❁ ✪ ❁

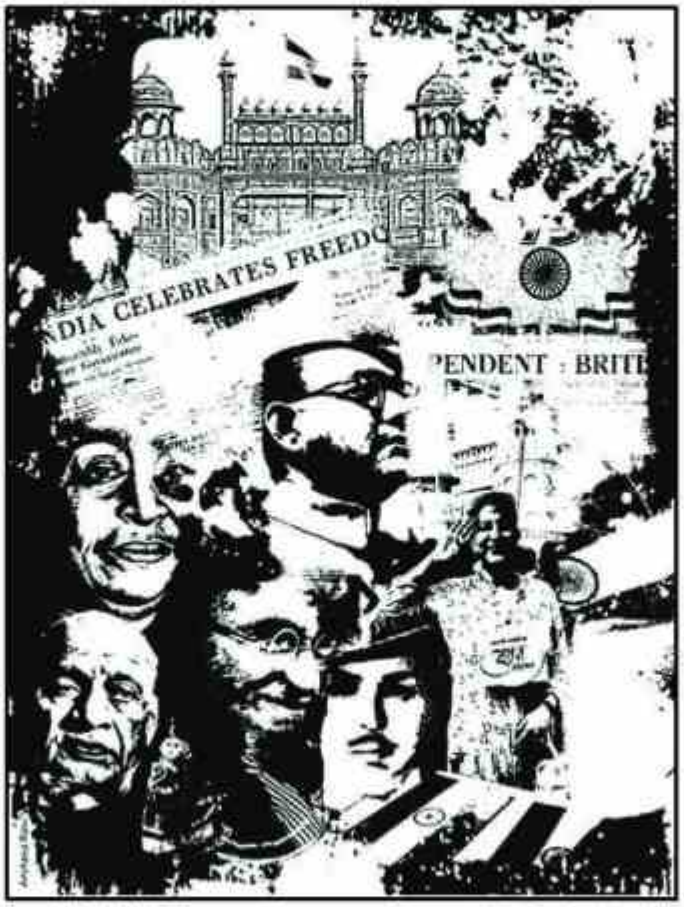

कविता

प्राची
छात्रा

आजादी की कभी शाम ना होने देंगे,
शहीदों की कुर्बानी
बदनाम ना होने देंगे।।
बची हो जब तक एक भी
बूँद लहु की रगों में,
तब तक भारत माता का
आँचल नीलाम न होने देंगे.....
वन्दे मातरम्
भारत माता की जय

❁✪❁

75वाँ आजादी का अमृत महोत्सव

शिवानी
छात्रा

भाग्यशाली हैं वो
जिन्होंने लिया है इस
पवित्र धरती पर जन्म।

अनेकता में एकता की
मिसाल कायम करते यहाँ
विरासत, संस्कृति और धर्म।

भारत को आजाद कराने का
सपना जिन आखों में देखा था
उनके आगे अंग्रेजों ने
अपना माथा टेका था।

है कैसा नशा इस मिट्टी का
हर वीर यहीं करना चाहे
हर बार यहाँ जीना चाहे
हर बार यहाँ मरना चाहे।

❁✪❁

भगत सिंह

काजल पाल
छात्रा

शुरू हुआ सन् 57 में
आजादी का नया फसाना था
1907 में जन्म लिया एक बालक ने
जिसे आगे चलकर शहीद-ए-आजम कहलाना था।
भगत सिंह था नाम उसका मुख सूरज से भी
प्यारा था। तेल झलकता था मुखमंडल पर भारत माँ
का राजदुलारा था।
जब से बसन्ती चोला ओढा
देश-प्रेम ही सहारा था,
अरे दिलो-दिमाग पर रहता सदा ही
इंकलाब का नारा था।
लहू उतरा था आँखों में और खून का हर
कतरा ही खोला था, जब जलियाँवाला बाग में
जनरल डायर फायर फायर बोला था।

❁ ✪ ❁

देश भक्ति की कविता

निधि पाल
छात्रा

आजादी की कभी शाम
होने देंगे,
शहीदों की कुर्बानी
बदनाम ना होने देंगे,
बची हो जब तक एक भी
बूँद लहू की रगो में,
तब तक भारत माता का
आँचल नीलाम न
होने देंगे।....
वन्दे मातरम्

❁ ✪ ❁

देश भक्ति कविता

रीतू वर्मा
छात्रा

वीर तुम बढ़े चलो
धीर तुम बढ़े चलो
हाथ में ध्वजा रहे
बाल-दाल सजा रहे
ध्वज कभी झुके नहीं
दल कभी रुके नहीं
वीर तुम बढ़े चलो
धीर तुम बढ़े चलो
सामने पहाड़ हो
सिंह का दहाड़ हो।।

❄ ✪ ❄

सत्यमेव जयते

देश प्रेम

शिवानी यादव
छात्रा

जो भरा नहीं है भावों से
बहती जिसमें रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं है पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

❁ ✪ ❁

'आजादी का अमृत महोत्सव' पर कविता

निक्की राठी
छात्रा

यह महोत्सव है देश के लिए,
त्याग और बलिदान का।
यह महोत्सव है मातृभूमि के,
गौरव और स्वाभिमान का।
भारत भूमि की स्वर्ण पताका,
आओ, हम सब मिलकर लहराएँ।
शहीदों की पुण्य स्मृति में,
आओ, हम सब मिलकर दीप जलाएँ।
भारत के सब जन मिलकर,
देश-प्रेम की अलख जगाएँ।
आओ, हम सब मिलकर,
आजादी का अमृत महोत्सव मनाएँ।।

❁ ✪ ❁

मेरे पिताजी को पत्र
(जो भारतीय सेना में सेवा करते है)

काजल
रघुनाथ गर्ल्स (पी०जी०) कॉलेज, मेरठ

प्यारे पापा,

मैं आपको न केवल आपकी बेटी के रूप में लिखती हूँ, बल्कि आपके सुपरफैन के रूप में भी लिखती हूं क्योंकि आप मेरे जीवन का गढ रहे हैं।

मैं आपको इसलिए लिख रही हूँ क्योंकि वर्षों तक आप से बिना शर्त प्यार और अविभाजित ध्यान प्राप्त करने के बाद, मुझे कभी यह व्यक्त करने का मौका नहीं मिला कि मैं अपनी तरफ से इस तरह के एक अद्भुत पिता के लिए कितनी आभारी हूँ।

मैं चाहती हूँ कि आप यह जान लें कि आप जो कुछ भी करते हैं उस पर मुझको बहुत गर्व है। मैं समझती हूं कि कैसे सिर्फ हमारी खुशी के लिए आपको अपने जीवन में मुश्किल फैसले लेने पड़े। मैं आपको न केवल अपनी बेटी की देखभाल करने के लिए प्यार करती हूँ बल्कि भारत में हर बालिका के लिए मजबूती से खडा हूं बिना किसी डर या संकट के उबड़-खाबड इलाकों में देश की सेवा करने के लिए मैं आपका सम्मान करती हूँ। पापा मुझको 'आपकी सोच पर गर्व है की आप लडकी लडके को समान मानते हो।

धन्यवाद पिताजी,

मुझे मजबूत और बहादुर बनना सिखाने के लिए। आपकी आधिकारिक पोस्टिंग ने आपको अपने परिवार से दूर रहने की माँग की। मैं हर अलविदा पर आपकी भावनाओं को महसूस कर सकती थी।

आपने मुझको सिखाया कि कैसे बहादुरी से लडना है और कभी उम्मीद नहीं छोडनी है। पापा मैंने आपसे बहुत कुछ सीखा है। आपने मुझको एहसास दिलाया कि कुछ भी अंसभव नहीं होता है।

आपने हमेशा मुझ पर विश्वास किया था, चाहे मैंने परीक्षा में कितना भी स्कोर किया हो। पापा आपको मेरी काबिलियत पर भरोसा था न कि मेरी मार्कशीट पर। मुझको वह दिन स्पष्ट रूप से याद है पापा, जब आप मेरे पास आए और कहा कि आप मुझ पर विश्वास करते हैं। मुझ पर विश्वास है कि मै जीवन मे कुछ करूँगी। पापा, मैं वादा करती हूँ कि एक दिन मैं आपको गौरवन्वित करूँगी।

मुझको पता है कि आप कितनी मेहनत करते हैं। ताकि आप हमारी माँगो को पूरा कर पाए।

जो चीजे मैं अपने जीवन में चाहती थी या जो मैंने माँगा था, वह मेरे लिए सिर्फ एक क्लिक दूर थी, केवल आपकी वजह से पापा जी!

आपने न केवल हमारी बल्कि हमारे विस्तारित परिवार का भी ध्यान रखा है। न केवल मैं, बल्कि मेरी चाची और चाचा भी आपको समर्थन के लिए आभारी हैं। कोई व्यक्ति इतना शुद्ध और सुनहरा कैसे हो सकता है। पापा जैसा कोई नहीं हो सकता और न कभी होगा।

मुझको आशा है कि जैसे-जैसे मैं बडी होती जा रही हूँ, आप इस बात पर गर्व महसूस करते हैं कि आपके पालन-पोषण ने मुझको क्या हासिल किया है, इस बात पर गर्व है कि मैंने आपको प्यार और समर्थन से क्या हासिल किया है। पापा!

सब कुछ के लिए धन्यवाद, पिताजी।

प्यार,

आपकी बेटी।

सपने उनके सच होते हैं
जिनके सपनों में जान होती है,
पँखों से कुछ नहीं होता
हौसलों में उडान होती है।

(ये लाइन अक्सर मेरे पापा जी मुझे कहते है, जिससे मेरे अंदर आगे बढने का हौसला बढे)

❄ ✪ ❄

कविता

डोली
छात्रा

आजादी के साल हुए कई,
पर क्या हमने पाया है,
सोचा था क्या होगा लेकिन,
सामने पर क्या आया है,
रामराज्य–सा देश हो अपना
बापू का था सपना,
चाचा बोले आगे बढ कर
कर लो सब को अपना
आजादी फिर छीने न अपनी
दिया शास्त्री ने नारा।

❁ ✪ ❁

कविता

राखी
छात्रा

काश मेरी जिंदगी में
सरहद की कोई शाम आए
मेरी जिंदगी मेरे वतन के
काम आए
ना खौफ हो मौत का
ना आरजू है जन्नत की
लेकिन जब कभी जीक्र हो
शहीदों का
काश! मेरा भी नाम आए
काश! मेरा भी नाम आए

❁ ✪ ❁

कविता

निशा सिंह
छात्रा

बुझा है। जिस आंगन का चिराग
उस घर की दीवारें भी रोयी होंगी
खोया है जिन माँओ ने लाला अपना
न जाने वो माँयें कैसे सोयी होंगी।

कतरा-कतरा बहे खून का अब
आखिर हिसाब देगा कौन
क्यों न भड़के मेरे सीने में भी आग
आखिर कब तक कोई रहेगा मौन

छलनी किया जिन दहशतगर्दों ने सीना
अब उन्हें उनकी औकात दिखानी होगी
भूलना नहीं कर्ज ये देश जवानों का
बातें ये उनके घर में घुस
कर सिखानी होगी।

❁ ✪ ❁

एन०सी०सी०

पायल यादव
एल/सीपीएल (छात्रा)

जिसका संकल्प ही एकता है,
जिसकी अनुशासन से शुरूआत है,
उस एन०सी०सी० की ही,
हम एक नन्हीं सी सौगात हैं!

जिसकी वर्दी में ही शान है,
जिसके कार्यों पर हमें अभियान है,
उस एन०सी०सी० से ही,
हमारा मान-सम्मान है!

जिसमें अग्नि की उष्णता है,
जिसमें जल की शीतलता
उस एन०सी०सी० ने ही,
सिखाया जागरूकता और वीरता है।

जिसमें सहायता का पाठ है,
जिसमें धैर्यता की परीक्षा है,
उस एन०सी०सी० के लिए ही,
साहसी बनने की इच्छा है!

❄ ✪ ❄

हर घर तिरंगा

सिमरण
सीनियर रेंजर

हर घर तिरंगा
हर मन तिरंगा
शान तिरंगा, मान तिरंगा
धर्म तिरंगा, मान तिरंगा
हर घर तिरंगा
हर मन तिरंगा
तीनों रंगों में रंगा तिरंगा,
यही मेरी पहचान तिरंगा,
हर घर तिरंगा
हर मन तिरंगा
हर बार नीला आँसमा मुस्कुराया है,
जब-जब तिरंगा लहराया है
हर घर तिरंगा
हर मन तिरंगा
लिपटकर बदन कई तिरंगे में आते हैं,
यूँ ही नहीं दोस्तों हम आजादी मनाते हैं
हर घर तिरंगा
हर मन तिरंगा।

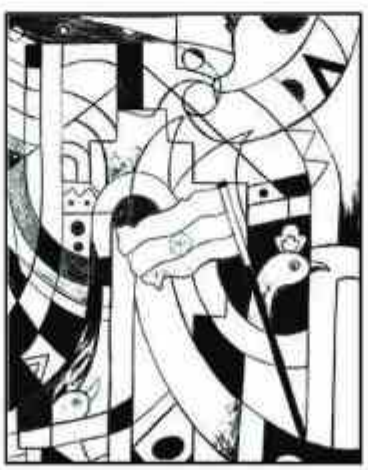

इतनी काबिल बनो तुम

अनुपमा शर्मा
बी०एड० द्वितीय वर्ष

इतनी काबिल बनो तुम
जो चाहिये तुम्हें वो पा लो तुम।
ख्वाहिशें तो बहुत हैं तुम्हारी
उन्हें जीने के लिये बस मेहनत करो तुम।
यूँ तो कदम बहुत बार डगमगायेंगे तुम्हारे
पर उन ख्वाहिशों को हकीकत बनाने फिर से उठ चलो तुम।
किसी और पर अपनी उम्मीदें मत थोपना
जो उम्मीदें करनी हो तो खुद से रोज करो तुम।
जिंदगी कदम-कदम पर बहुत-से इम्तिहान लेगी
कभी तुम्हें जिताएगी कभी जीत वापस छीन लेगी
पर उस हार से कमजोर ना पडना तुम।
ये जो रातें हैं तुम्हारी बडी मेहनत से सींची हैं तुमने पर धीरज रखना;
एक सुबह मेहनत का सुकून भी पाओगी तुम।
ये तकलीफों के जो अंधेरे हैं
इनसे नफरत ना करना
क्योंकि इनकी बदौलत ही प्रकाश का पुंज बनोगी तुम।

❁ ✪ ❁

हमने कितने मंजर देखे

अनुपमा शर्मा
बी०एड० द्वितीय वर्ष

उम्र के कितने पडाव देखे
खुशी भी देखी गम भी देखे।
बचपन के कितने रंग देखे
तितलियों के संग देखे।
बेफिक्र सा आसमान देखा
कई मासूम से ख्वाब भी देखे।
बचपन की विदाई देखी
जवानी के मौसम भी देखे।
आँखों में चमक भी देखी
कितने चेहरे मायूस भी देखे।
कामयाबी के फलक भी देखे
नाकामी के सिफर भी देखे।
उम्मीदें लगाती निगाहें देखी
घूरते हुये शख्स भी देखे।
बेकारी के उसे दौर में खुद की हालत बेबस देखी
जिंदगी के इस सफर में खुद्दारी के सपने देखे।
उम्र के कितने पडाव देखे
खुशी भी देखी गम भी देखे।

❁ ✪ ❁

क्योंकि मैं औरत हूँ समर्पण कर लेती हूँ

अनुपमा शर्मा
बी०एड० द्वितीय वर्ष

बिन कहे ही सब कुछ समझ लेती हूँ
आँखों से तेरी मैं तेरे गम पढ़ लेती हूँ
तकलीफ तुझे हो तो दिल रोता है मेरा
भूखा तू होता है जब इक निवाला नहीं खाती हूँ
क्योंकि मैं माँ हूँ सब सहन कर लेती हूँ।

गलतियाँ तू हजार करता है, पर मैं हँस के छुपा लेती हूँ
पापा की डाँट से तुझे बचाकर सुकून पा लेती हूँ
तू वो प्यारी-सी जिद करके हर बात मनवा लेता है
क्योंकि मैं बहन हूँ इसलिये मान लेती हूँ।

हँसता है तू जब, नजरे चुरा के तुझे देख लेती हूँ
तेरे प्यारे से ख्वाब अपनी आँखों में बसा लेती हूँ
तेरी हरेक खुशी में शामिल होकर अपने गम भूल जाती हूँ
क्योंकि मैं पत्नी हूँ समझौता कर लेती हूँ।

बहती हुयी हवा से तेरे बारे में पूछ लेती हूँ
तेरी हमसफर बनने के लिये रोज दुआएँ करती हूँ
गर खुदा ना बख्से मेरी दुआओं को, कोई शिकवा नहीं
क्योंकि मैं दिलरूबा हूँ बलिदान कर सकती हूँ।

नजर भर देख लूँ जिसको उसे अपना बना लेती हूँ
कभी माँ, कभी बहन, कभी पत्नी बनकर रस्में निभा लेती हूँ
कभी हँस कर तो कभी रोकर अपनी ख्वाहिशें दबा लेती हूँ
क्योंकि मैं औरत हूँ समर्पण कर लेती हूँ।

❁ ✪ ❁

पानी

युशरा
एम०ए० द्वितीय वर्ष (इकोनोमिक्स)

पानी, पानी, पानी, पानी
जीवन का आधार है पानी

गर्मी से राहत दिलवाता
हर प्राणी की प्यास बुझाता
अकुलाहट को दूर भगाता
सबको निर्मल स्वच्छ बनाता।

पानी, पानी, पानी, पानी
धरती का श्रृंगार है पानी

बादल बन अमृत बरसाता
बन झरना यह सबको भाता
नदियाँ बन यह कल कल गाता
सीप का यह मोती बन जाता

पानी, पानी, पानी, पानी
सबका पालनहार है पानी।

पेड़ों को हरियाली देता
जीवों को नवजीवन
धरती को खुशहाली देता
करता सबको पावन।

पानी, पानी, पानी, पानी
नहीं है कोई इसका सानी

पानी की कीमत पहचानो
सीमित है पानी ये तुम जानो
पर्यावरण को अपना मानो
अपने दायित्वों को जानो।।

वरना एक दिन आएगा
जब पानी न बच पाएगा
धरती का हर प्राणी
पानी पानी चिल्लाएगा।

समझौता (एक स्त्री के जीवन का)

प्रेरणा
बी०एड० (प्रथम)

बेटी बनकर,
माँ-पिता की इज्जत के लिए समझौता।
बहन बनकर,
भाई के प्यार के लिए समझौता।
छात्र बनकर,
पढ़ाई के लिए समझौता।
शादी करकर,
कुल की आन के लिए समझौता।
बहु बनकर,
ससुराल की शान के लिए समझौता।
पत्नी बनकर,
हमसफर के साथ के लिए समझौता।
माँ बनकर,
औलाद की खुशियों के लिए समझौता।
स्त्री समझौता करती है,
परिवार की खुशियों के लिए
वो समझौता करती है.....
हमेशा करती रहेगी .....
जब तक शरीर में प्राण है,
समझौता शायद स्त्री के लिए वरदान है।
परन्तु क्यों?

❁ ✪ ❁

''उस एक दिशा''

श्वेता सिंह
बी०एड० (प्रथम वर्ष)

महसूस तो कर अपने अन्दर का तूफान
क्यों है, चुप क्यों है परेशान
आँखों को बंद कर, क्यों रोता है, आवाम
जब होसला बुलंद है, तो भरो उड़ान,

हाँ मालूम है, रास्ता है, काँटों से भरा
अँधेरा ही अँधेरा है,
चारों दिशा,
तू रुक मत, तू डर मत बस चलता
जा उस एक दिशा

माना की मंजिल है, दूर बहुत
लेकिन तू आग है
खुद की पहचान तो कर
जब सांई तेरे साथ, मोला तेरे साथ
तू रुक मत, तू डर मत बस चलता
जा उस एक दिशा

मंजिल मिलेगी जरूर, थोड़ा
भरोसा तो कर
जब सांई तेरे साथ, मोला तेरे साथ
तू रुक मत, तू डर मत बस चलता
जा उस एक दिशा।

❁ ✪ ❁

संस्कृत विभाग

वैदिकराष्ट्रगीतम्

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्

आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम्

द्रोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः

पुरंध्रियोषा जिष्णू रथेष्ठाः

सभेयो युवा अस्य यजमानस्य वीरो जायतां

निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु

फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्ताम्

योगक्षेमो नः कल्पताम् ।।

राष्ट्राभिवर्धनमन्त्रः

शुक्लयजुर्वेदे 22.22

सम्पादकीयः

स्वातन्त्र्यात् सुखमाप्नोति स्वातन्त्र्याल्लभते परम्।
स्वातन्त्र्यान्निर्वृतिं गच्छेत् स्वातन्त्र्यात् परमं पदम्।

(अष्टावक्रगीतायां18/50)

अस्मिन् वर्षे स्वातन्त्र्यप्राप्तेः पञ्चसप्ततिवर्षाणि पूर्णानि अभवन्। हीरकजयन्तीवर्षमिदम् स्वातन्त्र्यस्य अमृतपर्वस्य उत्सवोऽयम् अत एव अमृतमहोत्सवविशेषाङ्कोऽयं नारीसशक्तीकरणस्यविशेषाङ्कश्च सौरभस्य।

सम्पूर्णभारतवर्षे अद्भुतोत्साहो विद्यते। गेहे गेहे त्रिवर्णम्' गृहे गृहे त्रिवर्णध्वज' इति उद्घोषेण सह स्वतन्त्रे भारते सर्वत्र त्रिवर्णचक्रयुतो नो ध्वजा राजते। अस्य ध्वजस्य सम्मानरक्षणे स्वान्त्र्यसंघर्षे येषां योगदानमासीत् तेषां सर्वेषां स्मरणकालोऽयम्।

बलिदानिक्रान्तिकारिणां स्मृतिकालोऽयम्। तेभ्यः श्रद्धासुमनसमर्पणकालोऽयम्। स्वातन्त्र्यप्राप्त्यै दीर्घकालीनसंघर्षे स्वकीयैस्त्यागैः परिश्रमैः प्राणाहुतिभिः यैः वीरैः अस्मत्कृते इयं स्वतन्त्रता अर्जिता, यैः वीरैः सुखवैभवविलासपरिवाराः सर्वाः त्यक्ताः, यैः वीरैः हसन्नैव स्वप्राणाः दत्ताः तान् प्रति कृतज्ञताज्ञापनकालोऽयम्। तेषां साहसगाथायाः, तेषां वीरगाथायाः, तेषां त्यागगाथायाः, तेषां राष्ट्रभक्तिगाथायाः प्रकाशनकालोऽयम्। तेषाम् आदर्शस्थापनकालोऽयम्। तेषां बलिदानगाथा बालवर्गस्य युवावर्गस्य समक्षं आनेतव्या।। तेषां चरितं चरित्रञ्च अस्माभिः सर्वैः स्मरणीयं चयनीयं पालनीयं पोषणीयञ्च। न केवलं पुरुषैरेवास्मै भारतवर्षाय स्वप्रणान् दत्त्वा गौरवं वर्धापितम् अपितु दुर्गाबाईलक्ष्मीबाईप्रभृतयो वीरतानिधेयो नार्यः अराजन्। एतासां बहुमूल्ययोगदानैरासां नामानि सदैव स्वर्णाङ्कितानि भविष्यन्ति भारतवर्षस्येतिहासे।

अस्मिन् स्वातन्त्र्योत्सवावसरे स्वकीयम् उद्देश्यं सङ्कल्पे कर्त्तव्यञ्च स्मरन् अन्यान् स्मारयन् च पुनः तान् निर्वोढ सर्वे प्रतिबद्धाः सक्रियाः कृतसङ्कल्पाश्च भवेयुः। अमृतमहोत्सव अस्मत्कृते श्रमेण परिश्रमेण सतत् परिश्रमेण च प्राप्तस्वातन्त्र्यस्य उत्सवोस्ति यस्मिन् अस्माभिः तत्सदृशं त्यागेन परिश्रमेण च स्वाधीनयुगनिर्मितिव्यवस्थां कृत्वा भारतं परमं समृद्धं कुर्यात्। भारतस्य विश्वगुरुपदगौरवं पुनः स्थापनाय अस्मिन् मार्गे सानन्दैः सुसङ्गठनैः दृढनिश्चयैः सह सतत अग्रे चरेत्।आगच्छेत सर्वे मिलित्वा अमृतमहोत्सवे नारी–सशक्तीकरणे च प्रतिभागिनो भवेम।

एतद्देशप्रसूतस्य सककाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् प्रथिव्यां सर्वमानवाः'' (मनुस्मृतौ 2.20)

अथ च

वयं राष्ट्रे जागृयाम

(यजुर्वेदे 9.23)

पूनम लखनपाल

ईशप्रार्थना राष्ट्राय

स्वीटी
बी० ए० तृतीय वर्ष

परेश! तस्मान्मयि धेहि वीर्यं
वीर्याश्रयस्त्वं प्रथितोऽसि वेदे।
वेदैकचक्षुर्नहि वेत्सि किं वा
विपद्दशा भारतबान्धवानाम्।।

देवेश! विश्वेश्वर! दीनताया
अन्तं विधातुं कृतनिश्चयोऽहम्।
तवानुभावैकवशंवदोऽयं
जनः कृतार्थो भवितेति जाने।।

पाषाणखण्डास्तु तरन्ति सिन्धौ
तवानुकम्पाकलिता यदा वै।
तवैव भूत्वा न तरामि राम।
तदा विपद्वारिधिमेष किन्नु।।

सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं
देवाः स्तुवन्ति स्तुतिभिर्भवन्तम्।
सत्यव्रतः सत्यपरस्त्रिसत्यो
यथा भविष्यामि तथा विधेहि।।

श्रीगान्धिचरितम्
श्री ब्रह्मानन्दशुक्लः

❋ ✪ ❋

पूर्णविजयं संकल्पोऽस्माकम्
गीतम्

मोनिका
एम०ए० प्रथमवर्ष

पूर्णविजयसंकल्पोऽस्माकं सततपरिश्रमशीलवताम्।
आयुगमविरतमनुवर्तत इह राष्ट्रधर्मसमुपासनम्।
वन्दे मातृभुवं वन्दे।।
वन्दे जगदम्बां वन्दे।।

पुण्यपुरातनदेशोऽस्माकं मानवतार्चनशक्तिमताम्।
प्रवहति पावनसंस्कृतिगङ्गा किल्विषजातमपादधति।
सकलविश्वमङ्गलसंरचने जुहोति सर्वोऽप्यात्मानम्।।
आयुगमविरतमनु.....।।

परमो मन्त्रः समरसता न शक्तिसम्भृतं राष्ट्रमिदम्
पूर्वजगौरव गाथाऽस्माकं मार्गदर्शिका प्रेरिका।
भविष्यपथमुज्ज्वलमाधातुं शक्तिं सञ्चिनुमो नियतम्।।
आयुगमविरतमनु.....।।

मातृभूमिराराध्ये या नो गतिरस्माकं सैव परा,
ईशकार्यमिदमेवास्माकं जीवितैक संकल्पनम्
सज्जनिर्मितकार्यर्थेऽस्मिन् ननु यमो वयमनवरतम्।।
आयुगमविरतमनु.....।।

''भारतस्तवः''

शिखा त्यागी
शोधच्छात्रा
संस्कृतविभागे

गङ्गाभङ्गामलकललसन्तुङ्गतारङ्गरङ्गं
कालिन्दीश्रीसरससरयूनर्मदावीचिसङ्गम्।
गोदाकृष्णाऽमरवरनदीब्रह्मपुत्रप्रसङ्गं
नन्तासि त्वां नमितनयनो भारतं भारतं तत्।।1।।

गौरीजन्माम्बुनिधिमथनाऽगस्त्यनम्रोच्चकूटैः
सह्याद्रीन्द्राध्युषितहरिभिश्चित्रकूटाम्रकूटैः।
नानागोत्रैर्गदितगरिमस्वर्गसोपानभूतं
मन्तासि त्वं मननमधुरं भारतं भारतं तत्।।2।।

प्रातः सूर्यः किरणकुसुमैर्यस्य सौभाग्यमर्चन्
गाथागातुं सुवतिसुवयो वन्दिनो वन्द्यवन्द्यम्।
वर्षाधीशं वसु वसुमतीभागधेयं वसूनां
गन्तासि त्वं गमनकमनं भारतं भारतं तत्।।3।।

यस्मिन् सन्तस्तपनतपसासक्तमस्तोममारान्
मर्यादार्या विमदमनसो नाशयन्तो लसन्ति।
पुण्यारण्यं विबुधवयसां सर्वदैकं शरण्यं
भ्रान्तासि त्वं भ्रमणशमनं भारतं भारतं तत्।।4।।

यस्मिन्नित्यं प्रकृतिवनिता बद्धसर्वर्तुसख्या
श्रीमत्सख्या विहरति हरिद्रत्नमत्नसख्या।
रामारामं पिककपिशुकोद्गीतरामाभिरामं
गातासि त्वं श्रुतिकलगिरा भारतं भारतं तत्।।5।।

यस्मिन् हिन्दुर्हिमहिमहिमो हीनभावं दुनोति
स्वाहाजुष्टं विकलतनुभृत्सत्यसेवैकयज्ञम्।
शस्यश्यामं विरतिकलितं त्यागसंस्कारभूमिं
ज्ञातासि त्वं भरतसुहितं भारतं भारतं तत् ।।6।।

यस्मिन्वेदो विलसति विभुः सर्ववर्णाश्रमाद्यो
धर्मो धत्ते यदिह भगवान्मामकीनावतारैः।
यस्मिन् बालाः कलहरिरदा विश्वबन्धुत्वघोषं
स्पृष्टासि त्वं भरतसहितं भारतं भारतं तत् ।।7।।

यस्मिन्सत्यो दयितनिरता यत्र पत्नीव्रतो ना
यस्मिन्भ्राता तृणयति सुखं शासकः सत्यनिष्ठः।
त्यागं विश्वे वितरति सहा संस्कृतिर्वै यदीया
द्रष्टासि त्वं भरतमहितं भारतं भारतं तत्।।8।।

समुद्धृतं जगद्गुरुरामभद्राचार्यकृतभृंगदूतात्

❄ ✪ ❄

भारतमहिमागानम्

तानिया आर्य
बी०ए० तृतीयवर्षे

भाति मे भारतम्, भाति मे भारतम्।
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम्।।

विश्वबन्धुत्वमुद्घोषयत्पावनं
विश्ववन्द्यैश्चरित्रैर्जगत्पावयत्।
विश्वमेकं कुटुम्बं समालोकयद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम्।।

विश्वनाथं महाकालमाराधयद्
एकलिङ्गं भजद् वेङ्कटेशं स्मरत्।
कालिकां पूजयद् वैष्णवीं च स्तुवद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम्।।

शम्भ्रदं शङ्करं माधवं राघवं
पार्वतीं राधिकां जानकीं च स्तुवत्।
विट्ठलं बुद्धदेवं जिनं च स्मरद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम्।।

अर्थकामान्वितं धर्ममोक्षान्वितं
भक्तिभावान्वितं ज्ञानकर्मान्वितम्।
नैकमार्गैः प्रभुं चैकमाराधयद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम्।।

संस्कृतं प्राकृतं तामिलं तेलुगुं
कन्नडं कैरलीं बाङ्गलामाङ्गलाम्।
वाचमन्यां च तां तां ब्रुवद् वर्धते
राष्ट्रभाषायुतं मामकं भारतम्।।

व्यासवाल्मीकिरत्नाकरैरुज्ज्वलं
स्वादुकादम्बरीपानलुब्धं सदा।
कालिदासेन भासेन संद्योतितं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम्।।

योगवासिष्ठगीता महाभारतै-
र्ग्रन्थरत्नैश्च तैस्तैः प्रबुद्धं तथा।
मानसं बीजकं सूरसिन्धुं दधद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम्।।

होलिका-दशहरा-पर्वकोजागरी
पोङ्गल-श्रावणी-दीपमालायाम्।
लोहडीदौणमाद्युत्सवैः पूरितं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम्।।

मन्दिरैर्मस्जिदैश्चैत्य-गिर्जागृहै-
रार्यगेहैर्गुरुद्वारकैर्भ्राजितम्।
कर्मभूः शर्मभूर्धर्मभूर्मर्मभूः
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम्।।

भाति मे भारतम्

डॉ० रमाकान्तशुक्लः

❄ ✪ ❄

प्रहेलिकाः

रीना
एम०ए० प्रथमवर्षे

1. व्यासविरचिता गणेशलिखिता
महाभारते पुण्यकथा।
कौरवपाण्डवसङ्गरमथिता
नैव क्लिष्टा न च कठिना।।

2. निर्वाता द्विमुखी दीर्घा लघुभारा सुवाहिका।
पात्रस्पर्शं विना पेयं पाययामि सुसेविका।।

3. एकाकी द्वारि तिष्ठामि गृहपतौ बहिर्गते।
गृहरक्षाकरः शूरो लघुमूर्तिः सुकीर्तिमान्।।

4. अस्थि नास्ति शिरो नास्ति बाहुरस्ति निरङ्गुलिः।
नास्ति पाददृयं गाढम् अङ्गम् आलिङ्गति स्वयम्।।

5. अयं न भक्तो न च पूजको वा, घण्टा स्वयं नादयते तथापि।
धनं जनेभ्यः किल याचते यो, याचको वा न च निर्धनो वा।।

6. एकचक्षुर्न काकोऽयं बिलमिच्छन्न पन्नगः।
क्षीयते वर्धते चैव न समुद्रो न चन्द्रमाः।।

7. नान्नं फलं वा खादामि न पिबामि जलं किञ्चित्।
चलामि दिवसे रात्रौ समयं बोधयामि च।।

8. नन्दामि मेघान् गगनेऽवलोक्य नृत्यामि गायामि भवामि तुष्टः।
नाहं कृषिज्ञः पथिकोऽपि नाहं वदन्तु विज्ञा मम नामधेयम्।।

9. स्नेहं ददाति यो मह्यं नित्यं तस्मै ददाम्यहम्।
ज्योतिः पदार्थज्ञानार्थं कोऽपि वदतु साम्प्रतम्।।

10. अन्त्येन वर्णेन विना भवोऽहं वनं च पूर्वेण विनैव तेन।
वर्णैस्त्रिभिः भूषितभाव्यकायः वदन्तु कोऽहं शरणं जनानाम्।।

(संकलिताः)

1. श्रीमद्भगवद्गीता, 2. पेयनलिका (Straw), 3. तालाकम् (Lock), 4. यूतकम् (कुर्ता), 5. लोकयानचालकः, 6. सूचिका तन्तुश्च 7. घटी, 8. मयूरः, 9. दीपकः, 10. भवनम्

एहि एहि वीर रे

आरजू
बी० ए० प्रथम वर्ष

एहि एहि वीर रे, वीरतां विधेहि रे!
पदं पदं निधेहि रे, पदं पदं निधेहि रे।।
भारतस्य रक्षणाय, जीवनं प्रदेहि रे।। एहि एहि वीर रे....।

त्वं हि मार्गदर्शकः, त्वं हि देशरक्षकः
त्वं हि शत्रुनाशकः, कालनागतक्षकः।।
भारतस्य रक्षणाय, जीवनं प्रदेहि रे।। एहि एहि वीर रे....।

साहसी सदा भवेः, वीरतां सदा भजेः।
भारतीयसंस्कृतिं, मानसे सदा धरेः।।
भारतस्य रक्षणाय, जीवनं प्रदेहि रे।। एहि एहि वीर रे....।

पदं पदं मिलच्चलेत्, सोत्सहं मनो भवेत्।
भारतस्य गौरवाय, सर्वदा जयो भवेत्।।
भारतस्य रक्षणाय, जीवनं प्रदेहि रे।। एहि एहि वीर रे....।

एहि एहि वीर रे, वीरतां विधेहि रे।
पदं पदं निधेहि रे, पदं पदं निधेहि रे।।
भारतस्य रक्षणाय, जीवनं प्रदेहि रे।। एहि एहि वीर रे....।

❄ ✪ ❄

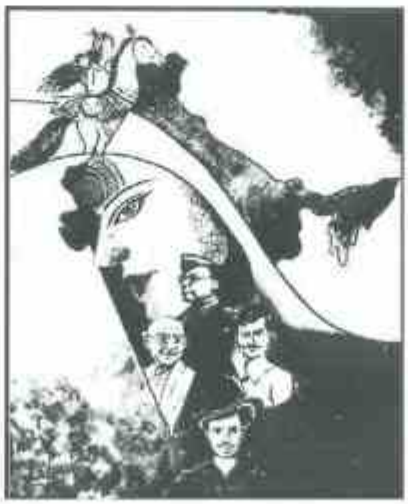

संस्कृतगीतम्

अंजलि गौतम
एम०ए० प्रथमवर्ष

सरलभाषा संस्कृतं सरसभाषा संस्कृतम्।
सरससरलमनोज्ञमङ्गल देवभाषा संस्कृतम्।।

मधुरभाषा संस्कृतं मृदुलभाषा संस्कृतम्।
मृदुलमधुरमनोहरामृततुल्यभाषा संस्कृतम्।।

देवभाषा संस्कृतं वेदभाषा संस्कृतम्।
भेदभावविनाशकं खलु, दिव्यभाषा संस्कृतम्।।

अमृतभाषा संस्कृतं, अतुलभाषा संस्कृतम्।
सुकृतिजनहृदि परिलसितशुभवरदभाषा संस्कृतम्।।

भुवनभाषा संस्कृतं, भवनभाषा संस्कृतम्।
भरत भुवि परिलसितकाव्यमनोज्ञभाषा संस्कृतम्।।

शस्त्रभाषा संस्कृतं, शास्त्रभाषा संस्कृतम्।
शस्त्रशास्त्रभृदार्षभारतराष्ट्रभाषा संस्कृतम्।।

धर्मभाषा संस्कृतं, कर्मभाषा संस्कृतम्।
धर्मकर्मप्रचोदकं खलु, विश्वभाषा संस्कृतम्।।

सौरभ

सुरसा सुबोधा विश्वमनोज्ञा
ललिता हृद्या रमणीया

उमंग
एम०ए० प्रथमवर्षे

सुरसा सुबोधा विश्वमनोज्ञा
ललिता हृद्या रमणीया
अमृतवाणी संस्कृतभाषा
नैव क्लिष्टा न च कठिना।।
नैव क्लिष्टा न च कठिना.....

कविकोकिला वाल्मीकिविरचिता
रामायण-रमणीय-कथा
अतीवसरला मधुरमञ्जुला
नैव क्लिष्टा न च कठिना।।
नैव क्लिष्टा न च कठिना.....
सुरसा सुबोधा विश्वमनोज्ञा
ललिता हृद्या रमणीया

व्यासविरचिता गणेशलिखिता
महाभारते पुण्यकथा
कौरव-पाण्डव-सङ्गर–मथिता
नैव क्लिष्टा न च कठिना।।
नैव क्लिष्टा न च कठिना.....
सरसा सुबोधा विश्वमनोज्ञा
ललिता हृद्या रमणीया

कुरुक्षेत्रसमराङ्गणगीता
विश्ववन्दिता भगवद्गीता
अमृतमधुरा कर्मदीपिका
नैव क्लिष्टा न च कठिना।।
नैव क्लिष्टा न च कठिना.....
सुरसा सुबोधा विश्वमनोज्ञा
ललिता हृद्या रमणीया

कविकुलगुरु नवरसोन्मेषजा
ऋतु रघु कुमार कविता
विक्रम-शाकुन्तल-मालविका
नैव क्लिष्टा न च कठिना।।
नैव क्लिष्टा न च कठिना.....

सुरसा सुबोधा विश्वमनोज्ञा
ललिता हृद्या रमणीया
अमृतवाणी संस्कृतभाषा
नैव क्लिष्टा न च कठिना।।
नैव क्लिष्टा न च कठिना.....

❁ ✪ ❁

मम देशो भारतम्

तनु
एम०ए० प्रथमवर्ष

मम देशो भारतं मम भाषा संस्कृतम्।
जन्मभूमिरस्माकं भारतं भारतम्।।

जननीयं वाङ्मस्य संस्कृतं संस्कृतम्।
अनाद्यनन्त-विश्वविहित-शौर्य-धैर्य-कीर्तिसहित-
भारतीयाः वयं भारतीयाः वयं भारतीयाः वयम्।।

पुण्यभूमिरस्माकं भारतं भारतम्।
करणेन सर्वधर्म संस्कृता संस्कृता।
हिन्दु-खीस्त-सिख-मुस्लिम-जातिमतविभागरहित-
भारतीयाः वयं, भारतीयाः वयं, भारतीयाः वयम्।।

वेदभूमिरस्माकं भारतं भारतम् ।
सर्वजनसमैक्यभावबन्धुं भारतम्
सत्यधर्मस्नेहशान्तिविश्वबन्धुभावसहित-
भारतीयाः वयं, भारतीयाः वयं, भारतीयाः वयम् ।।

❁ ✪ ❁

स्वातन्त्र्यदिवसः

दिव्या
बी०ए० तृतीयवर्षे

स्वातन्त्र्यदिवसः भारतस्य राष्ट्रीयपर्व अस्ति। प्रतिवर्षम् अगस्तमासस्य 15 दिनाङ्के आचर्यते। 1947 तमे वर्षे अगस्तमासस्य 15 दिनाङ्के अस्माकं देशः भारतं आङ्ग्लानां दासत्वात् मुक्तः अभवत्। भारतं स्वतन्त्रं कर्तुं बहवः स्वतन्त्रतासेनानीः योगदानं दत्तवन्तः।

अस्मिन् दिने सर्वे बलिदानदायकाः स्मर्यन्ते। देशस्य प्रधानमन्त्री राजधानी दिल्लीनगरस्थे लालकिला इति दुर्गे ध्वजारोहणं करोति।

तदनन्तरं राष्ट्रगीतं गीयते। प्रधानमन्त्री समग्रदेशं सम्बोधयति। भारतस्य विद्यालयेषु, महाविद्यालयेषु, सर्वासु संस्थासु च सांस्कृतिककार्यक्रमाः आयोजिताः भवन्ति।

अस्मिन् दिने पूर्ण अवकाशो भवति। अयं दिवसः इतिहासे सुवर्णाक्षरैः अंकितः अस्ति। सर्वत्र भारतमातुः जयस्य तुमुलध्वनिः श्रूयते। बालाः युवानः वृद्धाश्च सर्वे प्रसन्नाः दृश्यन्ते। प्रधानमन्त्री सर्वकारस्य कार्याणां योजनाः प्रकटयन् सर्वेभ्यः शुभाशयं यच्छति।

अस्मिन् वर्षे भारतस्य स्वातन्त्र्यस्य पञ्चसप्ततिवर्षाणि पूर्णानि अभवन् अतएव सर्वेभ्यः शुभकामना। यथा भवन्तः सर्वे एव जानन्ति यत् अस्माकं देशः भारतं बहुसंग्रामं संघर्षञ्च कृत्वा 1947 तमस्य वर्षस्य अगस्तमासस्य 15 दिनाङ्के स्वतन्त्रः अभवत्। अस्मिन् वर्षे भारतं स्वातन्त्र्यस्य 75 वर्षाणि पूर्णं करोति अत एव भारतं स्वातन्त्र्यस्य अमृतमहोत्सवं आचरति। अस्य उत्सवस्य आरम्भः माननीयप्रधानमन्त्रिणा 2021 तमस्य वर्षस्य मार्चमासस्य 12 दिनाङ्के कृतः। अयं उत्सवः 2023 तमस्य वर्षस्य अगस्तमासस्य 15 दिनाङ्कपर्यन्तं आचर्यते।

अस्मिन् काले विविधाः कार्यक्रमाः आयोजिताः भविष्यन्ति। अस्य उत्सवस्य प्रयोजनं स्वतन्त्रतासेनानीनां बलिदानानां विषये जनान् बोधयितुं वर्तते। शहीदभगतसिंहः, सुभाषचन्द्रबोसः, मंगलपाण्डेयः, वीरसावरकरः, लालालाजपतरायः, चन्द्रशेखरआजादः, इत्यादयः बहवः वीराः स्वप्रणानां बलिदानं कृतवन्तः।

अस्य उत्सवस्य माध्यमेन देशवासिनां हृदये देशभक्तिभावो वर्धते। अस्य उत्सवस्य माध्यमेन देशवासिनः भारतस्य स्वर्णम् इतिहासं ज्ञास्यन्ति। अस्य महोत्सवस्य भागत्वेन "हर घर तिरङ्गा" इति अभियानम् अपि प्रचलति। अस्मिन् उत्सवे वयं सर्वे देशवासिनः अवश्यमेव अस्माकं सहभागिता दातव्याः। अयं उत्सवः राष्ट्रियपर्व अस्ति। अयं उत्सवः स्वतन्त्रभारतस्य स्वप्नानां साकारयितुं अग्रे गन्तुं प्रेरणां दास्यति।

वन्दे मातरम्।

❁ ✪ ❁

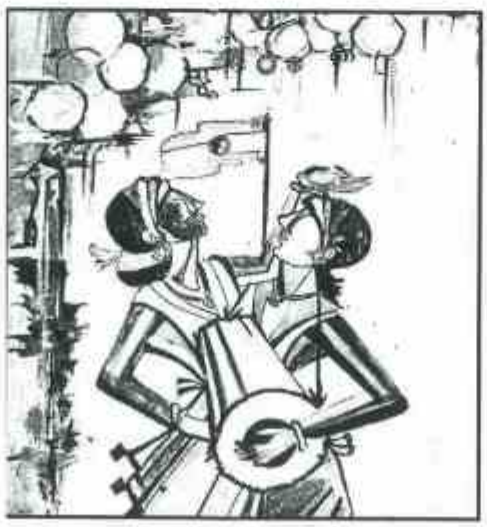

स्वराष्ट्रगौरवम्

अमृता शर्मा
एम०ए० प्रथमवर्षे

अस्माकं चिन्तने राष्ट्रस्य अवधारणा अतिप्राचीना विद्यते। वेदेष्वपि 'आ राष्ट्रे राजन्यः' (यजुर्वेदः), 'वयं राष्ट्रे जागृयाम' (यजुर्वेदः), 'अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम्' (ऋग्वेदः) इत्यादिषु बहुषु मन्त्रेषु राष्ट्रशब्दस्य प्रयोगेन एतत्स्पष्टमस्ति। अस्मदीया राष्ट्रसम्बन्धिनी अवधारणा अर्वाचीना, पश्चिमाच्चागता इति ये मन्यन्ते ते तु वस्तुतः भ्रान्तास्सन्ति।

अस्माकमिदं भारतवर्षमेकं चिरपुरातनं सनातन च राष्ट्रं वर्तते। किन्त्वत्र ऋषिभिः मुनिभिः कविभिः तत्त्वचिन्तकैश्च केवलं भौतिकं भौगोलिकं राजनैतिक च घटकमेव राष्ट्रमिति नैव मतम्। वयमिदं राष्ट्रदेवं मन्यामहे। एतद् वै भारतमस्माकं दृष्टौ न कश्चिद् मृत्पिण्डो वा भूखण्डो वा विद्यते अपितु मातृभूमिरस्ति यथा किलोक्तमथर्ववेदे-'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।' ऋग्वेदेऽपि कथितमस्ति-'पृथिवी माता द्यौर्मे पिता।'

मातृभूमिः, पितृभूमिः, पुण्यभूमिः, धर्मभूमिः, कर्मभूमिः, देवभूमिश्च - इत्येवं विविधैः रूपैरुपेतास्ति भुवनमनमोहिनी इयमस्माकं भारतमाता। राष्ट्रसम्बन्धिनः राष्ट्रियतासम्बन्धिनः, राष्ट्रगौरवसम्बन्धिनः, राष्ट्रभक्तिसम्बन्धिनश्च केचन् श्लोकाः अस्मिन् लेखे संकलिताः सन्ति।

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्षं तद्भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः ।।१।।

–विष्णुपुराणम्

हिमालयात् समारभ्य यावदिन्दुसरोवरम्।
तं देवनिर्मितं देशं हिन्दुस्थानं प्रचक्षते।।२।।

–बृहस्पत्यागमः

गायन्ति देवाः किल गीतकानि
धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते
भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्।।३।।

–विष्णुपुराणम्

❀ ✪ ❀

वसुन्धरा

मेघा त्यागी
बी०ए० प्रथमवर्षे

विश्वम्भरा वसुधानी प्रतिष्ठा
हिरण्यवक्षा जगतो निवेशनी।
वैश्वानरं बिभ्रती भूमिरग्नि–
मिन्द्र ऋषभा द्रविणे नो दधातु।।

वसुन्धरा अथवा पृथ्वी अस्माकं माता अस्ति। पृथ्वी अस्माकं सौरमण्डलस्य एकमात्रं ग्रहं अस्ति यत्र जीवनम् उपलभ्यते। अत्र जलं वायुः तेजः सूर्यस्यप्रकाशः शुद्धपर्यावरणञ्च प्राप्यते। अस्याः 75 प्रतिशतभागे जलं 25 प्रतिशतभागे भूमिश्च वर्तते। इयं मानवजीवनाय सर्वाणि आवश्यकवस्तूनि प्रददाति।

परं मानवाः अस्याः आदरं न कुर्वन्ति। ते निरन्तरं पृथिव्याः अमूल्यं हरितं धनं नाशयन्ति। जनाः व्यापारवर्धनाय वृक्षान् निर्विवेकं छिन्दन्ति। ते पशुपक्षिणामपि निर्विवेकेन हानिं कुर्वन्ति। स्वार्थान्धाः मानवाः एतन्मात्रमपि न ध्यायन्ति यत् पृथिव्याः हान्या तेषामेव हानिः भविष्यति। धरित्रीकोपैः ते रक्षिताः भवितुं न शक्नुवन्ति। अग्निभयैः भूकम्पैः जलप्लावनैः वात्याचक्रैः अवृष्टिभिश्च त्रस्तः मानवः स्वरक्षणाय वामनकल्पः एव अस्ति। एतान् प्रकृतिकोपान् अवरोढुं अस्माभिः मिलित्वा पृथिव्याः पर्यावरणरक्षणमेव करणीयं तथैव वृक्षारोपणं पशुपक्षिणाम् रक्षणमपि कर्त्तव्यः। अनेन रक्षिता धरित्री अस्मान् रक्षिष्यति।

❀ ✪ ❀

"सत्यमेव जयते"

आरजू
बी०ए० द्वितीयवर्षे

सत्येन धार्यते पृथिवी भानुः सत्येन दीप्यते।
सत्येन वाति वायुश्च सत्ये सर्वं प्रतिष्ठितम्।।

अस्मिन् संसारे नानाविधाः जनाः निवसन्ति। सर्वेषां जनानां जीवनपद्धतयः अपि विभिन्नाः दृश्यन्ते। केचिद् धर्माचारिणः केचित् च अधर्माचारिणः सन्ति। सर्वेषां मतौ सत्यस्य भावः न आगच्छति। केषाञ्चित् बुद्धिः सत्यकार्येषु प्रवृत्ता भवति केषाञ्चित् असत्यकार्येषु प्रवृत्ता दृश्यते। भगवतः व्यासस्य कथनस्यायमाशयः यत् येन कर्मणा जीवानां हितसाधनं सम्भवति तदैव सत्स्वरूपं भवति।

अस्माकं भारतीयसाहित्ये सत्यस्य महिमा पदे-पदे समुपलभ्यते। सत्यस्य कृते एव युधिष्ठिरः अन्यपाण्डवाः च नानाविधान् कष्टान् अलभन्। ते द्वादशवर्षपर्यन्तं वनवासे एव जीवनं व्यतीतं कृतवन्तः। रामायणे महाराजदशरथः स्वप्राणात् सत्यस्य रक्षायै अत्यजत्। भगवान् श्रीरामः सत्यरक्षार्थमेव राज्यं कुटुम्बञ्च त्यक्त्वा वनं गत्वा बहूनि कष्टानि अलभत्। सत्यवादिनः हरिश्चन्द्रस्य नाम सर्वे जनाः जानन्ति। सः स्वभार्यां पुत्रं च सत्यपरीक्षायाः साफल्याय अन्येभ्यः जनेभ्यः दत्तवान्। आधुनिके युगे अनेके महामानवाः सत्यसंरक्षणार्थमेव स्वजीवनानि अत्यजन्। अतः सद्गुणेषु येषां गुणानां गणना भवति तेषु सत्यस्य श्रेष्ठं स्थानम् अस्ति।

सत्यं यदि अप्रियं स्यात् तद् न वक्तव्यम्। परन्तु प्रियमसत्यं कदापि न वचनीयम्। अतः कथ्यते–

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।
प्रियञ्च नानृतं ब्रूयात् एष धर्म सनातनः।।

❁ ✪ ❁

पर्यावरणप्रदूषणम्

वंशिका
बी०ए० द्वितीयवर्षे

वर्तमानसमये पर्यावरणस्य प्रदूषणं मुख्यसमस्या वर्तते। रेलयानैः बसयानैः मोटरवाहनैः च पर्यावरणं प्रदूषितं भवति। 'परमाणु रेडियेशन' इति सर्वत्र वातावरणं वायुमण्डलं च दूषयति। अस्माकं देशे पर्यावरणप्रदूषणस्य निवारणार्थं सर्वकारेण प्रयासः क्रियते। अधुना पर्यावरणस्य समस्याः न केवलं भारतस्य अपितु समस्तविश्वस्य एव वर्तते। पर्यावरणरक्षणम् अति आवश्यकम् अस्ति।

प्रदूषणस्य अनेकानि कारणानि सन्ति। स्वार्थान्धः मानवः अद्य पर्यावरणं नाशयति। स्वाल्पलाभाय जनाः बहूमूल्यानि वस्तूनि नाशयन्ति। जनाः यन्त्रागाराणां विषाक्तं जलं नद्यां निपातयन्ति। तेन मत्स्यादीनां जलचराणां च क्षणेनैव नाशो भवति। मानवाः व्यापारवर्धनाय वनवृक्षान् निर्विवेकं छिन्दन्ति।

प्रकृतिरक्षया एव लोकरक्षा सम्भवति इति अत्र नास्ति संशयः।

❁ ✪ ❁

अवोचाम महते सौभगाय सत्यम् (पक्षे)

दिव्या
बी०ए० तृतीयवर्षे

चौधरीचरणसिंहविश्वविद्यालयस्य संस्कृतप्राच्यभाषाविभागे समायोजितेऽस्मिन् व्याससमारोहे तरङ्गगोष्ठ्यां संस्कृतवादविवाद-प्रतियोगितायां समुपस्थिताः सम्मान्याः अध्यक्षमहोदयाः मुख्यातिथिमहोदयाः सदसद्विवेकिनो निर्णायकाः दूरदेश स्थिताः विद्वद्वराः संस्कृतप्रेमिणः श्रोतारश्च! नमो नमः।

अद्य आयोज्यमानायाम् अस्याम् अन्तर्महाविद्यालययीयां संस्कृतवादविवादप्रतियोगितायाम् अहं विषयस्य पक्षमधिकृत्य स्वमतं प्रस्तौमि।

विषयोऽस्ति–**अवोचाम महते सौभगाय सत्यम्'**

ऋग्वेदे अष्टममण्डले नवपञ्चाशत्तमे सूक्ते पञ्चममन्त्रमिदमस्ति। इन्द्रावरुणौ अस्य देवौ सुपर्णकाण्वः ऋषिः विराडजगतिछन्दोऽस्ति। भावार्थः स्पष्टोऽस्ति। वयं महते सौभगाय सत्यम् अवोचाम। वयं सत्यं वदेम किमर्थं? सौभगाय। कीदृशं सौभगाय? महते सौभगाय। सत्यं जीवनस्य आधारो वर्तते। अत एव धर्मस्य दशलक्षणेषु सत्यस्य गणना भवति–

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।

धीः विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।।

योगशास्त्रे यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधिः इति अष्टाङ्गानि वर्णितानि। तत्र यमे सर्वप्रथमं सत्यमेव परिगणितम्।

ऋग्वेदः स्वयमेव कथयति- सत्येनोत्तमिता भूमिः अर्थात् भूमिः सत्येनैव प्रतिष्ठति। अथर्ववेदः कथयति सत्येनोर्ध्वस्तपति अर्थात् सत्येन एव मानवः शीर्षे सुशोभते।

शतपथब्राह्मणे लिखितम्- सत्यं वै चक्षुः। ईशावास्योपनिषदि प्राप्यते सत्यं वै श्रीर्ज्योतिः।

कस्मिन्नु दीक्षा प्रतिष्ठिता? सत्ये।

कस्मिन्नु सत्यं प्रतिष्ठितम्? हृदये "इति बृहदारण्यकोपनिषदि।

हृदयेन हि सत्यं जानाति हृदये ह्येव सत्यं प्रतिष्ठितं भवति। श्रुतिस्मृतिपुराणब्राह्मणारण्यकोपनिषत्सु रामायणमहाभारतलौकिकमहाकाव्येषु धर्मशास्त्रेषु नैतिकग्रन्थेषु यस्य महिमा यत्र तत्र सर्वत्र गीतः तस्य सत्यस्य महत्त्वं अवश्यमेव वर्त्तते।

सत्यं किं? यथातथ्यं सत्यम्। सौभगं कस्मात्? सु उपसर्गपूर्वकं भज् धातोः सुभगं पदं निष्पद्यते ततो अण् प्रत्यये सति सौभगमिति पदं निष्पद्यते। सुष्ठु भाग्यं, ऐश्वर्यं, सम्पन्नता, समृद्धिः, उत्कर्ष इत्यादय अस्य अर्थाः सन्ति।

महोदयाः! अस्मिन् जगति द्विविधाः जनाः सन्ति। प्रथमं प्रेयमार्गमाश्रित्य सुखसौभाग्यमाप्नुवन्ति। ते तु चार्वाकदर्शनानुयायिनः सन्ति। तेषां सिद्धान्तोऽस्ति यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्।

अन्ये श्रेयमार्गमाश्रित्य सत्यमनुचरन्ति। भवतु किमपि कष्टं सत्यमार्गान्न प्रविचलान्ति।

अस्माकम् इतिहासे अनेकानि उदाहरणानि सन्ति। इक्ष्वाकुवंशी सत्यनिष्ठः धर्मपरायणः राजा हरिश्चन्द्रः स्वसत्यवादितया एव अनेकवर्षोपरान्तमपि लब्धप्रतिष्ठः कीर्तिसम्पन्नः यशस्वी अस्ति। देहनाशे सत्यपि यशःकायेन जीवति। सत्यबलाद् एव सत्यकामः इतिहासे प्रसिद्धोऽभवत्। अनेकाः कथाः प्राप्यन्ते। युधिष्ठिरः बाल्यकालादेव सत्यं वदति, सत्यम् अनुपालयति। कथ्यते सत्यमहिम्ना तस्य रथः भूमेः द्विहस्ताद् उपरि चलति, किन्तु महाभारते युद्धक्षेत्रे यदा सः अर्धसत्यं वदति तर्हि तस्य रथः भूमिं स्पृशति। अयमेव सत्यस्य महिमा। सत्यमुक्त्वा हि उर्वश्या शप्तोऽपि अर्जुनः तेन शापेन अज्ञातवासे लाभान्वितोऽभवत्। सत्येनैव नचिकेता यमाद् गुढ़ज्ञानमाप्तुं समर्थोऽभवत्।

ईदृशानि अनेकानि प्रेरकप्रसङ्गानि सन्ति।

महोदयाः। धनसम्पत्तिः ऐश्वर्यमेव सौभगं न सन्ति अपितु उत्कर्षः, सम्मानं, आत्मसन्तोषः यशश्चापि सौभगं सन्ति। तेषां प्राप्तिः सत्येनैव भवितुं शक्यते। सर्वे गुणाः सत्यमनुसरन्ति। सत्यमेव सर्वस्य मूलम्–

सत्यं धर्मस्तपो योगः सत्यं ब्रह्म सनातनम्।

सत्यं यज्ञः परः प्रोक्तः सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्।।

सत्येन सूर्यस्तपति सत्येनाग्निः प्रदीप्यते।

सत्येन मरुतो वान्ति सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्।।

अतएव सत्यं हि परं बलम्। सत्येन मानसिकम् आत्मिकं च बलं प्राप्यते। आन्तरिकसुदृढ़ताआयाति। सत्यपालकः सत्कर्मी भवति। सत्कर्मात् सुखमाप्नोति। व्रतानां सत्यमुत्तमम्।' भवतु सत्यव्रतमति दुष्करं किन्तु यतः सत्यं ततो धर्मो यतो धर्मस्ततो धनम् ततः सुखम्।

प्रतिपक्षिणः कथयन्ति। सत्यवादिनां जीवने क्षणे क्षणे पगे पगे परीक्षा भवति। महोदयाः जीवन तु प्रतिक्षणं एका परीक्षा एव। परीक्षातः को भयः? परीक्षासु तप्त्वा एव मानवः काञ्चनमिव शुद्धः परिष्कृतश्च भवति। यः सत्यं वदति सः परिणामस्य चिन्तां न करोति। सत्यनिष्ठः कर्त्तव्यनिष्ठो भवति धर्मनिष्ठो भवति। भगवत्परायणो भवति। किमपि नाभिलषति। केवलं सत्यमनुचरति सत्यमनुपालयति, सत्यं स्वीकरोति। कोऽपि परिणामः स्यात् सः आत्मतुष्टिं प्राप्नोति। आत्मसम्मानमाप्नोति। आत्मबलं प्राप्नोति वस्तुतः अयमेव सौभगम्।

भवतु सत्यवादी एकाकी किन्तु निर्बलो न भवति। भवतु सत्यं दुष्करं किन्तु विफलं न भवति भवतु किमपि फलं किन्तु निष्फलं न भवति।सत्यं भौतिकधनं न ददाति किन्तु तुष्टिधनं ददाति। भवतु सत्येन शारीरिकदुःखं किन्तु मानसिकात्मिकं सुखं प्राप्यते। सत्यं सुदृढ़ नौका इव सत्यवक्तारं संसारसागरात् तारयति यथोक्तं ऋग्वेदे–'सत्यस्य नावः सुकृतमपीपरन्।'

ऋग्वेदस्य वचनोऽस्ति सत्यात् ऐश्वर्यं वर्धते। यदि सत्येन सह प्रियवचनम संयुक्तं स्यात् तर्हि सूनृतो भवति अतः ऋग्वेद उपदिशति प्रणीतिस्तु सूनृता असत्यं क्षणिकलाभं ददाति किन्तु अन्ते दुःखदं हानिप्रदञ्च भवति।

न हि सत्यात् परो धर्मो न पापमनृतात् परम्।

तस्मात् सर्वात्मना मर्त्यः सत्यमेकं समाश्रयेत्।।

अतएव ऋग्वैदिक प्रार्थना सर्वथोचिता–

अवोचाम महते सौभाग्य सत्यम्

❁ ✪ ❁

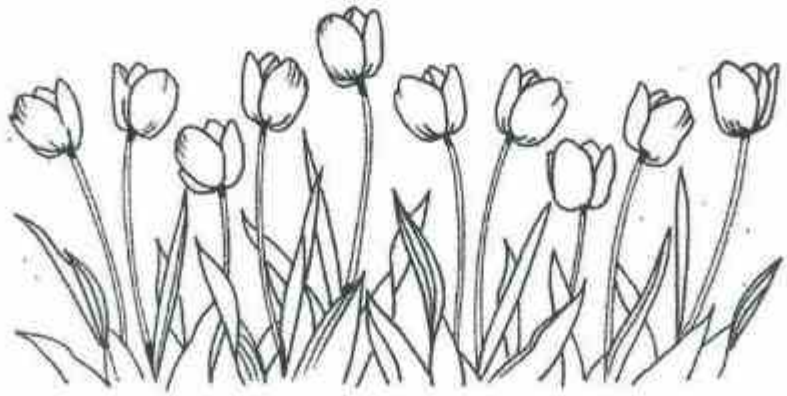

अवोचाम महते सौभगाय सत्यम् (विपक्षे)

कीर्ति मिश्रा
बी०ए० तृतीयवर्षे

चौधरीचरणसिंहविश्वविद्यालयस्य संस्कृतप्राच्यभाषाविभागे समायोजितेऽस्मिन् व्याससमारोहे तरङ्गगोष्ठ्यां संस्कृतवादविवाद-प्रतियोगितायां समुपस्थिताः सम्मान्याः अध्यक्षमहोदयाः मुख्यातिथिमहोदयाः सदसद्विवेकिनो निर्णायकाः दूरदेश स्थिताः विद्वद्वराः संस्कृतप्रेमिणः श्रोतारश्च! नमो नमः।

अद्य आयोज्यमानायाम् अस्याम् अन्तर्महाविद्यालयीयां संस्कृत वादविवादप्रतियोगितायाम् अहं विणयस्य विपक्षमधिकृत्य स्वमतं प्रस्तौमि–

विषयोऽस्ति–'अवोचाम महते सौभगाय सत्यम्'

अर्थात् वयं महते सौभगाय सत्यं वदामः वदेम वा

महोदयाः!

सर्वे कथयन्ति सत्यं चक्षुः, सत्यं बलं, सत्यं धर्मः, सत्यं मूलं, सत्यं ब्रह्म, सत्यमिदं, सत्यमिदं सत्यमिदं। सत्यं सर्वम्। वेदपुराणोपनिषद् रामायणमहाभारतेषु, धर्मशास्त्रेषु, नैतिकग्रन्थेषु सर्वत्रैव सत्यस्य महिमा प्रख्यातः। मम प्रतिपक्षिभिरपि सत्यस्य महत्त्वं प्रतिपादितं, किन्तु महोदयाः इदं तु केवलं पुस्तकीयवार्त्ता। यथार्थं तु किञ्चिद् अन्य एव। भौतिकधरातले व्यवहारे सत्यं न सहायकम्।

सुभगं किम्? सौभाग्यं किम्? सु उपसर्गपूर्वकं भज्धातोः सुभगं निष्पद्यते ततो अण् प्रत्यये सति सौभग पदं निष्पद्यते, ष्यञ् प्रत्यये सति सौभाग्यं पदं निष्पद्यते अर्थात् शोभनं भाग्यं, धनसम्पत्तिः समृद्धिः आदि। अवोचाम महते सौभगाय सत्यम्' अस्मिन् विषये सत्येन महत्सौभाग्यस्य वार्त्तां कुर्वन्ति? सत्येन तु सामान्यजीवनयापनमपि न सम्भवमस्ति। अत्र सत्यं न चलति। सर्तयं तु अतीव कटु अस्ति। अस्य पालनं तु विषममसिधाव्रतमिव अस्ति।

अहं पृच्छामि महोदयाः! सत्यवादी कस्य प्रियो भवति? न कस्यापि। यः सत्यं वदति सः कस्यापि प्रियो न भवति। सर्वे जनाः प्रियं श्रोतुमिच्छन्ति भवतु तद् असत्यमेव।

सत्योपासकः राजाहरिश्चन्द्रस्य कथा सर्वैरपि श्रुता। सः स्वप्ने सर्वस्वमपि ददाति। जागृतावस्थायाम् ऋषिः विश्वामित्रः तस्य स्वप्नस्य वृत्तान्तं श्रावयति। राजा हरिश्चन्द्रः सत्यं स्वीकृत्य सर्वं परित्यज्य गच्छति। इक्ष्वाकुवंशस्य महाप्रतापीराजाहरिश्चन्द्रस्य, तस्य पत्न्याः, तस्य पुत्रस्य का दशा भवति सर्वं जानन्ति। किं फलमिदं सत्यस्य? किमिदं सौभाग्यम्?

कः स्वीकरोति सत्यम्? विभीषणः रावणं सत्यं निर्दिशति, किन्तु किं रावणेन सत्यं स्वीकृतम्? न हि, अपितु तेन अपमानं कृत्वा विभीषणः राज्याद् बहिर्निष्कासितः। अयमेव सत्यकथनस्य परिणामः। एकलव्यः सत्यं वदति यत् तेन द्रोणाचार्यस्य प्रतिमां गुरुं मत्वा धनुर्विद्या प्राप्ता। किम् अभवत्? धनुर्विज्ञः श्रेष्ठधनुर्धर अंगुष्ठविहीनोऽभवत्। अयमेव सत्यस्य परिणामः। सत्यसेविना महात्मना गान्धिना किं प्राप्तम्? गुलिका?

महोदयाः! सुखदुःखात्मकमिदं जगत्। सर्वे जनाः सुखसौभाग्यं वाञ्छन्ति किन्तु सत्यसंभाषणेन सुखं न भवति सौभाग्यं कथं भवितुमर्हति।

सत्यवादी तु सत्यसंभाषणे, सत्याचरणे च प्रयत्नशीलो भवति, आत्मानं च साधयति, किन्तु संसारे दुःखमाप्नोति। असत्यवादिनः असत्यमाध्यमेन भोगविलासान् प्राप्य लौकिकसुखान् भुञ्जन्ति आनन्दमनुभवन्ति इदं सर्वं दृष्ट्वा सत्यवादिनोऽपि विचलितो भवन्ति, निराशो भवन्ति, सत्ये निरुत्साही भवन्ति।

अधुना तु यः असत्यं वदति सः सौभाग्यवान् भवति। धनमानयशांसि च प्राप्नोति। सत्यवक्तारस्तु कस्मिन् अन्धगर्ते दुःखपूर्वकं जीवनयापनं कुर्वन्ति। ते न जानन्ति किं सुखमिति, किं सौभाग्यमिति।

वर्तमानसमाजे धनमावश्यकमस्ति। सर्वे जनाः येनकेन प्रकारेण धनमाप्तुमिच्छन्ति। धनस्य प्राप्तिः सत्येन न भवति। किमपि उत्पादनं

विक्रेतुं सत्यं न चलति। महोदयाः। यानि उत्पादविज्ञापनानि सन्ति सर्वाणि सत्याश्रितानि न सन्ति। अर्थव्यापारस्तु असत्यं विना नैव चलति।

वर्तमानकाले येऽपि नेतारः अभिनेतारः शासकाः प्रशासकाः भूमौ ईशतुल्याः चिकित्सकाः , पोलिसकर्मचारिणः, किञ्च धर्मचारिणः सर्वे जनाः

सत्यविरुद्धमार्गमनुसरन्ति। असत्यमाश्रिताः सन् सुखैश्वर्यशालिने भवन्ति। अधिवक्तारस्तु असत्येनैव सुफलाः भवन्ति।

महोदयाः! सत्यं यदि यथातथ्यं, कः स्वीकरोति? अन्धः आत्मानं अन्ध इति श्रोतुमिच्छति? कदापि न। सत्यमपि आवरणमिच्छति।

कथ्यते- अन्ततो गत्वा सत्यमेव विजयते। कदा? अन्ते .....। किन्तु प्रारम्भे मध्ये किं असत्यम् एव।

अतएव महोदयाः! मम मते तु अस्मिन् कथने कश्चिदपि सारो न विद्यते किञ्चिदपि तथ्यं न विद्यते।

❁✪❁

वेदेषु राष्ट्रियमैक्यम्

डॉ० पूनम लखनपाल
एसोसिएट प्रोफेसर अध्यक्षा च संस्कृतविभागे

अस्माकं राष्ट्रियतायाः सृष्टेः आदिकालात् अधुनातनस्य गौरवगानं, सरस्वतीप्रवाहरूपिण्यः संस्कृतेश्चित्रं, जातीयेतिहासोऽस्माकं वैदिकसाहित्ये एव अङ्कितं वर्तते। अस्माकं पूर्वजानां आदर्शचरित्रं, अनुकरणीयाश्च मर्यादाः अस्मिन्नेव वाङ्मये सन्निहिताः सन्ति। वाङ्मयं संस्कृतिः मातृभूमिश्च तिस्रः एव देव्यः परं सुखकारिण्यः। राष्ट्रस्य जातेश्च सञ्जीवन्यः सन्ति। एताभिरेवानुप्राणिताः जातयः उन्नतेः शिखरमधिराजन्ते।[1]

अस्ति संस्कृतवाङ्मयं वेदप्रमुखं, मानवजीवनस्य विविधपक्षाः यत्र समाधानं सुमीमांसाञ्च अधिगच्छन्ति। सामाजिकार्थिक धार्मिकसांस्कृतिकसंविधानां यत्र मूल्यांकनं विभ्राजते। देशभक्त्याः स्वदेशप्रेम्णः गीतानि यत्र गुञ्जायमानानि सन्ति। मन्त्रद्रष्टारो यत्र निजास्मितां विविधतया चित्रीयन्ते। वयमपि तेषामेव परमात्मशक्ति-विचिन्वानानां गौरवं वहन्तः वंशजाः स्मः तेषामेव रक्तं अस्मदीयासु धमनीषु सजयं धावति। वयं विश्वसिमः यत् पुनः पुनः स्वपूर्वजान् स्मारं स्मारं एषामेव मार्गम् अङ्गीकुर्मः।

प्राचीनतमः ऋग्वेदः राष्ट्रस्य कल्पनायां सततं प्रवृत्तः प्राप्यते। ऋषयः यज्ञं विदधतः राष्ट्रप्राप्तिकामनया देवताभ्यः भावभरिताः आहुतयः प्रदित्सन्त आसन्। नास्ति सन्देहास्पदमिदं यदस्मिन् 'राष्ट्रप्राप्तियज्ञे' यजमानाः याज्ञिकाश्च स्वकीयनायकस्य संरक्षणे स्वेष्टदेवताः राष्ट्रशंसा कामयामासुः। मनोनीतस्य नायकस्य ललाटे राष्ट्रतिलकं स्थापयन्त अधिकारिणः राष्ट्रलाभं प्रार्थयामासुः।[2] राष्ट्रनायकाः स्थैर्येण दाढ्र्येन च राष्ट्रमवतुमपेक्ष्यन्ते स्म।[3] तात्कालिकाः राष्ट्रनायकाः राष्ट्रमेव स्वशरीरममन्यन्त तद्रक्षणाय भुजबलं प्रार्थयन्ते स्म।[4] ऋषयः राष्ट्रस्य विशालत्वमाकांक्षन्त प्रजासु च हर्षदायको राष्ट्रः स्तुत्य आसीत्।[5] राष्ट्रसमृद्ध्यै यज्ञे ईश्वरः सामूहिकरूपेण प्रार्थितो अभवत्।[6]

वेदेषु न केवलं राष्ट्रस्य परिकल्पना एवं वर्णिता अपितु तस्या आधार-भूतानि तत्त्वानि, उपयोगिता, महत्ता तां प्रति जनदायित्त्वानि कर्त्तव्यानि च समीचीनतया उपदिष्टानि सन्ति। वैदिक ऋषयः क्रान्तदर्शिनः आसन्, इदमपि जानन्ते स्म यत् कस्यापि राष्ट्रस्य अविच्छिन्नत्वं प्रगति च तावदेव संभवा यावत् तत्र वास्तव्येषु प्रगाढमैक्यं मूले विराजते। वेदेषु राष्ट्रनायकः 'पाञ्चजन्यः'[7] व्यवहृतः। तत्कालीने समाजे पञ्चविधजातयः ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्रनिशादाश्च आसन्। राष्ट्रनायकस्तु सर्वासामेव जातीनां हिताय प्रावर्तत।[8]

इदमपि आशास्यते यद्राष्ट्रनायकः पञ्चविधजनान् सम्प्राप्य तेषां राष्ट्रहितकार्यसमृद्धिषु सर्वान् संगठितान् विधाय प्रजाजनसमृद्धौ योगदानं कुर्यात्। न केवलं राष्ट्रनायक एव अपितु अन्येऽपि सुगण्याः मान्याः व्यक्तयः पाञ्चजन्यपदे समुद्धताः सन्ति स्म।[9]

वाक्सुमेधाज्ञानसामञ्जस्योपदेशेन ऋषयः पारस्परिकमैक्यं सुरक्षितुकामाः सन्ति।[10] स्वानुभूतेर्प्रकाशे ते ऐक्यसुखमवर्णयन्। तेषां मते कौलीन्यं, तेजस्विता, शक्तिसम्पन्नता च संगठनस्य प्रतीको वर्त्तते।[11] संगठनमेव ऋद्धेः सुरक्षायाः दृढं साधनमासीत्।[12]

राष्ट्रहितकार्याणाम् अवसरेषु निर्विवादं ते ऐक्यबन्धनम् उपदिदिशु।[13] सार्वजनीनस्य कार्यस्य सिद्धिरपि तदैव संभवा यदा राष्ट्रवासिनः पञ्चवर्गाः ऐक्यभावेन सानुकूलमाचरेयुः।[14] प्ररोहमाणो भेदभावः मूल एव शातनीयः।[15] सर्वे जना एकस्माद् विराट्पुरुषादेव अजायन्त इति विचारणीयाः।[16] वेदेषु देवाः प्रार्थ्यन्ते यत्ते सर्वजनहिताय सर्वान्तःसुखाय दिव्योपमाय विशालाय च कल्याणकारिणे राष्ट्राय योजनाममोघीकर्त्तुं प्रयन्तन्ताम्।[17] नागरिकाश्चापि आदिश्यन्ते यत्ते मनसि विचारे क्रियाकलापे वा न पारस्परिकं मतभेदं व्यवहरेयुः।

वैदिकर्षयः संगठनाय यज्ञं कुर्वाणा आसन् सलिलधारसम्मिश्रणं वातपुञ्जं पक्षीसमूहमपि उदाहृत्य ते जनान् संगठितुमाह्वयामासुः।[19] असन्देहमिदं यदस्य पृष्ठे राष्ट्रीयैक्यस्य सुदृढभावना एव सन्निहितासीत्।

साम्प्रतं राष्ट्रविकासाद्धेतोः शिक्षासम्पर्कदायित्वविचारविमार्शाधिकारोद्देश्यप्रभृति सामाजिकार्थिकराजनैतिकक्षेत्रेषु देशे समवर्गः समानभावेन विकासयितुं यत् कथ्यते तदेव वेदेषु उपदिष्टाः–

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।।
समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तेमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।[20]

वेदानुसारं राष्ट्रीयैक्ये भाषाधर्मयोः वैविध्यं नास्ति बाधकम्। राष्ट्रवासिनः सुविधानुसारमभ्यस्य कस्यामपि भाषायां वार्त्तालापं कुर्युः, कमपि धर्ममनुसरेयुः परं निजमातृभूमिं गृहमिव जानीयुः। परस्परं सम्भूय च तस्याः सुरक्षायां प्राणानपि नियोजयेयुः।[21] अधुना इदमेवास्माकं पुनीतं कर्त्तव्यं वर्त्तते यद् वयं भाषाविषयकं धर्मविषयकं वा भेदभावं विस्मृत्य समस्तराष्ट्रस्य कल्याणं ममत्वभावनया कुर्याम। एवं विकासस्य स्तरः बृहत्तरः सहस्रमुखो वा भवितुं योग्यो वर्त्तते।

राष्ट्रं देशः जन्मभूमिश्च मातृभावनया सर्वं सुसन्दानितं वर्त्तते। जन्मभूमौ मातृभावनायाः बीजमुप्त्वा राष्ट्रं प्रति रागात्मिकी आत्मीयता सुसम्पन्ना भवेत्।[22] सर्वे वयं प्रश्निमातरः एकस्या एव धरणीजनन्याङ्कात् समुद्भूता मातृभूमिविकासे सर्वरक्षाकार्येषु च सर्वात्मना तल्लीना एव भूत्वा वयं गौरवास्पदं भवितुं योग्याः स्मः।[23]

उपर्युक्तकथनेन इदं स्पष्टं भवति यद्राष्ट्रस्याभिप्रायः एका सुसंगठिता मानवजातिरेव वर्त्तते यया सत्यमेव विशिष्टसत्ता स्थापितैव। वेदेषु भारतस्य किं स्वरूपं वर्त्तते तन्नास्ति अत्रालोच्यः परं यापि राष्ट्रभावना वेदेषु जरीजागर्ति सा विशिष्टं निजाभिज्ञानं वहति। अस्माकं संस्कृतेमूलमधिष्ठीयमाना मातृभावना राष्ट्रीयैक्यस्य महत्त्वपूर्णमङ्गं निरूपयति। स्तुता मया वरदा वेदमाता, प्रचोदयन्ताम् पावमानी द्विजानाम् इति मन्त्रोच्चारणे आनन्दस्यामन्दावृष्टिः शुष्कं मानसधरातलं प्रस्नुते।

1. ऋ १/१३/९ यजुर्वेदे २७/१९, अथर्व ५/२७/९
2. यजुर्वेदे ९/४०, १०/१४ अथर्व० ६/५४ सू०
3. ऋ०१०/१७३ सू०
4. यजुर्वेदे २०/७-१०, १३
5. ऋ० ७/८४/२
6. यजुर्वेदे २२/२२ अथर्व ६/७८/२
7. ऋ० १/१००/१२, ५/३२/११
8. तत्रैव ७/१५/२
9. तत्रैव १/११७/३
10. तत्रैव १/१७/४, ३/४/८
11. तत्रैव ७/१/४ अथर्व० ३/२०/८
12. ऋ० ७/९/५, ७/४३/५
13. तत्रैव ७/७६/५
14. तत्रैव ८/६३/७
15. तत्रैव ७/८३/४
16. तत्रैव १०/९०/१२
17. तत्रैव ३/८/१
18. तत्रैव ३/८/५
19. तत्रैव १/१५/१-२, १/२०/१
20. ऋ० १०/१९१/२-४, अथर्व-६/६४/१-३
21. अथर्व १२/१/४५, १२/१/२
22. ऋ० १/८९/४, १/१६४/३३, १/१९१/६, ५/४२/१६, यजुर्वेदे २/१०, अथर्व. १२/१/१२, १२/१/६३, १२/१/१०
23. ऋ० ५/५९/६, ५/६०/५,८/७/१७

गौ महिमा

डॉ० उपासना सिंह,
असि० प्रोफेसर
संस्कृतविभागे

संसार में गौ, गंगा, गायत्री, तुलसी ये सर्वाधिक पवित्रतम चेतन तत्त्व माने गये हैं। गौ शब्द गाय, पृथ्वी, माता, वाणी, सरस्वती देवी, किरण, नक्षत्र, दिशा इत्यादि अनेक अर्थों वाला है।

प्राचीन काल में यज्ञ सर्वप्रधान कर्म होता था, जिसका आधारस्तम्भ गायें होती थीं। गव्यसामग्री (दुग्ध, दधी, घृत, गोमूत्र, गोमय आदि) ही यज्ञ में प्रधानतत्त्व होते हैं।

वेदों में गाय को 'मातृ' शब्द से अलंकृत किया गया है। अथर्ववेद में गाय के शुभाङ्गो में विभिन्न देवों का निवास स्थान बताया गया है। गाय को विश्वरूप एवं सर्वरूप कहा गया है–

एतद् वै विश्वरूपं सर्वरूपं गोरूपम्

गव्य भोज्य पदार्थों का सेवन कृश को भी बलिष्ट बनाता है, निस्तेज को तेजस्विता से युक्त कर देता है। जिस घर में गो निवास हो, गाय दुही जाय दूध इत्यादि का समुचित प्रयोग हो वह घर पवित्र देवतुल्य माना जाता है।

घृतस्य धारा मधुमत् पवन्ताम्

गाय सौभाग्यप्रदा है अथर्ववेद में इनके रहने, खाने-पीने, घूमने, स्वास्थ्य, प्रसव इत्यादि की समुचित व्यवस्था का उल्लेख है। निरोगी एवं स्वस्थ गायों की प्राप्ति हेतु विशेष प्रार्थनाएँ एवं अनुष्क्वान किए जाते थे, जिसमें श्रेष्ङ गायें प्राप्त हो तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति हो–

प्रजावतीः सूयवसे रुशन्तोः शुद्धा अपः सुप्रपाण पिबन्तीः

वेदों में विशेष रूप से अथर्ववेद में वर्णित लौकिक एवं अलौकिक गुणों की रत्नाकर पूजनीय इन गायों की वर्तमान स्थिति सर्वज्ञात है। देवसमादृत गायें सड़कों पर प्लास्टिकयुक्त कचरा खाने के लिए विवश हैं। स्वार्थ में अन्धा मनुष्य स्वार्थ सिद्ध हो जाने पर उन्हें रोगी बनाकर मरने के लिए छोड़ देता है। गोरक्षा के नाम पर बीते कुछ वर्षों में गोशालाओं का प्रचलन बढ़ा है वहाँ की वास्तविकता भी शत-प्रतिशत सत्य ज्ञात नहीं होती, कहीं गोभक्ति का पाखण्ड तो कहीं कुछ संतोषजनक स्थिति देखने को मिलती है।

गोशालाओं में गायें भोजन के अभाव में दम तोड़ती नजर आती हैं। गायें राजनीतिक चर्चा का विषय भी बनी रहती है कारण गोमांस। गोहत्या महापातकों में अग्रगण्य है। 'माँ' की पदवी से विभूषित गायें मीडिया में राजनीतिक दंगल का विषय बनी रहती हैं, क्या ये वही गायें हैं जो ईश्वर की वाणी वेदों में पूजनीया, सर्वपवित्रा मानी गयी हैं। गायों की ये वर्तमान स्थिति ही हमें निरन्तर महापतन की ओर ढकेल रही है। मनुष्य शरीर में अनगिनत व्याधियाँ, महामारियाँ इस बात का प्रमाण है कि हम पूज्य गौ माता के सरंक्षण एवं सुप्रयोग में असफल रहे। जब गायें ही रोगग्रस्त होकर सड़क पर घूमेंगी तो हम स्वस्थ कैसे रहेंगे। प्रदूषित और रासायनिक दूध पीकर हमारा शरीर एवं बुद्धि कैसी हो रही है, ये प्रत्यक्ष है।

हमारे देश को स्वतन्त्र हुए 75 साल हो गए हम आजादी का 'अमृतमहोत्सव' मना रहे हैं, ऐसे में राष्ट्र की गौरवगरिमा, पूज्या अमृतप्रदायिनी गायें सड़क पर कूड़ा-कचरा खा रही हैं। अतः हम सबका यह कर्त्तव्य बनता है कि हम एकल या समूह रूप में मिलकर इनके संरक्षण एवं संवर्द्धन का प्रयास करें।

जय हिन्द-जय भारत-जय गौ माता

संस्कृत व्याकरण कविता

निशा
बी० ए० प्रथमवर्ष

तीन वचन हैं तीन पुरुष हैं।
तीनों के नियम भी तीन।
दस लकार और छः कारक
आठों में लिङ्ग भी तीन।
एक अकेला एकवचन है।
द्विवचन में दो को गिन।
बहुवचन में आते सारे
सभी पुरुषों में वचन भी तीन
सः, तौ, ते प्रथम पुरुष कहलाते।
त्वं, युवां, यूयं मध्यम हैं
अहं, आवां, वयं उत्तम जाने जाते।
धातु हैं अनेक यहाँ पर,
क्रिया भी अनेक
वाच्य तीन बन जाते हैं।
पठ् से पढ़ते, लिख् से लिखते
पिब् से हम पीते हैं।
गुण, वृद्धि, यण, दीर्घ, अयादि
सन्धि से पदरूप बदलते हैं।

ENGLISH SECTION

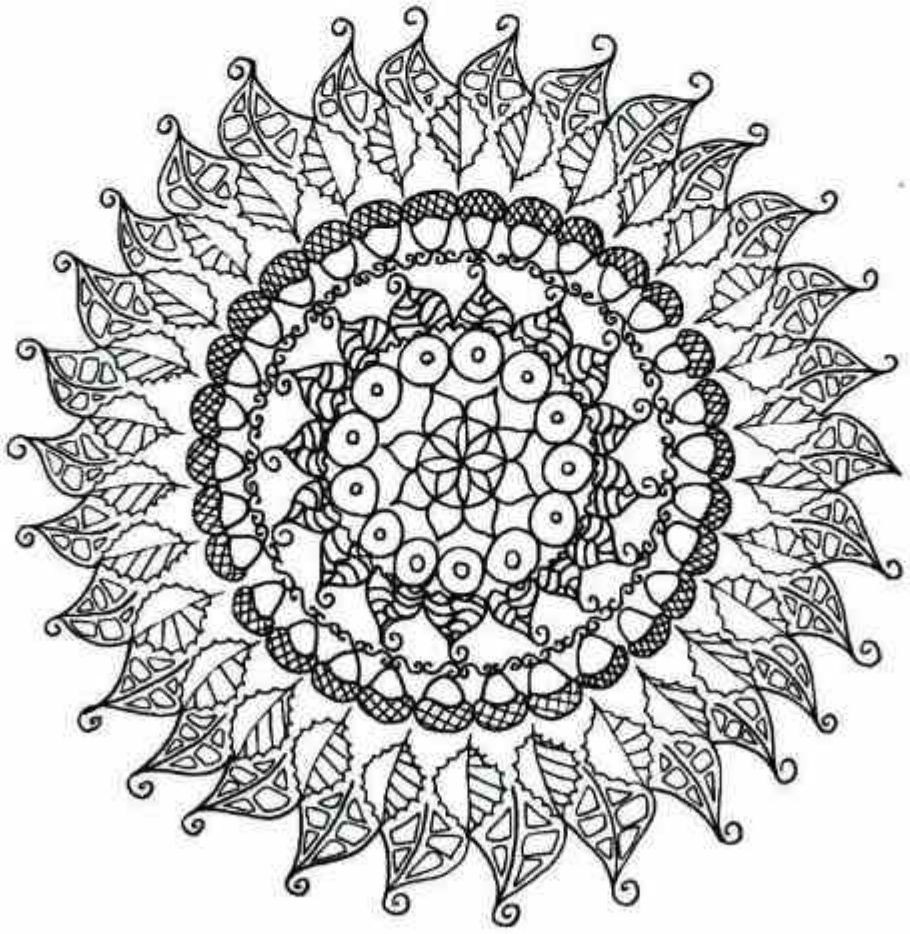

EDITOR'S NOTE

The college magazine is a reflection of culture, education, knowledge, experiences and thought process of the students and members of the staff. Their aims and ambitions, their joys and sorrows, views regarding humanity, various issues in the society, their simmering emotions and the ensuing creativity finds expression through articles, poems, short stories, pearls of wisdom, etc. This platform emboldens them to show case their literary sensibilities and abilities.

We are delighted to bring forth this issue of SAURABH when the nation is celebrating 75 years of independence. We join the whole nation in paying homage to the well known and the unknown warriors who fought whole-heartedly and sacrificed themselves for a free 'Bharat' In this seventy fifth year of independence women are marching along with their counterparts towards an era of. empowerment and competence in various spheres of life through education, knowledge and moral values. A shining beacon of women's empowerment is the Honourable President of India, Smt. Droupadi Murmu a great source of great inspiration to many.

My sincere thanks to our dynamic Principal Professor Nivedita kumari for her initiative to bring forth this issue of SAURABH commemorating seventy five years of independence. Her unstinted support and constant encouragement motivated us to give our best and get the magazine published in record time.

I am grateful to my collegues and the students who very enthusiastically and promptly contributed their articles and poems thereby ensuring that the Magazine be published expeditiously.

I am confident that with the continued support and cooperation of the staff members and students our college magazine Saurabh will attain greater heights, inspiring and motivating many others.

Parul Singh

(Dr. Parul Singh)

Associate Professor

Head, Dept. of English

Editor English Section

PLEDGE

DR. PARUL SINGH
Associate Professor
Head, Dept. of English

In the seventy fifth year of Independence

Let us all pledge together,

Let us all unite,

Forget caste or creed,

Our jealousies and fears.

Let us all contribute our bit,

Engender the spirit of patriotism.

Foster the feelings of humanism,

Of brotherhood, shattering the chasms created

By religious fanaticism, unnecessary anger,

By political vendatta and difference of opinion.

Let love, peace, brotherhood,

Respect for women prevail.

Let us march forward aided by technological advancement

By scientic fervour

Ethical and moral values galore,

To build a better, brighter and shining 'Bharat'.

❁ ✪ ❁

WOMEN'S EMPOWERMENT THROUGH EDUCATION

Dr. Anu Rastogi
Assoc. Prof. & Head Dept. of Sociology
R.G.(P.G.) College, Meerut

Constitution of India provides equal rights for men and women. Women are striving to achieve equality socially, economically. educationally, politically and legally. However, they continue to face discrimination and marginalization, both subtle and blatant and do not share the fruits of development equally. Education especially among women is cornerstone for social development to improve the prospects of general welfare of society. Education would empower women to achieve many social, psychological, economic and political dreams which are denied to her customarily. Education would actually accord women certain advantages in areas where they have traditionally lacked access or differential rights. Welfare schemes and policy measures are just not enough to promote education among women. Structural and attitudinal change across sections is desired in order to enhance educational and consequent socio-economic status of women in India. Empowerment of women and their educational and economic status are inextricably linked with each other.

In Ancient India some scholars have believed that, the women enjoyed equal status with men in all fields of life. However, some others hold contrasting views. Works by ancient Indian grammarians such as Patanjali and Katyayana suggest that women were educated and enjoyed equal status and rights during the early Vedic period. In Vedic times equal opportunities were offered to men and women, boys and girls for education and work. No other scriptures of the world have given to woman such equality with man as the Vedas. However, the Smriti - Purana period of Indian History may be called the dark age in which the status of woman in society suffered an eclipse. During this period educational opportunities for women were few. Marriage of girls became obligatory and early marriages became a custom. In the later period the religion of the Epics and Puranas became popular and women were completely denied Vedic privileges. It was in this period that the cult of Bhakti arose and women became its ardent followers. The country was passing through a period of natural decline and social disintegration brought about by internal forces of the Muslim rule. During this period woman's position in family and society was one of complete economic dependence on man and she had no freedom to act. Modern India, which may be said to have born in the first quarter of the nineteenth century has witnessed a great renaissance. There was a general awakening which benefited both man and woman. Slowly woman tried to recover her lost freedom and receive equal opportunity in civic and in social life and in education. Today women in India breath in an atmosphere of greater social equality and greater mental and spiritual freedom. Women's changing position must be seen not only against this historical background but also in relation to men's changing position at home and at the work place.

The purpose of providing education to women is to make them play a positive role on their own in the development of the nation. The expansion of educational opportunities for women at all levels can have an important impact on breaking the vicious cycle of poverty by creating a more productive labour force and endowing it with increased knowledge and skills. At the same time, women's education can influence the future shape and direction of society in a number of ways. Finally, educating women have been shown to be a critical ingredient in breaking the vicious multi-generational cycle of poor child health, low educational performance, low income, high fertility and poor child health. It is no exaggeration to say that the keynote of India's progress lies in the education of her women.

Women education is a multi-dimensional phenomenon. No single factor or cause can be held responsible for very low literacy rate of women in India. Subsequently it is associated with combination of many factors including social, cultural, economic, education, demographics, political and administrative and so on. Some of the important factors are:

- The lower enrolment of girls in school's. Higher drop-out rate among girls of rural, tribal and slum areas.
- Girl child as second mother (shouldering the responsibilities of household).
- Caste system.
- Dowry system.
- Child labour practice.
- Poor school environment for girls.
- Early marriage.
- Inferiority, subservience and domesticity.
- Poverty.
- Ineffective law enforcing machinery.

Although the new National Policy on Education emphasized elimination of disparities in the educational system and provision of greater facilities through qualitative programme interventions, the problem of women's illiteracy has still not received concerted attention in educational planning. There have been many special drives in respect of literacy promotion like Farmer's Functional Literacy Programme, National Adult Education Programme, Mass programme of Functional Literacy, Total Literacy Campaign of the National Literacy Mission, Operation Black Board etc. giving emphasis to women as the priority group among others. As a result of these efforts, the literacy rates have progressed over the period. So, it is our duty to see that female literacy does not stop as a slogan or an idea but becomes a reality which will give every women Urban or Rural forward or backward, scheduled caste or scheduled tribe, independence self confidence, self reliance and self respect. As was rightly said by former Prime Minister Rajiv Gandhi during the launching of the National Literacy Mission, "Through literacy women become aware of their social and legal rights, learn and improve income-generating skills, acquire a voice in the affairs of the family and move towards equal participation in the process of development and social change."

❁ ✪ ❁

THE PERFECT MOMENT

By Dr. Sudha Sharma
Associate Proffessor
Dept. of English (Rtd.)
(R.G.P.G. College)

Moments or Memories, which do you Prefer?
Memories are things of the past
Memories can be at anytime
They are in photos
And could be upsetting and fun
There also in stories and in history
But which would be the Perfect one
The one which truely is a thrill
May be it's only a few seconds fast
Even when the Earth is still
When the planet is warm
Just try best not to complain
Soon it will come
But it cannot be explained
A moment once there that soon becomes the past
Cherish the little moments
And they will enter your heart and there they will last
Out of all moments this one will shine
Listen carefully
Your moment will come in time

❁ ✪ ❁

NIGHT JASMINE

Dr. Mamta Upadhyay
Associate Professor
Dept. of English
(R.G. P.G. college)

Night Jasmine tree,
Standing tall and proud
It does not bend or bow
When suffused with
Beauty and fragrance,
Of tiny, silky and milky
Parijaats.....
Instead the tree sheds them.
Is there any night secret?
That compels you to shed them
On the ground...?
Poor barren tree...
you are oblivious of the fate of fallen flowers!
Harshringars were forsaken only
To be picked up by some passerby
To adorn the altar of God.

❁ ✪ ❁

EYES

Dr. Mamta Upadhyay
Associate Professor
Dept. of English

Your hazel eyes
A masterpiece in nature
A perfect creation!
Two brown jewels alluring me,
Mesmerizing me with such complexion...
Filling me with an ardent
admiration !
Imagining your intense eyes....
My eager mind has boundless dreams of
Beautiful moments with you.
My fearless warrior!

❄ ✪ ❄

LAST FLIGHT

Dr. Mamta Upadhyay
Associate Professor
Dept. of English

Hello Death!
deep inside
an intution reside
announcing your
inevitable arrival.
sooner or later
to take me away
From this mundane world
I am ready to take off
a flight with you
but promise to take me
To a mindless place
where peace prevails
comfort me with the
truth of God,
Coax me out of my low
cajole me with the concept
of utopia, that will free
my soul from the pangs
of pain and passion
conscience and separation
at the end of my last flight!

❄ ✪ ❄

WHY ME?

Dr. Mamta Upadhyay
Associate Professor
Dept. of English
R.G.P.G. College Meerut

Dear God,
I am also your child,
You have bestowed a
precious gift of life
to me.....
I am grateful for your
blessings and bounties
I bow to you in gratitude
but why you put me
to the tests of life again
and again?
In the blink of an eye
you made my world
fall apart..... before my eyes
Some how I gather my courage
to continue with my life....
in an effort, to understand
Your mysterious ways!
to understand your plans
for me.....
and not to ask
Why me?
So here I am
down on my knees
surrendering all
to THY WILL !!

❄ ✪ ❄

COVID-19

Mrs. Vatsala Oberoi
(Assistant Prof)

What is COVID-19?

A Corona virus is a kind of common virus that causes an infection in your nose, sinuses or upper throat. Most Corona viruses aren't dangerous. In early 2020, after a December 2019 outbreak in China, the World Health Organization identified SARS-CoV-2 as a new type of corona virus. The outbreak quickly spread around the world.

COVID-19 is a disease caused by **SARS-CoV-2** that can trigger what doctors call a respiratory tract infection. can affect your upper respiratory treet (sinuses, nose and throat) or lower respiratory tract (windpipe and lungs). It spreads the same way other corona viruses do, mainly through person to person contact. Infections range from mild to deadly.

SARS-CoV-2 is one of seven types of corona virus, including the ones that cause severe diseases like Middle East Respiratory Syndrome **(MERS)** and Sudden Acute Respiratory Syndrome **(SARS)**. The other corona viruses cause most of the colds that affects us during the year but aren't a serious threat for otherwise healthy people.

Is there more than one strain of SARS-Cov-2?

An early Chinese study of 103 COVID-19 cases found two strains, which they named L and S. The S type is older, but the L type was more common in early stages of the outbreak. It is also normal for a virus to change, or mutate, as it infects people as this virus has done so. There are several variants that are now spreading, some proving to be more contagious as well as more deadly than the original virus.

Throughout the pandemic, scientist have kept a close eye on variants like–

1. Alpha 2. Beta 3. Gamma 4. Delta
5. Omicron 6. Lambda 7. MU

How long will the corona virus last?

There's no way to tell how long the pandemic will continue. There are many factors, including the public's efforts to slow the spread, researcher's work to learn more about the virus, their search for a treatment and the success of the vaccines.

Symptoms of Covid-19

The main symptoms include–

- Fever
- Shortness of Breath
- Fatigue
- Body Aches
- Sore Throat
- Loss of Smell or Taste
- Diarrhea

- Coughing
- Trouble breathing
- Chills, sometimes with shaking
- Headache
- Congestion/runny nose
- Nausea

The virus can lead to pneumonia, respiratory failure, heart problems, liver problems, septic shock and death. Many Covid-19 complications may be caused by a condition known as cytokine release syndrome or a cytokine storm. This is when an infection triggers your immune system to flood your bloodstream with inflammatory proteins called cytokines. They can kill tissue and damage your organs. In some cases, lung transplants have been needed.

If you notice the following severe symptoms in yourself or a loved one, get medical help right away:

- Trouble breathing or shortness of breath
- Ongoing chest pain or pressure
- Can't wake up fully
- Confusion
- Bluish lips or face

Strokes have also been reported in some people who have Covid-19. Remember FAST–

- Face—Is one side of the persons's face numb or drooping? Is their smile lopsided?
- Arms—Is one arm weak or numb? If they try to raise both arms, does one arm sag?
- Speech—Can they speak clearly? Ask them to repeat a sentence.
- Time—Every minute counts when someone shows signs of a stroke. Call 911 right away.

If you're infected, symptoms can show up in as few as 2 days or as many as 14. It varies from person to person. According to researchers in China, these were the most common symptoms among people who had Covid-19:

- Fever 99%
- Fatigue 70%
- Cough 59%
- Lack of appetite 40%
- Body aches 35%
- Shortness of Breath 31%
- Mucus/Phelgm 27%

Some people who are hospitalized for Covid-19 also have dangerous blood clots, including in their legs, lungs and arteries.

What to do if you think you have it

If you live in or have travelled to an area where Covid-19 is spreading–

If you don't feel well, stay home. Even if you have mild symptoms like a headache and runny nose, stay in until you're better. This lets doctors focus on people who are more seriously ill and protects health care workers and people you might meet along the way. You might hear this called self-quarantine. Try to stay in a separate room away from other people in your home. Use a separate bathroom if you can.

Call the doctor if you have trouble in breathing. You need to get medical help as soon as possible. Calling ahead (rather than showing up) will let the doctor direct you to the proper place, which may not be your doctor's office. If you don't have regular doctor, call your local board of health. They can tell you where to go for testing and treatment.

Follow your doctor's advice and keep up with the news on Covid-19. Between your doctor and health care authorities, you'll get the care you need and information on how to prevent the virus from spreading.

How do we know if it's COVID-19, a cold, or the flu?

Symptoms of Covid-19 can be similar to a bad cold or the flu. Your doctor will suspect Covid-19 if-

- You have a fever and a cough.
- You have been exposed to people who have it within the last 14 days.

❄ ✪ ❄

SHOULD PLASTIC BE BANNED?

Dr. Anjali Goel
(Assistant Prof.)

Plastic bags are a major cause of environmental pollution. Plastic as a substance is non-biodegradable and thus plastic bags remain in the environment for hundreds of years polluting it immensely. It has become very essential to ban plastic bags before they ruin our planet completely. Many countries around the globe have either put a ban on the plastic bag or Levi tax on it. However, the problem hasn't been solved completely because the implementation of these measures has'nt been as successful.

Problems Caused by Plastic Bags

Here are some of the problems caused by plastic bags—

Non-Biodegradable—Plastic bags are non-biodegradable. Thus, disposing of the plastics is the biggest challenge.

Deterioration of Environment—They are destroying nature due to their harmful effects. Plastic bags have become the main cause of land pollution today. The plastic bags entering into the water bodies are a major cause of water pollution. Hence we can conclude that these are deteriorating our environment in every possible way.

Harmful for Animals and Marine Creatures—Animals and marine creatures unknowingly consume plastic particles along with their food. Research shows that waste plastic bags have been a major reason for untimely animal deaths.

Cause of Illness in Humans—The production of plastic bags releases toxic chemicals. These are the main cause of serious illness. The polluted environment is a major reason for various diseases which are spreading easily in human beings.

Clogged Sewage—Waste plastic bags are the main reason for trapping the drains and sewers, especially during rains. This can result in a flood-like situation and disrupt the normal life of people.

Reasons to Ban Plastic Bags—There are numerous reasons why the government of various countries has come up with strict measures to limit the use of plastic bags.

Some of these include—

- Waste plastic bags are polluting the land and water immensely.
- Plastic bags have become a threat to the life of animals living on earth as well as in water.
- Chemicals released by waste plastic bags enter the soil and make it infertile.
- Plastic bags are having a negative impact on human health.
- Plastic bags lead to the drainage problem.

Public Support for Plastic Bag Ban

Although the Indian government has imposed a ban on the usage of plastic bags in many states. But people are still carrying these bags. Shopkeepers stop providing plastic bags for few days only in the beginning. It

is time when we all must contribute our bit to make this ban a success. Thus, we, the educated lot of society must take it as our responsibility to stop using plastic bags. In this way, we can support the government in this campaign.

Some contributions that can be made by people are as follows—

Keep a Tab—In order to be successful in this mission, we must keep reminding ourselves about the harmful effects of the plastic bags on our nature and keep a tab on their use. Gradually, we will become habitual of doing without these bags.

Seek Alternatives—There are many eco-friendly alternatives to plastic bags like reusable jute or cloth bag.

Reuse-We must reuse the plastic bags we already have at home, as many times as we can, before throwing them away.

Spread Awareness—While the government is spreading awareness about the harmful effects of plastic bags, we can also spread awareness through word of mouth.

Conclusion

Although plastic is becoming a big threat for all of us, still this problem has often been overlooked and underestimated. This is because people do not look at the long term effect of these small, easy to carry bags they use in their everyday life. Besides all of these people keep using bags due to their convenience. But now everyone has to completely stop using the plastic bag to save our environment and earth.

"Plastic is the most destructive weapon than a nuclear bomb or an atom bomb, its impact shall remain for centuries on the future generation" **—Sir P.S. Jagdeesh Kumar**

❁ ✪ ❁

SOMETHING TO BE WORRIED ABOUT?

Riya Garg
(Guest Faculty)
Commerce dept

Have you heard of fomo? FOMO is an acronym that stands for "fear of missing out". It is a feeling that you need to know what everyone else is doing at every moment and then worrying that everyone is having much more fun than you. If you suffer from FOMO you feel the need to check for updates on social media regularly, all through the day and often through the night too. I'm sure you'll agree that this is the drawback of being surrounded by technology.

These days FOMO has become a buzzword. There are articles in the press, reports on TV, discussions on chat shows and a growing number of books like Professor Sherry Turkle's Alone Together, in which she talks about this growing phenomenon. Turkle interviewed a large number of teenagers while she was researching for her book and her findings are quite worrying.

On top on this, even when we're actually enjoying ourselves and present in the photos, we still aren't satisfied. Now we're afraid we're missing out on something else. We even interrupt a face-to-face conversation to check status updates or to chat online. Infact, a large number of people now say they prefer texting to talking because it is easier to control than a real-time conversation. But really this makes it more difficult to develop relationships and feel close to people–another example of how technology make us think we are connected but actually leaves us feeling unsatisfied.

It Seems to me that we need to think carefully about when and how we choose to use social media. Why don't you test yourself to see how long you can go without checking for updates? Take a moment to be on your own and see how it feels. It might help you enjoy life more in the here and now, and worry less about everywhere and everyone else.

"Feer of missing out single-handedly caused every single investment bubble in human history. No other emotion is more powerful than FOMO" **—Naved Abdali**

CHILD LABOUR

Mrs. Rohini
(Guest Faculty)
Economics dept

That children should not have to work is universally accepted, but there are no universal answers why the problem of child labour persists and how it needs to be tackled. India is faced with the crucial task of eliminating child labour which is prevalent in all spheres of life. Thousands of children are engaged in the carpet factories, glass factories and other hazardous industries all over the country.

The term child labour generally has two fold interpretation. Firstly, it is implied to be an economic necessity of poor households and secondly, the explosive aspect in children's work concerned with the profit maximizing urge of commercial establishment wherein children are made to work for long hours, paid low remuneration and deprived of educational opportunities.

Reasons for Child Labour

There are many reasons for the existence of child labour. In India, poverty is one of the important factors for child labour, but it's not the sole factor. Children provide cheap labour. The pull factor of the child labour is the profit maximization.

The main causes of failure to control the child labour are poverty, low wages than adults unemployment. absence of schemes for family allowance, migration to urban areas, large family size, non-existence of strict provision for compulsory education, illiteracy and ignorance of parents.

Child Labour in India

India accounts for the second highest number where child labour in the world is concerned. Africa accounts for the highest number of children employed and exploited. The fact is that across the length and breadth of the nation, children are in a pathetic condition.

Child labour in India is a human rights issue. It is a serious and extensive problem, with many children under the age of fourteen working in carpet making factories, glass blowing units and making fireworks with bare little hands.

The situation of child labourers in India is desperate. Children work for eight hours at a stretch with only a small break for meals. The meals are also frugal and the children are ill nourished. Most of the migrant children, who cannot go home, sleep at their work place, which is very bad for their health and development.

Indian Constitution and Children Labour

Article 2314 of Indian constitution prohibits the trafficking in human beings & forced labour and article 2415 prohibits the employment of children in factories. It says that no child below the age of fourteen years shall be employed to work in any factory or mines or engaged in any other hazardous employment.

Conclusion

Children of the nation are an important asset. Educating the child can be a solution for solving the problem of child labour. Compulsory primary education should be provided. In order to reduce the burden on parents to meet the expenditure for their children's education' while they are struggling for a day's meal, the government has allotted funds. But due to lack of awareness most of the poor families are not availing these facilities. So, proper steps have to be taken to create awareness.

"Children should have pens in their hands not tools"

—Iqbal Masin

❁ ✪ ❁

FLOWER OF LIFE

By- *Radhika Sharma*
(Ex-Student)

Sow the seeds of ambitions,
in the soil of hope,
Pour the water of thy sweat
Dripping from the spiritual brow.
Plant it in the vase of sanctity
Give it the air of joy,
Decorate it with instant smiles,
And watch your life grow.
Upon the stalk of generosity,
Adorned with the leaves of commiseration
Beneath the soil, is a hidden story,
The roots of salubrious friendship.
Holding firm against the tide,
Nourishing the veins with sportsmanship
Gradually, with the passage of time,
Flower attains maturity,
And life blooms in its true spirit,
Spreading the essense of purity.

❁ ✪ ❁

THE SHOW MUST GO ON

By- Radhika Sharma
(Ex-student)
(R.G. P.G. College Meerut)

Roll on...roll on,
Pull up your sleeves and move on,
No matter how tough the tides,
Stand up and step on.
Dad said...the show must go on.

Mother sang me lullabies and daddy
Made me worldly wise...
Life changes colours from dusk to dawn...
Laps of joy but heart forlorn...
Dad always said the show must go on.

Life is a maze, a mystery unravelled.
A train on which people travelled.
A marathon.. with winners and losers.
Choose to win... don't stuck on..
Dad said... the show must go on...

No rain... no flowers
No pain... no showers...
No memories... no songs...
No bangs.. no bongs...
Dad said... the show must go on.

Sufferings and surprise.. birth and
demise....
Receive these parcels
From life's Amazon.
Dad said...the show must go on.

SUSTAINABLE LIFESTYLE : A TREND TO ADOPT ECO-FRIENDLY AND HEALTHY LIFESTYLE

Vijeta Dhama

M.sc 4th Semester Botany Department

R.G.P.G.College, Meerut.

Sustainable living describes a lifestyle that attempts to reduce the use of Earth's natural resources by an individual or society. It is often called "Earth harmony living" or "net" zero living' Sustainable living is a practical philosophy that aims to reduce personal and societal environmental impact by making positive changes which counteract climate change and other negative environmental concerns. More simply, sustainable living is a method of reducing one " carbon footprint" . Sustainable living is based on four pillars namely minimizing waste, limiting the use of Earth's natural resources, the wise use of environment and ensuring quality working living environments.

Environmental sustainability is important because of how much energy, food and human-made resources we use every day. Rapid population growth has resulted in increased farming and manufacturing, leading to more green house gas emissions, unsustainable energy use, and deforestation. Humans impact the physical environment in many ways like overpopulation, pollution, burning fossil fuels and deforestation. Changes like these have triggered climate change, soil-erosion, poor air quality and undrinkable water. From switching off room light to carpooling one needs to understand the importance of conserving the natural resources wherever it's necessary. Avoid using plastic material, use items that are recycled, avoid wasting food, share or give away stuff that can be used. Avoid using chemical fertilizers and raise organic farming. Small practices should be adopted to improve the behaviour and inculcate in a day-to-day activity.

The conventional living lifestyle has made people dysfunctional. It has reduced our proximity and interaction with nature. The kind of social acceptance in various forms that involves adverse impact on the environment biodiversity of the region has profound effect on the health and mental well being. We need a better upliftment of our society in terms of accepting social changes that do not hamper the environment but to find an alternative to it. In such scenarios, education and awareness are the best tools to communicate it to the masses.

Gradually, it will boost the thought process and help the masses to consciously act towards the better cause of the environment. Together, we can build a healthier lifestyle that has a lot to offer. Hence live a life that is more sustainable, trendy, luxurious, and yet simple that costs less and contributes more to the environment.

SOCIAL ISSUES

Niharika
B.Sc-Ist (Sem-IInd)
Botany Department

A social issue is a problem that affects many people within a society. It is a group of common problems in present-day society and one that many people strive to solve. It is often the consequence of factors extending beyond an individual's control. Social issues are the source of conflicting opinions on the grounds of what is perceived as morally correct or incorrect personal life or interpersonal social life decisions. Social issues are distinguished from economic issues; however, some issues (such as immigration) have both social and economic aspects. Some issues do not fall into either category, such as warfare.

There can be disagreements about which social issues are worth solving, or which should take precedence. Different individuals and different societies have different perceptions. In Rights of Man and Common sense, Thomas Paine addresses the individual's duty to "allow the same rights to others as we allow ourselves". The failure to do so causes the creation of social issue.

There is a variety of methods people use to combat social issues. Some people vote for leaders in a democracy to advance their ideals. Outside the political process, people donate or share their time, money, energy, or other resources. This often takes the form of volunteering. Non-profit organizations are often formed for the sole purpose of solving social issues. Community organizing involves gathering people together for a common purpose.

A distinct but related meaning of the term "Social issues" (used particularly in the united states) refers to the topic of national political interest, over which the public is deeply divided with which are the subject of intense, partisan advocacy debate, and voting. In this case "social issues" do not necessarily refer to all ill to be solved, but rather a topic to be discussed.

WHO AM I?

Sonali Kataria
B.Sc-Ist
University ID : 21G0145632

"The first step of self realisation is to know who I am."
—Srila Prabhupada (Founder Acharya of ISKCON)

There is darkness at the bottom of the lamp. The light from a lamp shines in all directions, but the bottom of the lamp remains dark. Similarly, humans seek to know multitudinous things. We educate ourselves about innumerable subjects and yet we neglect knowledge of the self. To know the self is not trivial, but it is a science— the science of self realisation.

An inquisitive person surely endeavours to solve this perplexing conundrum of life. This science can not be understood by mere mental speculations laboratory experiments. Spirituality plays an indispensable role in figuring it out.

Why to know the self?

"The human form of life is meant for advancing in self realisation which is the beginning of real happiness."—Srila Prabhupada (Founder Acharaya of ISKCON). Without knowing our authentic selves, we can never procure eternal happiness, tranquillity and success in our lives. The ignorance of our real identity culminates into suffering and distress. Self realisation helps us to transcend the dualities of life like pains and pleasures.

What is my real identity? Who am I?

Shri Krishna incredibly elucidates this in Shrimad Bhagwat Gita. According to Bhagwat Gita, the mind is higher than the body, the intelligence is higher than the mind and higher than the intelligence is the soul, which comprises of real identity. We are imperishable (souls) and not this ephemeral body. The soul is a part and parcel of God. Each soul is an individual, remaining eternally a part of God, distinct from the God himself.

The eternal individual soul never becomes one with God. It has it's own unique characteristic. Shrikrishna further says that the self is beyond the gross body and subtle mind. It is the potent active principle of the body and mind. We are souls and God is the super soul. We are qualitatively, not quantitatively similar to God. The soul never dies but the body dies. The soul is eternal, blissful and full of knowledge. Without knowing the need of dormant soul, one can not be euphoric.

How to know the self?

The ultimate objective of this precious human life is to know ourselves and our eternal relationship with God. The science of self realisation can be understood from our ancient yet marvelous vedic scriptures namely Shrimad Bhagwat Gita. To advance further on our voyage of self discovery, we can approach a bona fide spiritual master and learn from him with great humility.

So, it can be said that this human life is a priceless gift which we procure after passing through eighty four million species of life and we are highly elevated in consciousness than animals. Consequently, we must endeavour to realise our true identity because this foremost knowledge once procured, can vanquish all our sufferings and can establish us in our real constitutional position of eternal happiness and serenity. That is why it is very well said that, "The desire to know your own soul will end all other desires."

❁ ✪ ❁

INCREDIBLE SCIENCE

Anushka Chaprana MSc
M.sc Botany 2nd year

We connect to each other
By this incredible science

When some people say by using this technology
We are disconnecting from humanity
I want to say we are not disconnecting
But we are more connecting
with nations and nationalities
Languages and legalities

In reality
We connect to each other
By this incredible science.

When some people think through this technology
We are getting away from our loved ones
I want to say that I feel more closeness
When I see my soldier father in front of my eyes
When my grandmother is far away but gives me lot of virtual hugs just in front of me

I feel
We connect to each other by this incredible science.

When some people say through this technology
We are losing our peace and our lives
I want to say when a patient is able to fight the dreadful cancerous cells
We can find peace and life in that person's eyes.

So, for this we should thank our scientists,
Our legendaries

Who imagined this world full of inventions and cures
And We, the people of this universe actually have this world.

Let's celebrate this incredible science not only for this week
But in every moment,
When you think
You have everything
by this incredible science.

CONGRATULATIONS, IT'S A BABY GIRL

By Anushka Chaprana

M.Sc Botany 2nd year

"So, how was the life on earth?" God asked.

The old couple who was standing together answered, "The life was good. We thank you for giving us everything. But, there was a bad phase, which ruined our old age days."

"What happened?" God asked.

"Our son who moved us out from our home, God. I mean, everyone from our friend circle was blessed with a good son who took care of them. But, our son made us spend our last days in an old age home. Why didn't you give us a son like Shravan." The old man asked.

God smiled and answered, "Shravan? I did give you. In fact, I gave you someone who was more caring than Shravan,"

"What?" The old man questioned.

"Yes, I blessed you with a baby girl who could serve you more than any Shravan. But, all that you both needed was a boy. That's why you killed her in the womb."

The old couple was speechless. Suddenly, the spark of light came from the face of the God and the man who was old woke up and found himself in the bed. He realized that he was not old, but young enough. It was just a dream.

He woke up from the bed and started following his routine life.

After two hours, his wife asked, "When are we going to the hospital today?"

Her husband looked at her, and just said, "No. We're not going to abort her. She is our Shravan."

❄ ✪ ❄

PATIENCE

Farheen
M.A. Ist Year
History Dept.

If you are trying your best every single day,
Be proud of yourself,
Even though days are going to be hard and,
you are not seeing any progress just remember
that every step Counts,
Be patient and you will see the sun shine, again
Again through the dark clouds.

❁ ✪ ❁

REMEMBERING DAD

Farheen
M.A I-year
History Dept.

The loss of your father,
No matter How old you are,
changes your life forever.
your dad is your protector,
who keeps you safe and secure,
He loves you and pampers you
You never really Get over the loss,
With strength and courage you learn to live with
the loss,
And he is never far from your thoughts,

❁ ✪ ❁

DEDICATED TO YOU.....

Farozan Yunus
M.A. IIIrdSem
History Dept.

A Golden heart stopped beating,
Working hands are now at rest.
It was difficult to manage both,
As I believe in fact—
Humans cannot be multitasking
you! proved it wrong, as you say—
MOTHERS can be.

Some say—memories never fade away,
some believe they are golden,
may be it is true, but
memories without you; is just heart breaking.

Knowing the fact you could not stay,
Pain was reflecting in glittering eyes,
Still your golden heart was beating for me.
Frowning lines on calm face were,
Just for your love.
I watched you sinking, helplessly,
Could'nt say how much I love you!

❄ ✪ ❄

ENCOUNTER

Saba Saifi
M.A. 2nd year
English dept.

If you eat a lot because you feel lonely,

If you sleep a lot because you are weary,

If you cry a lot because you are sad,

Oh! I write this.

Chew on your feelings as you would your rice

Anyways, life is something, you need to digest.

I know, it's easy to say it

To endure all the pains of life while smiling

But is difficult to face it, to love it everyday

If your back hurts in order to let your wings sprout

Just believe in yourself, speak for yourself.

Here you eat, sleep and think

Cough, get headache, grow old, get sick but remain alive.

Life is all about facing hurdles

Let's make it worthwhile.

Oh! write this again

Chew on your emotions as you would your bread

Anyways,life is something you need to digest.

❁ ✪ ❁

WHY NOT A GIRL?

Uzma begum
M.A. IInd year
English dept.

People pray for a boy.
Not a girl.
They desire a boy,
Not a girl.
Blessings of elders are for a male,
Not for a female.
They love to have a boy,
Not a girl.
But in need of wealth,
They pray to Goddess Lakshmi.
In need of courage,
They pray to Goddess Durga.
In need of knowledge,
They seek blessings of Goddess Saraswati.
Now tell me? Why do they hesitate
To have a daughter in the family.

❁ ✪ ❁

MY OBSESSION

Zoya
M.A. Final year
English dept.

I sat, I thought, I ate
And wrote this something relate.
Oh! should I wait,
I think my dreams are overweight.
I have grown my wings,
I want to fly.
I have seen the sky,
I want to go high.
I have been dreaming a lot,
Now I want them to apply.
When I find something wrong,
I definitely cry, But it doesn't mean,
I remain shy.
There are problems but I keep reminding myself,
Try try but don't cry.
My obsession screams,
Girl! Work hard for your dreams.

❁ ✪ ❁

THE GLOOMY SPARROW

Kareena Qamar
Guest Faculty
English dept.

Sparrow sails up in the sea of dream
Flying higher in the sky and in sun's beam,
Her chirping on the trees
Make me happier and free;

But soon I realized
She feels gloomy inside,
She seems happier outside;
She lost her home, and to find the peace she had to strive.

She felt the universe punished her
For something, she doesn't remember,
Making it harder everyday
Forcing her to surrender anyway;

Now the sky is dull
The sparrow is numb,
The sun is drab
"Cause she is sad".

❁ ❁ ❁

THE SONNET OF THE SOUL

Anny Saifi
Guest Faculty English dept.
Raghunath Girls' Post Graduate College, Meerut

Today the sun didn't wake me up,
But like a phoenix I rise;
Not that this was a miraculous birth
Rather in a world where eternity lies.

Hexed by some witchcraft,
Unable to find the undo spell;
My corpse burnt so fast,
As if the third world war has dwelled.

Without any fuss
Cemeteries crammed;
Triggered the curse
So many tramps.

Lanes were deserted here,
Not any usual gathering;
I witnessed the sphere
Where mourning silences were chattering.

Thus, a darkness knocked on my door,
Diffused over the land, over every shore.

❄ ✪ ❄

WOMEN'S EMPOWERMENT
A BRIEF OVERVIEW

Dr. Parul Singh
Associate Professor
Head, Dept. of English

Women's empowerment has been a major area of concern during the past few decades. Women's education is a great tool for empowering them. Education opens up many new horizons for young achievers to fulfill their aims and to prove themselves to be better individuals for their own selves, their families and the society at large, not just locally but globally as well. The scenario is changing rapidly as we can see more empowered women around us. Beginning at home front where parents no longer differentiate when it comes to raising their children whether girl or a boy. They give equal right to education and provide equal opportunities for a bright future, to be independent economically and to have a free independent spirit to face the challenges of life.

Young empowered women of today are no longer shy, weak and timid. They boldly venture out in the world to make a career for themselves as educators, administrators, economists, scientists, entrepreneurs, armed force personals, electronic and print media journalists, doctors, engineers, political leaders, policy makers, even cab and train drivers.All the male bastions which seemed unapproachable and unachievable have been broken by strong willed women.

'The successful, empowered women in the society inspire and motivate others and give definite, positive direction to their lives. Empowerment also encompasses, moral and ethical values without which one would fail to achieve a respectable place in society. Empowered women contribute towards engendering, fostering and giving direction to future generations there by help in creating a healthy environment in the society, a society where the entire family moves towards a higher aim aided by education, knowledge and wisdom.

❁✪❁

SOW THE SEEDS OF VALUES IN YOUR CHILD

Mrs. Preeti
Assistant Professor
Dept. of English

Children are like seeds. They need to be nurtured with affection and great care. Parents always dream that their children would grow into successful, confident and happy individuals. We wish and want them to have the best things in life. But we need to keep in our mind that teaching our children values and fostering gratitude in them for what they have is also a big and important part of parenting.

It would not be inappropriate to say that moral values are gradually disappearing from our lives. Moral values are the basis of our goodness and if we use them, they give us inexplicable joy. We can not measure this intensity of joy. But if we feel it, it would give us a sense of relief and contentment that is a class apart. So we should sow the seeds of moral values in our children from an early age. We should teach them not to look down upon people who have less than they do, nor demean them in any way. These values are a must in a child's life since he or she has yet to face the harsh realities of life. There is one more profit that these moral values are not one-sided but give immense contentment to those who exercise them and those for whom they are exercised. It does not demand any tax it increases love, affection and mutual understanding. So it is our basic duty to generate this feeling of humanity in them. Impress upon your kids that an honest living is a respectable living. They need to be appreciative of hard work. Paying respect to the elders, helping the needy, etc. are what the children need to learn the most.

Whatever we want our children to learn and whatever we say, one should always remember that" Actions speak louder than words."They watch us and learn from us all the time. So the best way to teach them anything is to set an example for them by our actions. This would be the best gift from the parents to their children.

❁✪❁

ONE MORE FIGHT

Mrs. Preeti
Assistant Professor
Dept. of English

Let us have one more fight
To give this crisis a blow tight.
Life is full of ups and down,
Let us all have victory's crown.
Life is for love not to cry,
Let us love it and enjoy.
Be glad and keep hopes high,
Let us remove all gloomy sigh.
We dream as pearls on a string,
Let us take shelter of almighty King.
Life is short and full of needs,
Let us make it great with our deeds.
Replace hates with compassion,
Let us fill the world with aspiration.
Spread love and suspend all enemity.
Let us begin it with sympathy.
Various hurdles in our ways,
Let us join together in our prayers,
To remove and clear our ways.

WONDER WOMEN

Zoya Iftakhar
(F.Sc. & Q.C. Department)
B.sc Ist year (164)

Avani Chaturvedi makes India proud—She is the first Indian proud woman to fly solo a fighter aircraft. She flew a MIG-21 'Bison', an aircraft known for its highest landing and take-off speed in the world.

Mithali Raj—"Lady Tendulkar" of Indian women's cricket. During India's series against New Zealand Mithali Raj became the first Indian women who made India proud by playing in 200 ODI matches.

Mary Kom—"Ms. knock-out" is the woman who made India proud by becoming world Amateur boxing champion for a record six times, and the first woman from the country to win a medal in boxing at the olympics.

Saina Nehwal—"Steffi Saina". In world Badminton ranking in 2015, Saina Nehwal became the first indian women to secure no.1 position.

Hima Das—"Dhing Express". An Indian sprint runner is the first Indian proud woman athlete to win a gold medal in a track event at the IAAF world under 20 championships.

Still counting.....
You can be a wonder women too!
Be brave Be bold.

WHAT ARE NUTRACEUTICALS?

Mehrukh Iffat
Lecturer (F.Sc. &Q.C.)

Nutraceuticals are products derived from food sources that provide both nutritional and medicinal benefits. Nutraceuticals are also known as functional foods, medical foods, designer foods, phytochemicals and nutritional supplements. These products include dietary supplements, herbal products, genetically engineered foods and vitamins. They contain a high concentration of bioactive compounds derived from a natural source and have physiological benefits and help in the prevention and treatment of disease. Nutraceuticals even include everyday foods like **pre and probiotics, fortified cereals, processed foods and beverages**.

It is a substance that has physiological benefits or provide protection from chronic diseases. They can improve health, delay the aging process, prevent chronic diseases, increase life expectancy, or support the structure and functioning of the body. They are also used in the prevention and treatment of mental health issues and disorders.

All **dietary supplements** and **functional foods** come under the category of nutraceuticals.

Dietary supplement contain concentrated bioactive nutrients from a food source processed into a suitable dosage form. They are available in tablets, capsules, powder, energy bars etc.

Functional foods on the other hand are any food that provide health benefits other than basic nutrition. They include fortified, enriched or enhanced foods that can improve health when consumed regularly as part of a varied diet. They are available as pasta, cereals,whole grains, yog hurt, snacks, juice with added calcium, cereals fortified with iron, flour with added folic acid, etc.

❀ ✪ ❀

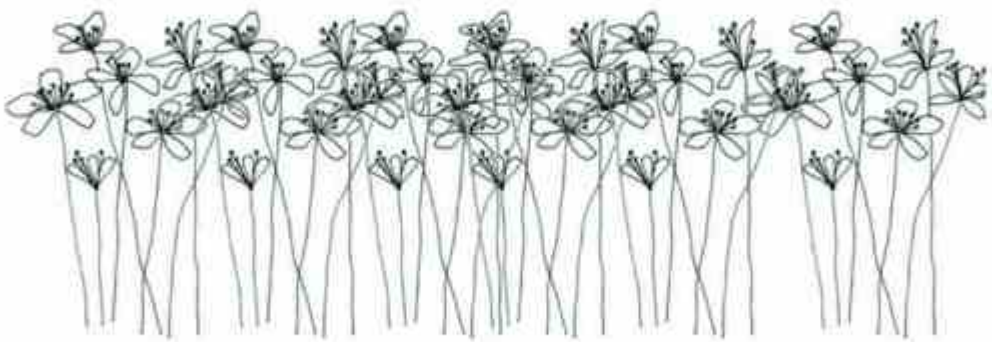

I AM ALSO A "GOOD GIRL"

Sobiya Naqvi
B.sc. IInd year
Food Sc.

I don't want to be shy
I want to be out spoken,

I don't want to be calm always
I want to show my anger as well.

You can't portray me as a weak person,
I am the strongest person as a mother,

I don't want to wear Indian dresses only
I want to wear western dresses as well.

I don't want to depend on others,
I want to be independent.

Yes I am also a good girl,
But not as stereotyped by people.

SHE TEACHES HER DAUGHTER

Samridhi Jain
(MA IInd year English dept.)
(2020-22)

She has been strong but weak sometimes,

She's had to labour tirelessly, suppressing painful, miserable, whines.

She had to be trained, to be tamed, to be beautiful and soft and respectful and submissive, rather maimed.

She had hardly been schooled, let alone seeing the world outside, the wicked walls of her home, never went to picnics but she, being a good girl, ever held her tongue and stitched her lips.

She was only human, yet she tried to fly, her wings embroidered with dreams, but made heavy with so called responsibilities".

Every time she fell hard to the ground like the Phoenix only risen to fall again, had to pick herself up because to soak with her tears, never had a shoulder by her side.

She was the brother she had never seen, the son her parents never saw shine. And how could they? For they never knew that she was the same heaven's design!

She was bid OFF to a new place called "Your only home" When she turned 15 and how could she refuse, after all, what right did she have to intervene?

There she had to sleep with a stranger who they called her husband, who used her, abused her, nagged, chided her and beat her in abundance.

She could not think even for a blink to return to her father who had hardly ever picked her up in his arms.

Because He was always too concerned about triggering social alarms!

She spent her life gazing out the window at the birds in the sky, and then down at her clipped wings, still wishing to fly...

But she had been trapped in a cage, never quite understood why.

Now it has been year that she's been dying and knows not how to breathe any further....

So today she teaches her young daughter :

"Darling, Don't you ever... be a good Girl like your mother!"

THE AGE OF INSECURITY

Shreya Singh
(M.A. IInd year English)
(2020-22)

This poem is a free verse feast,

It follows no fixed rhyme scheme, unlike our socially wired brains that dance to the rigid "norm tunes".

I have scribbled whatever stimulated across my skin, like goose bumps :

Insecurities: My insecurity, your insecurity, our insecurities!

Let's take a moment to pause and talk about it.

You can may be even write about it in your spare time, well, I have jotted down mine.

Growing up I noticed those who were a little taller, a little leaner, but a lot meaner.

Whilst I had a frame broadened up, kind of "unwomanly", kind of "unattractive",
With coarse body hair which like cobwebs, I had to get rid of, adding to my fears.
When I was busy believing the hoax that a certain type of clothes I shouldn't dare to wear,

Further they moved on to create another insecurity in the name of skin care!

I remember a friend saying, "Your complexion isn't fair like mine hence you can hardly shine like bougie wine!"

This loop of cumulative insecurities, my so called "insufficiencies" soon turned into anxiety.

Can we ever have a social conditioning that does not create but drive away our fears?

Can't know for sure, but at least I can be the friend that you seek, My Dear!

Perhaps you can be that friend too? Perhaps we, as women can Unite, Pat each other on the back and wipe each other's tears?

❀ ✪ ❀

DREAMS

Zoya Akhtar
(MA English Final 2022-22)

Contemplatively I sat, I thought, and nervously ate,

Then finally wrote this down so my head and heart I could relate.

Oh maybe some more I should wait?

My dreams seemed overweight.

I have grown my wings,

I have seen the sky,

And I wish to soar high!

I have been dreaming, thinking, imagining a lot, but now enough!

Now I want to act, I want to apply.

When faced with hurdles, I'll sure sigh and sometimes cry...

But it doesn't mean that to my aspirations I'll ever say goodbye!

There are complications but I'll keep reminding myself;

Try and try, but don't you cry!

My obsession screams :

Girl! Work hard for your dreams!

MY COLLEGE

Antil Bhardwaj
(M.A.IInd year English)

Rays are many, but Sun is only one,

Stars are many, but moon is only one,

Flowers are many, but rose is only one,

Temples are many, but God is only one,

Colleges are many, but "R. G. P. G. college" is only one.

❀ ✪ ❀

IF YOU WANT....

Antil Bhardwaj
(M.A.-IInd year English)

If you want to love,

Love your books,

If you want to hate,

Hate the bad habits;

If you want to do,

Do some noble work;

If you want to kill,

Kill the bad ideas;

If you want to die

Die for your country;

If you want to know;

First know yourself;

If you want to acknowledge;

Acknowledge the love of God.

❀ ✪ ❀

EDUCATION AND HEALTH

Anjali Gupta
Asst. Prof. History
R. G. P. G College, Meerut

Education and health are two most important characteristics of human capital. Education contributes to human capital by developing a range of skills and traits that are important throughout life and may be important for mental health, such as conscientiousness, perseverance, a sense of personal control, flexibility, the capacity for negotiation, ability to form relationships and establish social networks. These skills can help with a variety of life's challenges. Education offers opportunities to learn more about health and health risks, it is a powerful tool that aids an individual to face the adversities of life and overcome societal stigmas. A good quality education is the foundation of health and well being. Good health is a boon to our body. It can be maintained by doing regular exercise and maintaining a well balanced diet. For people to lead healthy and productive lives, they need knowledge to prevent sickness and diseases. Education develops the awareness, skills, values and positive attitude that enables us to lead healthy lives. It helps us to improve and preserve our health and avoid illness. The key source of being happy is fitness and health. Good health helps us to perform our daily chores properly. Health education programs help empower students to live healthier lives by improving their physical, mental, emotional and social health. Education creates opportunities for better health.

❄ ✪ ❄

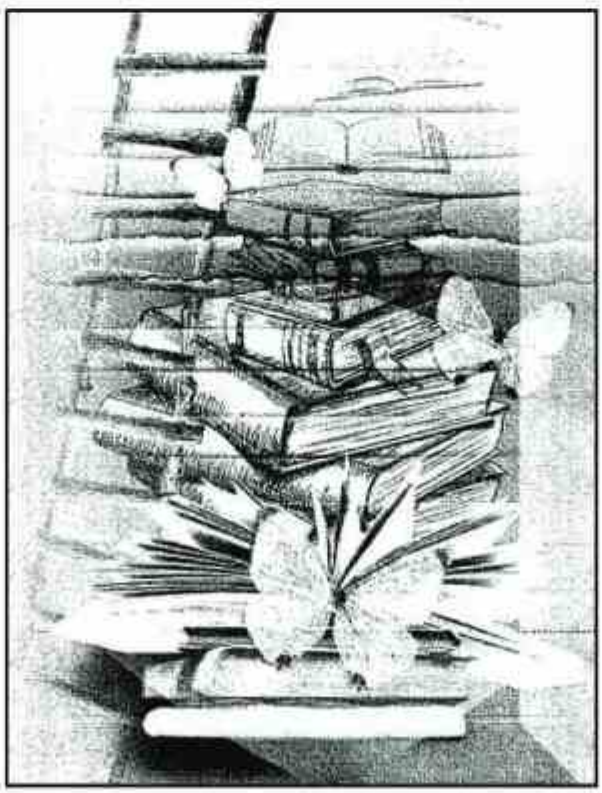

MORINGA OLEIFERA

Dr. Renu Kamboj

Head, Associate Professor Dept. of Home Science

Moringa oleifera is a plant that is often called the drumstick tree, the miracle tree, the ben oil tree, or the horseradish tree. Moringa has been used for centuries due to its medicinal properties and health benefits. It also has antifungal, antiviral, antidepressant and anti inflammatory properties.

MORINGA CONTAINS MANY HEALTHFUL COMPOUNDS SUCH AS:

- Vitamin A
- Vitamin B1 (thiamine)
- B2 (riboflavin)
- B3 (niacin), B-6
- Folate and Ascorbic Acid (vitamin C)
- Calcium
- Potassium
- Iron
- Magnesium
- Phosphorus
- Zinc

HEALTH BENEFITS OF MORINGA OLEIFERA

1. PROTECTING AND NOURISHING SKIN AND HAIR

Moringa seed oil is beneficial for protecting hair against free radicals and keeps it clean and healthy. Moringa also contains protein, which means it is helpful in protecting skin cells from damage. It also contains hydrating and detoxifying elements, which also boost the skin and hair. It can be successful in curing skin infections and sores.

2. TREATING EDEMA

Edema is a painful condition where fluid builds up in specific tissues in the body. The anti inflammatory properties of moringa may be effective in preventing edema from developing.

3. PROTECTING THE LIVER

Moringa appears to protect the liver against damage caused by anti-tubercular drugs and can quicken its repair process.

4. PREVENTING AND TREATING CANCER

Moringa extracts contain properties that might help prevent cancer developing. It also contains niazimicin, which is a compound that suppresses the development of cancer cells.

5. TREATING STOMACH COMPLAINTS

Moringa extracts might help treat some stomach disorders, such as constipation, gastritis, and ulcerative colitis. The antibiotic and antibacterial properties of moringa may help inhibit the growth of various pathogens, and its high vitamin B content helps within digestion.

6. FIGHTING AGAINST BACTERIAL DISEASES

Due to its antibacterial, antifungal and antimicrobial properties, moringa extracts might combat infections caused by Salmonella, Rhizopus, and E.coli.

7.MAKING BONES HEALTHIER

Moringa also contains calcium and phosphorous, which help to keep bones healthy and strong. Along with its anti-inflammatory properties moringa extract might help to treat conditions such as arthritis and may also heal damaged bones.

8. TREATING MOOD DISORDERS

Moringa is considered to be helpful in treating depression, anxiety and fatigue.

9. PROTECTING THE CARDIOVASCULAR SYSTEM

The powerful antioxidants found in Moringa extract might help prevent cardiac damage and has also been shown to maintain a healthy heart.

10. HELPING WOUNDS TO HEAL

Extract of moringa has been shown to help wounds close as well as reduce the appearance of scars.

11. TREATING DIABETES

Moringa helps to reduce the amount of glucose in the blood, as well as sugar and protein in the urine. This improved the haemoglobin levels and protein content in those, tested.

12. TREATING ASTHMA

Moringa may help reduce the severity of some asthma attacks and protect against bronchial constrictions. It has also been shown to assist with better lung function and breathing overall.

13. PROTECTING AGAINST KIDNEY DISORDERS

People may be less likely to develop stones in the kidneys, bladder or uterus if they ingest moringa extract. Moringa contains high levels of antioxidants that might aid toxicity levels in the kidneys.

14. REDUCING HIGH BLOOD PRESSURE

Moringa contains isothiocyanate and niaziminin, compounds that help to stop arteries from thickening, which can cause blood pressure to rise.

15. IMPROVING EYE HEALTH

Moringa contains eyesight-improving properties thanks to its high antioxidant levels. Moringa may stop the dilation of retinal vessels, prevent the thickening of capillary membranes, and inhibit retinal dysfunction.

16. TREATING ANEMIA AND SICKLE CELL DISEASE

Moringa might help a person's body absorb more iron, therefore increasing their red blood cell count. It is thought that the plant extract is very helpful in treating and preventing anemia and sickle cell disease.

BRIDGES

Dr. Sonika Choudhary

Associate Professor, Department of Home Science

This is how I wish to start talking about bridges Bridges which have become a part of this landscape
These arches,
That the wind, the wind so often plays on,
Bridges don't go one way, Bridges start on each side. Bridges continue on each side that is how they were built: Two beautiful spans that meet in the middle
Of Two hands.
In a concrete greeting
Bridges go both ways, A road has two directions,
One day you will look for something as simple as an open door, a handshake,
And that is how we will know while we cross these bridges, that what we share with others becomes twice as large.

❄ ✪ ❄

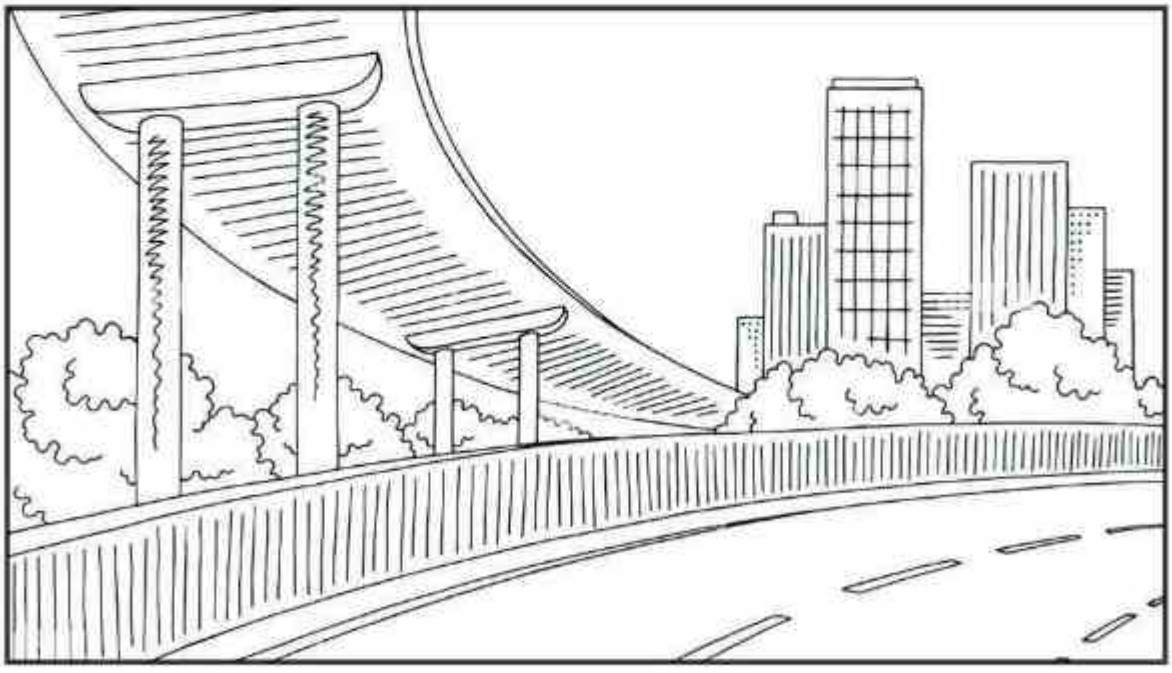

POSITIVE PARENTING

Mrs. Mamta Kumari
Assistant Professor
Department of Home Science

Parenting doesn't always mean pampering and loving children all the time. It's about using a steady tone and method when needed. If you are a parent or guardian of young children, you may have a better understanding of this statement. But is it always necessary to raise your voice or force your opinion on trivial issues or are there more efficient approaches to deal with your little one without really getting upset or even hurting their feelings.

The term positive parenting is becoming more and more popular these days. But what does it mean exactly and above all, how do we accept it. At first glance, positive parenting looks reasonably good and positive without responding to your child's bad behaviour. On the contrary, positive parenting doesn't mean you can't blame your child for misbehavior. Positive parenting isn't just about being nice to your kids, even when they don't deserve it. Positive parenting is a philosophy and strategic method based on the belief that our connection with our children as parents is what matters most and how we can help develop their confidence. Positive parenting focuses on discipline and raising children to be self-reliant and responsible individuals who treat others with compassion, respect and gratitude.

BEST AGE TO START POSITIVE PARENTING

It is extremely important to practice positive parenting from the start. The best age to begin the positive parenting method begins right at the infant level. Research shows that children under the age of one benefit greatly from positive parenting technique. A positive parenting approach leads to a secure parent-child relationship. A secure bond between parents and children is associated with positive developmental outcomes such as self- esteem, self-confidence, self-competence, etc. Therefore, it is safe to say that positive parenting should start as early as possible.

Below are some of the benefits of positive parenting that come with the power of a positive parenting approach:

1. Stronger Bonds between Parents and Children

Building strong bonds between parents and children is very important, and positive parenting will help you in that. This approach uses behaviour development methods to build trust between parents and children. Children would have a positive conversation with their parents more often through a positive upbringing. These positive affirmations, along with an upbeat attitude, contribute to a stronger relationship. A strong bond with your children gives them the confidence to eagerly turn to you with their problems and any questions they may have as they grow.

2. Better and Effective Flow of Communication

We are all aware of the significance of communication in every aspect of our lives. Communication is an unavoidable aspect of a positive parenting approach. The main concept of the positive approach to parenting is to promote positive and pleasant discussion with your children as opposed to harsh and negative ways. This can be accomplished by encouraging children to be open about their thoughts, beliefs and feelings, and also by showing them how good behavioural choices can spread good feelings

and happiness. Effective communication works best when it's a two-way process. It is therefore highly recommended that you share your experiences and feelings with your children regularly as well. Listening is just as important as speaking! Make sure you are patient enough to listen to everything your kids have to say.

3. Higher Self-Esteem and Happiness

Positive actions, mutual trust and effective communication lead to a happy home environment, thus boosting your children's self-esteem. Being less punitive as a parent and concentrating more on inspiration and advancement will help children expand a positive outlook on life. It applies not simply to children but also to adults as we see mistakes and imperfections as a possibility to improve ourselves rather than falling into self-consuming guilt and negativity, which facilitates us expand positive behaviours. A happy and pleasant environment at home means less stress for parents and children.

4. Setting a Positive Example for Children

Being an inspiring and good role model for your children is very important and quite challenging! Young children learn how to behave by looking at their parents' examples. Often abusive and bullying parents have either troubled children or children who become as abusive as their parents. In contrast, children with parents who take a gentle approach to the most difficult problems will have a similarly gentle and kind outlook on life. For example, if you have a habit of hitting your child when they don't do something you ask them to do, then they will also have an instinct to hit other kids at school when they do something similar.

5. Reduces Negative Behaviour

One of the biggest nightmares of parents is that their children harbor a streak of negative behaviour! Parenting often becomes a struggle with young teenagers trying to get away with their irrational behaviour while avoiding punishment. It is extremely important to understand that as a parent, you still require to set, govern boundaries for your children. The only change is that a positive parenting motivates you to embrace positive options rather than negative actions.

6. Enhances Mutual Respect

In addition to a positive attitude and open communication, another key part of positive parenting is developing mutual trust between parents and children. Rules are extremely important to children, but you need to make them understand why those rules are being made, rather than just telling them to follow your directions.

Tips for Successful Parenting in the Digital Age

- Say no to comparison.
- Stop underestimating and start understanding your child.
- Spare the time or spoil the child.
- Prevent the over use of mobile and TV.
- Mind your behaviour and attitude.

❄ ✪ ❄

"MATKA" WATER FOR SUMMERS BUT WHY MATKA PANI ??

Ms. Himani Vishnoi
Assistant Professor
Home Science Department

It is one of the best old practices that one should adopt, for :

- **Natural Cooling Properties :** The clay pot has tiny pores which evaporate water quickly and ensures heat of the water is lost inside the pot and reduces the water temperature.
- **Prevents Sunstroke :** Clay pots help to retain water minerals and rehydrate quickly.
- **Gentle for Throat :** Drinking water from refrigerator causes itching and soreness in throat but clay pot water has ideal temperature for throat and keeps you protected from cold and cough.
- Natural Purifier : Clay pot not only cools the water temperature but also purifies it.

❁ ✪ ❁

DON'T LIMIT YOUR CHALLENGES, ALWAYS CHALLENGE YOUR LIMITS

Mrs. Neha Tandon
Assistant Professor
Deptt. of Commerce

If you can fly, the sky is yours

If you can swim, the sea is yours

Why a limit is always to be set,

when you are at your best.

Try harder and harder to give your dreams a shape,

As every record is supposed to be break.

Challenges are good as they make us better,

You are capable of more than you thought you were.

So, instead of being contended of your past chores

Dare to do that you haven't done before.

Always expect the unexpected, believe in unbelievable

So that you can achieve the unachievable.

My Teacher

Manisha Roy

You taught me, inspired me,
Guided me, encouraged me,
Pushed me to do my best,
Thank you for caring about me.

❀ ✪ ❀

Freedom Walk

Neha

Freedom:

They say we'll never get it,

I Believe when people hear,

The coloured side of the story

INJUSTICE ANYWHERE IS AN INSULT

TO JUSTICE EVERY WHERE

They chant and throw objects,

But I'm not giving up,

I fell like I could walk.

all night for Freedom, cops

yell and block the roads,

and order people,

to go Back, Groups of Caucasians,

chant in our faces, and hold up signs,

But all I can say is,

'KEEP WALKING'

❄ ✪ ❄

Poem

Shaista

M.A. IVth sem

Father name : Abdul Samad

Sr. no. H-07.

Roll no. RG200058171010

Each day I'll do my best

And I won't do any less

My work will always please me.

And I won't accept a mess.

I'll color very carefully,

My writing will be neat,

And I will not be happy.

Till my papers are complete

I'll always do my homework.

And try my best one every test.

I won't forget my promise.

To do my very best.

❄ ✪ ❄

कला संकाय की विविध गतिविधियाँ

कला संकाय की विविध गतिविधियाँ

विज्ञान संकाय की विविध गतिविधियाँ

विज्ञान संकाय की विविध गतिविधियाँ

शिक्षा संकाय (बी०एड०) की विविध गतिविधियाँ

वाणिज्य संकाय की विविध गतिविधियाँ

टेबलेट एवं मोबाईल वितरण

एन०एस०एस० एवं रेंजर कार्यक्रम की विविध गतिविधियाँ

एन०सी०सी० कार्यक्रम की विविध गतिविधियाँ

महाविद्यालय में आयोजित विविध कार्यक्रमों की झलकियाँ

शारीरिक शिक्षा एवं क्रीडा विभाग की विविध गतिविधियाँ

COLLEGE FACULTY

SELF FINANCE FACULTY

NEW APPOINTED TEACHING STAFF 2022-23

4TH CLASS STAFF

EDUCATION B.ED STAFF

HOSTEL STAFF

LIBRARY STAFF

OFFICE STAFF

DIFFERENT COMMITEES PROGRAMME

वृक्षारोपण

राष्ट्रीय कैडेट कोर
NATIONAL CADET CORPS
राष्ट्रीय सेवा योजना

NATIONAL CADET CORPS

AUDITORIUM
राष्ट्रीय कैडेट कोर
NATIONAL CADET CORPS
राष्ट्रीय सेवा योजना

AUDITORIUM
राष्ट्रीय कैडेट कोर
NATIONAL CADET CORPS
राष्ट्रीय सेवा योजना

NATIONAL CADET CORPS

अमृत महोत्सव

अमृत महोत्सव

CANTE

Meerut, Uttar Pradesh, India
RG College Rd, Begambagh, Meerut, Uttar Pradesh 250001, India
Lat 28.986624°
Long 77.707219°
13/08/22 11:53 AM
Google

अमृत महोत्सव

हर तिरंगा

NATIONAL CADET CORPS

ENGLISH LANGUAGE & LITERATURE SOCIETY
DEPARTMENT OF ENGLISH
BAGHUNATH GIRLS' POST-GRADUATE COLLEGE,MEERUT.
हर घर तिरंगा

OUR PRIDE

COLLEGE FACULTY SELECTED AS PRINCIPAL POST

Prof.(Dr.) Vandana Agarwal

Principal-Smt. B. D. Jain girl's P.G. College, Agra Cantt.

Joining date 30th October 2021

Prof.(Dr.) Anita Rathi

Principal- I.N.(PG) College, Meerut

Joining date 23rd October 2021

Prof.(Dr.) Bina Roy

Principal-Avadh Girls'Degree College, Lucknow Joining date joined on 1-12-2021

Prof.(Dr.) Suman

Principal- S.N. Sen B.V (P.G.) College,Kanpur

Joining date 2 August.2022

सेवानिवृत साथी बहने

Dr. Archana Sharma
Dept. of Home Science
(Feb-1983 - March-2018)
Principal: (07-03-2018 - 29-06-2020)

Dr. Chhavi Gupta
Dept. of English
(19-08-1988 - 14-08-2021)

Mrs. Anvita Agarwal
Dept. of English
05-12-1983 - 10-07-2022

Dr. Abha Rani
Dept. of Psychology

Dr. Anita Kashyap
Joining Date 23-01-1999
V.R.S. Date 25-04-2022

कुकिंग प्रतियोगिता के साथ हुआ आरजीपीजी कॉलेज में चल रहे स्काउट गाइड शिविर का सम

यूथ इण्डिया

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आरजीपी कॉलेज के चित्रकला विभाग में चित्र प्रदर्शनी का आयोजन

मेरठ। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर मंगलवार ... आरजीपीजी कॉलेज के चित्रकला विभाग में एक चित्र प्रदर्शनी का आयोजन ...

यूथ इण्डिया

आरजीपीजी कॉलेज में सामुदायिक कार्यों का समापन

मेरठ। आरजीपीजी कॉलेज के ... विभाग में 3 महीने से चल ... सामुदायिक कार्यों का ... किया गया। जिसके अंतर्गत ... ईयर की छात्राओं ने ... सामाजिक व आर्थिक पिछड़े लोगों पर ... तीन प्रकार के कार्यक्रम चलाए। ...

... सरकार द्वारा ... पोषण एवं परिवार नियोजन ... चलाई जा रही योजनाओं पर जागरूक करना तथा आर्थिक रूप से ... के कौशल में पारंगत करना जिससे वह आर्थिक रूप ... आत्मनिर्भर बन सकें। छात्राओं ने अपने कार्यों को प्रदर्शनी में ... प्रदर्शित किया। कॉलेज की प्राचार्या प्रो. निवेदिता मलिक तथा ... सीमा जैन ने छात्राओं का उत्साहवर्धन किया। ...

आरजी पीजी कॉलेज के दर्शनशास्त्र विभाग द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ आयोजन

यूथ इण्डिया

कलाकृति | कला विभाग की छात्राओं ने दिखाई प्रतिभा

कलाकारी से रंगीन हुआ आरजीपीजी कॉलेज का प्रांगण

सर्वहित भारत
RNI No. UPHIN/2016/70093
LIVE UPDATES
9837558069
8476824119

योग विभाग आरजीपीजी कॉलेज व उत्तर प्रदेश योगा एंड स्पोर्ट्स एसोसिएशन के संयुक्त ... गणतंत्र दिवस के अवसर पर मां भारती की वंदना के रूप में सूर्य नमस्कार का ऑनलाइन ... गया कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ निवेदिता मलिक द्वारा की गई कार्यक्रम का आरंभ ... नीता वत्स द्वारा कराया गया संचालन योग विभाग तथा यू पी वाई एस ए की मेरठ ... द्वारा किया गया कार्यक्रम में सूर्य नमस्कार का अभ्यास ... अंतरराष्ट्रीय योग ... कुमार द्वारा कराया गया तथा ... एवं ... में योगासन प्राणायाम तथा ... कराई कोऑर्डिनेटर डॉ नीता वत्स द्वारा बताया गया 75 करोड़ सूर्य नमस्कार की श्रृंखला में ...

लगभग 2000 छात्राओं को सूर्य नमस्कार का अभ्यास कराया जा चुका है कार्यक्रम में ... छात्राओं तथा अन्य शिक्षिकाओं ने भी उत्साह पूर्वक भाग लिया कार्यक्रम को सफल बनाने में शिखा शर्मा ... तिवारी ... तथा ... एस ए के अध्यक्ष ... का विशे ...

आरजीपीजी कालेज में मिशन शक्ति अभियान के तृतीय चरण के अंतर्गत लघु नाटिका का किया गया आयोजन

रूप में हुई नमस्कार का ऑनलाइन अभ्यास कराया गया कार्यक्रम

कांग्रेस प्रत्याशी रजनी शर्मा को व्यापारियों ने दिया व्यापक समर्थन

कार्यक्रम | सेमिनार में पर्यावरणविद् डॉ. अनिल जोशी ने रखे विचार

'जीडीपी की चिंता, पर जीईपी की चर्चा तक नहीं

हीरा टाइम्स

आरजीपीजी कॉलेज में पंचवर्षीय पत्रिका का अनावरण

मेरठ, संवाददाता। वाणिज्य विभाग, आरजीपीजी कॉलेज मेरठ द्वारा ... 2020-21 की पंचवर्षीय विभागीय पत्रिका ... के तृतीय ... का अनावरण प्राचार्या प्रोफेसर निवेदिता मलिक द्वारा किया गया। ...